॥ ओ: ॥

खानखाना नामा।

दो भागोंमें।

जोधपुर निवासी

मुन्शी देवीप्रसाद लिखित।

अमृतलाल चक्रवर्त्ती द्वारा भारतमित्र प्रेसमें

मुद्रित और प्रकाशित।

नं० ८७, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,

कलकत्ता।

संवत् १९६६।

॥ ओः ॥

खानखाना नामा।

दो भागोंमें।

जोधपुर निवासी

मुन्शी देवीप्रसाद लिखित।

अमृतलाल चक्रवर्ती द्वारा भारतमित्र प्रेसमें

मुद्रित और प्रकाशित।

नं० ८७, मुक्ताराम बाबू स्ट्रीट,

कलकत्ता।

संवत् १९६६।

भूमिका।

कई वर्ष हुए मैंने खानखानांनामाके नामसे एक उर्दू किताब छपायी थी जिसमें अकबर बादशाहके वजीर और सिपहसालार (सेनापति) नव्वाब अबदुलरहीमखां खानखानाकी जिन्दगीका कुछ हाल था। उसको हिन्दीमें लिखकर छापनेके लिये जबलपुरकी नागरी साहित्यप्रचारिणी सभाके मंत्री पंडित सूर्यनारायणजीने मुझसे इजाजत मांगी तो मैंनेही उसको हिन्दीमें लिखकर उनके पास भेज दिया। उन्होंने देखकर लिखा—"खानखाना बड़े नामी और विद्वान सरदार हो गये हैं जिनका नाम आज तक मशहूर है और हमने उनके बनाये हुए दोहोंका संग्रह रहीमशतकके नामसे छपवाया है। इसलिये इनका जीवनचरित्र जितना कुछ हो सके विस्तार पूर्वक लिखना चाहिये।" तब फिर तवारीखोंको देखकर जहांतक मिल सका पूरा हाल मैंने भाषामें लिखा और अपने मित्र उदयपुरके बारहट कृष्णसिंहजी और पंडित गौरीशंकरजी "लाइब्रेरियन, विक्टोरिया हाल, उदयपुरसे" शुद्ध कराकर पंडित सूर्यनारायणजीके पास भेज दिया। उन्होंने फिरसे उसके शुद्ध करनेमें बहुत अरसा लगा दिया और फिर भी पूरा शुद्ध(१) न हुआ था कि डुमरावं राज्यके प्रसिद्ध कवि पंडित नकछेदीजी तिवारीने उन्हीं खानखानाके जीवन चरित्र तैयार करनेको मुझे लिखा तब मैंने जबलपुरसे वही ग्रंथ मंगाकर फिर उसको गौरसे देखा और कुछ हाल और बढ़ाकर तिवारीजीकी सेवामें भेज दिया। तिवारीजीने उसके दूषण निकाल देने और दूषणकी जगह भूषण भरनेके लिये

(१) यह शुद्ध करना क्या था अक्षरोंको बदलना था।

बहुतसे सवाल लिखकर भेजे और उनके जवाब मुझसे मंगाये। इन जवाबोंमें उन्होंने उन सब बादशाहों, शाहजादों, अमीरों, सरदारों, तथा दूसरे लोगों के पूरे पूरे पते और परिचय मांगे जिनके नाम इस ग्रंथमें आये थे। इसलिये मुझको पहलेसे ज़ियादा तवारीखें देखनी पड़ीं जो इसी दिनके वास्ते जमा की गयी थीं और इस तीसरी वारके निचोड़नें उसका खूब निखार हो गया। तिवारीजी जो बातें चाहते थे वे सब प्रायः इसमें आ गयी हैं।

हम यहां यह भी कह देते हैं कि किन किन तवारिखोंसे कौन कौन अंग प्रत्यंग जोड़ कर खानखाना जीवनीकी यह मूर्त्ति खड़ी की गयी है।

खानखाना अब्दुल रहीमखां अकबर बादशाहके समयमें जन्मे और जहांगीर बादशाहके राज्यकालमें मरे थे इनके बाप खानखानां(१) बैरमखां हुमायूं बादशाहके राज्यमें उदय और अकबर बादशाहके समयमें अस्त हुए थे। इन तीनों बादशाहोंकी तवारीख—"अकबर नामा" "तुजुक् जहांगीरी" वगैरहमें जो कुछ हाल उन दोनों बाप बेटोंका लिखा था वह सब हमने अपने इस ग्रंथमें खेंच लिया है पर यह हाल जियादातर बादशाही खिदमतोंसे इलाका रखता है। उनके घर, घराने और पीढ़ियों वगैरहका पता इन तवारीखोंमें कुछ नहीं है। किसी किसीका कुछ है भी तो बहुत थोड़ा; मगर इसके वास्ते भी खास खास तवारीखें "मुआसिर-उल-उमरा" "तजकरेखवानीन" वगैरह हैं जिनमें अजीब किताब मुआसिरउलउमरा ३ जिल्दोंमें है जो बाबरसे लेकर मुहम्मद शाह तक १० पीढ़ियोंके बादशाही अमीरोंका पूरा पूरा हाल बताती या उसका पता देती है। इसीसे ढूंढने वाला आगे पता लगा सकता है। खानखानांके खानदान और उनके दादा पर-दादाके नामोंका पता हमको इसी मुआसिरउलउमरासे लगा है और इसीकी मददसे हम इस लायक हुए हैं कि उनका वह पुराना

(१) बैरमके माने तुर्की बोलीमें उत्सवके हैं।

हाल लिख सके जिसका कुछ बयान बाबर, हुमायूं, अकबर और जहांगीर जैसे शाहनशाहोंकी तवारीखोंमें नहीं है। खानखानांके दादे परदादे तो दूर रहे उनके बाप बैरामखांका नाम भी अकबरनामे जैसी बड़ी तवारीखमें सन ९४१ सं० १५९१—९२ से पहले नहीं मिलता।

अकबरनामेके पहले खंडमें जो तवारीख हुमायूं बादशाहकी है उसमें बैरामखांका नाम पहले पहल चांपानेरकी चढ़ाईमें आया है। इसके पिछर उनका कुछ हाल नहीं लिखा है।

हम खानखानाके खानदान और उनके पुराने हालकी तवारीख "रोजेतुत्तनका" और "हबीबउलसियर"से शुरू करेंगे; उनके बाप दादोंके नाम और हतांत "तुजुकबाबरी" और "मआसिरउलउमरा"से लिखेंगे; फिर अकबरनामे और तुजकजहांगीरीसे कुल हाल इन दोनों बाप बेटोंका खींचकर इस सांचेमें ढालेंगे तब कहीं सांगोपांग मूर्ति इनके जीवन चरित्रकी तय्यार होगी।

खानखानानामा।

पहला भाग।

खानखानां बैरामखां।

नव्वाब अबदुलरहीमखां खानखानांका जीवन चरित्र शुरू करनेसे पहले उनके बाप बैरामखां खानखानांका हाल लिखना जरूरी है और यह भी मानो इस पुस्तककी पूर्व पीठिका है।

तवारीख लिखनेके कायदोंमेंसे पहला यह है कि जिस किसीकी तवारीख लिखी जाय पहिले उसके खानदान (वंश) खिताब कुरसीनामे और समयका पता दिया जाय। फिर जन्मसे लेकर मरने तकका हाल जितना कुछ सही सही मिल सके पुरानी तवारीखों या दूसरे वसीलोंकी सनद और प्रमाणसे लिखा जाय जिससे पढ़नेवालोंको कोई शक न रहे। इसलिये हम पहले खानखानाके खानदानका कुछ हाल लिखते हैं; फिर खानखानांके लफ्ज (शब्द) पर कुछ लिखेंगे पीछे उनका हाल शुरू करेंगे।

खानदान।

मआसिर-उल-उमरामें खानखानांकी जाति तुर्कमान और खानदानका नाम कराकूयलू लिखा है। इससे जाना जाता है कि खानखानां असलमें तुर्कमान जातिके थे और तुर्कमानोंके बहुतसे खानदानोंमेंसे उनका घराना कराकूयलू था। तुर्कमानके माने हैं तुर्कोंकी मानिन्द; क्योंकि मानके माने फारसी जबानमें मानिन्द है जैसे इस जमानेमें हिन्दुस्थानके जन्मे हुए योरोपियनको योरेशियन कहते हैं वैसेही ईरानमें

जन्मे हुए तुर्कोंको तुर्कमान कहते थे अर्थात् जो तुर्क(१) अपने देश तुर्किस्तान(२)से आकर कबीलों सहित ईरानमें बस गये थे और वहां उनकी जो औलाद हुई थी वह तुर्कमान कहलायी।

फिर तुर्कमानोंकी नस्ल (संतति) बढ़नेसे उनमें कई खानदान हो गये, जिनके नाम लिखनेकी जरूरत नहीं; क्योंकि यह तुर्कमानोंकी तवारीख नहीं है; केवल उनकी १ शाखा कराकूयलूके २ नामी आदमियोंकी कुछ हकीकत है।

"कराकूयलू"के माने काली बकरीवालेके हैं। ये लोग पहले काली बकरियां रखा करते थे और इनके भाई जो सफेद बकरियां रखते थे वे आककूयलू कहलाते थे। तुरकी बोलीमें कराके माने काले और आकके सफेद तथा कूयके बकरी और लूके वाले हैं।

ये लोग आजरबायजानमें रहते थे जो ईरानका १ सूबा रूम और रूसकी सरहदसे मिला हुआ है जिसको अब आरमीनिया कहते हैं। जब वहां ईलकानी जातिके बादशाहोंका राज्य हुआ तो सुलतान हुसेन ईलकानीने सन् ७७७ सं० १४३२ में तुर्कमानों पर चढ़ाई करके वे किले और शहर छुड़ा लिये जो उनके सरदारों बैरामख्वाजा और करामुहम्मदने दबा लिये थे और हर साल

(१) तुर्क बहुत पुरानी जाति है। मुसलमान तुर्कोंके मूल पुरुष तुर्कको नूह पैगम्बरका पोता बताया जाता है और संस्कृत रूप तुर्क शब्दका तुरुष्क है। हिन्दू ग्रन्थोंमें तुर्क चन्द्रवंशी राजा ययातिके बेटे तुरुके वंशज माने जाते हैं—तुर्ककी छठी पीढ़ीमें मुगलखां हुआ जिसकी सन्तान मुगल कहलायी। मुगलखांकी बहुतसी पीढ़ियोंके पीछे तैमूरताश हुआ। उसकी १२वीं पीढ़ीमें बरतान बहादुर और काचूली बहादुर दोभाई हुए। बरतानका पोता चंगीजखां था और काचूलीकी नवीं पीढ़ीमें अमीर तैमूर हुआ। इन दोनोंकी औलादमें बड़े बड़े बादशाह ईरान, तूरान और हिन्दुस्थानमें हुए हैं।

(२) मध्य एशिया—तूरान।

२०००० बकरियां देनेका कर भी उनसे ठहरा लिया था। सुलतान हुसैनके बेटे सुलतान अहमदजलायरने करामुहम्मदके ५००० तुर्कमानोंकी मददसे अपने भाई शेखअलीको भगाकर बगदाद राजधानीमें अमल कर लिया।

फिर अमीरतैमूरने सन् ७८५के अव्वाल महीने भादों-कुआर संवत १४५० में बगदाद पर चढ़ाई करके सुलतान अहमदको भगा दिया जिसने सन् ७८७ यानी संवत १४५१—५२में अमीरतैमूरका तुरानमें होना सुनकर बगदाद फिर ले लिया, मगर जब सन ८०२ यानी संवत १४५६--५७ में अमीर तैमूर फिर ईरान आया तब सुल-तान अहमद करायूसुफ तुर्कमानको अपनी मदद पर लाया, तब भी फिर वे दोनोंही तैमूरके डरसे रूमको भाग गये और जब तैमूरने रूम भी फतह कर लिया तब ये मिश्रदेशमें चले गये और सन ८०७ यानी संवत १४६१ में तैमूरके मरनेकी खबर सुनकर ईरानको लौटे। मिश्रमें यह बात ठहरी थी कि बगदाद(१)को तो सुलतान अहमद ले ले और तबरेज(२)मेंजो आजरबायजांकी राजधानी है उस पर करायूसुफ अमल करे। सो इसके मुवाफिक दोनोंने दोनों मुल्क तैमूरके हाकिमोंसे छीन लिये; मगर सन ८१३ यानी संवत १४६७में सुलतान अहमदने अपने वचनसे फिरकर तबरेज पर चढ़ाई की तो करायूसुफने लड़ाईमें उसको मारकर बगदाद भी ले लिया। इस वक्तसे कराकूयलु तुर्कमानोंमें बादशाही आयी और करायूसुफ इस घरानेका पहला बादशाह हुआ।

(१) ईराक अरबके सूबेका सदर मुकाम जो अब सुलतान रूमकी अमल्दारीमें है और ईराक अरब ईरान राज्यके उस सूबेका नाम है जिसकी सीमा अरब देशसे मिलती है।

(२) तबरेज अब शाह ईरानके राज्यमें है। प्रोफेसर वेमबरीने सन् १८६१ ई०में जब उसे देखा था तब उसे खूब आबाद पाया था। इस प्रोफेसरका सफरनामा उर्दूमें तरजुमा होकर तो छपा है; पर हिन्दीमें मालूम नहीं।

तैमूरके बेटे पोते उससे और उसके जानशीनोंसे बराबर लड़ते रहे तोभी तुर्कमानोंकी सलतनत ६५ वर्ष तक बढ़ती चली गयी और सन ८७३ यानी संवत १५२५में "आककूयलू" घरानेके अमीर, हसन-बेगके हाथसे खतम हुई।

कराकूयलूकी शाखाओंमेंसे १ शाखा बहारलू भी थी जिसके अमीर अलीशकरबेगको करायूसुफने हमदान, देनूर, और गुर्दिस्तानके इलाके जागीरमें दिये थे जो तुर्कमानोंका राज्य चले जानेके पीछे तक भी अलीशकरकी विलायत कहलाते(१) रहे।

यह अलीशकरबेगही खानखानांका मूल पुरुष था। इसलिये इसकी, करायूसुफकी और तैमूरकी पीढ़ियां नीचे लिखते हैं जिससे पाठकोंको इन तीनों घरानोंके परस्पर संबंधका पूरा हाल मालूम हो जायगा।

नं०	मुगल	नं०	कराकूयलू	नं०	बहारलू
१	तैमूर	१	करायूसुफ	१	अलीशकरबेग
२	मीरांशाह	२	करासिकंदर	२	पीरअली
३	मुहम्मद मिरजा	३	कैकुबाद	३	यारबेग
४	सुलतानअबूसईद	४	जहांशाहनं०१काबेटा	४	सैफअली
५	उमरशेख	५	हसनअली	५	बैरामखां
६	बाबर			६	अबदुलरहीमखां
७	हुमायूं				
८	अकबर				
९	जहांगीर				

मीरांशाह अपने बाप तैमूरकी तरफसे ईरानका हाकिम था। वह सन ८१० यानी संवत १४६४ में करायूसुफके मुकाबिलेमें मारा गया। जब करायूसुफके बेटे जहांशाहको सन ८७२ यानी संवत १५२४में हुसेनबेग आककूयलूने लड़ाईमें मारकर तबरेज लेना चाहा तब उसके बेटे हसनअलीने मीरांशाहके पोते सुलतान अबूसईदको अपनी मदद पर बुलाया। हसनबेगने उसको भी धोखा दिया और

(१) ये जिले अब ईरान राज्यमें हैं।

उसने गफलतमें हमला करके १६ रज्जब सन ८७३ यानी फागुन बदी ३ संवत १५२५ में उसे पकड़ लिया और मरवा डाला! हसनअली इस तरह अपने दुश्मनोंका जोर देखकर आत्मघात करके मरगया और अलीशकरके बेटे जो तुर्कमानोंके चार पांच हजार घरोंसे सुलतान अबूसईदके नौकर होगये थे वे उसके पकड़े जानेके पीछे तूरानमें आ गये और सुलतान अबूसईदके बेटे महम्मद मिरजा(१) ने उनकी बहन यशा बेगमसे शादी की जिससे एक लड़का बायसङ्कर मिरजा और ३ लड़कियां पैदा हुईं। इस प्रसंगसे बहारलू जातिका मुगल बादशाहोंसे पूरा संबंध हो गया और वे उनके निज अमीरोंमें मिलकर रहने लगे।

पीरअली।

अलीशकरबेगके बेटोंमेंसे पीरअली कुछ बहादुर और हिम्मत वाला था। वह पहले तो हिसारशादमां(२ में महमूद मिरजाके पास रहा फिर फारस(३) देशमें चला गया जहां कुछ समय तक अपना राज्य जमानेके लिये शीराजके हाकिमसे लड़ा; मगर हारकर खुरासानमें भाग आया जो उस वक्त सुलतानहुसेन(४) मिरजाके

(१) महमूद मिरजा उमरशेखका बड़ा भाई और तूरानका बादशाह था तथा उमरशेख फरगानेका जो १ जिला तूरानका है वह अब रूसके अमलमें है।

(२) हिसारशादमां १ किला तूरानका है जहां अब अमीर काबुलकी अमलदारी है।

(३) फारस ईरानका १ जिला है और शीराज फारसका सदर मुकाम है।

(४) सुलतानहुसेन मिरजा मीरांशाहके बड़े भाई उमरशेख मिरजाकी चौथी पीढ़ीमें था और सन ८७३ संवत १५२५ में खुरासानका बादशाह हुआ था। तवारीख रोजतुलसफा इसके राज्यमें बनी है।

नीचे आ गया था। मिरजाके अमीरोंने पीरअलीको वीर और उद्योगी देखकर मार डाला।

यारबेग।

पीरअलीका बेटा यारबेग ईरानमें रहता था। जब वह मुल्क हसनबेग आककूयलू के पोतोंसे सन ९०६ यानी संवत १५५७ में शाहइसमाईल सफवी(५)ने छीनकर वहां अपना राज्य जमाया तब यारअली ईरान छोड़कर बदख्शां(६)में चला आया और वहांसे कुंदुज(७)में जाकर अमीर खुसरो शाहके पास रहने लगा। जब मुहम्मदखांशैबानी(८) उजबक(९)ने तूरानका मुल्क अमीरतैमूरके पोतोंसे छीन लिया और बाबर बादशाह भी फरगाने(१०)में रहना मुशकिल देखकर सन ९१० यानी संवत

(५) शाह ईसामाई कौमका सैयद और शेख सफीकी औलादमें था। इसलिये सफवी कहलाता था। तवारीख हबीबुस्सियर इसके राजमें सन ९२९ संवत १५७९।८० में बनी है।

(६) बदख्शां १ जिला तूरानका है जो अब अमीर काबुलके कबजेमें है।

(७) कुंदुज बदख्शांका १ शहर है।

(८) मुहम्मदखां शैबानी चंगेजखांके पोते और जूजीखांके बेटे शैबानकी औलादमें था। इसलिये शैबानी कहलाता था।

(९) उजबकखां जूजीखांसे ७ वीं पीढ़ीमें मगूलिस्तान यानी मंगोलियाका बादशाह था। उसकी औलादका नाम उजबक हुआ। उसके बहुत बढ़ जानेसे जूजीखांकी बहुतसी औलाद भी उजबक कहलाने लगी थी। जैसे शैबानी वगैरह।

(१०) फरगाना भी १ जिला तूरानका काशगर समरकंद बदख्शांके बीचमें था और १ हद उसकी मंगोलियासे मिली हुई थी। अब मंगोलिया और काशगर चीनके, समरकंद फरगाना और बुखारा रूसके तथा बलख बदख्शां अमीर काबुलके ताबेमें हैं। चंगेजखां और अमीर तैमूरकी औलादके पास अब कोई मुल्क नहीं है।

१५६१में बदख्शांमें आये तो खुसरोशाहने (जो १ बागी अमीर उनके दादा सुलतान अबूसईदका था और सुलतानके पीछे तूरानमें उनके बेटोंकी आपाधापीसे मैदान खाली पाकर बदख्शांका मालिक बन बैठा था) बदख्शांका सूबा उनको सौंप दिया तब यार बेग भी अपने बेटे सैफअली समेत बाबर बादशाहका नौकर हो गया।

सैफअली।

यह बाबर बादशाहका नौकर होकर बदख्शांमें रहा। वहां उसके घरमें एक लड़का पैदा (१) हुआ जिसका नाम बैरमबेग रखा यही पीछे भाग्यबलसे बैरामखां खानखानां कहलाया।

बैरमबेग तथा बैरामखां।

बैरमबेगने बदख्शांसे बलखमें जाकर विद्या पढ़ी और १६ बर्षकी अवस्थामें हुमायूं(२) बादशाहकी खिदमतमें पहुंचकर नौकरी की जिसमें बढ़ते बढ़ते मुसाहबी और अमीरोंके दरजे तक तरक्की पायी।

यह सब अहवाल यहां तक तवारीख रोजेतुलसफा, हबीबुल सियर, तुजुकबाबर, और मुआसिरुलउमरासे लिखा है। अब अकबरनामेसे लिखेंगे।

अकबरनामेमें इनका नाम कहीं बैरामखां, कहीं बैरामबेग और कहीं खानखानां लिखा है। उससे यह भी नहीं मालूम होता कि इनको खानखानांका खिताब कब मिला। खांका खिताब तो ईरानके बादशाहने संवत १६०१ में दिया था जबकि ये

(१) पैदा होनेका साल संवत किसी तवारीखमें नहीं मिला और न हुमायूं बादशाहके पास आने और नौकर होनेका; पर आगे एक नोट उनकी अवस्था पर लिखा गया है। उससे कुछ अनुमान उनके जन्म कालका हो सकता है।

(२) उस समय हुमायूं तख्त पर नहीं बैठे थे; उनके बाप बाबर बादशाह विद्यमान थे ऐसा जाना जाता है।

हुमायूं बादशाहके साथ वहां गये थे। खानखानांका खिताब हुमायूं बादशाहने ईरानसे आकर कंधार काबुल या हिन्दुस्थान लेनेके पीछे संवत १६०२ से संवत १६१२ तक किसी वर्षमें दिया होगा; ऐसा जाना जाता है। अकबरनामा बैरामखांके बहुत पीछे बना है। बैरामखां तो संवत १६१७में ही मर गये थे अबुलफज़ल जो अकबरनामेका रचयिता है संवत १६३१के लगभग बादशाही नौकर हुआ था जिसके १८ वर्ष पीछे ७ उर्दी-बहिश्त सन४१ इलाही, २७ शाबान सन १००४ बैशाख बदी १४ संवत १६५३ को उसने अकबरनामेका दूसरा दफतर खतम किया था। इस सबबसे उसने बैरामबेगको उन वर्षोंमें भी बैरा-मखां और खानखाना लिख दिया है कि जिनमें ये खिताब उनको मिले भी नहीं थे; पर वे उस समयमें जब अकबरनामा लिखा गया है खानखानाके नामसे प्रसिद्ध हो चुके थे। इसलिये अबुल-फज़लसे यथार्थ समयमें यथार्थ नाम लिखनेका यथार्थ प्रबन्ध न हो सका।

बेग, खान, और खानखानांका अर्थ।

तुरकी भाषामें बेगके माने सरदार और खानके माने बाद-शाहके हैं। तुर्क और मुगल बादशाह सब खान कहलाते थे। सरदा-रोंको बे और बेग कहते थे ऐसेही बादशाहों और सरदारोंकी औरतें खानम और बेगम कहलाती थीं। बाबरने तो अपने परदादा तैमूरको भी तैमूर बेगही लिखा है।

तैमूर और उसके बाप दादे काचूली बहादुर तक खान नहीं कहलाते थे क्योंकि वे चंगेजखांके बाप दादोंके सेनापति थे और चंगेजखांके पीछे तक उसके बेटे चगताईखांकी औलादके भी रहे थे।

तैमूर अपने खानदानमें पहला बादशाह हुआ; पर उसके बेटे पोते बाबर तक बादशाह नहीं कहलाते थे, वे मिरजा(१) कहलाते

(१) मिरजा असलमें अमीरजा शब्द है। इसका अर्थ है अमीरका

थे। बाबरने अपनेको बादशाह कहलाना शुरू किया। तबसे बादशाहका खिताब उनकी औलादमें भी जारी हुआ और अमीरोंको खानके खिताब मिलने लगे। सबसे बड़े अमीरको खानखाना का खिताब मिलता था, जिसका अर्थ है सब खानोंका खान। मुगलोंकी बादशाहीमें पहला खानखाना दिलावरखां लोदी था। इसका बाप दौलतखां लोदी दिल्लीके सुलतान सिकंदर लोदीकी तरफसे पंजाबका सूबेदार था। मगर सिकंदरके मरनेके पीछे उसने बाबर बादशाहसे जब वे काबुलमें थे मेल करके उनका अमल पंजाबमें करा दिया था। इस खैरख्वाहीसे बाबर बादशाहने उसके मरने पर उसके बेटे दिलावरखांको पंजाबका सूबा और खानखानांका खिताब दिया था।

दूसरे खानखानां बैरामखां तीसरे, मुनअमखां और चौथे अबदुल रहीमखां (२) हुए।

बैरामखां अकबरनामेमें।

हुमायूं बादशाहका समय।

अकबरनामेके पहले दफतरमें (खंडमें) जो हुमायूं बादशाहकी तवारीख लिखी है उसमें बैरामखांका नाम पहले पहल गुजरातकी चढ़ाईमें आता है; इसके पूर्व नहीं आता जिससे ठीक समय उनके बादशाहके पास आने और नौकर होनेका मालूम हो।

बेटा। तैमूरका खिताब अमीर था जिससे उसके बेटे अमीरजा, मीरजा और मिरजा कहलाते थे। जब बाबरने बादशाहका खिताब अपने लिये तजवीज किया तब दो पीढ़ी पीछे अकबरके समयमें उनके बेटे शाहजादे, शाह और सुलतान कहलाने लगे और मिरजाका खिताब बड़े बड़े अमीरोंके लिये छोड़ दिया गया। खानखाना अबदुल रहीमखां भी बहुत वर्षों तक मिरजा और मिरजाखां कहलाते थे।

(२) इनके पीछे पांचवें खानखाना जहांगीर और शाहजहांके राजमें महाबतखां हुए। इस तरह औरंगजेबके बेटे शाहआलम बहादुरशाह तक कई खानखाना हुए। आखिरी खानखानाका नाम भी मुनअमखां था जो सन ११२३ संवत १७६९ में मरे थे।

और इसका यही कारण है कि वे पहले साधारण अवस्थामें थे और कोई बड़ा काम उनसे नहीं हुआ था कि जिससे उनका नाम लिखा जाता।

बाबर बादशाहकी तवारीखमें भी अलीशकरके पीछेका कुछ हाल नहीं है।

बाबरका हाल हम सन ९१० यानी संवत १५६१ तक लिख आये हैं। फिर उन्होंने इसी सालमें काबुल, सन ९१३ संवत १५६४ में कंधार और सन ९३२ यानी संवत १५८२।८३में हिन्दुस्थान फतह किया। सन ९३७ संवत १५८७।८८में उनके गुजर जाने पर हुमायूँ बादशाह तख्त पर बैठे। सन ९४१ संवत १५९१। ९२में गुजरात जीतनेको गये। सन ९४२ संवत १५९२।९३में वहांके बादशाह सुलतान बहादुरको(१) भगाकर किले चांपानेरको ४ महीने तक घेरे रहे। निदान एक दिन किलेके आसपास फिरते फिरते एक जगह ६०।७० गज ऊंची भीत देखकर एक एक गजकी छ टीसे उसमें लोहेकी खूटियां गड़वायीं और अपने सिपाहियोंको उन परसे ऊपर चढ़नेका हुक्म दिया। जब ३९ जवान चढ़ चुके तब बादशाह चढ़ने लगे। बैरामखांने अर्ज की कि हजरत जरा ठहरें। जब वे लोग रास्तेसे चले जावें तब पधारें। बैरामखां यह कहकर आगे हो गये, बादशाह पीछे चढ़े। इस तरहसे ३०० जवानोंने कोट पर चढ़कर वह मजबूत किला फतह कर लिया।

जब बादशाह गुजारत फतह करके आगरेमें आये तब बिहार और बंगालसे शेरखां पठानके उन दोनों सूबोंमें अमल कर लेनेकी

---

(१) गुजरातका सूबेदार सुलतान मुहम्मद तुगलकके समयमें जफरखां था। वह सुलतानके पीछे दिल्लीकी बादशाही कमजोर होने पर खुदमुख्तार हो गया था। यह सुलतान बहादुर उसीके उत्तराधिकारियोंमेंसे था। गुजरातके बादशाह सन ७९३से सन ९८० संवत १४४७ से १६२९ तक कायम थे। फिर अकबर बादशाहने गुजरातको दिल्लीमें मिला लिया।

खबर आयी और कुछ दिनों पीछे बंगालका बादशाह नसीबशाह (१) भी शेरखांसे हारकर आगरेमें आया।

शेरखां अर्थात् शेरशाहका जीवनचरित्र हम छपा चुके हैं। यहां अकबरनामेसे कुछ हाल उसका लिखते हैं। शेरखांका असली नाम फरीद, बापका हसन और दादाका इब्राहीम था। इब्राहीम जिले मेवात परगने नारनोल गांव शिमलेमें रहता था और घोड़ोंकी सौदागरी करता था। हसन सौदागरी छोड़कर सिपाही बना और बहुत मुद्दत तक रायसाल शेखावतका नोकर रहा जो आमेरके राज्यका एक बड़ा जागीरदार था। फिर सहसराम जिले बिहारमें जाकर सुलतान सिकंदर लोदीके अमीर नसीरखां लोहानीका नौकर हुआ। उस वक्त फरीद अपने बापसे रूठकर बाबर बादशाहके अमीर सुलतान जुनेदकी नौकरी करने लगा। एक दिन बाबरने उसको देखकर जुनेदसे कहा कि इस पठानकी आंखोंसे बदमाशी पायी जाती है। इसको कैद रखना चाहिये। फरीद यह सुनकर भाग गया और बापके मरने पर उसके मालका मालिक होकर सहसराम और रुहतासके बीचमें लूट मार करने लगा। सुलतान बहादुर गुजरातीने खर्च भेजकर उसे बुलाया। उसने खर्च तो ले लिया और कुछ बहाना करके उसके पास नहीं गया। इतनेहीमें बिहारका हाकिम मर गया और शेरखां मैदान खाली देखकर वहांका मालिक बन बैठा। फिर एक वर्ष तक बंगालके बादशाह नसीबशाहसे बराबर लड़ता रहा। उन दिनों हुमायूं बादशाह मालवा(२) और गुजरात फतह करनेमें लगे हुए थे जिससे उसको खूब मौका मिल गया था।

(१) बंगाल सन ७३९ संवत १३९५से खुदमुख्तार हो गया था और नसीबशाह सन ९२७ संवत १५७७ में बादशाह हुआ था। बंगालकी बादशाही सन ९८३ संवत १६३२ तक दिल्लीसे अलग रही। फिर अकबर बादशाहने फतह कर ली।

(२) मालवेमें भी अलग बादशाहत सन ८०४ संवत १४५८ से सन ९७० संवत १६१९ तक थी। फिर अकबर बादशाहने दिल्लीमें मिला ली। मालवेके बादशाह गोरी और खिलजी जातिके थे।

निदान बादशाह सन ९४५ संवत १५९५में बंगालको रवाना हुए। बैरामखां भी साथ थे और इस समय इनका नाम अमीरोंमें लिखा गया है जिससे जाना जाता है कि यह दरजा इनको चांपानेरकी फतहके पीछे मिल गया था।

शेरखां उस समय बिहार देशके प्रसिद्ध गढ़ चिनारमें (१) था मगर बादशाहके पहुंचने पर बंगालको चल दिया और अपने बेटे जलालखांको गढ़ीमें(२) छोड़ गया जो उस समय बंगालका दरवाजा माना जाता था।

बादशाहने बिहारमें पहुंचकर भागलपुरसे बैरमबेग वगैरह कई अमीरोंको ५।६ हजार आदमियोंके साथ गढ़ी फतह करनेको भेजा मगर वहां हार हुई। बैरमखां कई बार पीछे फिर फिर कर जलालखांसे लड़े और उसकी सेनाका मुंह भी फेर दिया परन्तु मदद न पहुंचनेसे कुछ बन न पड़ा।

फिर हुमायूं बादशाह भी ९ सफर सन९४६ आषाढ़ सुदी ११ संवत १५९६ को परगने भोजपुरके गांव भईयामें शेरखांसे लड़ाई हारकर आगरेमें आये। दूसरी लड़ाई १० मोहर्रम ९४७ ज्येष्ठ सुदी १२ संवत १५९७ को कन्नोजमें हुई। वहां भी शेरखां जीता और बादशाह शिकस्त खाकर दिल्लीको चल दिये।

बैरामखां इस लड़ाईमें भी बहादुरी करके हार होनेके पीछे संभलकी तरफ चले गये और कसबे लखनोरमें जाकर राजा मित्रसेनके आश्रित हुए जो उस जिलेके नामी जमींदारोंमेंसे था। जब यह खबर शेरखांको पहुंची तब उसने अपना आदमी

(१) सही नाम चुनार है। यह बहुत पुराना गढ़ है। इसका सविस्तर वृतांत इसी स्थानके रईस बाबू हनुमानप्रसादजीने सन् १८८० ई०में लिखकर छपवाया था। उसमें लिखा है कि यह किला सन् १५३०ई० संवत १६८में हुमायूंके और सन् १५३७ ईसवी संवत १६८४ में शेरशाहके दखलमें आया था।

(२) गढ़ी बङ्गालकी सीमा पर एक प्रसिद्ध जगह थी।

भेजकर बैरामखांको राजासे मांगा। राजाने लाचारीसे इनको उसके पास भेज दिया। बैरामखां मालवेके रास्तेमें शेरखांसे मिले। वह पहली मजलिसमें उठकर मिला और उनका मन मनानेके लिये चिकनी चुपड़ी बातें करने लगा जिनमें यह भी कह गया कि "जो इखलास (भक्ति) रखता है वह खता नहीं करता।" इस पर इन्होंने भी कहा कि हां जो इखलास रखेगा वह खता नहीं करेगा। फिर बुरहानपुरके पाससे ग्वालियरके हाकिम अबुलकासिम(के१) साथ गुजरातको भागे। रास्तेमें शेरखांका वकील गुजरातसे आता था उसने खबर पाकर आदमी भेजा और अबुलकासिमको जो चेहरे मुहरेसे दीदारू जवान था पकड़ लिया। बैरामखांने नेकजातीसे (सज्जनतासे) छठ करके कहा कि मैं बैरामखां हूं। मगर अबुलकासिमने भलमनसीसे कहा कि यह तो मेरा नौकर है और चाहता है कि मेरे वास्ते अपनेको कुरबान करे। तुम इसको जाने दो।

इस तरह बैरामखां बचकर गुजरातमें सुलतान महमूदके पास पहुँचे और अबुल कासिमको जब शेरखांके पास ले गये तो उसने बेसमझीसे ऐसे सज्जन पुरुषको मरवा डाला।

शेरखां कहा करता था कि जब बैरामखांने उस मजलिसमें यह कहा था—"जो इखलास रखता है। खता नहीं करता है।" तो मैंने समझ लिया था कि यह हमसे मेल नहीं करेगा।

गुजरातके सुलतान महमूदने(२) भी बैरामखांको अपने पास रखनेके वास्ते बहुत कहा! मगर बैरामखांने कबूल नहीं किया और मक्के जानेको छुट्टी लेकर सूरत बन्दरमें आये।

---

(१) यह हुमायूँकी तर्फसे ग्वालियरका हाकिम था। जब शेरशाह हुमायूं पर फतह पाकर ग्वालियर पर गया तब इसने कुछ दिनों तक लड़कर किला सौंप दिया और आप उसके साथ हो गया।

(२) बहादुरके पीछे यह सुलतान महमूद सन् ९४४ संवत १५९४ में गुजरातका बादशाह हुआ था।

वहांसे मारवाड़ होकर कसबे जूनमें ७ मोहर्रम सन् ९५०
यानी बैशाख सुदी ८ संवत १६००को अपने मालिक हुमायं
बादशाहके पास जा पहुंचे।

बादशाह दिल्लीसे पंजाब और पंजाबसे सिंध २८ रमजान सन्
९४७ माघ बदी ३ संवत १६९१को पहुंच कर कसबे लह-
रीमें उतरे थे। दूसरे वर्ष सन् ९४८ यानी संवत १६९८ में हमीदा
बानू बेगमसे निकाह करके वहांसे ठट्टेको गये। रास्ते में कुछ दिनों तक
सेवान किलेसे लड़े; परन्तु लड़ाईमे लाभ न देखकर जोधपुरके
राव मालदेवके बुलानेसे मारवाड़को चले गये। वहांसे भी निराश हो-
कर जेसलमेर होते हुए १० जमादिउलअव्वल यानी भादों सुदी १२
संवत १५९९ को उमरकोटमें लौट आये और बेगमको वहीं छोड़-
कर फिर सिंधमें गये। १५ दिन पीछे ५ रज्जब रविवार कार्तिक सुदी
६ संवत १५९९ को रातको उमरकोटमें शाहजादेका जन्म हुआ।
बादशाहने कसबे जून इलाके भक्करमें यह बधाई सुनकर शाहजादे-
का नाम मिरजा अकबर रखा और सिंधियोंसे लड़ाई शुरू की जो
भक्करके सुलतान महमूदकी तरफसे उनके मुकाबिलेको आये थे।
यह सुलतान महमूद ठट्ठेके शाह हुसैनबेगके अधीन था।
शाहहुसेन मिरजाशाहबेग अरगूंका बेटा था। जब बाबरबादशा-
हने इसके भाई मुहम्मद मुकोमसे काबुल लिया उसके दो तीन
वर्ष पीछे इसको भी कंधारसे निकाल दिया था तब यह सिंधमें
आकर इस मुल्कका मालिक बन गया। इसके पीछे हुसेनबेग
ठट्ठेका सुलतान हुआ। इसीके आश्रित सुलतान महमूदसे
वह लड़ाई हो रही थी।

बैरामखां जिस वक्त वहां पहुंचे उस वक्त भी लड़ाई हो रही थी
और वे सीधे रणस्थलमें जाकर शत्रुओंसे लड़ने लगे। बादशाहकी
फौजको बड़ी हैरत हुई कि क्या यह कोई लशकरगैब
(दैव माया) है? पर जब मालूम हुआ कि बैरामखां हैं तब सब
चिल्ला उठे और बादशाहको भी बहुत खुशी हुई।

बादशाहके पांव सिंधमें भी नहीं जमे। निदान वे सुलतान महमूदसे सुलह करके ७ रबीउलअव्वल सन् ९५० हि० जेष्ठ सुदी ८ संवत १६००को सेवीके(१) रास्तेसे कंधारको रवाने हुए, उनका इरादा ईरान जानेका था। मगर उनके छोटे भाई मिरजाअसकरीने जो कंधारका हाकिम था मझले भाई मिरजा कामरा हाकिम काबुलकी सलाहसे उनके पकड़नेका इरादा किया। बादशाह यह खबर पाकर कंधारके पाससे मस्तंगको(२) लौट गये। मिरजा असकरी इनके ईरान जानेमें अपना बहुतसा नुकसान देखकर रास्ता रोकनेके लिये कंधारसे निकला जिसकी खबर जी बहादुर(३) नाम एक भले आदमीने आकर बैरामखांको दी। बैरामखां उसको बादशाहके पास ले गये बादशाहने वहांसे निकल जानेके लिये तरदीबेग(४) वगैरह अमीरोंसे घोड़े मंगाये और जब उन्होंने नहीं दिये तब वे उनको दंड देनेके लिये जाने लगे; बैरामखांने कहा कि वक्त तंग होगया है पर इतनी फुरसत नहीं रही है। इन नमकहरामोंकी गजबइलाहीके (ईश्वर कोपके) हवाले करके यहांसे चल देना चाहिये!

बादशाह उनका कहना मानकर तथा काबुल और कंधारका इरादा छोड़कर मक्के(५) जानेके विचारसे ईरानको रवाने हुए

(१) सेवी बलूचिस्तानमें है जहां अब अंगरेजी अमलदारी है।

(२) मस्तंग कंधारके पास है।

(३) जी बहादुर मिरजा असकरीका नौकर था पहले बादशाहके पास भी रह चुका था।

(४) तरदी बेग बादशाहके बड़े अमीरोंमें खानखानासे दूसरे दरजे पर था।

(५) मक्का अरब देशमें मुसलमानोंका बड़ा पुनीत धाम है जो वहां हो आता है उसको हाजी कहते हैं। हाजीके माने यात्रीके हैं मक्केकी यात्राका नाम हज है।

और ख्वजा मुअज्जम(१) वगैरहसे कह आये कि शाहजादे और बेगमको लेकर पीछसे जल्दी आजावें। कुछ दूर गये होंगे कि रात हो गयी। तब बैरामखांने बादशाहसे अर्ज की कि हजरतको मालूम है कि मिरजा असकरी कितना लालची है और वह इस वक्त दो तीन मुंशियोंके साथ बैठा हुआ हजरतके डेरेके माल असबाबकी फर्द देखता होगा। इस वास्ते अभी अकस्मात् वहां पहुंच कर उसका काम तमाम कर देवें। जब मिरजा न रहेगा तब उसके नौकरोंको जो सब आपके नमकसे पले हैं आपकी खिदमतमें आनाही पड़ेगा।

बादशाहने इस सलाहकी तारीफ तो बहुत की मगर वैसा करना मुनासिब न समझा और आगेको कूच कर दिया। तरदू-दीबेग वगैरह तमाम नौकर मिरजा असकरीके पास चले गये मगर बैरामखां बादशाहके साथ रहे।

बैरामखांने अपनी दानाईसे जैसा समझकर कहा था वैसाही हुआ। मिरजाअसकरी रातको मस्तंगमें आकर अपने डेरेमें बादशाहके माल असबाबकी याददाश्त (सूची) लिखने लगा। जो उसके पास लाया गया था और फिर शाहजादे अकबरको लेकर कंधारमें आया और शाहजादेकी मां हमीदा बानूबेगम बादशाहके पास चली आई।

बादशाहने विलायत गर्मसेरमें(२) पहुंच कर १ शव्वाल सन् ९५० पौष सुदी ३ संवत १६०० को ईरानके बादशाह तुह-मास्प सफवीके नाम खत भेजा जिसमें लिखा था कि तकदीरसे कुछ ऐसी बात बन आयी है कि आपका मिलाप जल्दी हो। पीछे अपनी ईरानकी अमलदारीके जिले सीसता(३) वगरह

(१) मरयममकानी अर्थात् हमीदा बानूबेगमका भाई जो मोअ-ज्जम सुलतान भी कहलाता था।

(२) कंधार और सीस्तानके बीचका मुल्क।

(३) सीस्तान अब ईरानके, और कंधार काबुलके नीचे है।

होते हुए फराहमें पहुंचे। वहां शाहतुहमास्पका(१) एलची खतका जवाब लेकर आया जिसमें आने और मिलनेकी बहुत लालसा लिखी थी तथा अपने सब सूबेदारोंके नाम अच्छी तरहसे पेशवाई और मेहमानदारी करनेके हुक्म भी जारी कर दिये थे। जो फरमान खुराशानके हाकिमको पहुंचा था उसमें लिखा था कि हर रोज एक अमीर मेहमानदारी करे और बादशाहोंके खानेके लायक नाना प्रकारकी भोजनकी सामग्रीके १२०० थाल भेजे। इनके सिवा ८ घोड़े भी भेट करे जिनमें ३ तो खास बादशाहके वास्ते हों एक बड़े अमीर मुहम्मद बैरामखां बहादुरको दिया जाय और ५ दूसरे अमीरोंको जो इस लायक हों दिये जावें।

बादशाह जब इस तरहसे शाह ईरानके मेहमान होकर रास्तेमें ईरानी अमीरों और शाहजादोंकी नजरें और जियाफतें लेते हुए हिरातसे(२) कजीवीनमें(३) पहुंचे तब बैरामखांको शहर सुलतानियेमें(४) भेजकर शाहको अपने आनेकी खबर भेजी।

बैरामखां शाहतुहमास्पको बादशाहका सलाम देकर लौट आये और शाह तुहमास्पने बड़ी धूम धामसे पेशवाई करके जमादिउलसानी सन् ९५१ भादों संवत १६०१ में हुमायूँ बादशाहसे मुलाकात की तथा बड़े आदर सत्कारसे सुलतानियेमें ले जाकर ठहराया। कई दिन तक राग रंग होता रहा और शिकारको भी ऐसी भारी तैयारी हुई कि शाही फौज १० दिनके रास्तेसे जानवरोंको घेरकर लायी। दोनों बादशाह घोड़ेपर सवार होकर

---

(१) यह शाह इसमाईलका बेटा था। और सन् ९३० सं० १५८१ में तख्त पर बैठा था।

(२) हिरात अब अमीर काबुलके कबजेमें है।

(३) कजवीन ईरानका एक शहर है और उन दिनों वहां राजधानी थी।

(४) कजवीनके पास एक शहर है जहां ईरानके सफवी बादशाह गर्मियोंमें रहा करते थे।

गये और शिकार मारे। फिर शाहके भाई बहरामसिरजा और सामसिरजाने आज्ञा पाकर शिकार खेला। उनके पीछे बैराखां वगैरह बादशाहके अमीरोंको भी शिकार करनेका हुक्म हुआ।

इसके पीछे फिर एक और ऐसाही बड़ा शिकार हुआ जिसमें दोनों बादशाहोंने चोगानबाजी और कबकअंदाजी की अर्थात् घोड़े दौड़ा कर गेंद खेले और निशाने उड़ाये। इसी दिन बैरामबेगको खानका(१) और हाजी मुहम्मद कूकीको(२) सुलतानका खिताब मिला। फिर शाहने १२००० सवार अपने बेटे मिरजा मुरादके साथ मददके वास्ते तैयार करके उनका तूमार (दफतर) बादशाहको दिखाया और सफरका सब सामान कर दिया। तीसरी बार फिर वैसाही शिकार होकर दोनों बादशाहोंकी सवारी तथा मुलाकात हुई और शाह बादशाहके डेरे पर आये और दोनों बादशाह एक दूसरेसे बिदा हुए।

आते समय बादशाह तबरेज होकर कंधारको लौटे। इस रास्तेमें भी उनकी वैसीही पेशवाई और मेहमानदारी हुई।

जो लोग इस सफरमें बादशाहके साथ थे अकबरनामेमें उन सबका नाम और थोड़ा थोड़ा परिचय भी लिखा है जिनमें सबसे पहला नाम बैरामखांका है कि "सब साथ देने वालोंमें शिरोमणि, जो इस विषयमें हमेशा नेकनीयतीसे बादशाहके साथ रहा वह बैरामखां"।

बादशाहने ७ मुहर्रम सन् ९५२ चैत सुदी ९ संवत १६०२ को कंधार पहुंचकर मोरचे लगाये और मिरजाकामराके कोका

(१) बैरामबेग बैरामखां तो पहलेसे कहे जाने लगे थे जैसा कि शाहके फरमानमें भी बैरामखां लिखा है परन्तु राज रीतिसे उनको खानका खिताब अब मिला था।

(२) हाजी मुहम्मदखां भी इसका नाम था।

(धाभाई) "रफीअ"का जमीनदावरमें(१) मौजूद होना सुनकर बैरामखांको उसके ऊपर भेजा वह गये और फतह करके कोकाको पकड़ लाये।

फिर बादशाहने मिरजा कामरांके नाम फरमान लिखकर बैरामखांके हाथ काबुलमें भेजा। इस फरमानके साथ शाह तुहमास्पका भी फरमान था जिसमें उन्होंने मिरजाको आपसमें मेल रखनेका उपदेश लिखा था।

बैरामखां जब काबुल पहुंचे तब बाबूस(२) वगैरह बहुतसे आदमी पेशवाई करके इनको ले गये। मिरजा कामरांने चारबागमें दरबार करके बैरामखांको बुलाया। इन्होंने सोचा कि ये दोनों फरमान मिरजाको बैठे हुए देना तो ठीक नहीं है और मिरजा उठकर ले ऐसी उससे उम्मेद भी नहीं। इसलिये वे भेट करनेके लिये एक कुरान साथ ले गये। जब मिरजा कुरानकी ताजीमको खड़ा हुआ तब वे दोनों फरमान भी उसको दे दिये। इस तरह दानाईसे उन दोनों फरमानोंकी ताजीम कराई। फिर दोनों बादशाहोंकी भेजी हुई सौगातें मिरजाको दीं और मिरजाके पास बैठकर मेल मिलापकी बातें कीं। जब दरबार हो चुका तब मिरजासे इजाजत लेकर शाहजादे अकबर, मिरजा हिन्दाल, मिरजा सुलेमान(३), मिरजा इब्राहीम, यादगार(४) नासिर मिरजा और उलग(५) मिरजा वगैरहसे अलग अलग मिले और सबको बादशाहके भेजे हुए खत और खिलअत दिये तथा मेहर-

(१) कंधारके पास एक कसबा।

(२) मिरजा कामरांका एक अमीर।

(३) मिरजा सुलेमान और इब्राहीम दोनों बाप बेटे बादशाहके कुट भाईयोंमेंसे थे। बाबर बादशाहने मिरजा सुलेमानको बदख्शांका मुल्क दे रखा था।

(४) यह बादशाहका चाचा था।

(५) उलग मिरजा भी बादशाहका कुट भाई था।

खानोंके संदेशे कहे। मिरजा कामरांने बैरामखांको एक महीना ठहरा कर विदा किया और अपनी फूफी खानजादा बेगमको मिरजा-असकरीके समझानेके वहानेसे कंधार भेजा जिसकी सिफारिशसे बादशाहने मिरजाके कसूर मुआफ कर दिये। गुरुवार २५ जमादिउलसानी कातिक बदी १२ को दीवान खानेमें बड़ा भारी दरबार किया जिसमें चगताई(१) और कजलबाश(२) अमीर अपने अपने दरजेसे परा बांधकर खड़े हुए और बैरामखां हुक्मके मुवाफिक मिरजा असकरीको गलेमें तलवार डालकर लाये। बादशाहने मेहरबानीसे तलवार निकलवा दी और जब मिरजा आदाब बजा ला चुका तब उसको बैठनेका हुक्म दिया और कंधारको दखल करके मुहम्मद मुरादमिरजाको सौंप दिया जो शाह तुहमास्पका बेटा था और मददके लिये ईरानी फौजके साथ आया था। उसने अपनी तरफसे शाह बदागखांको(३) कंधारका हाकिम किया।

शाहजादा मुराद मर गया तब बादशाहने कंधारका किला बेगमोंको रखनेके वास्ते शाह बदागखांसे मांगा। उसने देनेमें उजर किया; तब मिरजा असकरीको(४) कैद रखनेके वास्ते उसके पास किलेमें भेजनेका बहाना करके अपने अमीरोंको रातके वक्त किलेके आस पास बैठा दिया जो सुबह होतेही अंदर घुस

(१) मुगल।

(२) ईरानी लाल टोपी वाले, क्योंकि कजल वासके माने तुर्की बोलीमें लाल टोपीके हैं; जो सफवी बादशाहोंके नौकर दिया करते थे।

(३) शाह बदागखां शाह ईरानका नौकर और शाहजादे मुरादका अतालीक था।

(४) मिरजा असकरीको बादशाहने संवत १६०८ में मिरजा सुलेमानके पास भेजकर कहला दिया कि बलखके रास्तेसे इसको मक्के भेज दे। मिरजा सुलेमानने ऐसाही किया और असकरी वहां पहुचकर संवत १६१५ में मर गया।

गये। कजलबाश इनसे लड़ने लगे ; मगर बैरामखांने दूसरे दरवाजेसे जाकर किला फतह कर लिया। शाह बदागखांने बादशाहके पास हाजिर होकर माफी मांगी। बादशाहने उसको राजी करके बिदा किया और वह किला बैरामखांको सौंपकर शाह ईरानको लिख दिया कि शाह बदागखांने हुकम नहीं माना था इसलिये हमने कंधार उससे लेकर बैरामखांको दे दिया है।

फिर बादशाहने बैरामखांको कंधारमें छोड़कर काबुल पर चढ़ाई की। १२ रमजान सन् ९५२ अगहन सुदी १४ संवत १६०२ बुधको रातको काबुल भी फतह होगया और मिरजा कामरां गजनीन होकर सिंधको भाग गया। सन् ९५३ के लगतेही बादशाह काबुलसे बदखशां फतह करनेको गये जो मिरजा कामरांने मिरजा सुलेमानसे छीन लिया था। पीछेसे मिरजा कामराने सिंधसे आकर गजनीनको घेर लिया। बदशाहने खबर पाकर बैरामखांको लिखा। बैरामखांने यादगारनासिर मिरजा और उलग(१) मिरजाको मिरजा कामरांके ऊपर भेजा। मिरजा उस समय तो सिंधको चला-गया मगर फिर वहांसे फौज लेकर आया और कंधार लेनेका इरादा किया। पर काबू न पाकर काबुलको चला गया क्योंकि बैरामखां ने कंधारको खूब मजबूत कर रखा था।

मिरजा कामरांने पहले गजनीन लिया ; फिर काबुल फतह किया। मगर बादशाहने बदखशांसे आकर फिर मिरजाको निकाल दिया। मिरजा भागकर बलखमें पीर मुहम्मदखां(२) उजबकके पास पहुंचा और उसको साथ लेकर बदखशां पर गया।

(१) उलग मिरजा इस समय जमीन दावरका हाकिम था।

(२) पीर मुहम्मदखां तूरानका बादशाह मुहम्मदखां शेबानीकी औलादमें था। मुहम्मदखां सन् ९१६ सं० १५६७ में ईरानके शाह इसमाईल सफवीके मुकाबिलेमें मारा गया था। उसके पीछे इतने बादशाह समरकन्द और बुखाराके तख्त पर बैठे थे— १—कोजमखां सन ९१६ (१५६७)में २—अबूसईदखां सन् ९३६

बादशाहने यह सुनकर सोमवार ५ जमादिउलसानी सन् ९५५ आषाढ़ सुदी ७ संवत १६०५ को फिर बदखशांको कूच किया। वहां मिरजा कामरांसे मिलाप होगया और सब भाई मिलकर सन् ९५६ के लगतेही अपने बाप दादाका राज्य लेनेके लिये बलखके ऊपर गये; मगर आपसमें फूट पड़ जानेसे बादशाह काबुलको लौट आये। मिरजा कामरां बदखशांको चला गया और वहांसे फिर काबुल पर आया। बादशाह काबुलसे जाकर उससे लड़े। मगर शिकस्त खाकर बदखशांको चले गये और मिरजा कामरां फिर काबुलके तख्त पर आ बैठा। बादशाहने बदखशांसे आकर फिर मिरजाको लड़ाईमें जीता और काबुल फतह किया।

मिरजा भागकर अफगानिस्तानमें गया और अफगानोंको लेकर जलालाबाद पर आया। बादशाहने गजनीनके हाकिम हाजी मुहम्मदको बुलाया, मगर वह इधर तो न आया और मिरजा कामरांका रस्ता देखने लगा; जिसको उसने गजनीन देनेका इकरार कर लिया था।

इतनेमें बैरामखां बादशाहकी खिदमतमें हाजिर होनेके लिये काबुलको जाते हुए गजनीनमें आ निकले। हाजी मुहम्मदने पेशवाई करके मुलाकात की और जियाफतके बहानेसे कैद करनेके लिये किलेमें ले जाना चाहा, मगर १ आदमीने इशारेसे मना किया, जिससे बैरामखां दगा समझ कर किलेमें नहीं गये और हाजी मुहम्मदखांको लल्लो पत्तोसे राजी करके काबुलमें ले आये। लेकिन वहांके हाकिमने उसको शहरमें जाने नहीं दिया। क्योंकि बादशाह मिरजा कामरांके पीछे गये हुये थे और हाकिमसे कह गये थे कि कोई शहरमें न आने पावे। हाजी मुहम्मद दगा समझकर शिकारके

(१५८६।८७) ३—उबैदुल्लाहखां ९३९(१५८९) ४—अबदुल्लहखां और ५—अबदुल्लातीफखां सन् ८४६। (१५८६) ६—बराकखां और ७—बुरहानखां ९४९ (१५९९) ८—पीरमुहम्मदखां ९५२ (१६०२) में।

वहांसे मजनीनको चला गया। फिर मिरजा कामरां भी खानखानां और हाजी मुहम्मदका आना सुनकर भाग निकला। जब बादशाह काबुलको लौटे तब बैरामखां संगसिपाहमें(१) जाकर आदाब बजा लाये। बादशाहने उनको हाजी मुहम्मदके ऊपर भेजा, पर वे जाकर फिर उसको मना लाये और बादशाहसे कसूर मुआफ करा दिये।

बादशाह मिरजा कामरांके ऊपर फिर जलालाबादको गये और मिरजा फिर पहाड़ोंमें भागा। बादशाहने बैरामखांको उसके पीछे भेजा। वे गये और जब मिरजा काबुलकी सरहदसे निकलकर नीलाब(२)की तरफ चला गया तब ये दक्के(३)में बादशाहके पास लौट आये।

बादशाहने काबुलमें वापस आकर बैरामखांको कंधार जानेके लिये विदा किया। ये वहां पहुंचकर अपना काम करने लगे।

मिरजा कामरां फिर अफगानोंको लेकर काबुलके इलाकेमें आया। बादशाह उसके रोकनेको सुरखांबमें(४) आये। २१ जीकाद सन् ९५८ इतवार मगसर बदी ८ संवत १६०८ की रातको मिरजाने गांव चरयारमें(५) बादशाही लशकर पर छापा मारा, जिसमें बादशाहको फतह तो हुई मगर मिरजा हिंदाल मारा गया; जिसको बादशाहने मुहम्मदको(६) जगह मजनीबका हाकिम बनाया था और वह इस वक्त बादशाहके साथ था।

---

(१) यह स्थान काबुलके पास है।

(२) अटक अर्थात् सिन्धु नदी।

(३) काबुल और जलालाबादके बीचमें एक गांव है।

(४) नीलाब और काबुलके बीचमें एक नदी है।

(५) यह गांव काबुलके परगने नेकनिहारमें था।

(६) वही बाबाकशका जिसे सुलतानकी पदवी मिली थी। यद्यपि इसके अपराध खानखानांने क्षमा करा दिये थे तो भी फिर बदख्वाही (बुराचेतना) करने लगा था। इसलिये बादशाहने इसको और इसके भाई शाह मुहम्मदको कैद करके हुक्म दिया कि इन्हों-

फिर बादशाहने अफगानोंके ऊपर चढ़ाई करके मिरजा कामरांको हिन्दुस्तानकी तरफ भगा दिया।

मिरजा कामरां पंजाबमें जाकर शेरखांके बेटे सलीमखांसे मिला जो उस वक्त हिन्दुस्तानका बादशाह था। मगर फिर उससे मदद मिलनेकी उम्मेद न देखकर पंजाबके पहाड़ी राज्योंमें फिरता फिरता आदम गक्कड़(१) के पास पहुंचा। उसने मिरजाके आनेकी खबर देकर बादशाहको बुलाया। बादशाह गक्कड़ोंके मुल्कमेंसे जो सिंध और भट नदियोंके बीचमें था हिन्दुस्तानके ऊपर चढ़ाई करनेका मौका देखकर काबुलसे बंगशमें(२) आये। फिर सन् ८६० संवत १६०८। १० में आगे बढ़कर सिंध नदीसे उतरे। सुलतान आदम मिरजा कामरांको लेकर आया।

बादशाहने उसकी जान तो बख्श दी मगर आंखोंमें सलाई फिराकर मक्केको भेज दिया, जहां वह ४ वर्ष पीछे ११ जिलहज्ज ८६४ कुआर सुदी १२ संवत १६१४ को मर गया।

फिर बादशाह पेशावरमें अमल करके सन् ८६१ सं० १६१० के लगतेही काबुलमें लौट आये। उनका विचार जाड़ेमें हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करनेका था। मगर कुछ चुगलखोरोंने खानखानांकी तरफसे ऐसी बातें बनायीं कि बादशाह हिन्दुस्तान जानेसे कंधार

ने जो खिदमत खुशी या नाखुशीसे की हो उसको तो ये लिखें और एक बादशाही मुंशी इनके अपराधोंको लिखे यह इनसाफकी तराजूमें तुलकर दुनियांको इनका हाल मालूम हो जावे। उनके अच्छे काम तो कुछ भी नहीं निकले और बड़े बड़े जुर्म १८२ तक थे जिनकी सजामें वे मारे गये और गजनीकी हुकूमत बहादुरखांको दी गयी। उसके पीछे मिरजा हिन्दाल हाकिम हुआ था।

(१) गक्कड़ १ जातिका नाम है जो पहले हिन्दू थी फिर मुसलमान हो गयी वह भट और झेलम नदियोंके आसपास रहती है।

(२) बङ्गश एक पहाड़ी इलाका अफगानिस्तानमें है जहांके रहने वाले पठान भी बङ्गश कहलाते हैं।

जाना जरूरी समझकर उधर ही गये। खानखानां तो नेकबख-तीका जामा पहने हुए थे। बादशाहका आना सुनकर बहुत शुक्रगुजार हुए और बड़े अदबसे ३ कोस तक पेशवाईको आये तथा जमीन चूमकर आदाब बजा लाये। जिससे बादशाहको यकीन हो गया कि जो कुछ उनकी बाबत कहा गया है सब मिथ्या है।

फिर बादशाह एक अच्छा मुहूर्त देखकर कंधार पधारे और जाड़े भर वहीं मौज उड़ाते रहे। बैरामखांने खिदमतमें कुछ कसर नहीं रखी। बादशाही सरकारमें जिस चीजकी जरूरत हुई निहोरे करके दी और साथके सब छोटे बड़े बन्दोंको अपने नौक-रोंके घरोंमें उतारा और उनकी खातिर तवाजअ करना भी उन्हीं लोगोंके जिम्मे कर दिया।

बड़े आदमियोंमेंसे शाह अबुलमुआली, मुनअमखां, खिजर-ख्वाजा, मुहवअली और मीरखलीफा वगैरह थे।

जब बैरामखांकी नमकहलाली साबित हो गयी और सब लोगोंने जान लिया कि वह पूरा ताबेदार है तब बादशाह कन्धार उन्होंके जिम्मे छोड़कर हिन्दुस्तान जानेके वास्ते काबुलमें आ गये और बैरामखांसे कह आये कि इस चढ़ाईका सामान करके जल्दीसे लशकरमें आ जावें।

बैरामखां २ शव्वाल भादों सुदी ३ संवत १६११ को काबुल पहुंचकर बादशाहकी खिदमतमें हाजिर हो गये। यह रोजा ईदका दूसरा दिन था तो भी बादशाहने अति आनन्द और मेहरबानीसे जो बैरामखांके ऊपर थी उस दिन भी ईदकीसी खुशी मनाकर ऐसी बड़ी सभा सजायी जो ईदकी सभासे जियादा सुन्दर और सुहावनी थी। उसी दिन पहले पहल शाहजादे अकबरने निशाना उड़ाया अर्थात् चांदीकी गेंदको तीरमें पिरो लिया। बैराम-खांने इस "कबकअंदाजी"की तारीफमें एक उमदा कसीदा (काव्य) बनाया और भरे दरबारमें सुनाया।

इन्हीं दिनों हिन्दुस्तानसे सलीमखांके मरनेकी खबर आयी और वहां जो बादशाहके चाहने वाले थे उन्होंने बादशाहको बुलानेके वास्ते अर्जियां भेजी।

हिन्दुस्तानका कुछ हाल और हुमायूं बादशाहका फिर आकर दिल्लीके तख्त पर बैठना।

बादशाहको हिन्दुस्तान छोड़े १५ वर्ष हो गये थे। इस मुद्दतमें शेरखां (शेरशाह) ५ वर्ष २ महीने १३ दिन बादशाही करके ११ रबीउल-अव्वल सन् ९५२ यानी जेठ सुदी १३ संवत १६०२ को मर गया था—फिर उसका बेटा सलीमखां (सलीमशाह) तख्त पर बैठा। वह ८ वर्ष २ महीने ८ दिन अपना हुक्म चलाकर २२ जीकाद सन् ९६० यानी मगसर बदी ९ संवत १६१० को फौत हुआ। उसने अपने बापके अधूरे छोड़े हुए रुहतासके किलेको पूरा किया और सवालख पहाड़ोंमें मानकोटका किला मुगलोंकी रोकके लिये बनाया।

सलीमखांके पीछे उसका बालक बेटा और सलीमखांका साला मुबारजखां उसको मारकर आप बादशाह होगया। उसने अपना नाम मुहम्मदशाह अदली रखा और हेमू ढूंसरको अपना वकील (बड़ा वजीर) बनाया। यह रेवाड़ीका(१) रहनेवाला था और लश्करमें नमक बेचते बेचते सलीमखांके मोदियोंमें दाखिल होकर बादशाही नौकर हो गया था तथा सलीमखांके मुंह लगकर मुल्क और मालके कामोंमें दखल देने लगा था। अब जो वकील हुआ तो सब राज काजका करता धरताही होगया। पहले बसन्तरायका खिताब पाया था परन्तु अब राजा विक्रमाजित कहलाने लगा। इस वक्त पंजाबमें अहमदखां, बङ्गालमें मुहम्मदखां, मालवेमें सजावलखां और बयानेमें गाजीखां सूर हाकिम थे। मगर फिरोजखांको मारकर तख्त छीन लेनेसे ये सब अदलीके

---

(१) रेवाड़ी अलवर और दिल्लीके बीचमें राजपूताना मालवा रेल्वे लाइन पर दिल्लीको कमिश्नरीमें है।

दुश्मन हो गये थे। अहमदखां सूर अपना नाम सिकंदर रखकर पंजाबसे, इबराहीम सूबे बयानेसे आगरे पर आये, तब अदली तो हेमूको सलाहसे पूरबको चल दिया और आगरेके पास इब्राहीम और सिकन्दरकी (जो अदलीके दोनों बहनोई थे) लड़ाई हुई। इब्राहीम हारा और सिकन्दर जीता। जिससे सिन्ध और गङ्गाके बीचका तमाम मुल्क उसके कबजेमें आ गया। वह अदली और मुहम्मदखांसे लड़नेके लिये पूर्वकी ओर जानेके विचारमें था, मगर हुमायूँ बादशाहका आना सुनकर ठहर गया और तातारखां तथा हबीबखां वगैरहको पंजाबकी रखवाली पर भेज दिया।

उधर मुहम्मदखांने बङ्गालसे अदली पर चढ़ाई की जो चुनारगढ़में था और हेमूसे लड़ाईमें हारकर जानसे जाता रहा। शेरखां और सलीमखांके खजाने हेमूके हाथ आये। फिर हेमूसे और इब्राहीमसे कई लड़ाइयां हुईं जिनमें सब जगह हेमूकी जीत रही। हेमू अब सिकन्दरको निकालनेके लिये आगरेसे जाने वाला था परन्तु बङ्गालमें मुहम्मदखांके बेटे खिजरखांके बादशाह बन बैठनेकी खबर सुनकर उधर अदलीके पास चला गया।

हुमायूँ बादशाह काबुलमें ये खबरें सुनकर सन ९६१ के जिलहज्ज यानी संवत १६११ के कातिक या मगसरमें हिन्दुस्तानको रवाने हुए और शाहजादे अकबरको भी कि जिसकी उमर १२ वर्ष ८ महीनेकी हो गयी थी साथ लेते आये। बैरामखां बाजे बादशाही कामों और अपनी जंगी तैयारीके लिये छुट्टी लेकर काबुलमें रह गये।

बादशाह ३० मुहर्रम सन् ९६२ फागुन सुदी २ को पेशावर (पेशावर) में पहुंचे और ५ सफरको नीलाब (सिंध) नदी उतरकर ३ दिन तक ठहरे। यहां बैरामखां भी आ मिले। तातारखां जो बहुतसी फौजसे रुहतासके किलेमें था बादशाहका आना सुनकर भाग गया।

बादशाहने कलानूरसे(१) बैरामखांको तो नसीबखां पचभइयेके ऊपर भेजा और आप लाहोरमें जा विराजे।

बैरामखां जब परगने हरहानेके(२) पास पहुंचे तब नसीबखां थोड़ासा मुकाबिला करके भाग गया। मुगलोंको बहुत लूट मिली और पठानोंके जोरू बच्चे भी सब पकड़े गये।

बैरामखांने बादशाहसे सुना था कि अब जो हिन्दुस्तान फतह होगा तो किसी खुदाके बन्देको बन्दी(३) नहीं बनावेंगे इसलिये वे खुद सवार होकर गये और पठानोंके जोरू बच्चोंको इकट्ठे करके अपने भलेआदमियोंके साथ नसीबखांके पास भेजवा दिये तथा लूटका सब माल बादशाहके पास भेजकर आगे बढ़े। जब जालन्धरके पास पहुंचे तब पठान वहांसे भी भाग निकले और बादशाही लश्करमें झगड़ा होता देखकर अपना सब माल असबाब भी ले गये।

वह झगड़ा यह था कि तरदीबेगखां तो भागे हुए पठानों पर जाना चाहता था और बैरामखां इस बातको ठीक न समझ कर इजाजत नहीं देता था। तरदीबेगखांने वालतूखांको बैरामखांके पास भेजा कि जैसे हो सके इस बातको परवानगी ले आवे। जब वालतू आया तब ख्वाजा मुअज्जमसे और उससे बातों बातोंमें बिगाड़ हो गया और ख्वाजाने उसके हाथ पर तलवार मार दी। बादशाहको जब यह खबर पहुंची तब उन्होंने अफजखांको वहां भेजकर अमीरोंमें सुलह करा दी।

फिर बैरामखां खुद तो जालन्धरमें ठहर गये और अपने साथी अमीरोंको अलग अलग आस पासके परगनोंमें भेजा। सिकन्दरखां माछीवाड़े(१) पर बिदा हुआ था, जब वह आ पहुंचा तो मैदान खाली

(१) गुरदासपुर (पञ्जाब)के जिलेमें है।

(२) जिले हुशयारपुरमें है।

(३) गुलाम, क़ैदी।

(१) जलन्धर और सहरन्दके बीचमें सतलज नदी के पास।

देखकर और आगे बढ़ गया तथा सहरन्दको (२) अपने कब्जेमें ले आया; जहां बहुतसी लूट उसके हाथ आयी। जब तातारखां, हबीबखां, नसीबखां, मुबारकखां और बहुतसे पठान सरदार दिल्लीसे चढ़कर आये तब सिकन्दरखां सहरन्दमें रहना मुनासिब न देखकर जालन्धरमें चला आया। बैरामखांने खफा होकर उससे कहा कि तू सहरन्दमें जमा रहता और हमको खबर देता।

बैरामखां जालन्धरसे चलकर जब माछीवाड़ेमें आये तब तरदीबेगखां वगैरः उनके साथके अमीर बरसातका ख्याल करके सतलजसे उतरनेकी सलाह नहीं देते थे; मगर बैरामखां तो समय वृथा खोना ठीक न समझ कर नदीसे उतरही गये। तब तो उन लोगोंको भी उतारना पड़ा।

पठान बहुतसी फौज लेकर लड़नेको आये। लड़ाई शामसे शुरू हुई और पिछली रात तक होती रही। आखिर पठान हारकर भाग गये। बैरामखांने इस फतहकी लूट भी हाथियों समेत बादशाहके पास लाहोरमें भेजी।

सिकन्दरसूरने जब इस हारका हाल सुना तब ८०००० सवारोंसे सहित बैरामखांके मुकाबलेको आया। बैरामखांने दानाईसे सहरन्द जाकर किला सजाया और जल्द पधारनेके वास्ते बादशाहको खिदमतमें अर्जियां भेजीं। बादशाह पन्द्रहवें दिनही ७ रज्जब (ज्येष्ठ सुदी ८ संवत् १६१२)को रातको सहरन्द आ पहुंचे और लश्करको चार भाग करके, पहले भागमें तो आप रहे, दूसरेमें शाहजादेको, तीसरेमें शाह अबुलमुआलीको और चौथेमें बैरामखांको रखा।

चालीस दिन तक लड़ाई होती रही। २ शाबान सन् ९६२ (अषाढ़ सुदी ३)को शाहजादेके लड़नेकी बारी थी उस दिन बहुत घमासान लड़ाई होकर बादशाहकी फतह हो गयी। बहुतसे पठान मारे गये और सिकन्दर भागकर पञ्जाबके पहाड़ोंमें चला गया।

---

(२) जलन्धरसे आगे अम्बाले और जलन्धरके बीचमें एक पुराना शहर, पटियालेकी रियासतमें है जिसको सरहिन्द भी कहते हैं।

फतहके पीछे बड़ी आन्धी आई और मेह भी बहुत बरसा जिससे भागनेवालोंको निहायत तकलीफ हुई और बहुत लोग उनमेंसे मर भी गये।

बादशाहने खुशीका दरबार करके मुसाहिबोंसे पूछा कि यह फतह किसके नाम लिखी जावे? अबुलमुआली अपने नाम और बैरामखां अपने नाम लिखाया चाहते थे; मगर बादशाहने शाहजादेके नाम लिखवायी।

फिर बादशाह सहरन्दका बन्दोबस्त करके समानेकी राहसे दिल्लीको रवाना हुए और १(१) रमजान सावन सुदी ३ जुमेरातको सलीमगढ़में जो दिल्लीसे उत्तरको जमुना किनारे है, पहुंचे और ४ (सावन सुदी ५ संवत् १६१२)को दिल्लीमें दाखिल हुए।

बादशाहने दुबारा तख्त पर बैठकर नौकरोंको जागीरें बख्शीं। शाहजादे अकबरको हिसारकी सरकार दी। सहरन्द और दूसरे फुटकर परगने बैरामखांको दिये। तरदीबेगको मेवातमें भेजा। सिकन्दरखांको आगरे, अलीकुलीखांको सम्भल और हैदर मुहम्मद खांको बयानेकी तरफ बिदा किया। इतनेहीमें दूरमें सिकन्दरका अमल रह गया था, आगे अदलीका था।

बादशाह लाहौरमें शाह अबुलमुआलीको छोड़ आये थे। वह लोगों पर जुल्म करने लगा और सिकन्दर सूर पहाड़से बाहर निकल आया था। बादशाहने यह खबरें सुनकर शाहजादे अकबरको सन्

(१) १ रमजानको जुमरात नहीं रविवार था। जुमेरात अकबरनामेमें भूलसे लिखी है क्योंकि आगे २५ रमजान बुधको शाहजादेके अमीरोंका उनकी जागीर "हिसार"में पहुंचना लिखा है। जो रमजानकी १ तारीख गुरुवार (जुमेरात)को हुई होती तो २५ कभी बुधको नहीं होती। बुधको २१वीं होती। बुधको २५वीं होनेसे साफ जाना जाता जाता है कि रमजानकी १ ता० जुमेरातको नहीं किन्तु रविवारकोही हुई थी। जैसा कि हमने ऊपर पञ्चाङ्गमें देखकर लिखा है।

९६३ के शुरूमें पञ्जावको भेजा और बैरामखांको उनका अतालीक (उस्ताद) बनाया। सहरन्दमें शाहजादेके नौकर चाकर भी हिसार फिरोजेसे आकर लश्करमें शामिल हो गये और सिकन्दर पहाड़ोंमें चला गया।

बादशाह ११ (१) रबीउल अव्वल सन् ९६३ में जुमेके दिन (माह सुदी १३ संवत् १६१२) पिछले दिनसे शुक्रके तारेको (२) देखनेके लिये किताबखानेकी छत पर चढ़े जिसके ऊगनेका भरम शामको हो था। मगर बैठते वक्त पांव फिसल जानेसे नीचे गिर पड़े और मर गये। वजीरोंने इस बातको १७ दिन तक छुपाकर आसपासके अमीरोंको बुलाया, जब वे सब दिल्लीमें आ गये तब, २८ रबीउल अव्वल (फाल्गुण वदी १४ चन्द्रवार) को शाहजादेके नामका खुतबा (३) पढ़वाया और तरदीबेगने बादशाहीका सब सामान शाहजादेके पास भेज दिया।

शाहजादे और बैरामखां सिकन्दर सूरका मानकोटमें होना सुनकर उसके ऊपर जा रहे थे। कम्वे हरह्नानेमें एक कासिद दौड़ा हुआ आया और उसने बैरामखांको बादशाहके मरनेकी खबर दी। बैरामखां आगे जाना मुनासिब न समझ कर शाहजादेको कला-

(१) कलकत्तेके छपे हुए अकबरनामेके पहले दफतरकी पृष्ठ १६३में तारीख नहीं लिखी है परन्तु पञ्चाङ्गसे ११ होती है वही हमने ऊपर लिख दी है।

(२) हुमायूं बादशाह बड़े ज्योतिषी थे वह सारे काम मुहूर्त्तसे करते थे। उन्होंने बहुतसी बातें ग्रहोंके अनुसार अपने राज्य और दरबारमें चलायी थीं। जिनका पूरा विवरण हुमायूंनामेमें लिखा है और कुछ अकबरनामेमें भी है। उन्होंने कई काम शुक्रके उदय होने पर रख छोड़े थे। इसी लिये उसके देखनेको छतपर चढ़े थे।

(३) यह एक मुसलमानी मतकी बात है कि जुमेकी एक नमाज पढ़नेके पीछे बादशाहके वास्ते दुआ मांगी जाती है। इसको खुतबा कहते हैं। नये बादशाहके नामका खुतबा सब मुसल-

नूरमें ले आये। और वहां उनको यह खबर सुनाई और रबीउल-सानी सन् ९६३ (फाल्गुन सुदी ४)को दरबार करके उन्हें तख्त पर बैठाया।

अकबर बादशाहका समय।

अकबर बादशाहकी अवस्था उस समय केवल १२ वर्षकी थी। और बैरामखां पहलेसे राज्यके कर्ता धरता थे। इसलिये वे ही सब काम बादशाहीका करने लगे और बादशाहको कलानूरसे फिर सवालक पहाड़ोंकी तरफ चढ़ा ले गये। मगर बरसात आ जानेसे जालन्धरमें लौट आये।

इधर हेमू जो अबतक २२ लड़ाइयां जीत चुका था हुमायूं बादशाहका मरना सुनकर चुनारगढ़से दिल्लीको रवाना हुआ और १ जिलहज्ज कातिक सुदी ३ संवत् १६१३ मङ्गलवारको वहां पहुंचा। तरदीबेग वगैरह अमीर दूसरे दिन उससे लड़े और हारकर पंजाबको भागे। हेमूने दिल्लीमें अमल कर लिया।

८ जिलहज कातिक सुदी १० को जालन्धरमें यह खबर बादशाहके पास पहुंची तो वे १८ शुक्रवार मगसर बदी ५ को सहरंदमे आये। वहां तरदीबेग भी आ गया था। बैरामखांने उसको डेरे पर बुलाकर दगासे मरवा डाला क्योंकि वह भी उसको बराबरीका था आपसमें ईर्षा थी।

बादशाह उस वक्त सहरन्दके जङ्गलमें शिकार खेल रहे थे। वहीं यह बात उन्होंने सुनी। बुरी तो बहुत लगी मगर अखतियार (१) न होनेसे चुप हो रहे। शामको जब दौलतखानेमें आये तो बैरामखांने मौलाना पीर मुहम्मद (२) शिरवानीको भेजकर आरजू कराई कि तरदुदी बेग लड़ाईमें जान बूझकर कपटसे भाग

मानोंको हाजरीमें पढ़ा जाता है। मानो यह उसके राज्याभिषेकका पहला विधान है।

(१) कुल बातें बैरामखांके अखतियारमें थीं।

(२) यह खानखानाका मन्त्री था।

आया था और उसकी नटखटाईको आदिसे अन्त तक सब लोग जानते हैं। अगर ऐसे कसूरोंमें आनाकानी की जाती तो बड़े बड़े काम जो हजरत किया चाहते हैं नहीं हो सकते थे; इसलिये मैंने बादशाहकी खैरख्वाहीसे यह काम बिना पूछे किया है। इससे बहुत शरमिन्दा हूं और नहीं पूछनेका यह कारण था कि हजरत श्रीमान्,दयासिन्धु और कृपानिधान हैं, उसके मारनेमें राजी नहीं होते; मना कर देने पर इस कामके करनेमें हदसे जियादा बेअदबी होती और हुक्म माननेसे मुल्क और लश्करमें बहुत खलल और फसाद पड़ता। इसलिये माफी दी जावे और यह बात मंजूर कर ली जावे जिससे सब अन्तर कपटी लोगोंको डर हो जावे।

बादशाहने मौलानाके ऊपर मेहरबानी करके खानखानाका उज्र मान लिया और उसको तसल्ली देकर हेमूके फसाद मिटानेका विचार किया।

फिर बादशाहने सरायकरोंदेमें(१) डेरा करके १०००० सवार अली कुली शैबानीको अफसरीमें आगे रवाने किये। बैरामखांने भी अपने नौकरोंमेंसे वली बेगके बेटे हुसैनकुलीबेग, शाह कुली महरम, मीर मुहम्मद कासिम नेशापुरी, सैयद महमूद बारई और चौहान बहादुर वगैरह काम किये हुए बहादुरोंको उनके साथ किया।

इन दिनों हिन्दुस्थानमें बड़ा भारी अकाल पड़ रहा था। दिल्लीमें तो यह हाल था कि रुपया मिल जाता था, मगर अनाज नहीं मिलता था। आदमी आदमीको खाने लगा था। कई लोग मिलकर अकेले दुकेले आदमीको ले भागते और मार कर खा जाते थे; उसपर यह आफत लड़ाईकी थी।

हेमूने बादशाही लश्करका आना सुनकर अपना भारी तोपखाना मुबारकखां और बहादुरखांके(२)साथ पानीपतको भेज दिया

(१) यह स्थान सरहन्द और करनालके बीचमें है।

(२) ये दोनों पठान हेमूके बड़े अमीरोंमेंसे थे।

जो दिल्लीसे ३० कोस है; मगर अलीकुलीखां वगैरह बादशाही अफसरोंने पानीपतसे आगे बढ़कर वह तोपखाना उनसे छीन लिया।

हेमू इस खबरके सुनतेही दिल्लीसे चढ़ा। उसके साथ ५०० जंगी हाथी और ३०००० लड़ाके पठान और राजपूत सवार थे जो बहुतसी लड़ाइयोंमें जीत पा चुके थे। हाथी भी हथियारोंसे सजे हुए थे। इन सवारों और हाथियोंकी ३ फौजें थीं। बीचकी फौजमें तो हेमू आप था। दाहिने हाथकी फौजमें शादीखां काकड़ और और बांये हाथकी फौजमें हेमूका भानजा रमिया(१) था जो बड़ा बहादुर और वीर था।

२ मुहर्रम सन् ९६४ मगसर सुदी ३को हेमू पानीपत पहुंचा। अली कुलीखां वगैरह बादशाहके पास खबर भेजकर उससे लड़नेको तैयार हुए। हेमू बादशाहको दूर देखकर इन लोगों पर टूट पड़ा कि जलदीसे हराकर आगे बढ़े।

बादशाही फौजकी दाहिनी और बांयी अनी तो हेमूसे शिकस्त खाकर भाग निकली जिसके अफसर सिकन्दरखां और अबुल्लाखां थे। मगर खानखानाके अमीर मुहम्मद कासिम नेशापुरी, हुसेन कुली, शाह कुली महरम और लालखां बदखशी जो बीचकी फौजमें अली कुलीखांके पास थे घोड़ोंसे उतरे और तलवारें निकालकर पैदलही दुश्मनोंपर दौड़ पड़े। हेमू हवाई नामक हाथी पर सवार था। कहींसे एक तीर आकर उसकी आंखमें लगा और सिरके पार निकल गया। यह देखकर उसकी फौज भागने लगी। उस वक्त शाह कुलीखां महरम कई आदमियोंके साथ हेमूके हाथीके पास आ निकला और हाथी लेनेके वास्ते महावतको मारने लगा। उसने जान बचानेको अपने मालिकका पता बता दिया। शाहकुली खुश होकर उसी दम उस हाथीको अलग ले गया।

यह फतह बादशाहके भाग्यबलसे सहजमें हो गयी। डेढ़ हजार

(१) किसी किसी प्रतिमें इसको रमिया भी लिखा है।

हाथी लूटमें आये। धन मालकी कुछ गिनती नहीं थी। ५००० आदमी खेत पड़े और बहुतसे भागते हुए भी मारे गये।

बादशाह उसी दिन करनालसे चलकर पानीपतसे ५ कोस पर ठहरेही थे कि वहां हेमूके आने और लड़ाई शुरू हो जानेकी खबर पहुंची। उसी वक्त 'लशकर' सजाकर वे चल दिये। बैराम खां आगे होकर फौजोंकी देख भाल करते और बहादुरोंका दिल बढ़ाते जाते थे। जब पानीपतके पास पहुंचे तब फतहकी खबरें आने लगीं और शाह कुली महरम हेमूको पकड़ कर हुजूरमें लाया।

बादशाहने हेमूसे बहुतसा जवाब पूछा। मगर वह तो कुछ नहीं बोला। तब बैरामखांने अर्ज की कि हजरत इस फसादीको(१) अपने हाथसे मारकर गजाका(२) 'सवाब' (काफरोंके मारने-पुण्य(३) हासिल करें।"

बादशाह छोटी उमरमें थे ; तौभी बड़ी समझदारीसे कहने लगे कि हमारी हिम्मत एक बन्धे हुए कैदीको मारनेकी रुखसत नहीं देती और खुदाकी दरगाहमें भी ऐसे कामोंका कुछ सवाब नहीं मिलता होगा। मैं तो इसको उसी दिन टुकड़े टुकड़े कर चुका हूं कि जिस दिन बड़े हजरतके किताबखानेमें एक ऐसे आदमीकी सब अङ्ग अलग अलग करके तसवीर बनायी थी। बड़े

---

(१) दूसरे तवारीख लिखने वालोंने फसादीकी जगह काफिर लिखा है; मगर हिन्दूके वास्ते काफिर शब्द अकबरनामेमें कहीं नहीं आया है। यह सिहरवानी मुसलमान ग्रन्थकारोंके खिलाफ न जाने कैसे शेख अबुलफजलसे बन आयी है। बादशाहकी मरजीसे या अपनी भलमनसीसे।

(२) काफरोंसे लड़ाई लड़नेको मुसलमान गजा कहते हैं।

(३) मुसलमानी मतमें काफरोंके मारने या उनके हाथसे मारे जानेका बहुत पुण्य लिखा है। जो मुसलमान न हो उसको मुसलमान लोग काफर कहते हैं।

हजरतके पास रहने वालोंमेंसे एक शख्सके पूछने पर मेरी जबानसे यह भी निकल गया था कि यह तसवीर(१) हेमूकी है।

निदान बादशाहके राजी न होने पर बैरामखां खानखाना नेही वह फरजी सवाब कमानेके लिये हेमूको तलवारसे मार डाला। उसका सिर काबुलको और धड़ दिल्लीको भेजकर लोगोंको डरानेके लिये सूलीपर चढ़ाया गया।

अगर बादशाह खुलकर काम करते होते या कोई होशिले वाला अमीर उस दरगाहमें होता और हेमूको कैद रखकर बादशाहकी बंदगीमें लगाता तो बेशक वह बहुत अच्छा नौकर होता। हिम्मत वाला तो थाही और फिर जब ऐसे बादशाहकी तालीम पाता तो कौन बड़े काम होते जो उससे बन नहीं पड़ते।

हेमू बड़ा भाग्य शाली था। २२लड़ाइयां जीत चुका था। उसके इतने अधिकसिपाहीथे तनेऔर किसीके नहीं थे;ऐसा बड़ा तोप खानाथा, कि जिसके बराबर रूमके सिवाय और कहीं नहीं रहा होगा औरइतने अधिक हाथी थे जो उस वक्तके किसी बादशाहको भी मयस्सर नहीं थे। शैतान। शरफुद्दीन (२)यजदीने बड़ी शेखीसे जफरनामेमें लिखा है कि अमीर तैमूरको हिन्दुस्थानकी बड़ी लड़ाईमें १२० हाथी हाथ लगे थे। इससे होशयार तवारीख जानने वाले जान सकते हैं कि उस जमानेमें जो हिन्दुस्थानका बादशाह था उससे यह हेमू कितना बढ़ा हुआ था कि जिसके १५०० हाथी बादशाही नौकरोंके हाथ आये थे; दूसरे धन मालका तो क्या

(१) हुमायूं बादशाह जब सिकन्दरसूर पर फतह पाकर दिल्लीमें आये थे तब उनके हुक्मसे अकबर बादशाह तसवीर खानेमें जाकर उस्ताद मीर सय्यद अली और ख्वाजा अबुलसमदसे तसवीर बनाना सीखा करते थे। उन्हीं दिनोंमें उन्होंने वह तसवीर बनायी थी।

(२) यह ईरानके शहर यजदका रहने वाला था। इसने अमीर तैमूरकी तवारीख लिखी है जिसका नाम जफरनामा है।

शुमार हो।

बादशाहने इस फतहके इनाममें अलीकुलीखांकी खानजमाका सिकन्दरखांको खान आलमका, अबुल्लाहखां उजबकको शुजाअत-खांका और मौलाना पीर मुहम्मदको नासिरुलमुल्कका खिताब दिया।

उस वक्त शेरखांका गुलाम हाजीखां अलवरमें था और हेमूकी औरत(१) हेमूका बाप और उसका सब माल असबाब भी उसी सरकारमें (जिलेमें)था। बादशाह और खानखानाने नासिरुलमुल्कको हाजीखां पर भेजा। हाजीखां पहलेही डरकर भाग गया था। इससे बादशाही फौज अलवर और तमाम मेवातमें अमल करके देवती माचेड़ीको(२) गयी जहां हेमूका घर था।

यह मजबूत जगह बहुत बड़ी लड़ाईके पीछे हाथ आयी। हेमूका बाप पकड़ा जाकर नासिरुलमुल्कके पास लाया गया। उससे मुस-लमान होनेको कहा गया तो उस बुड्ढेने जवाब दिया कि मैं ८० वर्षसे इस धर्ममें हूं और अपने खुदाको पूजता हूं। अब कैसे अपना धर्म छोड़ दूं और सिर्फ जानके डरसे बिना समझे तुम्हारे मतमें आ जाऊं। मौलाना पीर मुहम्मदने उसको इस बातका जवाब तलवा-रकी जबानसे दिया अर्थात् उसको मार डाला। आगे बहुतसी लूट और ५० हाथी लेकर बादशाहके पास आया।

बादशाह अदेली वगैरा पठानोंके ऊपर पूर्वको जाना चाहते थे कि सिकन्दर सूरके लाहोर पर आनेकी खबर सुनकर ४ सफर सोमवार पौष सुदी ५को दिल्लीसे पञ्जावको तरफ रवाने हुए।

---

(१) यह रानी कहलाती थी। लड़ाईमें साथ थी। फिर अपने घर आ गयी। मुन्तखिबउत्तवारीखमें लिखा है कि हेमूकी रानी खजानेके हाथी लेकर बीजवाड़के पहाड़में चली गयी। वहां वर्षों तक मुसाफिरोंको रास्तेमें मोहरें और सोनेकी ईंटें मिला करती थीं। बीजवाड़ा अलवरके राज्यमें है।

(२) देवती माचेड़ी भी अलवरके राज्यमें दो गांव हैं।

रास्तेमें लाहौरसे खबर आयी कि दे महीनेकी छठी और सफरकी १४ वीं गुरुवार माघ बदी १ (१) संवत १६१३को खानखानाके घरमें जमालखां(२) मेवातीकी बेटीसे लड़का हुआ है। बादशाहने उसका नाम अबदुर्रहीम रखा। और इस खुशीको खबरसे अपनी फतहका शकुन लिया। बैरामखांने बड़ी मजलिस की और ज्योतिषियोंने जन्मपत्रीका शुभ फल लिखकर भेजा।

हुमायूं बादशाह दिल्लीमें आनेके पीछे जमींदारोंको तसल्लीके लिये उनकी लड़कियोंकी शादी अपने अमीरोंसे करते(३) थे। इसन-

(१) परन्तु अबदुल रहीमखां खानखानाकी जन्मपत्रीमें जो आगे लिखी जावेगी उनकी जन्म तिथि मगसर सुदी १४ संवत १६१३ सोमवार है। न जाने क्यों दोनोंमें २० दिनका अन्तर है। दोनों तिथियोंके साथ दिन भी हैं और पंचाङ्गसे दोनोंही सही हैं। पर जन्म तो दो बेर नहीं हो सकता। इसलिये कौन तिथि सही है और कौन सही नहीं है इसकी व्यवस्था हम आगे करेंगे।

(२) जमालखां, हसनखां मेवातीके भाई अलावलखांका बेटा था। हसनखांका राज्य कई पीढ़ियोंसे अलवरमें था। वह १०००० सवारोंसे महाराना सांगाजीके साथ होकर बाबर बादशाहसे लड़ा था और उस लड़ाईमें काम आया था। ये लोग असलमें यादव राजपूत थे और मुसलमान होनेके पीछे खानजादे कहलाने लगे थे। अब भी बहुत लोग इस घरानेके अलवर राज्यमें हैं।

(३) मआसिरुलउमरामें लिखा है कि जब हुमायूं बादशाह ईरानमें गये थे तब वहांके शाह तहमास्प सफवीने उनसे कहा था कि आपने हिन्दुस्थानके जमींदारोंसे रिश्तेदारी नहीं की और अजनबीसे बने रहे हैं जिससे पैर नहीं जमे। अब जो फिर वहांकी बादशाही तुम्हारे हाथ आ जावे तो दो काम जरूर करना, एक तो पठानोंको जहांतक बने हुकूमतसे अलग करके व्योपारमें लगाना और दूसरे वहांके राजाओं और जमींदारोंसे रिश्तेदारी करना कि जिससे तुम्हारा राज्य बना रहे।

खां मेवाती हिन्दुस्थानके बड़े जागीरदारोंमेंसे था। उसके चचेरे भाई जमालखांकी २ लड़कियां थीं। बड़ीसे तो बादशाहने निकाह (विवाह) किया था और छोटीसे बैरामखांका करा दिया था। बैरामखां जब बादशाहके साथ हेमूसे लड़नेको आये थे तब बेगमको लाहोरमें छोड़ आये थे।

बादशाह जब जालन्धरमें पहुंचे तब सिकन्दर फिर सवालक पहाड़में चला गया। बादशाह भी उधर कूच करके कसबे धमरीमें(१) पहुंचे और वहांसे भी आगे बढ़कर सिकन्दरको मानकोट किलेमें(२) जा घेरा।

कन्धारमें खानखानाकी तरफसे शाह मुहम्मद कंधारी रहता था और जमीन दावर बहादुरखांको सौंपा हुआ था। उसने कंधारके लालचसे शाह मुहम्मद पर चढ़ाई की। शाह मुहम्मदने किला सजाया और हिन्दुस्थानको दूर देखकर शाह ईरानको अर्जी लिखी कि हुमायूं बादशाहने यह बात ठहरायी थी कि जब हिन्दुस्थान फतह हो जायगा तब कन्धार शाह ईरानके नौकरोंको सौंप दिया जायगा। अब आप कुछ फौज भेजें तो वह इस नमकहरामको भी सजा दे और कन्धार भी मुझसे ले ले। शाहने ५ हजार तुर्कमान सीस्तां, फराह, और गर्मसेरके जागीरदारोंमेंसे भेजे। उन्होंने अचानक बहादुरखां पर हमला किया। बड़ी लड़ाई हुई और बहादुरखां जमीन दावरको छोड़ भागा, मगर शाह मुहम्मदने तुर्कमानोंको कन्धार सौंपा और जियाफत दे दिलाकर बातोंही बातोंमें सूखा टाला दिया।

बहादुरखां इस तरह जमीन दावर खोकर बादशाहके पास

---

(१) धमरीका नाम पीछेसे जहांगीर बादशाहने नूरपुर रख दिया था और यह जालन्धरके जिलेमें कांगड़ेके पास है। जहांका राजा अब गगन सिंह है।

(२) मानकोटका किला सवालक पहाड़में सलीम शाहने बनाया था, जब कि गक्कड़ोंके ऊपर चढ़कर वह गया था।

आया और बादशाहने मुलतानको उसकी जागीरमें देकर मानकोटके ऐन मोरचे पर रख दिया।

इसी सन ९६४में बेरामखांने बादशाहकी शादी मिरजा अबदुल्ला मुगलकी बेटीसे की। पहले तो वे इस काममें राजी नहीं थे; क्योंकि मिरजा अबदुल्लाकी बहन मिरजाकामरांके घरमें थी और इसलिये उसको कामरांके तरफदारोंमेंसे समझते थे। मगर फिर नासिर-उलमुल्कके समझाने पर आगे होकर बड़ी धूमधामसे शादी करादी।

बङ्गालका हाकिम मुहम्मदखां पहले अदलीके हाथसे मारा गया था। अब उसके बेटे जलालउद्दीनने अदली पर चढ़ाई की। अदली ४ वर्षसे कुछ ऊपर हुकूमत करके पीछे उसके मुकाबिलेमें मारा गया। सिकन्दर सूरने जब यह बात सुनी तब उधर जानेके वास्ते बहुतसा रुपया और माल खानखानाके वकील नासिर-उलमुल्कसे भेजा। खानखानाने बादशाहसे उसकी सिफारिश की। बादशाहने खानखानाकी खातिरसे उसके कसूर माफ करके बिहार जानेका रास्ता दे दिया। तब वह २७ रमजान शनिवार सन ९६४ सावन बदी १४ सम्वत१६१४को मानकोटकी कुंजियां और हाथियोंकी भेट बादशाहके पास भेजकर बिहारको चला गया और बादशाह ६ महीने पीछे २ सव्वाल सावन सुदी ४को सवालक पहाड़से लाहोर रवाने हुए।

खानखाना मानकोटके घेरेमें बीमार हो गये थे और कुछ फोड़े भी निकलआये थे जिससे घोड़े पर सवार नहीं हो सकते थे और बादशाह उन दिनोंमें हाथी ज्यादा लड़ाया करते थे। एक दिन दो बादशाही हाथी लड़ते लड़ते खानखानाके डेरे तक चले आये। उनके पीछे तमाशाई लोगोंकी भीड़ और चीख पुकार होती आती थी। उस पर खानखानाके दिलमें यह वहम खड़ा हो गया कि यह बादशाहके हुक्मसे हुआ है और कुछ बदमाशोंने हांमें हांभी मिला दी। तब खानखानाने अपने भेद जानने वाले एक आदमीको

बादशाहकी धाय, माहम अंगाके पास भेजकर कहलाया कि मैं अपना कुछ कसूर तो नहीं जानता हूं और खैरख्वाहीके खिलाफ कोई काम भी नहीं करता हूं। फिर कैसे चुगलखोरोंने मुझे गुनहगार करके बादशाहकी इतनी बड़ी नामिहरबानी करा दी है कि मस्त हाथी मेरी चादर (कनात) पर छोड़े जाते हैं। माहम अंगाने तसल्लीकी बातें कहलाकर खानखानाको दिलजमई कर दी।

जब बादशाह ११ सव्वाल सावन सुदी १२को लाहोरमें पहुंचे तब खानखाना शमसुद्दीन मुहम्मदखां अत्तकासे(१) (जीजी(२) अंगाके खावंद) गिला करके कहने लगे कि मैं कभी कभी बादशाहको तुम्हारी चुगली और चांटीसे खिंचा हुआ पाता हूं। मैंने क्या किया है और तुम क्यों मेरे खूनके प्यासे होकर बादशाहका मिजाज मुझसे फिराते हो और मेरे प्राण लेना चाहते हो।

अत्तका इसबातसे डरकर कई आदमियों और अपने भाई बंदोंको खानखानाके पास लेगया और कौल कसम करके उनको तसल्ली कर आया।

फिर बैरामखांने बादशाही हाथी अपने भरोसेके अमीरोंको बांट दिये और बादशाहके कुछ खासा हाथी भी इसी तरह आदमियोंको सौंपनेके बहानेसे अलग कर डाले। बादशाह चुपचाप देखते रहे।

मऊका(३) जमींदार तखतमल हुमायूं बादशाहके मरने पर सिकन्दर सूरसे जा मिला था। और जब मानकोटमें सिकन्दरका काम बिगड़ता देखा तब जमींदारोंकेसे हीले बहाने करके बादशाहके लश्करमें आ गया था। बैरामखांने उसको मारकर उसके भाई बखतमलको जो खैरख्वाहीमें हाजिर था उसकी जगह बैठा

(१) (धाऊ) धाय पति।

(२) इसने भी अकबर बादशाहको दूध पिलाया था।

(३) धमरीके पासका एक परगना कांगड़ेकी तलहटीमें।

दिया। यह बात भी बादशाहके दिलमें बुरी लगी; क्योंकि जब यह खुद आ गया था और चाहे कैसेही आया हो तब इस सजाके लायक नहीं था।

बादशाह ४ महीने १४ दिन लाहोरमें रहकर १५ सफर मङ्गलवार सन् ९६५ पौष बदी २ को दिल्लीकी तरफ रवाने हुए; जब जालन्धरमें पहुंचे तब खानखानाकी शादी सलीमा(१) सुलतानासे हुई। हुमायूं बादशाहने यह अपनी भानजी बैरामखांको देनी करके हिन्दुस्तान फतह होनेके पीछे निकाह कर देनेका इकरार किया था। सो अब बैरामखांने बादशाहसे अर्ज करायी। बेगमोंने भी सिफारिश की। आखिर माहम अंगाकी कोशिशसे विवाह और गौना एक सप्ताहमें हो गया।

सलीमा सुलताना बेगमके बापका नाम मिरजा नूरुद्दीन था। उसका बाप अलाउद्दीन और दादा ख्वाजाहसन तूरान देशके पूज्य पुरुषोंमेंसे था। इसको तूरानके बादशाह सुलतान महमूद(२) मिरजाकी बेटी दी गयी थी जो बैरामखांके परदादा अली शकरबेगकी लड़की यशा बेगमसे हुई थी। और इसी सम्बन्धसे बाबर बादशाहने भी अपनी बेटी गुलबर्ग बेगमकी शादी ख्वाजा हसनके पोते नूरुद्दीनसे की थी। सलीमा सुलताना गुलबर्ग बेगमकी बेटी थी। वह पुरानी रिश्तेदारी जो यशा बेगमके व्याहे जानेसे बैरामखांके और बादशाहके बुजर्गोंमें हुई थी वह अब यहां सलीमा सुलतानके साथ विवाह होनेमें खानखानाके काम आयी।

बादशाह लुधियानेसे हिसारमें आये। खानखानाभी साथ थे। यहां नासिरउल्मुल्क और शेखगदाईमें कुछ झगड़ा हो गया। बैराम-

(१) सलीमा सुलताना बहुत सुन्दर सुघड़ और लिखी पढ़ी थी। काव्य रचना भी खूब करती थी। बैरामखांके पीछे बादशाहने उससे निकाह कर लिया।

(२) बाबर बादशाहका काका था।

खांने शेखकी तरफदारी की जिससे नासिरउलमुल्क बुरा मान कर कई दिनों तक दरबारमें नहीं आया। कुछ दिनों पीछे कई भले आदमियोंने बीचमें पड़कर मेल करा दिया(१)।

५ उरदी बहिश्त २५ जमादिउस्सानी शुक्रवार सन ९६५ बैशाख बदी १२ संवत १६१५को बादशाह दिल्लीमें दाखिल हुए।

नासिरउलमुल्क कुल मुखतार था। मुल्क और मालके सब काम उसके ऊपर छोड़े हुए थे। वह खैरख्वाहीसे काम करनेमें बैरामखांका भी मुलाहिजा नहीं रखता था। बैरामखां उससे दिलमें कुढ़ते तो बहुत थे; लेकिन मौका देखते थे।

बुर्जअली(२) और मुसाहिबबेग(३) दो बड़े बदमाश थे

---

(१) ये दोनों बैरामखांके मुसाहिब थे। नासिरउलमुल्कको नाराज करना मानो बैरामखांकी बुद्धि विपरीत होनेका एक चिन्ह था; क्योंकि उनकी तरफसे सारा काम बादशाहीका वही करता था और अब वह बादशाहके पक्षमें हो गया। (मुन्तखिबउल तवारीख)।

(२) बुर्जअली अवधके हाकिम अलीकुलीखांका नोकर था। नासिरउल मुल्क अलीकुलीखां पर फौज भेजा चाहता था; क्योंकि उसका चाल चलन ठीक नहीं था; बैरामखां अलीकुलीखांकी खातिरसे टालते थे। इसीलिये अलीकुलीखांने बुर्ज अलीको बैरामखांके पास भेजा था। वह एक दिन नासिरउलमुल्कको बुरा भला कहने लगा जिसपर दिल्लीके किलेपरसे गिराकर मार दिया गया।

(३) मुसाहिबबेग पहले तो हुमायूं बादशाहकी सेवामें रहता था। फिर अलीकुलीखांके पास रहने लगा। इस वक्त दिल्लीमें आ गया था। इसका भी चलन ठीक नहीं था; इसलिये बैरामखांने कैद करके मक्केको भेज दिया; मगर नासिरउलमुल्कने खानखानासे २ चिठ्ठियां लिखाकर डलवायीं एकमें मारने और दूसरेमें छोड़नेका हुक्म था। मारनेकी चिठ्ठी निकली और नासिरउलमुल्कके आदमियोंने जाकर उसको दिल्लीसे कुछ दूर रास्तेमें मार डाला।

जिनको नासिरुलमुल्कने बैरामखांको मरजीके खिलाफ मरवा डाला था।

इधर बैरामखां और मुनअम(१)खांने मिलकर बादशाहके अनचिन्तक जलालुद्दीन महमूदको(२) जो इन लोगोंकी खुशामद नहीं करता था कतल करा दिया। इससे भी बादशाहका दिल बहुत जला; मगर गुस्सेको पी गये।

१७ आबान सन २ इलाही १७ मुहर्रम सन ९६६ इतवार मगसर बदी ४ संवत १६१५को बादशाह दिल्लीसे आगरेमें आये। यहां शाह मुहम्मद जो बैरामखांको तरफसे कन्धारमें हाकिम था कन्धारका किला शाह ईरानको सौंपकर बादशाहके पास हाजिर हुआ।

यह पहले लिखा जा चुका है कि शाह मुहम्मदने इकरार करके भी कन्धार शाह ईरानको नहीं सौंपा था। इसलिये शाहने अपने भतीजे सुलतान हुसेन मिरजाके(३) साथ कन्धार पर फौज भेजी। वह शाह मुहम्मदसे हारकर भाग गयी। तब दूसरी फौज आयी। शाह मुहम्मदने बादशाहको अर्जी भेजी। बादशाहने उसको हुक्म लिखा कि बड़े हजरत फरमाया करते थे कि जब हिन्दुस्थान फतह हो जायगा तब कन्धार शाहको दे देंगे। यह अच्छी बात न हुई कि उसने उन लोगोंसे लड़कर यहांतक बात

(१) मुनअमखां काबुलका हाकिम था।

(२) जलालुद्दीन महमूद गजनीनका हाकिम था। उससे मुनअमखां और बैरामखां दोनों अदावत रखते थे। इस वास्ते वह अपने बचावके लिये हिन्दुस्थानको आता था। मगर मुनअम खांने पकड़वा मंगाया। इधरसे बैरामखांने भी उसके मारनेका फरमान भेज दिया। इस तरह वह अपने भाई मसऊद समेत काबुलमें मारा गया।

(३) सुलतान हुसेन मिरजा शाह तुहमास्पके भाई बहराम मिरजाका बेटा था।

बढ़ायी ; अब मुनासिब है कि वह किला उनके नौकरोंको सौंप कर और माफी मांग कर दरगाहमें आ जावें ।

इस हुक्मके पहंचते ही शाह मुहम्मद सुलतान हुसैन मिरजाको किला सौंपकर चला आया ।

कुछ दिनों पीछे नासिरुलमुल्क बीमार हुआ और खान-खाना उसके देखनेको गये तो दरबानने बेसमझीसे कहा कि मैं खबर करता हूं। इसपर बैराम खां बहुत झल्लाये ; नासिलमुल्क खबर पाकर दौड़ा आया और बहुत निहोरे करके खानखानाको अन्दर ले गया तो भी उसके साथ थोड़ेसे ही आदमी जाने पाये जिससे वे नाक भौं चढ़ाये हुए बाहर आये, फिर शेख गदाई (१) वगैरहने और उनको भड़काया तो उन्होंने दो तीन दिन पीछे ख्वाजा अमीनुद्दीन वगैरह अपने नौकरोंको नासिरुमुल्कके पास भेजकर कहलाया कि तू जब कन्धारमें हमारे पास आया था तो एक गरीब विद्यार्थी था ; हमने तुझको बढ़ाकर बड़े दरजेपर पहुंचाया। मुल्लासे अमीर बनाया, मगर तू ओछे पेटका आदमी था ; जलदीसे अफर गया और हमे तुझसे ऐसे ऐसे फसाद होनेका डर है कि जिनका इलाज हम मुशकिलसे कर सकेंगे। इसलिये यह बेहतर है कि तू कुछ दिनोंके लिये अपने कंवलमें पांव समेटकर बैठ जा और नक्कारा निशान वगैरः अपनी अमीरी और घमण्डके सामान सौंप दे तथा अपना मिजाज दुरुस्त कर ले जिसमें तेरा और दुनियाका फायदा है। फिर जैसा हम तेरे वास्ते अच्छा समझेंगे करेंगे।

१। शेख गदाई शेख जमालीका बेटा दिल्लीका रहनेवाला था। जब बैराम खां गुजरातमें गये थे तो यह वहां था और इसने बैराम खांके साथ अच्छा सलूक किया था जिसके पलटेमें बैराम खांने इसको सदर (दानाध्यक्ष) का ओहदा सन् ९६३ संवत १६१२ में दिया था।

नासिरुलमुल्क खुशीसे सरदारीका सब सामान उनको सौंपकर घरमें बैठ रहा तो भी खानखानाने चुगलखोरोंके कहनेसे कुछ आदमियोंके साथ उसको बयानेके (१) किलेमें भेज दिया जहांसे वह मक्के जानेकी इजाजत लेकर गुजरातको गया। जब राधनपुरमें(२) पहुंचा तो फतह खां बलोचने उसको बड़े आदर सत्कारसे कुछ दिनोंके लिये अपने पास रख लिया।

इतनेमें मिरजा शर्फुद्दीन (३) हुसैन और अदहमखांकी चिट्ठियां नासिरुलमुल्कको पहुंचीं जिनमें लिखा था कि जहां पहुंचा हो वहीं ठहर जावे और देखता रहे कि क्या होता है।

नासिरुलमुल्क, राधनपुरसे लौटकर रणथम्भोरके (४) पास झायनके घाटेमें आ रहा।

१। बयाना अब भरतपुरके राज्यमें है।

२। राधनपुर गुजरातमें है। उस वक्त तो गुजरातके बादशाहका वहां अमल था फिर संवत १६२८में अकबर बादशाहका हुआ। संवत १७७३में नवाब मुहम्मद शेरको जागीरमें मिला जबसे उसकी औलादके कबजेमें है और पालनपुरमें एजण्टोंके नीचे है।

३। सन् ९६३ में जब बादशाह जालन्धरमें थे तब यह मिरजा शर्फुद्दीनहुसैन काशगरके बादशाह अबदुर्रशीदखांका खत लेकर आया था। इसकी मा तूरानके बादशाह सुलतान अबूसईदकी नवासी थी जिससे बादशाहने उसको बहुत खातिर और इज्जतसे अपने पास रख लिया था।

४। रणथम्भोर वही किला है जहां हम्मीर चौहान हुआ है जिसका हम्मीहठ मशहूर है। उससे संवत् १३५८ में अलाउद्दीन खिलजीने लिया। फिर संवत् १५७२ तक मालवेके बादशाहोंके पास रहा। सुलतान महमूद मालवीसे चित्तौड़के राणा सांगाने संवत् १५७२में छीना। उनकी तरफसे बूंदीके राव

बैरामखांने यह सुनकर शाहकुलीखां महरम, और खुर्रम-खांको नासिरुलमुल्कके पकड़नेके लिये भेजा। जब ये वहां पहुंचे तो वह दिन भर तो इनसे लड़ा और रातको थोड़े आदमियों सहित निकल गया।

इस तरह बैरामखांने बेपरवाई और चुगुल खोरोंके कहनेसे अपने ऐसे कामके आदमीको दूर करके अपने पांव पर आप कुल्हाड़ा मारा।

बादशाह बैरामखांके इस कामका बदला भी खुदाके ऊपर छोड़कर कुछ नहीं बोले क्योंकि वे सब कारखाना सलतनतका बैरामखांको सौंपकर तकदीरका तमाशा देखते थे।

बैरामखांने अब हाजीमुहम्मदखां सीसतानीको अपना वकील बनाया; मगर असलमें वकील शेख गदाई था; क्योंकि बैरामखां कोई काम बगैर उसकी सलाहसे नहीं करते थे।

बादशाहके दिलमें खानखानाकी ये जबरदस्तियां खटकती तो बहुत थीं; लेकिन वे मुलाहिजेके मारे कुछ नहीं बोलते थे। क्योंकि हुमायूं बादशाह उनको अतालीक कहकर अकसर खांन बाबाके नामसे पुकारते थे और वही लिहाज बादशाहको भी था। वे सैर शिकारमें लगे हुए चुपचाप सब बातोंको देखा करते थे। उधर वलीबेग, जुलकदर और शेखगदाई कमबो वगैरह बेरमखांको बहकाते थे और इधर माहम अङ्गा अदहमखां (१) और मिरजा शर्फुद्दीन, बादशाहको बैरमखां और उनके खुशा-मदी मुसाहिबोंको सजा देनेकी सलाह देते थे।

सुरजन हाडाके पास था। सुरजनसे अकबर बादशाहने संवत् १६२६ में लिया। सं॰ १८१५ में दिल्लीकी बादशाही कमजोर होने पर किलेदारोंने जयपुरके महाराजा माधोसिंहको सौंप दिया जबसे अबतक जयपुरवालोंके कबजेमें है।

१। माहम अङ्गाका बेटा।

आखिर जब बादशाहने इतनी क्षमा करते करते और खान बाबा कहते कहते भी खानखानाको रस्ते पर आते न देखा तो शिकारके बहानेसे बयानेमें जाकर उनके दबावसे निकल जानेकी सलाह की माहमअङ्गाने यह भेद दिल्लीके हाकिम अहाबउद्दीन खांको लिख भेजा।

बादशाह ८ फरवरदीन सन ४ तारीख २० जमादिउल अव्वल सोमवार सन् ९६६ (चैत बदी ७ संवत् १६१६) को शिकारके वास्ते कोलकी तरफ जानेका नाम लेकर यमुनासे उतरे और मिरजा कामरांके बेटे मिरजा अबुल कासिमको (१) भी इस शिकारमें शामिल रखनेके लिये बुलवा लिया जो बैरामखांके पास रहता था। यह सावधानी इस मतलबसे की गयी थी कि उस आंखके अन्धे और गांठके पूरेके हाथमें यह लकड़ी भी न रहे।

सिकन्दरेमें पहुंच कर माहम अङ्गाने यह भेद अपने बेटे अदहमखांके ससुर (२) मुहम्मद बाकीसे कहा। मगर वह बैरामखांके डरसे साथ भी न हुआ और बैरामखांको इस हालकी खबर भी कर दी। बैरामखां ऐसी बातें पहले भी सुन चुके थे। इस लिये उन्होंने कुछ परवा न की।

बादशाह शिकार खेलते हुए कोलमें (३) पहुंचे वहांसे अपनी मांको कुशल पूछनेके लिये जो उन दिनों कुछ बीमार थी

१। इस शाहजादेको बैरामखां हमेशा अपने पास रखते थे और बहुत लिहाज करते थे।

२। यह मिरजा हिन्दालका परवानची [दूत] था और इसकी बटीसे बादशाहने पिछले साल ही अदहमखांकी शादी करा दी थी।

३। कोलको अब अलीगढ़ कहते हैं।

थी, दिल्लीको चल दिये। खुरजेमें (१) शहाबुद्दीन अहमदखां अपने सब भाई बन्दोंके साथ पेशवाईके लिये हाजिर था। बादशाह उस पर मेहरबान होकर १७ फरवरदीन २८ जमादि उस्सानी मङ्गलवार (चैत बदी ३०) को दिल्लीमें दाखिल हुए और सब जगह फरमान लिख भेजे कि बैरामखां उलटा चलने लगा है जिससे हम उसको अपनी नजरोंसे गिराकर दिल्लीमें चले आये हैं। जो अपना भला चाहता हो वह यहां हाजिर हो जावे।

उस वक्त शमशुद्दीनखां "अतका" बझोरेमें (२) और मुनअम खां काबुलमें था। इन दोनोंके नाम भी हाजिर होनेके हुक्म पहुंचे।

जब शमशुद्दीनखां आया तो बैरामखांका नक्कारा निशान और तुमन तोग उसको इनायत हुआ और पंजाबकी सूबेदारी भी दी गयी।

शाहबुद्दीनखांने दिल्लीका किला सजाया और बादशाहकी सल:-हमें शामिल हुआ।

बैरामखांसे बादशाहका मिजाज बदल जानेकी खबर थोड़े दिनोंमें सब जगह फैल गयी और लोग बैरमखांको छोड़ छोड़ कर बादशाहके पास आने लगे। सबसे पहले कयाखां गंग आया था जो बैरामखांके बड़े अमीरोंमेंसे था।

जो आता था उसको माहम अंगा और शहाबुद्दीन अहमद खांकी सलाहसे जागीर मनसब और खिताब दिया जाता था।

बैरामखां पहले तो अपने जोर और दबावके घमण्डमें भूल कर इस बातको खेल ही समझते रहे। पर जब बादशाहके फरमानोंके पहुंचने पर अपने निज आदमियोंको भी पाससे खिसकते

१। दिल्ली और अलीगढ़के बीचका एक शहर।

२। पंजाबका एक शहर जो लाहोरके परे है।

हुए देखा तो आंखें खुलीं और मिरजा अबुलकासिमको ढूंढ़ा तो नहीं पाया। तब तो बहुत घबराये और तरसून मुहम्मदखां हाजी मुहम्मद खां और ख्वाजा अमीनुद्दीन महमूद [ख्वाजाजहां] को बादशाहको खिदमतमें माफी मांगनेके लिये भेजा, मगर बादशाहने उनको भी समझाकर रख लिया और पीछे नहीं जाने दिया।

बैरामखांने यह सुन कर कभी तो यह विचार किया कि अभी बादशाहके पास बहुत भीड़ नहीं हुई है; जल्दीसे पहुंच कर बन्दोबस्त कर लूं और कभी इसको बेअदबी समझकर माफी मांगनेके वास्ते जाना मुनासिब समझा और आखिर इसी मनशासे जानेकी तय्यारी की; मगर बादशाहके सलाहकारों (मन्त्रियों) को उनका आना भी मंजूर नहीं था। कुछ लोगोंने कहा कि अब वह दिल्लीमें आवे तो हजरत लाहोरको चले जावें और जब लाहोरमें आवे तो काबुलको सिधारें। उससे न मिलें।

बहुतोंने कहा कि कहीं नहीं जाना चाहिये। अगर वह लड़ना चाहे तो यहीं रह कर उससे लड़ें। बादशाहने भी इसी बातको पसन्द करके लड़नेके लिये वहीं पांव जमाये और तरसून मुहम्मद खां और हबीबुल्लाहको यह कह कर भेजा कि बैरामखांको किसी तरह न आने देना। हम अभी उसे नहीं देखेंगे।

बैरामखांने जब इस तरह दिल्ली जानेका रास्ता बन्द पाया और लड़ाईके विचारसे जाना उचित न देखा तो उनको बड़ा चिन्ता हुई कि अब क्या करना चाहिये। वलीबेग और शेख गदाई तो कहते थे कि अभी बादशाहके पास अधिक सेना नहीं है; जल्दीसे चल कर अपना काम कर लें परन्तु खानखाना इस कुकर्मको अपना धर्म नहीं समझकर कभी तो कहते थे कि मेरे बिना बादशाहीका काम नहीं चलेगा; इसलिये नम्रतापूर्वक बादशाहको मना लेनेका उपाय करना चाहिये। कभी यह विचार करते थे कि अभी तो बहादुर खां और उसके लशकरसे जा मिलूं जो मालवे पर जा रहा है और मालवा फतह करके वहां रहजाऊं। फिर

जैसा अवसर देखूं वैसा करूं। कभी यह सोचते थे कि आगरा छोड़ कर संभलके [१] रास्तेसे अलीकुलीखांके पास होकर पठानोंके देशमें चला जाऊं और कुछ दिन वहां रह कर अपने हितका साधन करूं। कभी यह सूझती थी कि विरक्त होकर मक्के जानेका जो विचार किया करता था सो अब उसका समय आ गया है क्योंकि बादशाह अपना काम आप करने लगे हैं। इसलिये बादशाहसे हज करनेकी आज्ञा मागूं। इसमें यह भी आशा थी कि कदाचित् वे दयालुतासे अपने पास बुला लेंगे।

निदान यही विचार स्थिर करके बहादुरखांको (२) सीपरीसे वापस बुला लिया और बादशाहकी खिदमतमें रवाना कर दिया; इस तरहसे अपने आदमियोंके वहांसे भेजनेमें यह बात सोची थी कि जो मेरे हितू हो तो ऐसे लोगोंका बादशाही लशकरमें रहना अच्छा है और जो ये भी जाना चाहते हो तो इनको साथ रखनेमें फायदा नहीं, विदा कर देनेमें नेकनामी भी है।

फिर मक्के जानेका विचार प्रकट करके सिकन्दर पठानके बेटे और गाजीखां तंबरको बादशाही मुल्कोंमें फसाद करनेके लिये भेजा और इसी मतलबकी पोशीदा लिखावटें भी इधर उधर रवाना करके अलवरको कूच किया कि जिससे वहांसे बालबच्चोंको लेकर पंजाबमें चले जावें।

बादशाहको जब यह हाल मालूम हुआ तो खानखानाको लिखा कि तुम उन लोगोंके बहकानेसे कि जो इस कष्टके कारण हुए हैं परिणाम न सोचकर देशोंको विध्वंस करनेके वास्ते

१। रुहेलखण्डका एक पुराना शहर जो मुरादाबादके पास है और जिसका नाम शास्त्रमें शंभलग्राम लिखा है। कहते हैं कि कल्की अवतार इसी जगहमें होगा।

२। सीपरी ग्वालियरके पास मालवेके रास्तेमें है।

बाहर निकले हो और तुमने सिकन्दरके बेटे और गाजीखांको आज्ञा दी है कि जाकर राज्यमें उपद्रव करें। महदीकासिम खांको खत लिख कर उसके दीवान मुबारकके हाथमें भेजा है कि मैं लाहोरको आता हूं; किला किसी दूसरेको न देना। तातार खां पवभद्दयीनो भी ऐसा ही संदेशा भेजा है और आप अलवरको चले हो कि वहांसे लाहोरको कूच कर जाओ। हमको यह भरोसा है कि तुमने अपनी समझसे तो इनमेंसे कोई भी काम नहीं किया है। लोगोंने बहकाकर यहांतक बात बढ़ा दी है परन्तु तुम ही कहो कि क्या ४०(१) वर्षतक स्वामिभक्तिसे सेवा करने, प्रतिष्ठासे परमपदको पहुंचने, और जगत्‌में कीर्त्ति पानेके पीछे भी इस शेषावस्थामें स्वामिद्रोही बनोगे और अपने सिर्जनहारसे भी लज्जा नहीं करते। तुमने हमको इतने कष्ट दिये हैं तो भी हम तुम्हारा भला चाहते हैं और अभी तुम्हारा मिलना बन्द है। इस लिये जो तुमको कोई प्रदेश भी दें जहां कि तुम चले जाओ तो फिर स्वार्थी लोग बातें बना कर हमको तुमसे अप्रसन्न करेंगे। इतने तो यही ठीक है कि जैसा तुमने अर्जीमें लिखा है हज (२) करनेको चले जाओ और जो सामग्री भेंटको तुमने सहरन्द और लाहोरमें प्रस्तुत रखी है उसे लदवाकर वहांसे मगवा लो।

१। इससे जाना जाता है कि खानखाना संवत १५४६से बादशाही नौकर थे और यही एक आधार उनकी अवस्था जाननेका सारे अकबरनामेमें है। और इसपरसे कह सकते हैं कि उस समय वे ५६ बरसके होंगे; क्योंकि मुआसिरउलउमराके कर्त्ताने उनका हुमायूं बादशाहके पास आना १६ बरसकी उमरमें लिखा है यदि यह कलपना सही है तो उनका जन्म भी संवत १५६० के लगभग होना संभव है। हुमायूं बादशाह संवत १५६५ में जन्मे थे।

२। मक्केकी यात्राको मुसलमान हज कहते हैं।

फिर जब हजसे कृतार्थ होकर आओगे तो हम भलीभांति तुमसे मिलकर जो तुम कहोगे उसके करनेमें इनकार नहीं करेंगे और पिछली सेवाएं ध्यानमें रखेंगे। इन लोगोंके कुसंगसे तुम्हारी प्रतिष्ठा संसारमें भंग हो गयी है; परन्तु हम नहीं चाहते कि तुम बदनाम होओ और स्वार्थी लोगोंकी बातोंमें आकर सीधे रस्तेसे बहको। जैसे तुम हमारे प्रतापसे इस लोककी परम कामनाओंको पहुंचे हो वैसेही हमारे उपदेशसे उस लोकके पुण्यको भी प्राप्त करो।

बैरामखांने इस शिक्षापत्र पर कुछ ध्यान नहीं दिया। माहमअंगाने बादशाहसे कहकर खानखानाका काम बहादुरखांको दे दिया। कयाखां गंगको बहरायचमें (१) जागीर देकर उधर भेजा। सुलतान हुसेन जलायर और कुछ और लोग कैद किये गये। मुहम्मद अमीन दीवान भाग गया। बहादुरखांको भी इटावेमें जागीर देकर भेज दिया। इस तरह माहम अंगाकी सलाहसे खानखानाके आदमी जो दरगाहमें थे तितर बितर कर दिये गये।

१२ रजब मंगलवार (चैत सुदी १२ संवत् १६१७) को बैरामखां आगरेसे अलवरकी तरफ रवाना हुए। बादशाहको खबर दी गयी कि वे नागोरके रास्तेसे पंजाब जानेके इरादेमें हैं। इस पर बादशाहने भी उनका रास्ता रोकनेके लिये २२ रजब शुक्रवार (वैशाख बदी ८) को नागोरकी ओर कूच किया और मीर अब्दुल लतीफको बैरामखांके पास भेजकर फिर ये बातें कहलायीं कि तेरी बन्दगी और खिदमतके हक जो इस बड़े घरानेमें हैं सब लोगोंको मालूम हैं। हम जो कम उमर होनेसे सैर और शिकारमें मशगूल रहकर मुल्क और मालका काम नहीं करते थे तो सब बातें तेरे ऊपर छोड़ी गयी थी। अब हम अपनी बादशाहीका काम करने लगे हैं तो तू इसको खुदाकी

१। अवधका एक शहर।

बड़ी बख्शिशोंमेंसे समझकर शुक्र गुजार हो और कुछ समयके वास्ते हज करनेको चला जा कि जिसकी बाबत हमेशा कहा करता था हिन्दुस्थानमेंसे जो जागीर और जो कुछ तू चाहे वही हम तेरे वास्ते मुकर्रर कर देंगे जिसका हासिल तेरे आदमी फसलको फसल बर्षा बर्षी तेरी सरकारमें पहुंचाया करेंगे।

२६ रजब मङ्गलवार (बैशाख बदी १३) को बादशाहके डेरे जझ्झरमें (१) हुए। वहां नासिरुलमुल्क (मुल्ला पीर मुहम्मद) भी गुजरातसे आकर हाजिर हो गया। बादशाहने उसको खांका खिताब, खिलअत, झण्डा और डङ्का देकर अहमदखां और मिरजा शर्फुद्दीन वगैरहके साथ नागोरको भेजा कि जो खानखाना मक्केको जाता हो तो उसको बादशाही सीमासे निकाल बाहर करें और जो पंजाब जाना चाहे तो सजा दें।

नागोर (२) मिरजा शर्फुद्दीनको जागीरमें दिया गया।

फिर बादशाह जझ्झरसे लौटकर ११ शाबान बुधवार (बैशाख सुदी १३।१४) को दिल्लीमें आ गये और अपना काम करने लगे।

बैरामखां अभी मेवातमें ही थे कि बादशाही फौजके आनेकी खबर उनके लशकरमें फैली जिसके सुनते ही सब लोग उनको छोड़कर बादशाहकी सेवामें चले गये। उनके पास सिवाय वलीबेग या उसके दो बेटे हुसैन कुली और शाह कुलीके जो उनके सम्बन्धी थे, या शाहकुली महरम तथा हुसैनखां वगैरह कई आदमियोंके और कोई न रहा।

१। जझ्झर एक कसबा दिल्लीसे आगे जिले रोहतकमें है।

२। नागोर अब जोधपुरके राज्यमें जोधपुरसे ४० कोस उत्तरमें है। उस समय भी जोधपुरके नीचे था, शर्फुद्दीनको जागीरमें देनेका यह मतलब था कि वह फतह करके अपने कबजेमें कर ले।

जब बादशाहकी फौज कूच करती हुई पास आ पहुंची और बैरामखांको निश्चय हो गया कि अब बचावकी जगह नहीं रही तो उन्होंने रियासतकी आस छोड़कर बादशाहको कसूरोंकी माफी और मक्के जानेकी छुट्टी मिलनेकी अरजी लिखी और कई हाथी, तुमन, तौग, झण्डा, नक्कारा और सब सामान सरदारीके हुसेन कुलीके साथ दरगाहमें भेज दिये और उन अमीरोंको जो उनके पीछेमें लगाये गये थे लिख भेजा कि आप लोग किस वास्ते तकलीफ उठाते हैं ? मैं आप ही दुनियासे उदास हो गया हूं। वे लोग इस बातको सच समझकर लौट गये। फिर शेख गदाई भी डरता डरता दरगाहमें आ गया। बादशाहने उस पर भी बहुत मेहरबानी फरमायी।

खानखाना बादशाही सीमा छोड़कर बीकानेर गये। (१) वहांके राव कल्याणमल और कुंवर रायसिंह सत्कार पूर्वक सामने आकर मिले। बैरामखां कुछ दिनों तक उनके पाहुने रहे। वहां यह खबर उड़ी कि मुल्ला पीर मुहम्मद गुजरातकी ओरसे चढ़ा चला आ रहा है। इस पर कुटिल बुद्धि वाले साथियोंने फिर उनको भड़काया तो उन्होंने खुल्लमखुल्ला बागी होकर बीकानेरसे पंजाबको कूच किया और कुछ सेना एकत्र करके उत्तर सीमाके अमीरोंको लिखा "मैंतो हज्जको जाता था परन्तु माहमअङ्गा आदि मेरे शत्रुओंने बादशाहका मन मुझसे फेर कर यह प्रसिद्ध कर रखा है कि हमने बैरामखांको निकलवा दिया है। इसलिये मेरे जीमें यह आया पहले इन दुर्जनोंको दण्ड दूं

१। बीकानेर जानेका यह कारण हुआ था कि जब खानखाना बादशाही अमलदारीसे मारवाड़ होकर गुजरातको जाने लगे तो जोधपुरके राव मालदेवने फौज भेजकर रस्ता रोक दिया जिससे वे उधर न जा सके और नागोरसे बीकानेरको चले गये थे।

फिर इसको जाऊं और मुल्ला पीर मुहम्मदसे भी समझूं जिसने इन दिनोंमें नौबत और निशानका मान प्राप्त करके मेरे निका-लनेका बीड़ा उठाया है।"

बादशाहने समाचार सुनकर फिर बेरामखांको एक फरमान लिखा जिसका यह आशय था—

"खानखाना जाने कि वह इस बड़े घरानेका पाला हुआ है। हमारे पिताने उसकी सेवा और भक्ति देखकर पूरी पालना की और हमारी शिक्षाका बड़ा काम उसको सौंपा। उनके पीछे हमने उसकी पिछली बन्दगीका विचार करके सारे राजकाज उसीके भरोसे पर छोड़ दिये। उसने जो अच्छा बुरा करना चाहा वही किया यहां तक कि इन ५ वर्षोंमें कई कुकर्म्म ऐसे भी किये कि जिनसे सब लोगोंको घृणा हो गयी जैसे शेख गदाईको सारे मौलवियों और सैयदोंके ऊपर करके इतना बढ़ाया कि उसको भी (१) तसलीम करनेकी माफी दे दी और वह बड़े घमण्डसे घोड़े पर सवार होकर हमसे हाथ मिलाता था।

जो अधम सेवक अपने थे उनको तो खान और सुलतानके खिताब देकर झण्डे डङ्के और बड़ी उपजके देश दिये और मेरे बापके अमीरों, खानों और सुलतानोंको जिनका बड़ा हक था रोटीका भी मुहताज कर दिया और जो हमारे दादाके सेवक वर्षोंसे उमेदवारी करते थे उन्हें खानेको भी न दिया और जो लोग हमारी सवारियों और शिकारोंमें दौड़ते थे उनके प्राणों तकका लागू था। अपने नौकरोंको तो जो भांति भांतिके अन्यान्य और अपराध करते थे कुछ नहीं कहता था और हमारे नौकरोंसे जो जरा सी भी चूक हो जाती या कोई झूठ भी उनका नाम ले लेता तो उनके मारने और घर लूटनेमें देर नहीं करता था।

१। बादशाहको झुककर सलाम करना।

शाहकुली नारंजी मुहम्मद ताहिर और लश्करखान जैसे धूर्तों और खुशामदियोंको सत्यवादी समझ कर पालता था और उनका पक्ष करता था। शाहकुलीने आज्ञा भङ्ग की और अश्लील उत्तर दिया जिससे वह जीभ काट लेने और वध करनेके योग्य था पर उसे कुछ न कहा और सुनकर चुप हो रहा।

ऐसे ही लश्करखान, भी उसके और दूसरे लोगोंके समक्ष ऐसा कटु वाक्य बोला था कि उसे प्राण दण्ड दिया जाता और बकी बेगको वह आप जानता है कि कजलबाशोंमें (१) उसकी क्या दर थी और क्या उसने सेवा की थी परन्तु अपना जमाई जानकर बड़े बड़े अमीरोंसे भी उसका दरजा बढ़ा दिया। हुसैन कुलीको जिसने अब तक एक मुर्गसे भी पंजा नहीं लड़ाया था सिकन्दरखां, अबदुल खां और बहादुरखांके बराबर उपजाऊ जागीरें दीं और हमारे बड़े बड़े सरदारोंको उजड़ गांवोंपर टाला।

फिर इन दिनोंमें तो उससे ऐसे ऐसे समाचार होने लगे थे कि जिनसे हमको क्षोभ ही क्षोभ होता जाता था और तो क्या जो थोड़े से लोग हमारे पास रह गये थे उनसे भी वह अलग करके हमको अकेला ही रखा चाहता था। इसलिये हम आगरेसे दिल्ली चले आये और उसको लिखा कि कुछ पेच ऐसे पड़ गये हैं कि वह हमसे मिल नहीं सकता है और हम उससे इतना बहुत दुख पाकर भी उसको वैसा ही खानखाना जानते हैं और उसके चित्तकी शान्तिके लिये शपथ करते हैं कि उसके धन और प्राण हरनेका हमारा विचार कदापि नहीं है; परन्तु इस राजके काम आप ही किया चाहते हैं। इसके सिवा और जो मनो-रथ हो अरजीमें लिखा भेजे सो जिस रीतिसे हम योग्य समझेंगे हुक्म देंगे।"

१। ईरानियोंमें।

वह बहुधा हमसे कहा भी करता था कि अब समय आ गया है कि आप अपनी बादशाहीका काम किया करें। इसलिये हमने जाना था कि वह हमारा काम करना सुन कर प्रसन्न होगा, परन्तु सुना गया कि उसने राज्यलक्षणासे ४० वर्षतक हमारे घरसे अपने लालन पालन और पोषण होनेका उपकार भूल कर दुर्जनोंका कहना माना जो उसको स्वामिद्रोह और कृतघ्नताके पापोंका भागी बनाया चाहते हैं। इसको न समझ कर उसने सिकन्दरके बेटे और तातारखांको उपद्रव करने पर उठाया है और राज्यमें विघ्न डालनेके लिये पंजाब जानेका विचार किया है।

हमको इन बातोंपर विश्वास तो नहीं होता क्योंकि वह हमारे घरमें पला है और हमारा हुक्म मानना उसका धर्म है।

"अब हमारा यही कहना है कि जो लोग उसको बहकाते हैं उन्हें पकड़ कर हमारे पास भेज दे। हमने इन ५ वर्षों में सदा उसका उचित और अनुचित कहना किया है सो अब वह भी हमारा यह वाजबी हुक्म न टाले। हम उसके अपराध क्षमा कर देंगे और जो वह सेवामें आना चाहेगा तो उचित समय देख कर बुला भी लेंगे; क्योंकि अभी तक उसकी पिछली सेवा और भक्ति हमारे हृदयमें है। हम चाहते हैं कि उसका नाम जो देश देशान्तरमें सुविख्यात हो रहा है स्वामिद्रोहमें निन्दित न हो जावे।

यह हमने उसको चेता दिया है सो वह कभी कुछ और विचार न करे। परन्तु जो अब भी घमण्डसे नहीं मानेगा तो हम सेना सज कर आते हैं। उसको नष्ट कर देंगे। हमारे उदयका समय है और उसके अस्तका। हम जीतेंगे और वह हारेगा। पछतावेगा और पकड़ा जावेगा। क्या वह अपने विनाश कालका अनुभव इस प्रत्यक्ष प्रमाणसे नहीं करता है कि इन ५ वर्षों में उसने अपने मनुष्योंकी कैसी कुछ पालना इस आशासे की थी कि कि बुरे दिनोंमें काम आवेंगे और जिनको भाई और बेटा कहता

था अभी जिनके अलग होनेका लेशमात्र गुमान भी नहीं करता था वे ही सब अभीसे उसको छोड़ गये हैं और जो थोड़े रह गये हैं वेभी एक एक करके हमारे पास चले आवेंगे और उसको अकेला छोड़ देंगे। इति।

इस पत्रको पढ़ कर खानखाना फिर भड़के और बीकानेरसे पंजाबको रवाना हुए। जब पतरहंदेके (भिटंडेके) किलेके पास पहुंचे जो उनके निज सेवक शेर मुहम्मद दीवानकी जागीरमें था तो मिरजा अब्दुर्रहीमको स्त्रियों और धन सम्पत्ति सहित उसके पास (जिसे बेटेके बराबर पाला था) छोड़कर आगे बढ़े। पीछेसे शेर मुहम्मद उनको सब सम्पत्तिको दबा बैठा और उनके पुत्र कलत्रादिको बादशाहके पास ले गया। इस दुस्सह दुःखकी चोट बैरामखांके कलेजे पर और भी बेढब लगी और वे जब थारे ग्रामके पास पहुंचे तो मिरजा अब्दुल्लाह मुगल वहां उनसे लड़नेको तैयार हुआ। वलीबेग थारे पर गया और हार कर आया। बादशाहने जब खानखानाका बीकानेरसे पंजाबको जाना सुना तो यह इरादा किया कि एक अच्छा लशकर भेज कर उनका रास्ता रोक दें जिससे लाहोरमें जाकर कुछ बखेड़ा न करे। तब माहम अंगाने अपने बेटे अहमदखांको तो रख लिया और शमशुद्दीन खां अतगाको बहुतसे अमीरोंके साथ खानखानाके ऊपर भेजा। और पीछेसे बादशाह भी २० जीकाद मंगलवार (भादों बदी ७ संवत १६१७) को दिल्लीसे रवाना हुए और हुसेन कुली खांको मुहम्मदखां कोकाके हवाले कर गये।

बैरामखां जालंधरको जाते थे कि शमशुद्दीन खांने गांव गुनाचूरमें पहुंच कर उनका रास्ता रोक लिया। बैरामखांने अपनी सेनाके दो विभाग करके वलीबेग, शाह कुलीखां मरहम, वलीबेगके भाई इसमाइल कुलीखां, हुसेन खां और याकूब सुलतानको आगे भेजा और दूसरे विभागको ५० हाथियों सहित अपने पास रखा।

जिलहजिके (१) लगते ही लड़ाई हुई। पहले ही हल्लेमें बादशाही लशकर खानखानाकी अगली फौजसे हार कर भाग निकला। असग़रुद्दीन खांके पास थोड़ेसे आदमी रह गये थे कि इतनेमें खानखाना पीछेसे आये। आगे एक दलदल पड़ती थी जिसमें उनके हाथी फंस गये और रास्ता रुक गया। इसलिये खानखानाने बायें हाथको मुड़ कर आगे बढ़ना चाहा। इससे इधर तो इनके आदमी इनका भागना समझकर बिखरने लगे और उधरसे असग़रुद्दीनखांने धावा किया और भागा हुआ बादशाही लशकर भी सम्हलकर आ गया। बैराम खां लौट गये।

दो कोस तक उनका पीछा हुआ। इसमाइल कुली खां, अली-बेग, हुसेन खां, याकूब हमदानी, अहमद बेग और दूसरे सरदार उनके पकड़े गये। धन सब लुट गया। उसमें एक जड़ाऊ कड़ा भी था जो खानखानाने मशहदमें (२) भेजनेके लिये १ करोड़ रुपये लगाकर बनवाया था।

बादशाहने सरहंदमें पहुंच कर इस फतहकी खबर सुनी। यहां मुनअमखां भी बहुतसे अमीरों और लशकरके साथ आकर १८ जिलहिज सोमवार आसोज बदी ५ को बादशाहकी खिदमतमें हाजिर हो गया। बादशाहने उसको खानखानाका खिताब और वकालतका [महामन्त्रीका] काम दिया। फिर असग़रुद्दीन खां अत्तगा (३) भी आ गया तो उसको खानआजमकी

१। जिलहिज सन् ९६७ भादों सुदी २ संवत १६१७को लगा था।

२। मशहद खुरासानमें एक नगर है जहां शीआ जातिके मुसलमानोंका बड़ा धाम है और आजकल शाह ईरानके अम-लमें है।

३। यह जीजी अन्नाका (बादशाहकी धायका) पति और खान आजम मिरजा अजीज कोकाका पिता था। तुर्कीमें धायको अंगा धाऊको अत्तगा और धा भाईको कोका कहते हैं।

पदवी प्रदान की। वलीबेग जखमोंसे कैदमें मर गया। उसका सिर पूर्वके देशोंमें लोगोंको डरानेके लिये भेजा गया। इसका भी एक गहरा घाव बैरामखांके हृदयमें लगा क्योंकि यह उनका बहनोई था।

फिर बादशाह तो २६ जिलहिज आसोज बदी १२।१३ को लाहोर पहुंचे और खानखाना सवालक पहाड़में राजा गणेशके (१) पास चले गये। राजाने उनको तलवाड़के (२) किलेमें रख दिया (जो व्यासा नदीके ऊपर था।)

बादशाह १० मुहर्रम सन ९६८ मङ्गलवार आसोज सुदी ११ को लाहोरसे कूच करके माछीवाड़ेमें ठहरे और फौज पहाड़में गयी तो वहांके हिन्दुओं और राजाओंने उसको रोका। इसपर लड़ाई हुई और सुलतान हुसेनखां जलायर बादशाही फौजमेंसे मारा गया। लोग उसका सिर काटकर खानखानाके पास बधाईमें ले गये। वे उसको देखकर बहुत रोये और बोले कि धिक्कार है मेरे जीनेको कि जिसके वास्ते ऐसे दीदारू जवान मुफ्तमें मारे जाते हैं। पहाड़के हिन्दू जो शरणागतकी रक्षा करना परम धर्म्म समझते थे उनकी बहुत सी हिम्मत बंधाते थे तोभी उन्होंने मुसलमानोंके हितसे उसी समय अपने गुलाम जमालखांको बादशाहके पास क्षमा मांगनेके लिये भेजा। बादशाहने मेहरबानीसे मौलाना अबदुल्लाह सुलतानपुरी वगैरह

१। ये नादोनके राजा थे। नादोन जालन्धरके जिलेमें कांगड़के पास है। और अब भी एक छोटासा राज्य है जहांके राजा नरेन्द्रचन्द्र हैं।

२। कई इतिहासोंमें नलवाड़ा भी लिखा है यह कांगड़के राजाओंका था। नादोन और कांगड़के राजा दोनों कटोच जातिके राजपूत हैं। कांगड़के राजा जयचन्द्र अबलबा ग्राममें रहते हैं।

कई पासके रहनेवालोंको उनके साथ भेजकर हुक्म दिया कि जाकर खानखानाको ले आवें।

खानखानाने फिर अर्ज करायी कि हजरतकी तरफसे तो मुझे विश्वास है परन्तु (१) चगताई अमीरों और सब कर्म्मचारियोंका भय लगता है। इसलिये मुनअमखां आकर मुझे ले जावें तो मैं हजरतको सलाम करके मक्के चला जाऊं और जबतक जीऊं तबतक वहीं रहूं।

बादशाहने हाजीपुरमें जो पहाड़के नीचे सतलज और व्यासा नदियोंके बीचमें था डेरा करके मुनअमखां, ख्वाजाजहां अशरफखां, और हाजीमुहम्मदखां सीसतानीको उनके लानेके लिये भेजा। जब वे उन घाटियोंमें पहुंचे तो जमींदारोंकी बड़ी भीड़ देखी जो अपनी मर्य्यादाके अनुसार मरने मारनेको तुले खड़े थे।

बैरामखां किलेमें थे। मुनअमखां उनके पास गये। बैरामखां मुनअमखांको देखकर रोये। मुनअमखां तसल्ली देकर उनको बाहर लाये। तब बाबा जम्बूर और शाहकुलीखां महरम उनका पल्ला पकड़ कर रोने लगे कि दगा है मत जाओ। मुनअमखाँने कहा कि तुम आज रात यहीं रहो, कल कुशल सुन कर आ जाना। यह सुनकर वे भी खानखानाको छोड़कर वहीं रह गये।

बादशाही लश्कर पहाड़के नीचे जमा खड़ा था। ज्यों ही

१। चङ्गेजखांका एक बेटा जगताईखां था। उसकी औलाद चगत्ता और जगताईखां कहलायी और चङ्गेजखांने तैमूरके पर दादाके बाप "कराचार नोयां" को चगताईखांका अतालीक बनाया था जिससे उसकी औलादका नाम भी चगताई हो गया और यही कारण तैमूरिया बादशाहोंके भी चगताई कहलानेका है।

बैरामखां आते हुए दिखे तो बड़ा कोलाहल मचा। बैरामखां गलेमें रूमाल बांधे हुए बादशाहके पैरोंमें आ पड़े (१) और फूट फूटकर रोने लगे (२)।

बादशाहने बैरामखांका सिर उठाकर छातीसे लगा लिया रूमाल गलेसे खोला आंसू पोंछे और दाहने हाथकी मामूली जगह पर बिठाया मुनअमखांको उनके पास बैठनेका हुक्म

१। अकबर नामेमें खानखानाके उपस्थित होनेकी तारीख नहीं लिखी। केवल आबान और मुहर्रमका महीना लिखा है और आबान मास २३ मोहर्रमको लगा था। इस लेखसे खान-खानाका आना २३ से २८ मोहर्रमके बीचमें किसी दिन हुआ होगा जो कातिक बदी १० और सुदी १ से आगे नहीं सरक सकता क्योंकि सुदी २ से तो सफरका महीना लग गया था। जोधपुर राज्यके पुस्तकालयमें एक पुरानी ख्यात है जिसमें लिखा है कि बैरामखां मगसर बदी ७ को अकबर बादशा-हके कदमोंसे लगा। उन्होंने कहा कि मक्के जाओ। वह रवाने हुआ। पाटनमें एक पठानने उनको मार डाला। मगसर बदी ७ को आबानकी २८ तारीख थी और सफरकी २१। न मालूम यह इतने दिनोंका अन्तर क्यों है।

२। जिन दिनों यह मसविदा डुमरांवमें पण्डित नकछेदी तिवा-रीजीके पास था उनदिनों भूतपूर्व भारतमित्र सम्पादक स्वर्गीय बाबू बालमुकुन्दजी गुप्तको कलकत्ते जाते हुए तिवारीजी मिले। उस समय तिवारीजी ऊपर लिखा हुआ वृत्तांत पढ़ रहे थे जब खान खानाके रोनेका हाल पढ़ा तो तिवारीजीको भी रोना आ गया था और यह बात गुप्तजीने कलकत्तेमें पहुंचकर मुझे लिखी थी। तभीसे उन्हें इस ग्रन्थको भारतमित्रके उपहारमें देनेका ध्यान हो गया था। अफसोस है कि न अब तिवारीजी हैं और न गुप्तजी!

दिया और ऐसी दया मयाकी बातें कीं जिनसे बैरामखांके मुखकी मलिनता जो लज्जा और अनुतापसे थी जाती रही। फिर निज वस्त्र जो पहरे हुए थे उनको बखशे और प्रसन्नता पूर्व्वक मक्के जानेकी आज्ञा दी। तरसून मुहम्मदखांको राज्य सीमा तक पहुंचा देनेके लिये साथ किया। (१)

फिर बादशाहने (२) भी प्रस्थान करके सैन्यको तो दिल्ली भेजा और आप छड़ी सवारीसे शिकार खेलनेके लिये हिसार पधारे। यह प्रायः वही मार्ग था जिधरसे होकर खानखाना निकले थे। मानो यह उनका अन्तिम अनुसरण था।

खानखाना नागोर होकर गुजरातको गये। तरसून मुहम्मद खां और हाजी मुहम्मदखां जिनको बादशाहने देखभालके लिये साथ भेजा था नागोरकी (३) सीमा तक उनको पहुंचा कर लौट आये।

बैरामखांने एक तिरस्कार करके हाजी मुहम्मदसे कहा

१। मुन्तखिबुत्तवारीखमें लिखा है कि मुनअमखांने खानखानाको अपने डेरे पर ले जाकर डेरे तम्बू और दूसरे सब साज बाज सफरके तय्यार कर दिये। बादशाहसे भी खर्च मिला और सब छोटे बड़े अमीरोंने भी अपनी श्रद्धाके अनुसार रोकड़ धन और माल जिसको तुर्क लोग चन्टूग (चन्दा) कहते हैं खानखानाको दिया। खानखाना दो दिन पीछे वहांसे कूच कर गये।

२। अकबरनामेमें बादशाहके कूच करनेकी भी तारीख नहीं लिखी है।

३। बादशाहका राज्य इधर उस समय नागोर तक था। नागोरकी सीमा हिसारकी तरफ पंजाबसे मिली हुई थी और नागोरका प्रदेश मारवाड़के राव मालदेवके अधिकारमें था जो एक स्वतन्त्र राठोड़ राजाधिराज थे।

कि मुझे जितना कष्ट तेरी कृतघ्नतासे हुआ है उतना और किसीकी शत्रुतासे नहीं हुआ क्योंकि तूने सब कुछ भुला दिया था।

हाजी मुहम्मदखांने उत्तरमें कहा कि जब तुमने उतनी स्वामिभक्ति जतलाने पर भी बादशाहकी और उनके पिताकी पालनाको भूलकर उनके सामने तलवार खेंची तो मैंने जो तुम्हारा सङ्ग छोड़ दिया, तो इसमें क्या बुरा किया?

यह सुनकर बैरामखां लज्जित हो गये और फिर कुछ न बोले।

इतना लिखकर अबुलफजलने अकबरनामेमें लिखा है कि मैंने विश्वास योग्य पुरुषोंसे सुना है कि इस विषयमें बैरामखां सदा यथार्थ बातसे खिसियाना हो जाता था।

बादशाहने हिसाबसे तारीख ४ (१) रबिउलअव्वल शनिवारको दिल्लीमें और १२ (२) रबिउस्सानी सोमवारको आगरेमें प्रवेश किया। और वहां जो भवन बैरामखांके थे वे मुनअमखां खानखानाको दे दिये।

खानखाना नागौरसे गुजरातको जा रहे थे कि जङ्गलमें उनकी पगड़ी बबूलके झाड़में उलझ कर धरती पर गिर पड़ी। वे इसका अपशकुन समझ कर बहुत घबराये तब उनके एक सखाने हाफिजका (३) शेर पढ़कर उनके चित्तको शान्त

१। मगसर सुदी ६ सं० १६१७ इस दिन शनिवार हो था और आजर महीनेकी ११ तारीख थी।

२। पौष सुदी १३ संवत् १६१७ सोमवार तारीख ८ मास दे" सन ५ इलाही।

३। हाफिज फारसी भाषाका एक सुकवि ईरान देशके प्रसिद्ध नगर शीराजमें हुआ है उसकी मृत्यु संवत् १४३८के लगभग हुई थी।

कर दिया। उस शेरका भावार्थ यह था कि जब तू मक्केको चाहसे जङ्गलमें पांव धरे (तब जो) बंबूलके कांटे तेरी अवज्ञा करें तो तू कुछ सोच मत कर।

इस तरह चलते चलते जब बैरामखां पाटनमें पहुंचे जो पहिला नगर गुजरातका है और जिसको पहिले नहरवाला (१) कहते थे तो बिश्राम करनेके लिये कुछ दिन ठहरे उनका कुटुम्ब भी सब साथ था।

उन दिनों मूसाखां (२) फौलादी वहांका हाकिम था। उसके पास पठानोंकी बहुत सी भीड़ हो रही थी उनमें मुबारकखां लोहानी भी था जिसका बाप माछीवाड़ेकी लड़ाईमें मारा गया था जो बैरामखांकी अफसरीमें हुई थी। उस द्वेषसे उस बावले पठानको इस समय बैरामखांसे बैर लेनेकी सूझी और एक बात यह भी थी कि शेरशाहके बेटे सलीमशाहकी कश्मीरी औरत उस काफले अर्थात् पथिकोंके समूहमें थी जो बैरामखांके साथ मक्केको जाता था और उस कश्मीरनके साथ उसकी एक लड़की भी थी जो सलीमशाहसे हुई थी और यह बात ठहरायी गयी थी कि बैरामखां उस लड़कीको अपने बेटेके वास्ते लेवें यह सुनकर भी पठान बिगड़े हुए थे।

बैरामखां नित्य प्रति पट्टनके बागों और मकानोंको देखने जाया करते थे। एक दिन नावमें बैठकर सहस्रलिङ्ग (३) तालाबका जलमहल देखनेको गये। वहांसे आते समय जब नावसे

१। पाटनका असली नाम अनहलपुर पट्टन था। मगर मुसलमान लोग नहरवाला कहते थे।

२। यह गुजरातके बादशाह मुजफ्फर दूसरेका नौकर था।

३। यह तालाब गुजरातके राजाधिराज सिद्धराज जयसिंह सोलंकीका बनाया हुआ है जो संवत् ९९८ से १०५३ तक राज सिंहासन पर बिराजमान रहे थे।

उतरकर सवार होने लगी तब मुबारकखां ३०।४० पठानों सहित तालावके तट पर आया और ऐसा जाहिर किया कि मिलनेको आया है। खानखानाने इन सबको बुला लिया मुबारकखांने जाते ही छुरा निकाल कर बैरामखांकी पीठमें ऐसा मारा कि छातीमें पार हो गया। फिर और एक पठानने मस्तक पर तलवार मारकर उनका काम पूरा कर दिया। उनके साथी इस हत्यासे घबराकर भाग गये और उनकी लोथ वैसी ही धूल और लोहूमें लिपटी पड़ी रही। निदान कई फकीरोंने उठाकर शेख हिसामकी कबरके पास गाड़ दी जहांसे सन ९८५ में (१) मशहदको भेजी गयी।

खानखानाका बध १४ जमादिउलअव्वल भृगुवार सन ९६८ माघ सुदी १५ संवत् १६१७ को हुआ और जब यह खबर बादशाहको पहुंची तो उन्होंने भी बहुत शोक और सन्ताप किया।

इस स्थान पर अबुलफज्लने लिखा है—"मैं नहीं जानता हूं कि यह मारा जाना उसके पिछले कर्म्मों का दण्ड था या अभी उसका चित्त कुविचारोंसे शुद्ध नहीं हुआ था या उसकी मनोकामना सिद्ध हुई [जो शहीद होने अर्थात् तलवारसे मारे जानेकी थी] या ईश्वर कृपाने उस सज्जन पुरुषको पश्चात्तापके बोझसे हलका कर दिया।

"सच तो यह है कि बैरामखां वास्तवमें साधु और सुशील था। परन्तु कुसंगसे जो मनुष्यके वास्ते बड़ा पाप है वह पहिले तो अपनेको अच्छा समझने लगा फिर खुशामदोंसे उसका उन्मात बढ़ता गया क्योंकि जो कोई अपनेको अच्छा समझता है उसके पास खुशामदियोंका जमघटा हो जाता है और जो अपनी झूंठी भी प्रशंसा खुशामदमें सुनता है तो उसे सच मानकर

१। सन ९८५ हिजरी चेत सुदी २ संवत् १६३४ को लगा था

आत्मश्लाघी हो जाता है। इसीसे बैरामखांको यह बुरा दिन आगे आया। बादशाहका यथार्थ रूप जो बचपन और राजकाजमें प्रवृत्त न होनेकी ओटमें छिपा हुआ था उसकी दृष्टिमें नहीं आया। वह दूसरोंके दोष ढूंढ़नेमें अपने अवगुण न देख सका। उसका घर खुशामदियोंसे उतना नहीं बिगड़ा कि जितना उसके बुद्धि-हीन मित्रों और मन्त्रियोंसे बिगड़ा; पर यह भी उसका सौभाग्य था कि उसका प्राणांत कृतघ्नतामें न हुआ। जीते जी ही उसके कर्म्मोंका प्रायश्चित्त हो गया था। जब कि उसने दयालु बादशाहकी सेवामें उपस्थित होकर उनको राजी कर लिया था।"

अन्य इतिहास वेत्ताओंने बैरामखांकी बहुत महिमा लिखी है मुल्ला अब्दुल कादिरके मतमें वे "बड़े बुद्धिमान सत्यवादी सुशील और नम्र और सत्पुरुषोंके भक्त थे। दूसरी बार हिन्दुस्थान उन्हींके पराक्रमसे फतह हुआ था।

वे मिरजा जहांशाहके वंशज थे। पहिले बाबर बादशाहके पास रहे। फिर हुमायूं बादशाहसे खानखानाका पद पाया। अकबर बादशाहने उनको पदवीमें खानबाबा और बढ़ा दिया था; परन्तु दुश्मनोंने बादशाहका मन उनसे बिगाड़ दिया जिससे वह सब बखेड़ा हुआ।

वे आप भी विद्वान थे और विद्वानोंका आदर भी पूरा करते थे। उनकी कीर्त्ति सुन कर दूर दूरके विद्वान उनके दरबारमें आते थे और उनकी उदारतासे निहाल होकर जाते थे।"

"खानखाना काव्यके रहस्यको भी अच्छा समझते थे। उन्होंने उस्तादोंकी कवितामें गहरे दोष निकाले हैं और "दखलिया" नाम एक ग्रन्थमें संग्रह किये हैं। बात बनानेमें भी वे बहुत कुशल थे। एक रात हुमायूं बादशाह उनसे कुछ संभाषण कर रहे थे कि उनको ऊंघ आ गयी। बादशाहने झल्लाकर कहा कि "हां बैरम मैं तुझसे कह रहा हूं" इन्होंने झट सम्हलकर कहा। मेरे बादशाह! मैं हाजिर हूं; परन्तु मैंने सुना है कि बादशाहोंके सन्मुख

आंखोंको सत्पुरुषोंके समक्ष मनको और पंडितोंके सामने जिह्वाको वशमें रखना चाहिये सो हजरत तो बादशाह भी हैं, सत्पुरुष भी हैं और पण्डित भी हैं। इसलिये मैं इस दुविधामें पड़ गया था कि अब मैं किस किसको वशमें रखूं, बादशाह यह सुनकर बहुत प्रसन्न हुए।

कंधारमें एक रात शाह "अबुल अली" ने जो हुमायूं बादशाहके कृपापात्रोंमेंसे था शराब पीकर "शीयामत" के (१) एक मुसलमानको(२) सन्देहसे मार डाला। उसके घरवालोंने बादशाहसे पुकार की। बादशाहने शाहको बुलाया तो वह उसी मुसलमानका काला मखमली जामा पहिन कर और जिस छुरीसे मारा था उसको उस जामेमें छिपा कर नशेमें झूमता हुआ बड़ी ठसकसे आया और सामनेसे सुकर गया। तब बैरमखांने एक शेर पढ़ा जिसका भावार्थ यह है;—

उसकी (नायकाकी) बिखरी हुई अलकावली निशाचरोंका (चोरोंका) पता देती है और इसका प्रत्यक्ष प्रमाण यही है कि उसने अपने पल्लूके नीचे दीपक छिपा रखा है।

बादशाहने इस शेरको बहुत सराहा परन्तु उसके भावार्थके अनुसार कुछ निर्णय उस निरपराधके मारे जानेका न किया।

खानखानाकी फारसी और तुरकी कविताका दीवान (संग्रह) प्रस्तुत है और वे हुमायूँ बादशाहकी संगतसे जो बड़े ज्योतिषी थे ज्योतिष विद्याका भी ज्ञान रखते थे।

१। मुसलमानोंमें दो बड़े पन्थ शीया और सुन्नी हैं जिनमें बड़ा मतभेद है शीया ईरानमें अधिक हैं और सुन्नी सब मुल्कोंमें शीयाओंसे अधिक हैं वे शीयाको राफजी कहते हैं जिसके माने पतितके हैं।

२। अकबरनामेमें इसका नाम शेरअली लिखा है। यह ईरानके शाह तुहमास्पका नौकर था। जब हुमायूँ बादशाह कंधारमें

तवारीख "तबकात अकबरी" में (१) लिखा है कि बैरामखां खानखानाके नौकरोंमेंसे २५ आदमी पांच हजारीके मनसबको पहुंचकर नौबत और निशानके धनी हो गये थे।

मुआसिरुलउमरामें लिखा है कि बैरमखां विद्या, भलाई, दान धर्म और कर्मसे युक्त, नीतिमें निपुण, शूरवीर, कार्यकुशल और दृढ़ हृदय थे। उन्होंने तैमूरके घरानेके बड़े बड़े उपकार किये थे। ऐसी हलचलके समयमें जब कि राज्य कुछ स्थिर न हुआ था बादशाह स्वर्गवासी हुए और शाहजादा अभी छोटे और नादान थे, पंजाबके सिवा सब देश हाथसे जाते रहे थे; पठान बड़े जोरशोरसे बादशाहीका दावा करते थे। चगताई अमीर जो हिन्दुस्थानमें रहना पसन्द नहीं करते थे काबुलको लौट जानेकी सलाह देते थे और बादखशांके अधिपति मिरजा सुलेमानने अवसर पाकर काबुलमें अमल कर लिया था। परन्तु बैरामखांकी दृढ़ता और उद्योगसे बिगड़ी हुई बात फिर बनी और राज्य भी स्थिर हुआ। इधर अकबर बादशाहने भी बड़े मान सम्मानके साथ पूरा अधिकार राजके कामोंका उनको दिया था और उनसे शपथ ले ली थी कि जो उचित और योग्य हो वही करें; न किसीका

जाकर खानखानाके मेहमान हुए थे तो शेरअली. शाहसे छुट्टी लिये बिना ही उनके पास चला आया था। अबुलमुआली जिसका मगज बादशाहके बहुत पास रहनेसे चल गया था। दरबारमें कहा करता था कि मैं इस राफजीको मार डालूँगा। बादशाह तो इस बातको दिल्लगी ही समझते रहे और उसने एक रातको बेगुनाहका खून ही कर डाला। बादशाहको यह बात दिलमें तो बहुत बुरी लगी मगर मोहब्बतसे कुछ न कह सके।

१। यह ग्रन्थ बख्शी निजामुद्दीनने अकबरशाहके समयमें बनाया है। इसको तवारीख निजामी भी कहते हैं। मुन्तखिबुल तवारीख इसीका सारांश है।

पक्ष करें और न किसीसे डरें परन्तु ज्यों ज्यों खानखानाका ऐश्वर्य्य बढ़ा और वे अपने अतिरिक्त किसीको कुछ नहीं समझने लगे त्यों त्यों शत्रु भी बढ़ते गये जिन्होंने बहुत कुछ झूठ सच लगा बुझाकर बादशाहका मिजाज बिगाड़ दिया। तो भी बादशाहका मनशा खानखानासे बिगाड़नेकी नहीं थी और न खानखाना प्रतिकूल होना चाहते थे परन्तु दोनों ओरके चुगलखोरोंने दोनों ओर आग लगाकर इधर बादशाहको भड़काया उधर खानखानाको इस बात पर जमाया कि प्रतिष्ठापूर्वक मर जाना अप्रतिष्ठित होकर जीनेसे उत्तम है और यही कारण उनके नष्ट हो जानेका हुआ क्योंकि अहंकार और राजतृष्णा मनुष्यका नाश करदेती है।

इस प्रकार थोड़ा बहुत वृत्तान्त बैरामखांके जीवनका जो इतिहासकी पुस्तकोंमें मिला यहां लिखा गया अब केवल उनकी उदारताका वर्णनरह गया है सो भी हम यहां किये देते हैं और आगे चलते हैं।

मुन्तखिबुल तवारीखके कर्त्ता मुल्ला अब्दुल कादिरने जो उनका समकालीन था उनकी और शमसुद्दीनखांकी लड़ाईका वृत्तांत लिख कर कहा है "अजब यह है कि इस वर्ष (९६७ संवत १६१६में) खानखानाने हाशमी शाइरकी एक गजल पसन्द करके अपने नामसे प्रसिद्ध की और उसके पुरस्कारमें उसको ६०००० टके (१) देनेका हुक्म देकर उससे पूछा कि क्यों इतने दाम

१। पहिले चलनी सिक्कोंको टके कहते थे चाहे चांदीके हों चाहे तांबेके उस समयकी कहावतके अनुसार अब भी धनवान पुरुषको मारवाड़में टकोंवाला कहते हैं जैसा कि हिन्दुस्थानमें पैसावाला और रुपया वाला बोलते हैं। अकबरके समयमें दामका चलन हुआ ४० दामका १) होता था राजपूतानेके लुटेरे आपसकी समझौतोंमें मालदारोंको दामोदर कहकर लूटनेको

ठीक हैं ? उसने कहा कि ६० कम (१) हैं खानखानाने ४० हजार और दिलाकर पूरे १ लाख कर दिये ।

इसी तरह १ लाख टके खजाना खाली होनेपर भी एकही सभामें रामदास लखनवीको (२) दिये जो सलीम शाह बादशाहके कलावतोंमेंसे था और जिसको गानविद्याके विषयमें दूसरा तानसेन कह सकते हैं । क्या सभा में क्या एकान्तमें वह निरन्तर खानखानाके पास रहा करता था और उसके गानेके प्रभावसे सदा खानकी आंखोंमें आंसू आ जाया करते थे ।

ऐसे ही १ लाख टके जुझारखां बदाऊनीको एक फारसी कविताकी रीझमें दिये थे जो उसने उनके नाम पर बनायी थी। यह भी पहले तो सलीमशाहके अमीरोंमें नौकर था और इसको उससे झण्डा डङ्का और तोग (३) भी मिला था मगर फिर सिपाहगरी छोड़कर थोड़ी सी जीविका पर सन्तोष कर बैठा था खानखानाने जुझारखांको यह इनाम नहीं दिया था किन्तु सरहिन्द होके (पंजाबके) सारे जिलेका कलकटर भी बना दिया था ।

चेष्टा करते थे, और लोग तो यह जानते थे कि ये भगवतका भजन कर रहे हैं और वे टकोंका भजन करते थे ।

१। कम शब्द यहां श्लेष है क्योंकि उसका अर्थ न्यून भी है और अङ्कोंके हिसाबसे ६० भी है। फारसीमें अङ्कोंकी गिन्ती भी अक्षरोंसे होती है। १०के वास्ते काफ (क) और ४० के लिये मीम (म) लिखते हैं। इस युक्तिसे हाशमीने दोनों बातें हो जाती दी थीं अर्थात् ६० भी और कम भी।

२। ये सूरदासजीके पिता थे। इस विषयमें हम विस्तार पूर्वक सूरदासजीकी जीवनीमें लिख चुके हैं।

३ यह एक सरदारी सूचक चिन्ह माही मरातबके समान बादशाहोंका दिया होता था और झण्डेके ऊपर बांधा जाता था।

लाख टके खानको नजरमें तिनकेसे भी तुच्छ थे बर खिलाफ इन तिनकोंके जो अब पानी पर उभर आये है। (१)

खानखानाके स्वामिद्रोही सेवकोंका परिणाम।

कृतघ्नी मुल्ला पीर मुहम्मदको बादशाहने डेरा देकर मालवे पर भेजा था। उसने वह देश विजय करके वहां घोर कुकर्म किये। और तो क्या केवल यह देखनेके लिये कि किसमें कितना रक्त निकलता है और किसके प्राण शीघ्रतासे और किसके कठिनतासे छूटते हैं सैकड़ों मनुष्योंके मस्तक छेदन कराये और बड़ी निर्दयतासे उनके मरनेका तमाशा देख देखकर अपने कठोर चित्तको प्रसन्न किया। फिर मालवेसे खानदेश जीतनेको गया। वहांसे लड़ाई हारकर भागा और नर्मदामें डूबकर (२)मर गया। खानखानाके १ वर्ष पीछे ही अपने पापोंके फलको प्राप्त हुआ।

विश्वासघाती शेर मुहम्मदको बादशाहने मुंह नहीं लगाया जिससे वह समानेमें [पंजाबमें] जा रहा। जब बङ्गाल और बिहारके अमीर बादशाहसे बदले तो उसने समानेके नायब फौजदारको न्योता देकर भोजन करानेके मिससे बुलाया। जब वह आया तो तीरको भाल घिसने लगा और फिर वही तीर

१। इस अन्तिम लेखसे यह ग्रन्थकर्त्ता खानखानाके पीछेके अमीरों पर कटाक्ष करता है और उन्हें दातव्यतामें उनको अपेक्षा बहुत क्षुद्र बतलाता है। अर्थात् अबके अमीर तिनकेके समान हलके हैं और जैसे तिनका थोड़ेसे पानीमें भी ऊपर रहता है वैसे ही ये भी थोड़ी सी सम्पत्ति पाकर भी अपना हलकापन प्रकट करते हैं।

२। यह घटना सन् ९६९में (संवत् १६१९में) हुई उसके साथ बहुतसे आदमी थे परन्तु किसीने उसके निकालनेकी कोशिश नहीं की। अकबरनामा दफतर २ पृ० १६८।

कमानमें खेंचकर उसको छातीमें मारा। उसके लगते ही वह तो मर गया और इसने उसका सब धन माल लेकर उस प्रांतमें लूट मार मचा दी। निदान वह सन् ९६९में (संवत १६१८।१९में) सम्भानेके फौजदारके हाथसे मारा गया।"

अभिमानी शेख गदाईने भी कुछ उन्नति नहीं की। जो पद खानखानाने दिया था उसको भी खो बैठा और कोई अधिकार उसको न मिला। वह सन् ९७६ में (संवत् १६२५ में) मर गया।"

—※※—

खानखानानामा।

दूसरा भाग।

पहला खण्ड।

नवाब अबदुर्रहीम खां खानखानाकी माता।

खानखानाकी मा (१) जमाल खां मेवातीकी बेटी थी। जब हुमायूं बादशाह शेरशाह पठानसे लड़ाईमें हारकर ईरानको गये थे तो वहांके शाह तुहमास्प सफवीने उनसे कहा था कि आपने हिन्दुस्थानके जमीन्दारोंसे रिश्तेदारी नहीं की और अजनबीसे बने रहे; इसीसे आपके पैर नहीं जमे। अब जो फिर वहांकी बादशाही आपके हाथ आ जावे तो दो काम जरूर करना। एक तो पठानोंको जहां तक बने हुकूमतसे अलग करके व्यापारमें लगाना, दूसरे वहांके राजाओं और जमीन्दारोंसे रिश्तेदारी करना; इससे आपका राज्य बना रहेगा।

हुमायूं बादशाहने जब दूसरी बार दिल्ली फतह की तो हुसैन खां मेवातीको दिल्ली अंचलमें हिन्दुस्थानके सब जमीन्दारोंसे विशेष धनवान बलवान और ऐश्वर्य्यवान देखकर उसके चचा जमाल खांकी बड़ी बेटीसे तो अपना विवाह किया और छोटीसे बैराम

---

(१) जमाल खां अलावल खांका बेटा और हसन खां मेवातीका भतीजा था। हसनखांका कई पीढ़ीसे अलवरमें राज्य था। वह १०००० सवारों सहित महाराना सांगाजीके साथ होकर बाबर बादशाहसे लड़ा था और काम आया। ये लोग असलमें यादव राजपूत थे और मुसलमान होनेके पीछे खानजादे कहलाने लगे थे। अब भी बहुत लोग इस घरानेके अलवर राज्यमें हैं।

खांका करा दिया। फिर तुरत ही उनको शाहजादे अकबरके साथ पंजाबमें सूर पठान सिकन्दर शाहका उपद्रव मिटानेके लिये भेजा। वे बेगमको भी साथ ले गये थे। परन्तु जब हुमायूं बादशाहके मरे पीछे अकबर बादशाहको लेकर हेमू ढूसरसे लड़नेको दिल्लीको ओर गये तो बेगमको लाहोरमें भेज दिया था।

खानखानाका जन्म ।

वहां १४ सफर ९६४ (१) गुरुवार "दे" महीनेकी छठी तारीखको इनका जन्म हुआ। उस समय बादशाह दिल्लीसे पंजाबको आ रहे थे। रास्तेमें यह बधाई पहुंची जिसपर उन्होंने प्रसन्न होकर बालकका अबदुर्रहीम नाम रखा और अपनी दिग्विजयकी सिद्धिके लिये, जिसके वास्ते पंजाबको आते थे, इस सुखद समाचारको एक शुभ शकुन समझा।

बैरामखांने बड़ा उत्सव किया और ज्योतिषियोंने जन्मपत्नी देखकर कहा कि यह बालक बादशाहसे शिक्षा पाकर उच्च पदको पहुंचेगा और स्वामिभक्त होकर बड़े बड़े कार्य्य करेगा। ऐसे ही सुसंवाद शकुनियोंने भी कहे जिनका पहिला परिणाम यह निकला कि बादशाहके जालन्धरमें पहुंचते ही शिकन्दर शाह सूर जो पंजाबमें अड़ा हुआ था, हिमालय पहाड़में भाग गया।

बाल्यावस्थामें विपत्ति और बादशाहका प्रतिपाल ।

जब बैराम खां बादशाहसे बिगड़कर बीकानेर गये और वहांसे पंजाब आये तो मिरजा अबदुर्रहीमको अपने अन्तःपुर और

(१) माह बदी १ संवत् १६१२, परन्तु खानखानाकी जन्मपत्नीमें जो आगे लिखी जावेगी उसकी जन्म तिथि मगसर सुदी १४ संवत् १६१३ सोमवार है। न जाने क्यों, दोनोंमें इतने दिनोंका अन्तर है। दोनों तिथियोंके साथ दिन भी है और पंचाङ्गसे दोनों ही सही हैं। पर जन्म तो २ बार नहीं हो सकता। इसलिये कौन तिथि सही है और कौन नहीं इसका निरूपण हम आगे करेंगे, जहां इनकी जन्मपत्रियां लिखेंगे।

धनमाल सहित पतरहंडेके किलेमें शेर मुहम्मदके पास छोड़ गये थे। उसने उन सबको पकड़कर बादशाहके पास भेज दिया। पर जब बैराम खां बादशाहके पास आकर मक्केको विदा हुए तो इनको भी सकुटम्ब साथ ले गये थे। गुजरात पहुंचकर जब बैराम खां मारे गये, तब ये केवल ४ वर्षके थे। मुहम्मद अमीन दीवाना, जो नामका तो दीवाना था और काम स्यानोंकेसे करता था, बाबा जम्बूर और ख्वाजा मलिक (१) इनको पाटणसे ले निकले और सारे रास्ते पठानोंसे लड़ते भिड़ते अहमदाबादमें पहुंचे। वहां ४ महीने रहे। फिर दरगाहको (२) रवाने हुए। जालोरमें (३) बादशाहका फरमान मिला जो इनके नाम था और जिसमें लिखा था कि यहां आजाओ हम पालन करेंगे। इससे वे लोग प्रसन्न होकर सन् ९६९के (४) लगते ही इनको बादशाहकी शरणमें आगरे ले आये। बादशाहने इन्हें होनहार और चेष्टावान् देखकर अपने पास रख लिया। उस समय दरबारमें इनके बहुतसे शत्रु भरे हुए थे। तो भी इनको पालने पोसने खिलाने पढ़ाने और सभ्यता सिखानेमें कमी नहीं हुई।

मिरजा खांकी पदवी और विवाह।

बड़े होनेपर बादशाहने इन्हें मिरजा खांकी पदवी प्रदानकी और अपनी धाय जीजी (५) अंगाकी बेटी माहबानूंसे इनका

---

(१) ये दोनों खानखानाके नौकर थे।

(२) राजद्वार (३)जालोर अहमदाबाद गुजरातसे उत्तर दिशामें दिल्ली और आगरेके रास्तेपर एक पुराना शहर है जो अब तो जोधपुर दरबारके अधिकारमें है और उस समय एक नवाबके पास था जिससे फिर जोधपुर वालोंने ले लिया।

(४) सन ९६९ आश्विन सुदी२ सं० १६१८ को यानी ११अगस्त १५६१ ईस्वीको लगा था।

(५)जीजी अंगाने बादशाहको दूध पिलाया था।

विवाह कर दिया। इस सम्बन्धसे इनका भी बादशाहके घरानेसे वही मेल जोल हो गया जो इनके पिताका था और एक बलवान थोक था भाइयोंका इनका पक्षपाती बन गया।

गुजरात जाना और पाटनकी जागीरमें पाना।

जब इनकी अवस्था १६ वर्षकी हुई और भाग्योदयका समय आया तो बादशाह गुजरात (१) फतह करनेको चढ़े और ये भी उनके साथ गये २६ आबान (२) सन् १७ ता० १ रजब सन् ९८०को बादशाहके डेरे पाटन जिले गुजरातमें हुए तो उनको बैराम खांकी याद आयी ये सेवामें उपस्थित ही थे। इनसे वह सब वृत्तान्त बैरामखांके मारे जानेका पूछा और कृपा करके कहा कि हमने पट्टन मिरजाखांको दी। परन्तु अभी इसके पास उसके संरक्षणका साधन नहीं है। इसलिये सय्यद अहमद खां (३) यहांका रक्षक रहे। पाटन गुजरातका पहिला परगना था जो बादशाहके कबजेमें आया और यही इनकी पहिली जागीर भी थी जो बापके पीछे मिली। क्या ईश्वरकी माया है कि जिस धरती पर इनके बापका लहू गिरा था और जहां इनकी जानपर आ बनी थी, अब वहींसे इनके भाग्योदयका प्रारम्भ हुआ।

वहां जो शोक इनके मनमें बापकी याद आने या उनकी कबरको देखनेसे उत्पन्न हुआ होगा उसका अधिकांश इस सौभाग्यसे शान्त हो गया होगा।

फिर गुजरात जाना।

बादशाहने पट्टनसे जाकर गुजरातकी राजधानी अहमदाबादको फतह किया और खान आजम मिरजा अजीजको जो इनका साला

---

(१) गुजरातमें प्यारी बादशाहत टांक जातिके मुसलमान राजपूतोंकी थी। उस समय वहांका बादशाह मुजफ्फर सुलतान था।

(२) अगहन सुदी ३ सं० १६२९ शनिवार।

(३) यह भी एक बादशाही अमीर था और उस चढ़ाईमें शामिल था।

था, २३ खुरदाद (१) सन् १८ ता० २ सफर बुधवार सन् ९८१ को (२) राजधानीमें [फतहपुर (३) सीकरीमें] प्रवेश किया। ये भी साथ थे। फिर गुजरातियोंने अवसर पाकर अहमदाबादको आ घेरा। बादशाह अपने धाभाई खान आजमको बचानेके लिये १० शहरेवर (४) सन् २४ रबी-उल-आखर सन् ९८१ रविवारको सांड़नियोंपर सवार होकर फिर गुजरातको गये और मारामार ८ दिनमें वहां पहुंचे। ये भी उस दौड़में साथ थे। बादशाहने जब लड़नेके वास्ते सेनाके व्यूह रचे तो इनको बीचके व्यूहमें नियत किया।

इस लड़ाईमें भी बादशाहको जीत हुई। इनका भी अभ्यास संग्राम सम्बन्धी कामोंमें बढ़ा; क्योंकि एक वर्षमें दो बार ऐसी बड़ी लड़ाईमें सम्मिलित रहनेका अवसर मिल गया था।

गुजरातकी सूबेदारी।

पाटनकी जागीर ऐसी शुभ घड़ी और शुभ मुहूर्तमें इनको मिली थी कि उसके प्रतापसे दो वर्ष पीछे ही समग्र गुजरातमें इनका अधिकार हो गया। कारण उसका यह हुआ कि खान आजम बादशाहका हुक्म कम मानता था। इसलिये बादशाहने उसको गुजरातकी सूबेदारीसे दूर करके इनको सन् २१के (५) आरम्भमें अजमेरसे

१। प्रथम आषाढ़ सुदी संवत् १६३० बुधवार २३ खुरदाद सन् १८ जून ३ सन् १५६३ ई०।

२। मशहूर राजधानी तो हिन्दुस्थानकी दिल्ली है पर अकबरने फतहपुरको जो सीकरीके पास है उन दिनोंमें राजधानी बना रखा था।

३। अहमदाबादसे ५०० मील पूर्व और उत्तरके कोनमें।

४। भादों बदी ११ संवत् १६३० रविवार १० शहरेवर सन् १८।

५। सन् २१ इलाही चैत सुदी ११ संवत् १६३३ को लगा था।

वजीरखां मीर अलाबुद्दौला, सैयद मुजफ्फर और प्यागदास सहित गुजरातमें भेजा। सूबेदारी तो इनके नाम हुई; परन्तु अभी तक इनको राजकाज करनेका काम नहीं पड़ा था; इसलिये काम वजीरखांको सौंपा गया। अलाबुद्दौला अमीन, प्यागदास दीवान और मीर मुजफ्फर बख्शी हुआ।

मेवाड़में २ वर्ष रहना।

कुछ महीने पीछे बादशाहने अजमेर आनेका विचार करके इनको भी बुलाया। हुक्म पहुंचते ही वजीरखांको चार्ज देकर गुजरातसे चल दिये और पहिले ही पड़ाव पर बादशाहके चरण कमलोंमें उपस्थित होकर साथ साथ अजमेर (१) आये और फिर साथ ही मेवाड़के (२) दौरेमें भी गये। उस समय महाराणा प्रतापसिंहसे लड़ाई हो रही थी। बांसवाड़े (३) पहुंच कर "दे" महीनेको १५ तारीखको (४) बादशाहने इन्हें भी उस लड़ाई पर भेज दिया। ये दो वर्ष तक मेवाड़के पहाड़ोंमें दौड़ धूप करते रहे। परन्तु पूरी विजय न होनेसे बादशाहने शहबाजखांको (५) फौजका अफसर करके भेजा। ये उसके साथ कुम्भलमेर पर गये। २४ फरवरदीन (६) सन् २३ को वह दुर्गम दुर्ग फतह होगया। वहांसे धावा करके इन लोगोंने गोगूंदा और उदयपुरको भी ले लिया।

---

(१) बादशाह ५ महर सन् २१ को कूच करके १६ को अजमेर पहुंचे थे। ५ महर आसोज बदी ८। १० संवत् १६३३को थी और १६ महर आसोज सुदी ६ शुक्रको।

(२) बादशाह ३१ महरको मेवाड़ रवाने हुए थे। उस दिन कातिक बदी ६ थी और वार शनि था। (३) बांसवाड़ा एक जुदा राज्य गहलोतोंका मेवाड़को पूर्व और दक्षिण सीमा पर है।

(४) पौष सुदी ६ बुधवार (५) शहबाजखां कम्बोह जातिका मुसलमान और मीर बख्शी था।

(६) वैसाख बदी १२ बृहस्पतिवार संवत् १६३५।

जब इस तरह मेवाड़में बादशाहकी अधिकार जम गया तो फौज लौट आयी और उसके साथ ये भी बादशाहकी सेवामें आ गये (१)।

मीर अर्ज होना।

सन् २५ के प्रारम्भमें [२] बादशाहने इन्हें मीर अर्जके महत् पद पर नियत किया। मीर अर्जका यह काम था कि जो लोग बादशाहसे अपनी दीन दशा कहने आवें उनका वृत्तान्त बादशाहको सेवामें अर्ज किया करे और जो उसका उत्तर मिले वह जाकर उनको कह दे। अब तक यह काम किसी एक मनुष्यके अधीन न था। प्रति दिन एक सच्चा और सुजान व्यक्ति नियत हो जाया करता था। परन्तु अब बादशाहने अधिक भीड़, काम बहुत लोभका, अति प्रचारका और दरबारमें पहुंचना कठिन देख कर यह विचार किया कि किसी कुलीन और सच्चे सेवकको, जो स्वार्थी न हो, यह बड़ा काम देवें जो अपने और परायेको समदृष्टिसे देख कर उनके मनोरथ निवेदन किया करे और अवसर पाकर उत्तर ले लिया करे। यदि ठीक उत्तर न मिले तो खिन्न न होकर फिर प्रार्थना करनेका साहस करे। ये सारे गुण इनकी चेष्टासे प्रकट थे; इसलिये बादशाहने इन्हींको

---

(१) शहबाजखां ५ तीर सन् २३ को मेवाड़से गांव थारा इलाके पंजाबमें बादशाहके पास पहुंचा था उस दिन आषाढ़ सुदी १३ संवत १६३५ मङ्गलवार था।

(२) सन् २५ इलाही २४ मुहर्रम सन् ९८८ शुक्रवारको आरम्भ हुआ था; उस दिन चैत बदी ११ संवत १६३६ थी। अकबरनामेमें यह नहीं लिखा है कि किस दिन इनको वह ग्राम मिला था; परन्तु पूर्वापर मिलानेसे ऐसा जाना पड़ता है कि चैत बदी ११ के पीछे वैसाख सुदी ११ तक किसी तिथिको मिला होगा।

यह काम दिया जिससे इनके ऐश्वर्य्यमें और वृद्धि हुई और राजलक्ष्मीका प्रकाश बढ़ा।

अजमेरकी सूबेदारी।

८ महीने पीछे फिर इनके और बढ़तीके दिन आये तो अजमेरकी सूबेदारी इनको मिली जो रुस्तमखांके मारे जानेसे खाली हुई थी। बादशाहने नीति शिक्षाकी बहुतसी बातें कह कर इनको अजमेर भेजा और रणथम्भोरका प्रसिद्ध किला जागीरमें दिया जिससे अब ये देशपति और गढ़पति हो गये (१)।

दरबारमें उच्च पद।

सन् २६ में (२) ये अजमेरसे दरबारमें आये हुए थे कि २४ दे को (३) बादशाह शिकारके लिये नगर चेनको (४) गये। ३ बहमनको (५) तसलीमके (६) समय बखशियोंने इनको शहबाज-खांके ऊपर खड़ा किया। इस पर शहबाजखां बुरा मान कर जाने लगा तो बादशाहने शिक्षा देनेके लिये उसको राय साल दरबा-

---

(१) अजमेरमें नियत होनेकी मिती भी अकबरनामेमें नहीं लिखी है; परन्तु, रुस्तमखां १० आबान सन २५ को कछवाहे राजपूतोंकी लड़ाईमें जखमी हो कर दूसरे दिन मरा था। इस-लिये कह सकते हैं कि अजमेरकी सूबेदारी इनको आबान या आजरके महीनेमें मिली होगी और १० आबान सन् २५ मगसर बदी ११ संवत् १६३७ को थी।

(२) सन् २६ इलाही चैत सुदी ७ संवत् १६३८ को लगा था।

(३) पौष सुदी ११ वृ० संवत् १६३८।

(४) नगर चेन फतहपुर सिकरीके पास एक शहर अक-बर बादशाहने बसाया था जो उनके जीते ही समय उजड़ गया।

(५) माघ बदी ३ वृ० संवत् १६३८।

(६) दरबारमें सलाम करना।

रीके (१) पहरेमें रख दिया। इस बातसे इनका अधिक प्रताप बड़े बड़े अमीरोंके मनमें खटक गया और उन्होंने जान लिया कि बादशाह इनको और भी बढ़ाना चाहते हैं।

राज सभामें छोटे छोटे जीवोंके न पकड़े जानेका प्रस्ताव।

१ फरवरदीन (२) सन् २७ इलाहीको बादशाहने नये दिनके उत्सव किये। महद्राजसभामें विराजमान हो कर यह भाषण किया कि प्रभुता वास्तवमें ईश्वरको ही फबती है; दीन मनुष्यकी क्या सामर्थ्य है कि जो प्रभु बननेकी चेष्टा करे और अपने सजातियोंको दास बनावे। यह कह कर गुलामोंको जो कई हजार थे, दासत्वसे मुक्त कर दिया और कहा कि जबरदस्ती पकड़े हुओंको गुलाम कहना और उनसे गुलामी कराना कहांकी सभ्यता है? फिर सब सभासदोंको भी अपनी अपनी इच्छा निवेदन करनेकी आज्ञा दी। जब इनकी वारी आयी तो इन्होंने कहा कि छोटे छोटे जीव जन्तु (चिड़ियां मछलियां आदि) न पकड़े जावें तो अच्छा हो; क्योंकि थोड़ेसे लाभकी सम्भावनामें बहुतसे जीव नष्ट होते हैं।

बादशाहने दूसरे सभासदोंकी प्रार्थनाके साथ इनकी आकांक्षा भी स्वीकार की। इससे इनकी प्रकृतिका पता लगता है कि ये कैसे दयालु और पुण्यात्मा थे।

बड़े शाहजादेका बख्शी होना।

ऐसी ऐसी बुद्धिमानी और योग्यताकी बातोंसे इनकी जगह बादशाहके दिलमें बढ़ती जाती थी और वे इनकी कार्य कुशलतासे सन्तुष्ट होकर जब कोई काम इनके योग्य देखते थे तो प्रसन्नता पूर्वक इनको उस पर नियुक्त कर देते थे और इनके ऊपर

१। यह शेख़ावत कछवाहोंमें एक बड़ा सरदार और बादशाही दरबारका सभासद था।

२। चैत बदी २ रविवार संवत् १६३८ को तारीख १ फ़रवरदीन सन् २७ थी।

उनको भरोसा भी पूरा था। इसीलिये जब जो बड़े शाहजादे सुलतान सलीमको अतालीकीकी जगह खाली हुई तो उसके वास्ते भी बादशाहने इन्हींको उत्तम समझ कर शाहजादेका अतालीक (१) बनाया अर्थात् शाहजादेको इनकी रक्षामें रखा। इन्होंने इस महत्सौभाग्यका बड़ा उत्सव किया और बादशाहसे उसमें पधारनेकी प्रार्थना की। दयालु बादशाह २७ शहरेवर (२) सन् २७ को इनके घर पधारे जिससे सब लोगोंको आनन्द हुआ।

घोड़ोंके प्रबन्धमें नियुक्ति।

इसी साल बादशाहने व्यापारियोंके सुखके लिये क्रय विक्रयका कर नियत करके एक एक अमीरको एक एक वस्तु का अधिकार दिया। उसमें घोड़ोंकी देख भाल इनको मिली।

ये दोनों काम भी इनकी विद्या और बुद्धिके योग्य थे।

सामाजिक कार्यमें शाहजादेका सहायक होना।

(३) सन् २८ में बादशाहने राज्य और राजकाजके बहुत बढ़ जानेसे सुबीते और प्रबन्धके लिये शाहजादोंको पृथक पृथक काम बांटे और कोप, कृपा, विवाह और जन्म सम्बन्धी कार्य्योंका प्रबन्ध बड़े शाहजादे सुलतान सलीमके अधीन किया। ये उसके भी सहायकोंमें रखे गये।

गुजरातमें लड़ने जाना।

इसी साल जो इनका राज योग और प्रबल हुआ और एक बड़ी लड़ाईमें विजय प्राप्त करके पृथिवीमें प्रतिष्ठित होनेका समय आया तो बादशाहने इनको फिर गुजरात भेजा। परन्तु अब गुजरातमें पहिलेकीसी शान्ति नहीं थी। वहांके अगले सुलतान मुजफ्फरने जिसे बादशाह पकड़ लाये थे कैदसे भाग

१। पहले कुतुबुद्दीनखां अतालीक था, पर वह इस समय किसी काम पर बाहर भेजा गया था।

२। आसोज वदी ८ रविबार संवत १६३९।

३। सन् २८ चैत बदी १३ संवत १६३९ को लगा था।

कर उस देशका अधिकांश फिर जीत लिया था और अहमदा-बादमें बैठ कर फिर अपनी आन दुहाई फेरी थी। जो बादशाही अमीर गुजरातमें थे वे लड़ाईमें हार कर पटनेमें चले आये और बादशाहको अर्जी पर अर्जी भेजते थे। बादशाहने ९ महर (१) सन् २८ को एक बड़ा लशकर इनके साथ विदा किया जिसमें इतने अमीरोंको नौकरी बोली गयी थी ;—

१ सैयद कासम। ७ मियां बहादुर।
२ सैयद हाशम। ८ दरवेश खां।
३ शेरेबिया खां। ९ रफीय सरमदी।
४ राव दुर्गा। १० शेख कबीर।
५ राय लवण करण। ११ नसीब तुर्कमान।
६ मेदिनी राय।

हुक्म दिया गया कि सब सीधे रास्तेसे गुजरातको जावें। कुली-चखां और नवरङ्ग खां इस आज्ञाके साथ मालवे भेजे गये कि वहांके लशकरको लेकर इनसे जा मिलें।

ये बादशाहसे विदा हुए। कुछ लोग तो सेनाके एकत्र होनेके लिये रास्तेमें ठहरे और कुछ बेसमझ लोगोंके झूठी खबरें उड़ानेसे धीरे धीरे चले। जब ये मेड़तेके पास पहुंचे तो पहनसे ख्वाजा ताहिरने आकर कुतुबुद्दीन खांके मारे जाने और किले भड़ूचमें भी मुजफ्फरके अमल हो जानेका हताल्त कहा। ये बुद्धिमानोंसे इन अशुभ समाचारोंको गुप्त रख कर आगे बढ़े और शीघ्रतासे २० दे को (२) पाटन पहुंचे। वहां जो सेना थी वह हर्ष अगवानीको आयी और यहां जो सब सरदारोंने मिलकर सलाही की तो किसी किसीने कहा कि जब तक मालवेका लशकर नहीं आवे तब तक यहीं ठहरें और किसी किसीने कहा कि बाद-

१। कातिक बदी १ संवत १६४०।

२। माह बदी १४ बुधवार संवत १६४०—१ जनवरी सन् १६८४ ई०।

शाहको आने दें ; अभी आगे बढ़ना उचित नहीं है। इस प्रकार बहुत कम लोगोंने लड़नेकी सलाह दी। कारण इसका यह था कि मुजफ़्फरके पास ४० हजार सवार और १ लाख पैदल सेना थी। इधर सेना सिर्फ दस हजार ही थी। निदान दौलतखां लोदीने जो इनका मन्त्री और सेनापति था, कहा कि मालवेके अमीरोंके आने पर तो जीतमें उनका साझा पड़ जावेगा। जो तुम खानखाना बनना चाहते हो तो अकेले फतह करो ; नहीं तो अज्ञात अवस्थामें जीनेसे मर जाना अच्छा है।

मुजफ़्फर पर चढ़ाई।

खानखानाने यह सुन कर अहमदाबादके अगले सूबेदार एत-मादखांको जो भाग कर आया था पट्टन हीमें छोड़ा और बाकी लशकरके साथ लड़ाईकी इच्छासे कूच किया। युद्धके वास्ते जो व्यूह रचा था उसके ७ अङ्ग थे। उसके एक एक अङ्गमें कई अमीर, राजा, राव तथा ठाकुर नियुक्त किये गये थे जिनका व्योरा नीचे लिखा जाता है।

१। गर्भमें, स्वयं ये, शहाबुद्दीन अहमदखां, जान दरवेशखां, सुरतान राठोड़ (१) मीर मुजफ़्फर, अबुलफतह, मिरजा कुली खां, मुगल और शेख मुहम्मद मुगल।

२। दाहिनी भुजामें शेरवियाखां, मुहम्मद हसन, शेख अबुल-कासिम, बुनियाद बेग फीरोजा, मीर हाशम और मीर सालह।

बांयी भुजामें मोटा राजा (२)राय दुर्गा, तुलसीदास जादों (३) बीजा देवड़ा और रायनारायण दास जमींदार ईडर।

१। सुरतान राठोड़ प्रसिद्ध राव जयमल राठोड़के बेटे थे जो चित्तौड़गढ़में अकबर बादशाहसे लड़े थे।

२। मोटा राजा जोधपुरके महाराज थे इनका नाम उदयसिंह था। यह मोटे बहुत थे इससे अकबर बादशाह इनको मोटा राजा कहते थे।

३। ये करोलीके थे।

४। हिरावल अर्थात् आगेकी अनीमें—पायंदा खां मुगल, सैयद कासिम, सैयद हाशम, राय लवन करन, रामचन्द्र, सैयद बहादुर, सैयद शाह अली सैयद नसरुल्लाह और सैयद करमुल्लाह।

५। एलतमश अर्थात् गर्भ और हिरावलके बीचकी अनीमें मेदिनीराय, रामसाह, राजा मुकुट मणि, ख्वाजा रफीय, मुकम्मल बेग सरमदी, नसीब तुर्कमान, दौलतखां लोदी, सैयदखां करांणी, शेखवली, शेखजैन और खिजर आका।

६। तरह सहायक सेनामें ख्वाजा निजामुद्दीन अहमद बखशी, मीर अबुल मुजफ्फर, मीरमासूम भक्करी, बेग मुहम्मद तोकबाई, मीर हबीबुल्लाह, मीर शरफुद्दीन, और हाथी बलूोच।

७। किरावल अर्थात् आगे चलने वालोंमें मियां बहादुर उजबक। जङ्गी हाथी हरेक अनीमें थे।

मुजफ्फर यह सुनकर बहुतसे लशकर सहित अहमदाबादमें आया। व्यूहमें वह तो गर्भस्थ था, शेरखां फौलादी, और लूंभा काठी, दाहिनी तथा बायीं अनीमें थे और सालह बदखशी अगली अनीमें था। उसने मानपुरमें लड़नेकी सलाह की और वहीं तोपखाना भी चुना था।

इन्होंने ८ मोहर्रम (१) सन् ९९२ को सेनाकी उत्तेजनाके वास्ते यह युक्ति की कि बादशाहकी ओरसे एक फरमान [आज्ञापत्र] बनाया और बड़ी धूमसे अगवानी जाकर उसको लाये और सब फौजको सुनाया। जिसका यह आशय था कि हम आते हैं हमारे पहुंचने तक लड़ाई मत करना।

मुजफ्फरसे लड़ाई।

यह फरमान सुनकर सारी सेना आह्लादके मारे चिल्ला उठी और मुजफ्फरकी जगह छुड़ानेके लिये गांव सरखेजकी ओर चली।

१। माघ सुदी ११ चं० संवत १६४०।

६ बहमनको (१) वहां पहुंचकर अहमदाबाद और नदीके बीच डेरे किये। यह समाचार सुनकर मुजफ्फर भी उधरसे चला और यह खबर उड़ी कि वह पीछेसे आवेगा; इसलिये इन्होंने राय दुर्गाको तरहमेंसे [सहायक अनीमेंसे] कुछ फौज देकर पीछे भेजा; बाकी फौजें आगे बढ़ीं और दुशमनसे भिड़ीं। लड़ाई छिड़ी। दोनों ओरके वीर लड़े, कटे और मरे। हिरावल और एलतमशके पैर टूट गये; तो भी ये खानखाना होनहार वीर ३०० योधाओं और १०० हाथियों सहित जहां खड़े थे वहीं जमे रहे। मुजफ्फर इनके सामने ही ६।७ हजार सवारों सहित खड़ा था। इनके पास थोड़ीसी सेना देखकर लड़नेको आया। उस समय इनके कुछ शुभचिन्तकोंने इनके घोड़ेकी लगाम पर हाथ डाला कि रणांगनसे निकाल ले जावें; परन्तु इन्होंने लगाम छुड़ाकर हाथियोंको आगे बढ़ाया और दुशमनोंको सामनेसे हटाकर मैदान जीत लिया।

जीत और उसका उत्साह।

यह फतह ७ बहमन (२) सन् २८ तथा १३ मुहर्रम ९९१को हुई, जिसके उत्साहमें इन्होंने अपना सब धन माल साथियोंको दे डाला। अन्तमें एक मनुष्यने आकर कहा कि मुझे कुछ भी नहीं मिला। तब एक कलमदान जो बाकी रह गया था उसको देकर प्रसन्न किया।

मुजफ्फर पर और फतह।

मुजफ्फर राजमहेन्द्रीकी ओर भागा था; इन्होंने भागे हुओंका पीछा नहीं किया; उस दिन तो वहीं रहे। दूसरे दिन तड़के ही अहमदाबादमें जाकर सुशोभित हुए। यहां मालवेके अमीर भी आ मिले।

१। माघ सुदी १४ बु० संवत १६४०

२। माघ सुदी १५ भृगुवार संवत १६४०।

बादशाहने गुजरात आनेके विचारसे १० बहमनको (१) इला-हाबादसे कूच किया था कि २५ बहमनको (२) कोड़ा घाटमपुरमें इस फतहकी बधाई पहुंची और वे खुश होकर राजधानीको लौट गये।

मुजफ्फरने खंभातके सेठोंसे रुपये लेकर फिर १०।१२ हजार सवार इकट्ठे कर लिये। यह खबर सुनकर इन्होंने सैयद कासिम वगैरह कई अमीरोंको तो अहमदाबादमें छोड़ा और बाकीको मालवेके लश्कर सहित साथ लेकर खंभातके ऊपर धावा किया। मुजफ्र सैयद दौलतको कुछ फौज सहित धोलकेमें भेजकर अचला परमारके गांव "अवद" में चला गया।

इन्होंने बड़ौदेमें पहुंचकर तोलकखांको तो सैयद दौलतपर भेजा और आप मुजफ्फरके पीछे गये। १८ असफन्दारको (३) मुजफ्फरसे लड़ाई हुई। वह फिर भागकर नर्वदा पार चांपा पहाड़में चला गया जिसके दक्षिणमें तापती नदी बहती है और तीन ओर पहाड़ ही पहाड़ हैं।

जब यह नादोदमें पहुंचे तो सैयद दौलतपर तोलकखांके फतह पानेकी बधाई आयी जिससे लश्करवालोंका दिल और बढ़ा और व्यूह रचकर उस पहाड़पर धावा किया गया। मुजफ्फर फिर लड़ाई हार कर भागा। बादशाही फौजने पीछा करके उसकी २ हजार सेनाको मारा और ५०० को पकड़ा।

खानखानांका खिताब और ५ हजारी मनसब।

जब बादशाहको इस दूसरी फतहकी खबर पहुंची तो उन्होंने प्रसन्नतापूर्वक इनको खानखानांका खिताब, एक भारी खिलअत और पांच हजारी मनसब बख्शा और दूसरे अमीरोंको भी मनसब बढ़ाये।

१। फागुन बदी ३।

२। फागुन सुदी ३ ता० १ सफर सन् ९९२।

३। चैत बदी १२ संवत १६४०।

गुजरातियोंका भागना ।

सैयद दौलत खंभातमें चला गया था। इसलिये इन्होंने मोटा राजा, मेदनीराय, राजा मुकटमणि, रामसाह, उदयसिंह, रामचन्द्र, बाघ राठोड़, तुलसीदास जादों बहादुर, अनवलगक्कड़, अबुल फतह मुगल, करावहरी, और दौलतखांको उसपर भेजा। इन सरदारोंने वहां जाकर उसको भगा दिया।

फिर खानखानाने महेन्द्रीसे ख्वाजा, निजामुद्दीन अहमद, मीर मासूम, और सुरतान राठोड़को आबिद और मीरक यूसुफ वगैरह पर भेजा जो राजपीपलेके पहाड़से निकलकर लूट मार करते थे। ये जब धोलकेमें पहुंचे तो वे लोग भाग गये।

देशका प्रबन्ध और फतहबाग।

खानखाना १५ उर्दी (१) बिहिश्त सन् २९ को अहमदाबाद पहुंचकर देशके प्रबन्धमें प्रवृत्त हुए और जहां मुजफ्फरके ऊपर फतह पायी थी वहां एक बाग लगाया। उसका नाम फतह बाग (२) रखा।

भड़ूंचकी फतह।

मुजफ्फर राजपीपलेसे पट्टनको आया। इन्होंने शादमांबेगको उधर भेजा तो वह ईडर होकर काठियावाड़में चला गया। वहांसे बन्दर घोघेमें जाकर छिप रहा। खानखानाने भड़ूंचके ऊपर फौज भेजकर वह किला भी १० मिहरको (३) मुजफ्फरके किलेदारसे खाली करा लिया।

मुजफ्फरका पीछा करना।

इस वर्ष लड़ाई दङ्गा रहनेसे खेतीकी उपज कम हुई जिससे सरदारों और सिपाहियोंका बल घट गया। गुजराती यह

१। जेठ बदी १० संवत १६४१ ता० २३ रबीउस्सनी सन् ९९२।

२। अब इसेफतहबाड़ी कहते हैं।

३। आसोज बदी में सं० १६४१।

भेद पाकर उपद्रव करने लगी। मुजफ्फर गोंडलमें आया जो जूना-गढ़से १५ कोस है। अमीनखां गोरी और जाम (१) भी उससे मिल गये। खानखानांने कुलीचखांको अहमदाबादमें छोड़ा और फौजके २ विभाग करके मेदिनीराय, बेगमुहम्मद, कामरांबेग, रामचन्द, उदैचन्द आदिको धंधूका से ७ कोसपर गांव छड्डालेमें भेजा। और अहमदाबादसे ७ कोस गांव बेराईमें बयान बहादुर तथा भूपतराय प्रभृतिको नियत किया। सैयद कासमको पट्टनमें छोड़ा और आप (२) आजर १२ सन् २९ को मुजफ्फरसे लड़नेको गये। उस समय वह मोरवीमें था जहांसे इनका आना सुनकर खरड़ी और राजकोटको चल दिया जो काठियावाड़में है। बीरम गांवसे खरड़ी तक ६० कोसमें बस्ती न थी। तो भी ये भोजनकी सामग्री लेकर कड़ी सवारीसे वहां पहुंचे तो वह पहाड़में जो द्वारकासे २० कोस समुद्र तट पर है चला गया। इन्होंने भी वहां जाकर छावनी डाल दी। अमीनखांने अपने बेटेको भेज दिया। जामके वकीलोंने आकर कहा कि मुजफ्फर यहांसे ४० कोस पर है। ये उधर गये; परन्तु वह नहीं मिला। तब इन्होंने अपनी सेनाके ४ खण्ड करके उस प्रदेशमें भेजे। वहांके राजपूत वीरतासे लड़कर काम आये और वह सुन्दर देश लुट गया।

जामका अधीन होना।

इस अवसरमें मुजफ्फर अपने बेटोंको जामके पास छोड़ कर अहमदाबाद गया। इन्होंने उसकी कुछ परवाह न करके जामको दण्ड देना चाहा। वह भी पहले तो सेना सजकर लड़नेको आया और फिर ४ कोस दूर रहकर अधीनता स्वीकार करने लगा। राय दुर्गा और कल्याण रायके बीचमें पड़नेसे उसकी प्रार्थना स्वीकृत हुई। तब उसने अपने बेटे जस्साको लाल रङ्गके हाथी और भेंटकी दूसरी वस्तुओं सहित भेजा।

१। जाम नगरका राजा।

२। मगसर सुदी २ सं० १६४१।

मुजफ्फरको फिर हराना।

नवा नगर इनसे १० कोस रह गया था कि ये जामके अधीन हो जानेसे अहमदाबादको लौटे। मोरवीके पास पहुंच कर सुना कि मुजफ्फर अहमदाबादको आता है। हड्डाले और परांतोंकी सेना मिलकर लड़नेको गयी। वह परांतोंमें आकर लड़ा। मदन चौहान, रामचन्द, उदैसिंह, सैयद लाद, सैयद बहादुर, सैयद शाह अली, भोपत दखनी, केशवदास, बाघ राठोड़ आदि जो पहिलो सेनामें थे खूब लड़े। ख्वाजम वरदी लड़ता हुआ मुजफ्फरके पास तक जा पहुंचा। वह फिर भाग गया और उसके कई सरदार मारे गये।

खानखाना दरबारमें।

ये इस बधाईसे प्रसन्न होकर अहमदाबादमें आये। बादशाहका हुक्म पहुंचा था कि जब गुजरातके प्रबन्धसे निश्चिन्त हो जाओ तो दरगाहमें आओ। इसलिये ६अमरदाद (१) सन् ३० को अहमदाबादसे चलकर २४ को (२) बादशाहकी सेवामें पहुंचे। बादशाहने बहुत कृपा की और जब लाहौरको जाने लगे तो २२ शहरेवर (३) सन ३० को राजा टोडरमलके तालाबसे जो फतहपुर सिकरीके पास था इनको गुजरात जानेकी आज्ञा दी। इनकी अनुपस्थितिमें अवसर पाकर मुजफ्फर फिर अहमदाबाद पर आया था, परन्तु कुतुबुद्दीनखां आदि अमीरोंने ३० कोस तक सामने जाकर उसको रणकी (४) तरफ भगा दिया।

१। सावन सुदी ३ संवत १६४२।

२। भादों बदी ६ सं० १६४२।

३। आसोज बदी ५ संवत १६४२।

४। एक बड़ी झील खारे पानीकी जो कच्छ देशमें है।

सिरोही और जालोरके अधिपतियोंको अधीन करना।

इन्होंने गुजरातको आते हुए सिरोही और जालोरके जमीं-दारोंको जो उस समय गुजरातके अधीन थे रास्ते में अपने पास बुलाया। सिरोहीका राव तो कुछ दिनोंमें आकर मिल गया। और जालोरपति गजनीखांने पहिले तो हुक्म नहीं माना और अब फिर इनको दृढ़प्रतिज्ञ देख कर आया तो उसको अपने साथ ले गये और जालोर उससे छीन कर दूसरेको दे दी।

शिकारमें वेतरह फंस जाना।

इस यात्रामें ईश्वरने एक बड़ी जान जोखिमसे इनको रक्षा की थी। सिरोहीके पास पहुंच कर इनके मनमें यह वासना उपजी कि स्त्रियों सहित जाकर शिकारका आनन्द लें और यौवन मदसे इस धुनमें सेनासे दूर निकल गये। फिर थकावट और धूपसे व्याकुल होकर एक वृक्षकी छायामें जा बैठे। इतनेमें एक अहेरीने अनीतिसे एक गाय पकड़ ली। इस पर उस प्रान्तके राजपूत लड़नेको आये। यह उठ कर उनपर गये। कुछ इनके साथी भी पहुंचे। बड़ी लड़ाई हुई। इनको जान पर आ बनी। बचनेकी आशा न थी कि जीत हो गयी और उन लोगोंको पूरा दण्ड दिया गया।

सन् ३१ में (१) बादशाहने इनके साले खान आजम मिरजा अजीज कोकाको बराड़ फतह करनेका हुक्म दिया था। वह मालवेसे गया; परन्तु जो अमीर उनके साथ थे उससे नहीं बना इसलिये उस काममें सफलता न पाकर सहायता प्राप्त करनेके लिये वह इनके पास आया। ये बड़ी धूमधामसे अगवानी। जाकर उसको लाये और सहायताके वास्ते सेना भी सजायी; परन्तु उसके शत्रुओंने इनको भी बहका दिया।

१। सन् ३१ इलाही चैत सुदी १ संवत १६४३ को लगा था अर्थात ये दोनों वर्ष एक ही दिन आरम्भ हुए थे।

थे चुप हो रहे और खान आजम जैसा आया था वैसा ही चला गया।

गुजरातमें नये कर्मचारी।

इसी साल बादशाहने एक एक सूबेमें [मण्डलमें] दो दो कार्य्य-कुशल माण्डलीक [सूबेदार] नियत किये कि जो एक दरबारमें आवें या एक बीमार हो जावे तो दूसरा उसका काम करे। ऐसे ही दीवान बख्शी भी पृथक पृथक स्थापित कर दिये। गुजरातके सूबेमें ये तो थे ही; दूसरा नाम कुतुबुद्दीनखांका लिखा जो इनकी अनुपस्थितिमें काम किया करता था। अबुल कासिमको दीवान और निजामुद्दीन अहमदको बख्शी बनाया।

सुलतान मुरादके विवाहमें जाना।

सन् ३२ में (१) शाहजादे मुरादका विवाह इनके साले खान आजम मिरजा अजीज कोकाकी बेटीसे ठहरा था। इसलिये बादशाहने इनको लिखा कि अगर उस देशमें शान्ति हो गयी हो तो दरबारमें उपस्थित हो जाओ। वहां उन दिनों कोई अशान्ति भी न थी। इस वास्ते ये साड़नी पर सवार होकर १५ दिनमें १६ उर्दी (२) बहिश्तको बादशाहके पास पहुंचे जो उस समय पंजाबमें थे और २५ को (३) शाहजादेका विवाह हो गया।

दरबारमें पञ्चायत।

खान खाना बहुत दिनों तक दरबारमें रहे। बादशाह बड़े बड़े कामोंमें उनको भी पञ्च और मध्यस्थ बनाते थे जिसका एक दृष्टान्त यह है कि शहबाज खां और राजा टोडरमल वजीरका आपसमें हिसाबका झगड़ा था। उसकी सफाईके लिये बाद-

---

१। सन ३२ चैत सुदी ३ संवत १६४४ को लगा था।

२। द्वितीय बैसाख बदी १४ संवत १६४४।

३। द्वितीय बैसाख सुदी ८ संवत १६४४।

शाहने इनको धजवहौला, हकीम धबुलफतह, और शेख अबुल फजल को पञ्च बनाया था जिन्होंने दोनोंके स्वार्थको अलग करके न्यायसे चुका दिया।

खानखाना काश्मीर और काबुलमें।

सन् ३४ में (१) बादशाह काश्मीरको गये। ये भी साथ थे। बादशाहने उस भूमिकी शोभा देख कर हीरापुरसे इनको बड़े शाहजादे और बेगमोंके लानेके लिये भेजा। शाहजादा तो चला आया और बेगमोंको मार्गकी सङ्कीर्णतासे वो शहरेमें छोड़ आया। बादशाह जो बेगमोंकी प्रतीक्षामें थे शाहजादे पर बहुत क्रुद्ध हुए और खानखानाको भी लिखा कि जो शाहजादेकी मत मारी गयी थी तो तुमने क्यों ऐसा किया।

यह कार्रवाई करके आप अगवानी हो कर बेगमोंको लानेके लिये अकेले हीरापुर तक पीछे चले गये; फिर मन्त्रियोंकी विनय पत्रिकाओंके पहुंचनेसे लौट आये और इन्होंको लिख भेजा कि बेगमोंको अच्छी तरह ले आना।

ये बड़े परिश्रमसे मार्ग साफ करके कहारोंकी सहायता देते हुए बेगमोंको ले आये जिससे बादशाह बहुत प्रसन्न हुए। (२)।

तुजक बाबरीका अनुवाद।

१ अमरदादको (३) बादशाह काश्मीरसे चलकर काबुलको गये और ८ आजरको (४) काबुलसे हिन्दुस्थानको लौटे। रास्ते में १३ आजरके (५) योरत बादशाह नामक पड़ावमें ठेरे हुए। वहां इन्होंने बाबर बादशाहके इतिहासका फारसी

१। सन् ३४ चैत सुदी ५ सं १६४६ को लगा था और बादशाह १६ उर्दी बहिश्त जेठ बदी ७ की रातको कश्मीर गये थे।

२। ८ तीर सावन वदी ४ को यह काम हुआ था।

३। सावन सुदी १२सं १६४६। ४। मगसर बदी ४सं १६४६

५। मगसर बदी १३।

अनुवाद जो इस अवकाशमे किया था बादशाहकी दृष्टिमें लाकर रखा तो बादशाहने बहुत धन्यवाद दिया। यह इतिहास स्वयं बाबर बादशाहका लिखा हुआ तुर्की भाषामें था जिसको हिन्दुस्थानी लोग नहीं समझ सकते थे। इन्होंने उसको फारसीमें (१) करके उन लोगोंका बड़ा उपकार किया।

बड़ा मन्त्री होना।

जब इस तरह इनको कार्यदक्षता और निःस्वार्थता बादशाहको निश्चय हो गयी तो उन्होंने १३ दे (२) सन् ३४ को बारी कआब (३) नामक पड़ाव पर इनको वकालतका बृहत् अधिकार दिया जो राजा टोडरमलके मरजानेसे खाली हुआ था।

वकालतका ओहदा मुगलोंके राज्यमें सर्वोपरि था। वकील बादशाहका प्रतिनिधि समझा जाता था। इनके बाप भी इसी पद पर थे।

जौनपुर जागीरमें।

गुजरात इनसे उतरकर मिरजा अजीज कोकाको मिली तो जौनपुर इनको जागीरमें मिला और गजनी खांको जिसे उन्होंने पकड़ा था और जो अब दरबारमें आकर निरन्तर सेवा किया करता था बादशाहने ८ उर्दी बहिश्त (४) सन ३५ को जालोर प्रदान किया जो इन्होंने उससे छीनकर दूसरेको दे दिया था।

कारनका जन्म।

१३ आजर (५) सन ३५ को इनका तीसरा बेटा कारन जन्मा। इनको सदा सन्तानकी वांछा रहा करती थी। जब गुजरातमें थे तो

१। फारसी तुजक बाबरी छप गयी है उसमें तो इनका नाम नहीं है पर छापेवालेने ऊपर छापा है।

२। पौस बदी १२ संवत १६४६। ३। यह स्थान काबुल और सिन्धु नदीके बीचमें है। ४। वैसाख बदी १०सं० १६४७। ५। मंगसर सुदी ८ सं० १६४७।

एक रात बादशाहने शेख अबुलफजूलसे कहा कि खानखानाको लिख दो कि ईश्वर शीघ्रही तीन पुत्र देगा। उनके ऐरच, दाराब, और कारन नाम रखना। सो वैसाही हुआ और इन्होंने इसका बड़ा उत्सव किया। उसमें बादशाहको भी बुलाया। बादशाह गये और इनका मान बढ़ाया।

कंधार जाना।

२४ दे (१) सन ३५ को बादशाहने इन्हें कंधार जानेका हुक्म दिया। शाहबेग खां, रावल भीम दलपत जानशबहादुर, बलभद्र राठोड़, शेरखां आदि ४५अमीरोंको नौकरी इनके साथ बोली गयी।

कंधार पहिले तो इनके बापको जागीरमें था ; फिर बादशाहने ईरानके बादशाहको दे दिया था और उसकी तरफसे मुजफ्फर हुसेन मिरजा और रुस्तम मिरजा कन्धारमें थे। अब ईरानका बल घट गया था और वे भी बदले हुए थे। उधर तूरानका बादशाह कन्धारको ताकमें था ; इसलिये बादशाहने कन्धार लेनेका विचार करके इनसे कहा कि बलूचस्थानके रास्तेसे जाओ। जो वे लोग हुक्म मान लें तो वह सरस देश उन्होंके पास छोड़ देना, नहीं तो पूरा दण्ड देना और ठट्ठेका जमींदार अबतक सेवामें नहीं आया है, इस वास्ते किसी सुपात्र पुरुषको उसके पास भेजना जो वह आजावे या सेना साथ कर दे तो ठीक, नहीं तो अभी कुछ न बोल कर लौटते वक्त समझ लेना।

इन्होंने कूच करके लाहोरसे एक कोसपर डेरा किया। पहिली बहमनको (२) बादशाह वहां पधारे। बड़ी सभा जुड़ी। खूब नजर निछावर हुई।

मुलतानमें पहुंचना।

मुलतान और भक्कर इनको जागीरमें थे ; इसलिये इन्होंने पासका रास्ता जो गजनी और वंगश होकर था, छोड़कर दूरका

१। माघ बदी ५। २। माघ बदी १०संवत् १६४७।

रास्ता लिया और लोभी लोगोंने कहा कि कन्धार तो निर्धन देश है और ठठ्ठा मालदार है जिसपर इन्होंने बादशाहसे सिन्ध लेनेकी आज्ञा मांगी। बादशाहने इनको आज्ञा देकर शाहजादे दानियालको कंधार पर भेज दिया।

मुलतानके पास बिलोची सरदार आकर मिले। भक्करके समीप व्यूह रचा गया।

मिरजा जनीने दूत भेजकर कहलाया कि जो मेरे देशमें उपद्रव न होता तो मैं खुद कन्धारको चलता। अब अपनी सेना आपके साथ कर दूंगा।

सिंधपर चढ़ाई।

इन्होंने दूतोंको कैद करके लम्बे लम्बे कूच किये। इतनेमें यह खबर आयी कि सहवानके किलेमें आग लगी और धान चारा जल गया।

अब इन्होंने एक सेना जलमार्गसे और दूसरी थल मार्गसे भेजी। पहले जल सेनाने सहवानके नीचेसे जाकर नावोंको ले लिया और किलेवालोंकी तोप और बन्दूकसे कुछ हानि न हुई। यह नगर भी उसी भांति सिन्ध देशका द्वार है जैसा कि गढ़ी बंगालेका और बारहमूला काशमीरका है।

ये किलेके पास जाकर ठहरे। किला सिन्ध नदीके एक ऊंचे तटपर था। नदीकी तीन धाराएं उसके पास आकर मिली थीं। किराबेग नावोंमें बैठकर गया और बहुतसा माल लूट लाया। मिरजा जानी यह बात सुनकर लड़नेको आया। नसीरपुरके पासकी जगहको जिसके एक ओर नदी और दूसरी ओर नाले थे उसने किला बनाकर तोपों और जङ्गी नावोंसे सुदृढ़ किया।

इतनेमें रावल भीम और दलपत राठोर जैसलमेर और बीकानेरसे ऊमरकोट होकर आये और नसीरपुरपर जल और थलके मार्गसे फौज भेजी गयी कुछ लोग घाटोंपर भी छोड़े गये।

सिन्धियोंपर फतह।

१८ आबान (१) सन् ३६ को शत्रुओंसे ६ कोस पर जा पहुंचे। २१को(२) कुछ फौज सिन्धियोंकी नावोंमें बैठकर लड़नेको आयी। परन्तु रात हो जानेसे लड़ाई न हुई। बादशाही सेना रातके अंधेरेमें नदीसे उतर गयी। तड़के ही तोपें बहुत तेजीसे चलने लगीं। जो लोग पानीसे उतर गये थे, उन्होंने तीरोंकी वर्षा की; फिर बरछे और जमधरको मार दी। निदान सिन्धी भाग गये। बड़ी फतह हुई। ४ नावें माल और मनुष्यसे भरी पकड़ी गयीं। एकमें हुरमुज बन्दरका एलची भी था जो व्यापारियोंके प्रबन्धके लिये ठट्ठेमें रहता था और जानी बेग जो यह जतलानेके लिये कि टंग देशान्तरके लोग सहायक बनकर आये हैं अपने कुछ आदमियोंको कई देशोंके लोगोंको वरदी पहिना कर लाया था।

मिरजा जानीके ऊपर दोनों तरफसे जानेका विचार होकर रह गया। नहीं तो पूरी फतह हो जाती। इस फतहकी बधाईमें जो सांडनी सवार दौड़ाया गया था, वह १२ आजरको।(३) लाहोरमें बादशाहके पास पहुंचा।

ठट्ठेपर फौज।

फिर सिंधियोंने रास्ता रोक कर रसद बन्द कर दी जिससे इन्होंने २७ देको (४) किलेका घेरा छोड़ दिया और जूनमें (५) जाकर छावनी डाली, बाकी फौजें ठट्ठे पर गयीं।

१। मंगसर बदी १० सं० १६४८।

२। मगसर बदी १२ सं० १६४८।

३। पौष बदी ५ संवत १६४८।

४। माघ सुदी ३ संवत १६४८।

५। यह वही जगह थी जहां हुमायूँ बादशाह भी रहे थे और इनके बाप गुजरात होकर पहुंचे थे।

मिरजा जानीकी हार और सन्धि।

मिरजा जानी किलेसे निकलकर सहवांको गया। इन्होंने ख्वाजा मुकीम और राजा टोडरमलके बेटे धारू वगैरहको उसपर भेजा; इनसे और उससे बड़ी लड़ाई हुई। पहले तो सिन्धी जीते और धारू वीरतापूर्वक मारा गया; परन्तु पीछे बादशाही फौज जीती और मिरजा जानी हार कर अपने किलेको भागा जिसको इन्होंने धावा मार कर उसके पहुंचनेसे पहले ही विध्वंस कर दिया। तब वह सेहवानसे ४० कोस सिन्धु नदीके निकट एक और किला बनाकर रहा। इन्होंने २६ फरवरीन (१) सन् ३७ को जाकर उसे भी घेरा। दोनों तरफसे तीर और बन्दूककी लड़ाई होने लगी। नेनकोटके किलेमें जो थे, वे अपने किलेदारका सिर काट लाये और इस भांति वह किला अनायास ही हाथ आ गया जिसके हर्षमें मोरचे आगे बढ़ाये गये। सिंधियोंमें बीमारी फैली बादशाही लशकरमें रसद बन्द हुई तो बादशाहने बहुतसा नाज और रुपये भेज दिये। उसके पहुंचनेसे सेनाका साहस बढ़ गया और वह यहांतक बढ़ती हुई चली गयी कि बाहरवाले अन्दरवालोंके हाथसे बरछे छीन लेते थे। निदान मिरजा जानीने सेविस्तानका जिला, सेहवानका किला, २० जङ्गी नाव और अपनी बेटी मिरजा एरचको देना स्वीकार करके संधि कर ली और बरसातके पीछे बादशाहकी सेवामें उपस्थित होनेका भी वचन दे दिया। तब इन्होंने १६ खुरदादको (२) मोरचे उठा लिये। मिरजाने बेटी व्याह दी और सहवान सौंप देनेको आदमी भेज दिये।

मिरजा जानीका मिलाप और मुल्ला शकेबीको २००० मोहरोंका इनाम।

फिर मिरजा जानी मिलनेको आया। उस दिन इन्होंने एक

१। बैसाख सुदी ३ संवत १६४८।

२। प्रथम आषढ़ बदी १० संवत १६४८।

बड़ी सभा सजायी थी। इनके नौकर मुल्ला शकेबीने इस फतहके विषयकी एक कविता बनायी थी ; वह उसने इस सभामें पढ़ी जिसकी रीझमें इन्होंने 1000 अशरफियां उसको दीं और इतनी ही मिरजा जानीने भी सिर्फ एक पदके पारितोषिकमें प्रदान कीं जिसका यह आशय था ;—

"जो हुमा (पक्षी) आकाशमें उड़ा करता था, उसको तूने पकड़ा और जालसे छोड़ दिया।"

मिरजाने मुल्लासे कहा,—"रहमत खुदा"की तुझपर कि तूने मुझको हुमा कहा। जो गीदड़ कहता तो तेरी जीभ कौन पकड़ता ?

फिर मिरजा जानीपर चढ़ाई।

फिर इन्होंने सेहवानसे २० कोस सन नामा ग्राममें छावनी डालकर बरसात व्यतीत की। मिरजाने कहलाया कि सांवनू (१) साथ लेकर दरगाहको चलूंगा और उसने सेहवानका पूरा प्रान्त भी नहीं सौंपा था। वरन गांव और हालाकंडीको भी नहीं छोड़ा था। इसलिये इन्होंने उसके दूतको ठहराके कुछ फौज सिन्धु नदीसे उतार कर ठट्ठेको भेजी। कुछ जङ्गी नावोंमें बिठायी और कुछ नदीके निकटसे चलायी। विचार यह था कि तीनों फौजें शीघ्रतासे पहुंच कर नसीरपुर ले लें जिससे मिरजा जानी दरगाह जानेमें विलम्ब न करे।

नसीरपुरकी फतह।

फिर ये दूतको विदा करके पीछेसे आप भी आ गये और नसीरपुर ले कर उन तीनों फौजोंको उसी भांति आगे बढ़ाया। मिरजा ठट्ठेसे तीन कोस चलकर नदीके तटको दृढ़ करनेके लिये वहां ठहरा था कि लोगोंने जाकर उसका बाजार लूट लिया। मिरजाने वकील भेजकर कहलाया कि प्रतिज्ञा भंग क्यों की ? इन्होंने जवाब दिया कि प्रतिज्ञा तो हमारी टूटनेवाली नहीं है ;

१। फसल खरीफ।

परन्तु सुना था कि हुरमुज बन्दरके फरंगी इस देशपर धावा करना चाहते हैं; इसलिये बन्दर लाहरीको जाते हैं। यह कहकर लूट लौटा दी।

मिरजा जानीका सब देश सौंप देना।

१० आबान (१) सन् ३७ को ये और मिरजा मिले और इन्होंने ठट्ठेको कूच किया। जब रास्तेमें मिरजाकी तरफसे कुछ बिरोध न देखा तो कहा कि निबाड़ा क्यों नहीं दे देते हो जिससे कि फिर कोई कुछ कह ही न सके? मिरजाने लाचारीसे सब देश सौंप दिया और दरगाहमें जानेकी तय्यारी की।

ठट्ठे और लाहरी बन्दरमें जाना।

ये ठट्ठेको देखकर बन्दर लाहरीमें गये और शाह बेग आदि कई पुरुषोंसे कहा कि तुम मिरजाको लेकर आगे चलो। तब कुछ लोगोंको ठट्ठेमें छोड़ कर थलके मार्गसे लौटे और फतह बागके पास मिरजासे आ मिले।

मिरजा जानीको दरबारमें लाना।

ये २९ बहमन (२) सन् ३७ को सैयद बहाउद्दीन आदि कई अमीरोंको सिन्धमें छोड़कर मिरजा जानीके साथ दरगाहमें पहुंचे। ८ फरवरदीन (३) सन् ३८ को लाहोरके दौलतखानेमें दोनोंका मुजरा हुआ।

दक्षिण जीतनेको जाना।

२५ महर (४) सन् ३८ को बादशाहने सुलतान दनियालको दक्खिन फतह करनेको भेजा। इनको भी साथ किया; परन्तु

१। कार्तिक बदी १२ संवत १६४९।

२। फागुन बदी २ संवत १६४९।

३। चैत बदी ११ संवत १६४९।

४। कार्तिक बदी ९ संवत १६५०।

इसी कामपर सुलतान मुराद पहले जा चुका था। वह अब दनियालके जानेसे अप्रसन्न होगा, यह सोचकर बादशाहने दनियालको बुला लिया और सुलतानपुरमें आकर १५ दे (१) सन् ३८ को इन्हें हुक्म दिया कि आगरेमें जाकर सेना एकत्र करें और सुलतान मुरादको लिखा कि खानखाना सिपहसालारके आते तक गुजरातमें ठहरा रहे। इसपर वह भड़ोचमें ठहर गया।

शाहजादे मुरादकी नाराजी।

ये आगरे आये और जब सेना इकट्ठी हो गयी तो भेलसेमें जाकर कुछ दिनोंतक रहे जो इनकी जागीरमें था। ९ अमरदाद (२) सन् ४० को उज्जैनमें पहुंचे। सुलतान मुराद गुजरातमें इनका रास्ता देख रहा था। अब जो इनका मालवे होकर जाना सुना तो कुपित होकर इनसे जवाब पूछा। इन्होंने अरजी भेजी कि खानदेशका जमींदार राजा कलीखां भी बादशाही फौजके साथ हो जावेगा। उसको लेकर आता हूं। तब तक आप गुजरातमें शिकार खेलें।

शाहजादा इस जवाबको सुनकर फिर भड़का और गुजरातसे दक्षिणको चल दिया। तब तो ये लाव लशकर तोपखाना और फीलखाना मिरजा शाहरुखको सौंपकर दौड़े और १८ आजर (३) सन् ४० को चांदोरके पास जो अहमदनगरसे ३० कोस इधर है शाहजादेकी सेवामें पहुंचे; परन्तु शाहजादेने अपने अतालीक सादिकखांके बहकानेसे इनको दरबारमें नहीं बुलाया और जो दूसरे दिन बहुतसी कहा सुनीसे बुलाया भी तो बहुत रुखाईसे सलाम लिया। इससे ये और दूसरे अमीर जो इनके साथ थे दिलमें नाराज हुए और कामसे हाथ खेंच बैठे। शाहबाज खां भी इनके साथ गया था। सादिक खांको उससे भी शत्रुता थी। इसलिये वह भी मारे डरके दरबारमें कम जाता था।

१। पोस बदी १३।१४ संवत १६५०।

२। सावन बदी ११ संवत १६५२।

३। मंगसर सुदी ९ संवत १६५२।

अहमदनगर पहुंचना।

७२ (१) सन् ४०को शाहजादा अहमदनगरसे आधकोस पहुंचकर ठहरा। वहां बहुत लोगोंने आकर रक्षापत्र लिये फिर ये और शहबाज खां शहरमें गये। परन्तु इनकी बेपरवाईसे सिपाही प्रजाको लूटने लगे उनको बहुत परिश्रमसे रोका तो सही; परन्तु शहर वालोंका दिल फिर गया। चांदबीबीने जो अहमदनगरके बादशाह बुरहान निजामुल्मुल्ककी बहन थी दरवाजे बन्द करके लड़ाईको ठानी।

दूसरे दिन शाहजादेने अहमदनगरको घेरा। तीसरे दिन शाहअली और अभंगर खां उधरसे इनके मोरचेपर आये और लड़ाईमें हार खाकर गये; परन्तु आपसकी फूटसे उनका पीछा नहीं किया गया।

आपसकी फूट और अहमद नगरवालोंसे सन्धि।

सेनामें जो स्याने आदमी थे उन्होंने कहा कि यहां ३ बड़ी फौजें हैं। तीनों तीन काम करें अर्थात् किलेकी तरफ देशका दबाना और रास्तोंकी रक्षामेंसे एक एक काम लेलें परन्तु कुछ स्थिर न हुआ;

११ असफन्दारमजको (२) किलेकी कुछ दीवार बारूदसे उड़ायी गयी; मगर अन्दर जानेमें इतनी ढील हुई कि किलेवालोंने उसकी मरम्मत करली और बराड़ देना करके सन्धिकी बात चलायी शाहजादेने स्वीकार करके १० फरवरदीन (३) सन् ४१ को अहमद नगरसे कूच किया और १४ उर्दी बहिश्तको (४) महकरमें (५) पहुंचकर जगह जगह थाने बिठा दिये। एक थानेपर खानखानाको

१। पौष बदी १३ संवत १६५२।

२। फागुन सुदी २ संवत १६५२।

३। चैत सुदी १ संवत १६५३।

४। बैसाख सुदी ६ संवत १६५३।

५। बराड़ देशका एक स्थान।

भी रख दिया, क्योंकि सादिकखांने उससे यह जड़ दी थी कि मैं तो आपका गुलाम हूं और चाहता हूं कि यह फतह आपके नामसे हो और खानखाना चाहता है कि अपना नाम करे और सेनापति भी आपही अकेला बना रहे।

दक्षिण दलका उमड़ना।

शाहजादेके आनेसे दक्षिणमें बड़ी खलबली पड़ी। अहमदनगर, बीजापुर और गोलकुण्डाके बादशाहोंने मिलकर लड़ने पर कमर बांधी। ६0000 सवारोंकी एक सजी हुई सेना तरल तोपखाने सहित प्रस्तुत की। बीजापुरका (१) नाजिर सुहेलखां हबशी सेनापति बना और लड़नेको आया।

दक्षिणियोंसे लड़ने जाना।

शाहजादेने अपने बहनोई मिरजा शाहरुखको उसपर जानेके लिये उद्यत किया और इनको सेना सज्जित करनेका हुक्म दिया। तब ये १५००० सवारोंका एक सुदृढ़ व्यूह रचकर कि जिसके १० अंग प्रत्यंग थे शाहपुरकी छावनीसे आगे बढ़े और पाथड़ीसे १२ कोस असनी गांवके पास लड़ाईकी जगह देखकर ठहर गये। व्यूहके अङ्ग प्रत्यङ्ग निम्न लिखित रूपके थे;—

१। कल्ब अर्थात् बीचके अङ्गमें ये आप और मिरजा शाहरुख आदि २४ अमीर थे।

२। दाहने अङ्गमें सैयद कासम और केशोदास आदि १७ वीर थे।

३। बांये अङ्गमें खान देशका स्वामी राजा अली खां था।

४। हिरावल अर्थात् सबसे आगेके अंगमें जगन्नाथ और दुर्गादि २० राजपूत सरदार थे।

५। अलतमश अर्थात् हिरावल और कल्बके बीचमें अली मरदान बहादुर आदि १० अमीर थे।

६। दाहने हाथकी सहायक सेनामें गजनीखानादि ८सरदार थे

---

(१) क्लीव।

७। बांये हाथको सहायक सेनामें हसनशाह नजरबेग और बहुतसे तुरकमान थे।

८। दहिने हाथके प्रत्यंगमें शेर ख्वाजा आदि १४ अमीर और अहदी थे।

९। बांये हाथके प्रत्यंगमें मीर अबुलमुजफ्फर आदि१८अमीर थे।

१०। चन्दावल अर्थात् पिछले अङ्गमें मलिक रुस्तम आदि ६ सरदार थे।

उधरसे सहेली भी अपनी सेनाको सजाकर आया। अहमद नगरवालों अर्थात् निजामुल्मुल्कको सेना तो बीचमें थी। बीजापुरके आदिलखांकी दहने और गोलकुण्डेके कुतुबशाहकी बांयें हाथ पर थी।

एक विशाल विजय।

ये २८ बहमन (१) ४१ को पहर दिन चढ़े गोदावरीसे उतर कर युद्धमें प्रवृत्त हुए जिसका प्रारम्भ दाहिने प्रत्यंगसे हुआ। शेर-ख्वाजा खूब लड़ा। पिछले दिनको घोर संग्राम मचा। दखनी बहुत थे और उनके पास तोपें भी बहुत थीं। इससे बादशाही फौज चल विचल हो गयी ; परन्तु जगन्नाथ राय दुर्गा राजसिंह और दूसरे राजपूत सरदार जो अलग अलग घोड़ थामे खड़े थे, बीजापुरवाले राजा अलीखांके ऊपर जा पड़े। वह वीरतासे लड़कर वहीं मर गया। उसके अमीर और ५०० नौकर भी काम आये। दखनी राजा अली-खांको मिरजा शाहरुख और खानखाना जानकर अपनी जीत होनेके भरोसेसे उस अन्धेरी रातमें कमर बांधे खड़े रहे। इधर बादशाही फौजको अपनी विजयका निश्चय था और राजा अली खांके वास्ते यह कल्पना की जाती थी कि वह दुशमनोंसे मिल गया या निकल भागा भी तो उसका डेरा लुट गया है।

१। फागुन बदी ३० संवत १६५३। तवारीख फरिस्तामें १८ जमादिउस्सानी है [फागुन बदी ४] इस विषयकी आलोचना आगे की जावेगी।

द्वारकादास हिरावलमें और सैयद जलाल ग़ज़नी अनीमें काम आये। रामचन्द जो बड़े बड़े धावे करता था राजा अली-खांकी फौजमें २० घाव खाकर गिरा और रात भर मुर्दों में पड़ा रहा। तड़के उसको उठाकर डेरे पर लाये और कई दिनोंमें वह मर गया।

प्रातःकाल बादशाही सेना जो रात भरकी प्यासी थी पानी पीनेको नदीकी ओर चली। यह अब ७००० थी। दखनी जो २५००० थे लड़नेको आये और थोड़ीसी लड़ाई लड़कर भाग गये। तीनों बादशाहोंके कई अमीर और बहुतसे सिपाही खेत रहे।

इस बड़ी फतहसे सबको अचम्भा हुआ। ४० हाथी और बहुत सी तोपें हाथ आयीं।

दूसरे दिन राजा अलीखांकी लोथ मिली। शङ्का करने वाले लज्जित हुए।

कुछ विशेष वृत्तांत मुआसिर-उल उमरासे।

मुआसिर उल-उमरामें कुछ विशेष वृत्तान्त इस युद्धका लिखा है। वह भी हम यहां लिखे देते हैं;—

पहर भर दिन चढ़ा था कि लड़ाई शुरू हुई, दुश्मनकी तोपोंके दनादन चलनेसे सेनाओंके दिल दहलने लगे। उस समय अलीबेग रूमी जो उस तोपखानेका अफसर था खानखा-नाकी प्रारब्धके प्रभाव तथा ईश्वरकी प्रेरणासे दौड़ता हुआ इनके पास आया और यह कह गया कि सारी आतशबाजी तुम्हारे बराबर चुनी हुई है और अभी उसमें आग दी जाती है। इस वास्ते जो आप दाहिनी तरफको मुड़ जावें तो ठीक होगा।

खानखानाने ऐसा ही किया और राजा अलीखांसे भी इधर आनेको कहलाया। वह खानखानाकी जगह तक पहुंचा था कि गनीमका तोपखाना एकदमसे चला। सूरज धुएंसे छिप गया। शत्रुकी फौज राजा अलीखांको खानखाना समझ कर बढ़ी। उधरसे राजपूत जो हरोलमें थे दौड़े और राजा अलीखांका वहीं

काम तमाम हो गया और उसके अमीर सब उसके आस पास काट मरे।

इधरसे खानखानाने धावा किया और दुश्मनोंकी फौजको वहांसे भगाया। परन्तु उसी अवसरमें रात हो गयी और दोनों फौजें अपनी अपनी जीत समझ कर सारी रात रणमें जमी खड़ी रहीं। कोई भी घोड़की पीठसे नहीं उतरा। दखनी तो यह समझते थे कि हमने खानखानाको मार डाला और उसकी विचली सेनाका नाश कर दिया है। खानखाना यह जानते थे कि बादशाही लशकरकी फतह हुई है।

दूसरे दिन ज्योंही प्रातःकालका उजाला हुआ, बादशाही लशकर जो रात भरका प्यासा था और जिसमें ७००से ज्यादा आदमी न थे पानी पीनेके वास्ते नदीको जाने लगे। सुहेल यह देखकर २५००० हजार सवारों सहित चढ़ आया। बड़ी लड़ाई हुई। दक्खनकी तीनों फौजोंमें बहुतसे आदमी मारे गये।

उस समय दौलतखां लोदीने जो हिरावलमें था इनसे कहा कि हम कुल ६०० सवार हैं। यदि सुहैलखांके या उसके तोपखाने और हाथियोंके सामने जाकर लडें तो आधे रास्तेमें ही खेत रहे। इसलिये उसकी पीठ पर जाकर धावा करते हैं।

खानखानाने कहा अरे! यह क्या करता है! दिल्लीका नाम डबोता है। दौलतखांने कहा जो जीते रहेंगे तो १०० नयी दिल्ली बसा लेंगे और जो मारे गये तो खुदासे काम है।

निदान जब दौलतखांने चाहा कि घोड़ा बढ़ावे तो सैयद कासमने जो बारहके (१) सैयदोंके साथ उसकी अरदलीमें था कहा कि हम तुम हिन्दुस्तानी हैं; मरनेके सिवाय और उपाय नहीं है; परन्तु खानखानाका इरादा तो जानना चाहिये कि क्या है।

(१) बारह एक बस्तीका नाम है। वहांके सैयद वीरतामें प्रसिद्ध थे।

तब दौलतखां लौटा और खानखानासे बोला कि इतनी बड़ी दलबादल जैसी सेनासे सामना है और जीत दुबिधिमें है। यदि हार हो जावे तो आप वह जगह बता दीजिये कि जहां आकर आपको ढूंढ़ लेवें। खानखानाने कहा कि "लोथोंके नीचे।"

यह सुनते ही दौलतखां (१) सैयदोंको साथ लेकर गया। उसने पीछेकी ओरसे धावा करके शत्रुओंको ऐसा गड़बड़ाया कि सुहेलखां उतने बड़े शाव लशकरका धनी होकर भी भाग निकला।

कहते हैं कि उसी दिन ७५ लाख रुपये रोकड़ और माल खानखानाके पास था। वह सब उन्होंने लुटा दिया और सिवाय ऊंटोंके बोझके और कुछ अपने पास नहीं रखा।

दखनियोंके ४० हाथी तोपखाने समेत लूटमें आये; परन्तु जब राजा अलीखांके मारे जानेका हाल खानखानाको मालूम हुआ तो उतनी बड़ी फतहका आनन्द शोक और सन्तापसे बदल गया।

यह फतह सन् १००५के जमादिउस्सानी महीनेके (२) अन्तमें हुई और यह ऐसी बड़ी फतह थी कि जिससे सारा दक्षिण देश कांप उठा था। परन्तु यहां शाहजादेके अति मद्यप होने और सेनापतियोंमें फूट पड़ जानेसे इतना भी न

१। दौलतखां लोदीका बाप सलीम शाह सूरके अमीरोंमेंसे था जब बाबर बादशाहने लोदियोंका राज्य ले लिया तो उमरखां गुजरात चला गया था। वह तो वहीं मरा और दौलतखां खानखानाका नौकर हुआ; परन्तु खानखाना उसको भाईके बराबर रखते थे। बहुतसी लड़ाइयां उन्होंने दौलतखांकी वीरतासे ही जीती थीं। फिर शाह दानियालने उसको खानखानासे माग लिया और वह उसीको नौकरीमें मर गया।

२। फागुन बदी बु० सं० १६५२।

हो सका कि १०।५ कोस तो शत्रुकी भागी हुई सेनाका पीछा करते जिसमें बादशाही लशकरकी धाक और भी दक्खिनियोंके दिलोंमें बैठ जाती।

खानखानाका शाहजादेसे रूठ जाना।

फिर ये शाहजादेका साथ छोड़कर अपनी जागीरमें (१) जा बैठे और वहांसे बादशाहके पास गये।

हम इस हालको तो यहीं छोड़ते हैं और तवारीख फरिस्तां परीक्षासे कुछ विशेष वृत्तान्त इस विषयका उद्धृत करते हैं। इस इतिहासका कर्ता मुहम्मद कसम फरिश्ता बीजापुरका रहने वाला था। इस प्रसङ्गसे उसने दक्षिणकी बादशाहतोंका वर्णन विस्तार पूर्वक किया है।

अहमद नगरका हाल तवारीख फरिस्तासे।

फरिस्तासे जाना जाता है कि अहमदनगरका राज्य उस समय सरदारोंकी आपा धापीसे पतला पड़ा हुआ था। बुरहान निजामशाहका बेटा इबराहीम जिसको तख्त पर बैठे हुए ४ महीने ही हुए थे, बीजापुरके बादशाह आदिलखांके मुकाबलेमें मारा गया था। अहमदनगरमें दो बड़े थोक दखनियों और हबशियोंके थे। दखनियोंका सरदार मियां मझू था। उसने रणागनसे अहमदनगरमें आकर इबराहीम निजामशाहके बेटे बहादुरशाहको तो जो १॥ वर्षका था उसकी फूफी चांदबीबीसे छीनकर जुनेरके किलेमें भेज दिया और अहमद शाहको जो दौलताबादमें कैद था, बुलाकर तख्त पर बिठाया। उस समय तो हबशी भी सम्मत थे। परन्तु पीछेसे उनके सरदार इख-लास खांने यह जानकर कि अहमद शाह राजवंशमेंसे नहीं है। मियां मझूसे झगड़ा किया। इस पर हबशियोंने अहमदन-

---

१। जागीरका नाम नहीं लिखा है शायद भेलसेमें चले गये हों।

नगरको घेर कर जुनेरके किलेदारसे बहादुर शाहको मांगा। परन्तु उसने बिना हुक्म मियां मञ्झूके नहीं दिया। हबशियोंने अहमदनगरके बाजारमेंसे एक लड़केको पकड़कर कहा कि यह निजामके घरानेसे है और उसको बादशाह बनाकर दस बारह हजार सवार इकट्ठे कर लिये। तब मियां मंझूने अर्जी भेजकर शाहजादे मुरादको गुजरातसे बुलाया। यह अर्जी अभी रास्तेमें हो थी कि हबशियोंमें जागीरों और कामोंके बांटनेपर झगड़ा होकर तलवार चली। दखनी सरदार जो उनसे आमिले थे उनका साथ छोड़कर मियां मंझूसे मिल गये। तब तो मियां बाहर निकलकर २४मुहर्रम(१) शनिवार सन् १००४को हबशियोंसे लड़ा और उनको जीतकर शाहजादे मुरादके बुलानेसे पछताया। इतने होमें सुना कि खानखाना और राजा अलीखां शाहजादेसे आमिले हैं और शाहजादा ३०००० हजार सवार मुगल पठान और राजपूतों सहित कूचकरके अहमद नगरकी सीमामें आपहुंचा। तब तो मियां मंझूको बड़ी चिन्ता हुई और वह आप तो सेना एकत्र करने और आदिलखां तथा कुतुबशाहको सहायता लेनेको अड़सेकी तरफ चला गया और अनसार खांको चांदबीबीको और खजानोंको चौकसीपर किलेमें छोड़ गया। चांदबीबी मियां मंझूसे नाराज थी और उसको अनसारखांका भी भरोसा न था इसलिये उसने मुरतिजा निजामशाहके धा भाई मुहम्मदखांसे उसके मारनेको कहा जिसने बड़ी वीरतासे अनसारखांको मार डाला और किलेमें बहादुर निजाम शाहकी आन दुहाई फेर दी।

२३ रबीउस्सानी (२) १००४ को शाहजादा मुराद बड़े बड़े अमीरों सहित उत्तर दिशासे आकर अहमद नगरके बाहर ईदगाहके पास खड़ा रहा और उसके कुछ दिन चले सिपाही काले

१। आसोज बदी ११ संवत १६५२

२। पौष बदी ८ संवत १६५२

चबूतरेके मैदान तक आगे बढ़ते हुए चले गये परन्तु चांदबीबीने तोपोंके कई फैर उनपर किये जिनसे वे हट गये और शाहजादा हश्तबहिश्त नामक बागमें जाकर रात भर जागता रहा।

शाहजादेने अहमद नगर और बुरहानाबादकी रचाके लिये कुछ आदमी भेज दिये थे और प्रजा तथा व्यापारियोंको अभय दान दे दिया था; इससे लोग मुगलोंका विश्वास करके अपनी अपनी जगह बैठ रहे थे।

दूसरे दिन शाहजादा, मिरजा शाहरुख, नव्वाब खानखाना, शहबाजखां कम्बो, सादिक मुहम्मद खां, मुरतिजा खां, राजा अलीखां और राजा जगन्नाथने किलेके नीचे आकर मोरचे लगाये।

२७ को (१) शहबाजखां कंबो जो दुष्टतामें प्रसिद्ध था, शाहजादेकी आज्ञाके बिना ही शहर देखनेका मिस करके सेना सहित आया और प्रजाको लूटने लगा। शाहजादे और खानखानाने जब यह सुना तो उसको बहुत झिड़का और बहुतसे लुटेरोंको भांति भांतिका दण्ड दिया। तो भी अहमदनगरके लोग तो रातको ही बाहर निकल गये।

उस समय निजामशाही अमीरोंके तीन स्वतन्त्र थोक थे। एक मियां मंझूका जो अहमदशाहको बादशाह जानकर आदिल खांकी सीमापर जा बैठा था; दूसरा इखलास खांका जो मोतीशाह नामक एक लड़केको बादशाह बनाये हुए दौलताबादके प्रान्तमें मंडला रहा था; तीसरा अभंग खांका वह भी आदिल खांके राज्यमें पड़ा था और बड़े बुरहान निजामशाहके बेटे शाह अलीको जो ७० वर्षका बूढ़ा था, बीजापुरसे बुलाकर बादशाह बना चुका था। इसको चांदबीबीने अहमदनगरकी रचाके लिये शीघ्रतासे आनेका परवाना भेजा था; परन्तु इसके आनेसे पहले इखलास खां अहमदनगरके घेरेकी खबर सुनकर दौलताबादकी तरफसे आया। उसके साथ

१। पौष बदी १३ सं० १६५२।

१०००० सवार थे। खानखानाने अपनी सेनामेंसे ६००० सवार छांट कर दौलत खां लोदीके साथ उसके रोकनेको भेजे। गङ्गाके तटपर दोनोंकी मुठभेड़ हुई। इखलास खां हारा; दौलतखांने पीछा किया और पट्टनको जा लूटा।

फिर अभंग खां शाहअलीको लेकर बीजापुरकी तरफसे आया। उसके दूत पहलेसे आकर किलेमें जानेका मार्ग जान गये थे सो वह उसको सीधमें चला आ रहा था। परन्तु लड़के हो उसके पहुंचनेसे पहले सुलतान मुरादने, जो मोरचोंको देखने चढ़ा था, वहां खाली जगह देखकर खानखानाको भेज दिया।

अभंग खां ३००० हजार चुने हुए सवार और १००० बन्दूकची लेकर रातके अंधेरेमें वहां पहुंचा और इन लोगोंको सोया हुआ देखकर लड़नेको चढ़ आया।

खानखाना २५०सवारोंसहित जो पहरे पर थे छतके ऊपर जाकर तीर मारने लगे और उनका नौकर दौलत खां भी ४०० पठान सहित आ गया और दौलत खांका बेटा ६००सवारों सहित चढ़ा। तब अभंग खां तो शाह अलीके बेटे और ४०० वीरों सहित खानखानाके डेरेमें होकर किलेमें घुस गया और शाहअली बाकी लशकरको लेकर जिधर आया था उधर हीको भागा। दौलतखांने पीछा करके ८०० दखिनियोंको तलवारके घाट उतार दिया।

चांदबीबीने बीजापुरके बादशाहसे मदद मांगी। आदिल खांने सुहेलखांको २५००० सवारों सहित भेजा। मियां मंझू और अहमद निजामशाह वगैरः भी उसमें आ मिले। ५।६ हजार सवार और बहुतसे पैदल गोलकुण्डेके बादशाह मुहम्मदअली कुतुबशाहके भेजे हुए महदी कुलीकी अफसरीमें आये।

सुलतान मुरादने ये खबरें सुनकर इन फौजोंके आनेसे पहिले ही अहमदनगर फतहकर लेनेका विचार करके ५ सुरंगें अपने डेरेसे किलेमें लगायीं और रज्जबकी चांद (१) रातको उनमें बारूद

(१) चैत सुदी २ सं० १६५३।

भरकर दबादी। दूसरे दिन जुमेकी नमाज पढ़नेके पीछे आग लगानेका इरादा था कि रात होकी मुहम्मदखां ग़ोराजीने किलेमें जाकर उन सुरंगोंका पता बता दिया। चांद सुलतानाने २सुरंगकी बारूद तो शुक्रवारके दो पहरतक निकलवा ली। बाकी सुरंगकी खोज हो रही थी कि शाहजादे और सादिक मुहम्मदखांने जो नहीं चाहते थे कि अहमद नगरकी फतह खानखानाके नामसे हो, उनको सूचित किये बिना ही सुरंगोंमें आग देदी जिससे किलेकी ५० गज दीवार उड़ गयी; किलेवाले जो तीसरी सुरंगको खोद रहे थे कुछ तो वहीं मर गये और बाकी भाग निकले। चांदसुलताना फौरन महलसे निकली और तलवार लेकर वहां आ खड़ी हुई। उसे देखकर और लोग भी आगये। शाहजादे और उसके अमीर तो बाकी सुरंगोंके उड़नेकी बाट देखते रहे और इन्होंने तोपें बान और बन्दूकें चुनकर रास्ता बन्दकर दिया और जब शाहजादेकी फौज धावा करके आयी तो उसपर ऐसे बान और गोले मारे कि घबराकर लौट गयी। किला फतह न हुआ। सबने चांदबीबीकी तारीफकी और उसने भी वहीं खड़ी रहकर रातोंरात वह गिरी हुई दीवार फिर उठवाली।

शाहजादेने किला फतह न होने, नाज चारेके कम हो जाने और दक्षिणके बादशाहोंका कटक निकट पहुंचनेसे खानखानाकी सलाह पूछी कि अब क्या करना चाहिये। ये सादिकखांसे नाराज थे इसलिये पहिले तो इन्होंने यही कहा कि जो सब सरदारोंकी सलाह हो वही ठीक है। परन्तु जब बहुत कहा गया और सबने अपने विरुद्धाचरणपर पछतावा किया तो इन्होंने कहा कि उधरसे तो दक्षिणके बादशाहोंका कटक चला आरहा है और इधर अनाज घी घास और दूसरी आवश्यक वस्तुओंके न होनेसे घोड़ों और आदमियोंका बल घट गया है इसलिये यह समय लड़नेका नहीं है। अभी तो यही उत्तम बात है कि यहांसे कूच करके बराड़में चलें और उस देशको फतह करें। जब अपना राज्य जम जावे और

यहांके आदमी अपनेसे हिलमिल जावें तो फिर इधर आकर अहमद नगरको फतह करलें। शाहजादेने और सब लोगोंने जो खुराक न मिलनेसे घबरा गये थे इनका कहना स्वीकार करके इन्हींको पूर्ण अधिकार इस कामका दे दिया। तब इन्होंने मुरतिजा खांको अहमद नगरमें भेजकर ऐसा उपाय किया कि चांदबीबीने दक्षिणके बादशाहों और अपने अमीरोंसे गुप्त सन्धि करली जिसमें यह ठहरा कि बराड़का उतना प्रदेश जो तफावल खांके (१) पास था शाहजादा लेले और बाकी राज्य माहोरके किलेसे चोल बन्दरतक और परंड़ेसे दौलताबादके किले और गुजरातकी सीमातक अहमद नगरके अधिकारमें रहे। जब इस सन्धि पत्रपर दोनों तरफके बड़े बड़े अमीरोंकी मोहरें हो गयीं तो खानखाना शाहजादेको लेकर चित्तोरके घाटसे दौलताबादकी तरफ चले गये। उस समय सुहेलखां अहमद नगरसे ६ कोस पर था। इस सन्धिकी खबर सुनकर दखनी और हबशी अमीर उसको, मियां मंझूको और अहमद शाहको छोड़कर अहमदनगरमें चले आये और चांदबीबीके हुक्मसे बालक बहादुर शाहको जुनेरसे लाकर बादशाह बना सुहेलखां, मियां मंझू और अहमदशाह बीजापुरको चले गये।

बहादुर निजाम शाहने अपने धा भाई मुहम्मदखांको पेशवा (२) किया उसने अभंगखांको कैदकर दिया जिससे फिर अहमद नगरके राज्यमें उपद्रव होनेकी चेष्टा हुई। चांदबीबीने फिर बीजा-

---

१। तफावल खां बराड़का अन्तिम बादशाह था जिससे मुरतिजा निजामशाहने यह मुल्क सन् ९८२ संवत १६३१ में छीन लिया था।

२। दक्षिणी बादशाहोंमें पेशवाका खिताब मुख्य मन्त्रीको दिया जाता था। यही खिताब पूनाके पेशवाओंने भी सितारेके राजाओंसे लेकर ग्रहण किया था।

पुरके बादशाहको लिखा। उसने फिर सुहैलको सन् १००५में (१) भेजा। मुहम्मदखांने कहना नहीं माना तो सुहेलखांने चांदबीबीकी सलाहसे अहमद नगरको घेरा। मुहम्मदखांने खानखानाको पत्र लिखकर बुलाया। इसपर दखनी सरदारोंने उसको पकड़ा और अभङ्गखांको छोड़ा। अभङ्गखां पर चांदसुलतानाको भरोसा था इस-लिये इसीको पेशवा बनाया और सुहैलखांको मान सम्मान देकर विदा किया। उसने जाते हुए राजापुरमें सुना कि दिल्लीके अमीरोंने सन्धिके विरुद्ध बराड़से आगे बढ़कर पाटड़ीमें अमल कर लिया है इसलिये वहीं ठहरकर आदलखांको अर्जी लिखी।

इधरसे चांदसुलतानाका भी पत्र पहुंचा कि मुगलोंने सन्धि तोड़ दी है। आदिलखांने सुहैलखांको लड़नेका हुक्म लिखा और कुतुबशाहने भी अपनी सेना भेजी। अहमद नगरसे भी ६0000 सवार बराड़को विदा हुए।

खानखाना जालनेमें थे। उन्होंने दखनियोंकी यह हलचल सुनकर सेना एकत्रकी और शाहपुरमें शाहजादेके पास आकर सब हाल कहा। फिर उसको वहीं छोड़कर २०००० सवारों सहित सुहैलखांके ऊपर गये। क्योंकि वे यह चाहते थे कि यह फतह मेरे नामसे हो।

१८ जमादिउस्सानीको (२) तीसरे पहरसे लड़ाई शुरू हुई। सुहैलखांने मारे तोपोंके राजा अलीखां और राजा जगन्नाथको जो

१। सं० १६५३-५४।

२। फागुन बदी ४ संवत १६५३। अकबर नामेमें इस लड़ाईकी ता० २८ बहमन लिखी है जो पहिले लिख आये हैं। उस दिन फागुन बदी ३0 थी और जमादि उस्सानीकी २८ थी न मालूम यह १0 दिनका अन्तर कैसे है और किसकी भूल है। हमारी सम-झमें यह लेखकका दोष है क्योंकि १८ जमादिउस्सानीको १८ बहमन थी जिसको २८ नकल करनेमें हो गयी होगी।

सामने आये थे ४०००सिपाहियों सहित मार डाला और शाम होते होते धावा करके मुगलोंकी फौजको ऐसा दबाया कि वह भागकर शाहजादेके पास जाकर ही ठहरी। सादिकखांने भी शाहजादेको लेकर दक्खिनसे निकल जानेकी तय्यारी की। परन्तु खानखाना इतनी भागड़ पड़ जानेपर भी थोड़े से आदमियोंसहित अपनी जगह पर जमे खड़े रहे बल्कि दखनियोंको सामनेसे हटाकर वहां आ खड़े हुए जहां सुहेलखांका तोपखाना चना था। सुहेल भी सामने ही था। परन्तु पहर रात गये तक दोनों एक दूसरेके हालसे अज्ञात रहे। फिर कुछ मशालें सुहेलखांके आगे जलायी गयीं; खानखानाने आदमी भेजा तो मालूम हुआ कि सुहेलखां है, तब उसीके तोपखानेमेंसे कई तोपें उसकी तरफ छोड़ीं; सुहेलखां मशालें बुझाकर वहांसे हट गया।

खानखानाने अपना नक्कारा बजाया और नरसिंगा फूंका जिसको सुनकर कुछ बादशाही लोग जो अन्धेरेमें छिपे थे उनके पास आ गये। सुहेलने भी जहां तक होसका १०।१२ हजार दखनियोंको इकट्ठा कर लिया। दिन निकलते ही खानखानासे लड़नेको आया। खानखानाके पास ३।४ हजारसे जियादा सवार न थे। तो भी उन्होंने उसको हराकर नलदुर्गकी तरफ भगा दिया। अहमदनगर और गोलकुण्डवाले पहिले ही भाग गये थे।

फिर खानखाना परनाला और गावीलके किलों पर फौज भेजकर जालनाको लौट गये।

शाहजादेने सादिक खांके कहनेसे खानखानाको कहलाया कि अब अवसर है, चलकर अहमदनगरको ले लें। खानखानाने जवाब दिया कि अभी तो यही उचित है कि इस वर्ष बराड़में रह कर यहांके किलोंको फतह करें और जब यह देश पूर्णरूपसे दब जावे तो दूसरे देशों पर जावें। इस जवाबसे शाहजादेने बुरा माना और बादशाहको शिकायतकी अर्जियां भेजीं जिस पर बादशाहने खानखानाको बुलाकर शेख अबुलफज्लको दक्षिणका सेनापति करके भेजा।

खानखाना दरबारमें।

जब बादशाहको खानखानाके चले आनेका समाचार लगा तो २५ फरवरदीन (१) सन् ४३ को अपने निज सेवक आलिबाहनको दक्षिणमें भेजा कि जाकर शाहजादे मुरादको ले आवे; उसको सुशिक्षा देकर फिर वहां भेजेंगे और रूप खवासको हुक्म दिया कि खानखानाको झिड़क कर दक्षिणमें लौटा देवे। सो शाहजादेके पाछे पहुंचने तक वहांकी सेनाओंका और देशोंका प्रबन्ध रक्खे।

शाहजादा तो आता था, परन्तु उसके साथके स्वार्थी अमीरोंने अपने स्वार्थसे उसको नहीं आने दिया और इन्होंने अर्ज करायी कि जब शाहजादे आ जावेंगे तो मैं चला जाऊंगा। बादशाहको यह बात नहीं भायी। तब ये अपनी जागीरसे चलकर १२ आबानको (२) लाहोरमें बादशाहके पास पहुंचे। बादशाहने इनके अपराध क्षमा करके दरबारमें बुलाया।

बादशाहकी खफगी।

मआसिर उल उमरामें लिखा है कि बादशाहने कई दिनों तक इनकी ड्योढ़ी बन्द रखी। ये निरन्तर शाहजादेकी अप्रसन्नता सादिक खांकी शत्रुता और और अपनी बेगुनाही तरह तरहसे अर्ज कराते रहे। निदान बादशाहने क्षमा करके इनको दरबारमें बुलाया और दक्षिण फतह करनेकी सलाह पूछी तो इन्होंने शाहजादेको बुला लेने और उस लड़ाईका पूर्ण अधिकार अपनेको मिलनेकी प्रार्थना की। यह बात बादशाहको बुरी लगी और फिर इनको मनसे उतार दिया।

माहबानू बेगमका देहान्त।

२६ आबान (३) सन् १००७को बादशाह लाहोरसे आगरे

१। चैत सुदी ८ संवत १६५५।

१। कातिक सुदी ६ संवत् १६५५।

३। मगसर बदी ५ संवत् १६५५।

चले। अम्बालेमें पहुंचनेपर इनकी बेगम माहबानूं जो खान आज़मकी बहन थी, बीमार हो गयी। बादशाहने उसको वहीं छोड़ा और इन दोनों अमीरोंको भी कुछ दिन उसके पास रहनेको आज्ञा दी। वह ७ दे (१) सन् १००७को मर गयी जिससे इनको तो जो दुःख हुआ सो हुआ पर बादशाहने भी बहुत शोक किया; क्योंकि दूध शरीक बहन थी।

फिर दक्षिणमें जाना।

बादशाह १६ बहमन (२) सन् १००७ को आगरे पहुंचे और शेख अबुलफज़लको शाहजादे मुरादके पास भेजा। यह २५ बहमनको (३) चलकर १८ उर्दीबहिश्त (४) सन् ४४ को वहां पहुंचा। २२ को (५) शाहजादा मुराद मिरगीसे मर गया। बादशाहने यह अशुभ समाचार सुनकर शाहजादे दानयालको मुरादकी जगह नियत किया। वह २ तीर (६) सनको विदा हुआ, पीछेसे ६ महर (७) सन् ४४ को बादशाहने भी कूच किया। १८ महरको (८) इन्हें भी शाहजादे दानियालके पास जानेका हुक्म दिया। विदा करते समय डेरे पर पधार कर मान बढ़ाया और यह भी फरमाया कि जब यह वहां पहुंच तो शेख अबुलफज़ल दरबारमें आ जावे।

अहमदनगरके शाहको पकड़ कर बुरहानपुरमें ले जाना।

जब ये शाहजादेके पास पहुंचे तो शाहजादेने २ उर्दीबहिश्त (९) सन् ४५ को अहमदनगर पहुंच कर मोरचे लगाये और चार महीने पीछे ६ शहरेवरको (१०) वह किला फतह कर लिया।

१। पौष बदी ३० संवत १६५५। २। माह सुदी १० संवत १६५५। ३। फागुन बदी ३ संवत १६५५। ४। बैसाख सुदी १४ संवत १६५६। ५। जेठ बदी २ संवत १६५६। ६। आसाढ़ सुदी २ संवत १६५६। ७। आसोज सुदी १० संवत १६५६। ८। कातिक बदी ९ संवत १६५६। ९। बैसाख सुदी ८ संवत १६५७। १०। भादों बदी ४।५ संवत १६५७।

खानखाना बहादुर निजामको पकड़ कर बादशाहके पास जो उस समय बुरहानपुरमें आये थे ले गये, तो ८ आजरको (१) उनका मुजरा हुआ।

फिरिश्ताका लेख।

तवारीख फरिश्तामें लिखा है कि अकबर बादशाहने आसेरको घेरकर दानियाल सुलतान और खानखानाको अहमदनगरपर भेजा अभग खां हबशी जो १५००० सवारोंसे उन्हें रोकनेको गया था, चित्तारके घाटेसे ही बिना लड़े डेरे जलाकर जुनेरको भाग गया। शाहजादेने जाकर अहमद नगरको घेरा, जब किला टूटनेपर आया तो चांदसुलतानाने चीतेखां हबशीसे जो किलेमें था कहा कि अब किला शाहजादेको सौंप दें और बहादुरशाहको धन और राज्य सामग्री सहित जुनेरमें ले चलें। उसने यह सुनते ही सब लोगोंसे कह दिया कि चांदबीबी तो मुगलोंसे मिलगयी है और किला सौंपती है। इसपर दखिनियोंने अन्दर जाकर,उस मरदानी बेगमको मारडाला। इधर शाहजादेने सुरंगसे दीवार उड़ाकर किला ले लिया और बहादुरशाहके सिवाय सब लोगोंको मारडाला।

राजू और अम्बरसे लड़ाइयां।

खानखानाके बुरहानपुर जानेके पीछे राजू दखनी और अम्बर चम्पू हबशीने शाहअलीके बेटे मुर्तिजा निजामशाहको अपना स्वामी स्थापित करके बादशाही थानोंपर आक्रमण किया। बादशाहने आसेरमें यह समाचार सुनकर २३ बहमनको (२) इन्हें अहमदनगर और शेख अबुलफज़्लको नासिक भेजा। इनके पहुंचते पहुंचते मुर्तिजाके पास बहुत सेना एकत्र हो गयी थी जिससे बादशाहने शेखको भी पास जानेका हुक्म लिखा ; वह नासिकके रास्तेसे लौटकर वरण गांवमें इनसे आ मिला।

१। मंगसर बदी १० संवत १६५७।

२। माह सुदी ८ संवत १६५७

१० असफन्दारको (१) शाहजादा दानियाल भी बादशाहके पास गया। बादशाहने उसकी सेवासे प्रसन्न होकर खानदेश उसको दिया और खानदेशका नाम भी दानदेश रख दिया और उसका विवाह खानखानाकी बेटी जानाबेगमसे किया।

बादशाहका कूच आसेरसे।

११ उर्दी बहिश्त (२) सन् ४६ को बादशाह आसेरसे आगरेको कूचकर गये। २८ को (३) शाहजादे दानियालको नर्मदासे बुरहानपुर आनेकी आज्ञा हुई।

अम्बरसे सन्धि।

खानखानाके और शेखके पहुंचते पहुंचते राजू और अम्बर-चम्पू बहुत बल पागये थे। शेखने राजूको कई बार हराया तौभी उसने नासिक और जालनाके किले लेलिये और अम्बरने तिलङ्गाने पर चढ़ाई करके कई बादशाही अमीरोंको पकड़ लिया। तब ये अहमद नगरसे उस पर गये; शेखको भी बुलाया और लड़कर उसे भगा दिया तौभी देशकाल देखकर सन्धि करली और अली-मरदान वगैर:को छुड़ाकर कुछ प्रदेश भी छोड़ दिया और अम्बरसे यह स्वीकार करा लिया कि वह आज्ञामें रहेगा और अपनी सी-मासे आगे न बढ़ेगा।

शेखकी सम्मति इस सन्धिमें नहीं थी इसलिये वह नाराज हो कर बुरहानपुरमें शाहजादेके पास चला गया और ये मांजरा नदीसे सेनाको लौटा लाये।

बादशाहने अम्बरका तिलङ्गाना लेना सुनकर मीर मुर्तिजाको तिलंगानेपर भेजा और लिखा कि खानखाना तो पाठड़ी और तिल-ङ्गानेके बीचमें रहे और शेख अबुलफज़्ल राजूके ऊपर जावे।

१। फागुन बदी १० संवत १६५७।

२। वैसाख बदी १३ संवत १६५८।

३। वैसाख सुदी १५ संवत १६५८।

मिरजा रुस्तम, राजा सूरजसिंह, और राजा विक्रमादित्य शेखकी सहायता:पर नियत हुए।

अम्बरका सन्धिसे फिरना।

अम्बरचम्पू इधरसे सन्धि करके बराड़के अधिपति मलिक बुरीदके ऊपर गया और उसको जीतकर गोलकुण्डेके कुतुबुलमुल्कसे लड़ा। दोनोंसे ४३ हाथी और बहुतसा धन माल लेकर तिलंगानेपर गया। मीर मुर्तिजा तो किलेमें ही बैठा और अम्बरने वह देश दबाकर और भी आगेको पांव फैलाया।

बादशाहने शाहजादेकी अर्जीसे यह सब समाचार जानकर हुक्म लिखा कि शेख तो जालनापुरको जावें। अहमद नगरका संरक्षण और शत्रुका निकन्दन उसके आधीन रहे। बराड़ पाठड़ी तिलङ्गानेका प्रबन्ध और अम्बरपर आक्रमण खानखाना करे।

ऐरच अम्बरको हराना।

अब एक हबशी और उठा। उसने पाठड़ी और पाटममें आकर द्वन्द मचाया। तब इन्होंने राजा सूरज सिंह और गजनी खां जालोरीको भेज कर उसे भगा दिया। फिर अपने बेटे ऐरचको एक भारी फौज देकर अम्बर चंपूके ऊपर भेजा। लड़ाईमें राजा सूरजसिंह आदि राजपुत सरदार अग्रगामी थे। बीचमें इतनी सेना ऐरचके साथ थी। इन्हीं दोनों फौजोंने अम्बरको भगा कर खेत जीता, २० हाथी छीने और बहुतसा द्रव्य लूटा।

अबुल फज्लका मारा जाना।

शेख अबुल्फज्लको बादशाहने अपने पास बुलाया। वह आगरेको जाता था कि बड़े शाहजादे सुलतान सलीमके हुक्म देनेपर बुन्देला राजा बरसिंह देवके हाथसे वह ता॰ १ (१) रबीउल अव्वल सन् १०११को मारा गया और दक्षिणकी लड़ाइयोंका सारा भार इनपर आ पड़ा।

१। भादों सुदी २ संवत १६५९ व २८ अमरदाद सन् ४७।

एरचका फिर अम्बरको हराना।

इन्होंने फिर मिरजा एरचको अम्बर पर भेजा। इस वार एरचने फिर बड़े धड़क्केसे अम्बरको हराया। उसके सारे हाथियों और लड़ाईके सामानको छीन लिया। बादशाहने प्रसन्न होकर उसको बहादुरका खिताब दिया और राय बिहारीचन्दके भतीजे जादो दासके हाथ इनको, शाहजादेको और एरच बहादुरको प्रशंसा पत्र भेजे।

बादशाहका दानियालको बुलाना और उसका खानखानाके पास जाना।

शाहजादा दानियाल भी दारू बहुत पीने लगा था। पहिले पहिल तो बादशाह उसके छोड़ देनेकी शिक्षा लिखते रहे और अब अपने कई पास रहनेवालोंको शाहजादेके लेनेके लिये भेजा। परन्तु शाहजादा बुरहानपुरसे खानखानाके पास चला गया और बादशाहको लिख भेजा कि खानखानाको अपने पास बुलाना उचित न समझकर मैं आप उसके पास इसलिये जाता हूं कि समझाकर अपनी जगह छोड़ आऊं।

बादशाहने इसका यह जवाब लिखा कि ये सब तुम्हारे बहाने हैं खानखाना ऐसा चाकर नहीं है कि तुम्हारे बिना उस सूबेमें नहीं रह सके या उसको तुमसे कुछ समझने और उपदेश लेनेकी

अबुल फजलने अकबर नामा सन् ४६ के अखीर तक लिखा है, फिर बाकी इतिहास अकबर बादशाहका सन् ४७ से सन् ५० के आबान महीने तक मुहिब अली खांने संक्षिप्त रीतिसे लिखकर उसमें लगाया है। परन्तु यह पिछला लिखा हुआ हाल किसी प्रतिमें है और किसीमें नहीं। लखनऊमें जो अकबर नामा छपा है। उसमें नहीं है; कलकत्तेमें जो छपा है, उसमें है।

आवश्यकता हो या यह बात हो कि वह भी तुम्हारी भांति मद्यप हो गया हो। अब जो तुम शराब नहीं छोड़ोगे और हमारा हुक्म नहीं मानोगे तो हम भी तुमको कुछ नहीं लिखेंगे।

खानखाना और दानियालका मिलाप।

खानखानाने गांव होलथम्बेमें अगवानी जाकर शाहजादेको बीजापुरके बादशाह आदिल खांके अमीरोंकी चिट्ठियां दिखलाईं जो उसके वास्ते आदिल खांकी बेटीका डोला लेकर आते थे।

दानियालका व्याह आदिलखांकी बेटीसे।

शाहजादेने मिरजा एरच बहादुरको ५००० सवारोंसहित डोला लानेके लिये भेजा। वह "भीमड़ा" नदीके तटपर आदिल खांके सरदारोंसे मिला। फिर शाहजादा भी आदिल खांका मान बढ़ानेके लिये खानखाना समेत अहमदनगर तक गया और वहां आदिल खांकी बेटीसे व्याह करके बुरहानपुरमें लौट आया।

तूरान जीतनेकी सम्मति।

बड़े शाहजादे सुलतान सलीमके और बादशाहके बीचमें कई वर्षोंसे बिगाड़ चला आता था। वह सन् १०१३में (संवत् १६६१में) शाहजादे सलीमके इलाहाबादसे आगरेमें बादशाहके पास हाजिर हो जानेपर दूर हो गया और बादशाहने अपने बापोतीके मुल्क बलख, बुखारा और समरकन्द उजबक जानिके अमीरोंसे पीछे लेने और अमीर तैमूरकी समाधिके दर्शन करनेका इरादा करके राजा मानसिंहको बङ्गालसे और खानखानाको दक्षिणसे इस बड़े दिग्विजयकी सलाह करनेके वास्ते बुलाया। राजा बादशाहके पास आगये और खानखानाने बुरहानपुरसे अरजी लिखी कि खुदाके फजलसे कोई रोकनेवाला नहीं है। जिधर कूच होगा, विजय लक्ष्मी हाथ बांधकर उपस्थित हो जावेगी। (१)

१। यह तो इकबाल नामे जहांगीरीमें लिखा है और अकबर नामेके शेषांशमें जो मुहिब अलीखांका लिखा हुआ है, यह बात

दानियालकी दारूसे दुर्गति।

इस बीचमें बादशाहने फिर कई मनुष्य शाहजादे दानियालके लाने और शराब छुड़ानेके वास्ते भेजे तो उसने अब यह बहाना निकाला कि "जब तक बड़े शाहजादे हजरतकी सेवामें हैं, मैं हाजिर नहीं हो सकता"। और शराब छोड़ना तो कहां दिन दिन उसकी मात्रा बढ़ती जाती थी, जिससे शाहजादेकी तन्दुरुस्ती बिगड़ गयी थी और मरनेकी नौबत आपहुंची थी।

बादशाहकी ताकीदसे दारूकी रोक और दानियालकी मृत्यु।

बादशाहने यह समाचार पाकर खानखानाके ऊपर बहुत कोप किया और पूरे पूरे बन्दोबस्त करनेकी ताकीद लिखी। तब तो खानखानाने शाहजादेकी शराब बन्द करनेको पहरे बिठा दिये और लोगोंका आना जाना बन्दकर दिया। तोभी बाजे खिदमतगार बन्दूकोंकी नालियोंमें तेज शराबें ला लाकर पिलाते थे। जिसका परिणाम यह हुआ कि २८ शव्वाल (१) सन् १०१३ को शाहजादेका प्राणान्त हो गया। परन्तु खानखानाके उपस्थित होनेसे सेनाके प्रबन्धमें किसी प्रकारकी गड़बड़ सड़बड़ नहीं होने पायी। इन्होंने कई आदमियोंको जो निषेध करनेपर भी छिपे छिपे

यों लिखी है कि बादशाहने यह सुनकर कि तूरानका बादशाह बाकी मुहम्मद खां प्रजाको पीड़ा देता है, उस विलायतके फतह करनेका इरादा किया, जो उनकी बापोती थी। खानखानाको दक्षिणसे, कुलीच खांको लाहोरसे और राजा मानसिंहको बङ्गालसे बुलाया। खानाखानामें तो जो लाख छल और कपटका घड़ा हुआ था, दक्षिणकी मुहिमको बहुत भारी बताकर अपना रहना वहीं आवश्यक समझा। राजा मान सिंह और कुलीच खां हाजिर हो गये। परन्तु वह विचार पूरा न हुआ।

१। चैत बदी ३० संवत १६६१

दारू लाकर पिलाते थे जानसे मरवा डाला। उनकी पुत्री जानां बेगमने शाहजादेके साथ प्राण देनेका बहुत आग्रह किया परन्तु बड़ी मुशकिलोंसे खानखानाने उसको रोका ; तो भी शेष उसने अपनी अवस्था बड़े शोक और सन्तापसे मैले कुचैले कपड़ोंमें काटी।

दक्षिणमें पूर्ण अधिकार।

शाहजादेके पीछे दक्षिणका पूर्ण अधिकार खानखानाको मिल गया और वे बहुत बरसोंतक उस बड़े सूबेमें सन्धि विग्रह करनेको समर्थ रहे।

तवारीख फरिश्तासे अहमदनगर और खानखानाका कुछ हाल।

तवारीख फरिश्तामें जो वृत्तान्त अहमद नगरके टूटनेसे अकबर बादशाहके देहान्त तकका लिखा है वह यहां उद्धृत किया जाता है। इसके दो अभिप्राय हैं ; पहला तो यह कि वह खानखानाकी जीवनीसे सम्बन्ध रखता है ; दूसरा यह कि जो फेरफार और अन्तर इतिहासोंमें रहता है वह भी इस ग्रन्थके पाठकोंको विदित हो जावे और वे समझ लें कि जब एक ही मनुष्यके थोड़ेसे वर्षोंके वृत्तान्तमें इतिहास वेत्ताओंका लेख परस्पर मेल नहीं खाता है तो सैकड़ो हजारों वर्षोंके बने हुए पुराणोंकी कथाओंमें भेद पाया जाना कुछ विचित्र नहीं है।

तवारीख फरिश्तामें लिखा है कि अहमद नगर छूट जानेके पीछे निजामशाही अमीरोंने शाह अलीके बेटे मुरतिजाको अपना बादशाह बनाकर परेंडेके किलेमें राजधानी की। उनमें अम्बर हबशी और राजू दखनी जो कुछ बड़े सरदार नहीं थे अपने पराक्रमसे थोड़ेही दिनोंमें इतने बढ़ गये कि अम्बर अहमद नगरके दक्षिणमें तिलङ्गानेकी सीमातक और राजू उत्तरमें गुजरातके सिवाने तक धरती दबा बैठा। पर दोनोंमें एका न था ; एक दूसरेको निकाला चाहता था। खानखानाने यह बात समझकर अपनी कुछ सेना भेजी जिसने अम्बरकी भूमिका थोड़ासा भाग जो तिलङ्गानेकी तरफ था जीत लिया। यह सुनकर अम्बर ७।८ हजार

सवारों सहित सन् १०१० में (१) वहां गया और खानखानाके थाने उठा दिये। तब खानखानाने मिरजा एरचको ५००० सवारो सहित भेजा। नांदेरके पास अम्बरसे मुकाबिला हुआ। एरचको अपना नाम करनेकी धुन थी और अम्बरको अपनी जमीन बचाने की। इसलिये दोनों बड़ी क्रूरतासे लड़े। अम्बर घायल होकर रणांगनमें गिरा। उसके अनुचर उसी क्षण उसको उठाकर ले गये और मिरजा एरचकी जीत हुई।

अम्बर उद्योगी था और जानता था कि साहस दिखाये बिना देशकी रक्षा न होगी। इसलिये फिर लड़नेका उद्यम करने लगा। खानखानाने उसको वीर पुरुष देखकर सन्धि कर लेनेका विचार प्रकट किया। वह भी इसमें अपना लाभ समझकर राजी हो गया। क्योंकि राजूका उसको खटका लगा हुआ था बल्कि खानखानाकी चढ़ाईको वह उसीकी साजिश समझता था।

जब सन्धि ठहर गयी तो अम्बर खानखानासे आकर मिला और अपनी सीमा स्थिर कर गया।

खानखानाने अंबरसे सन्धि करके बीजापुरके बादशाह आदिल-खां पर जोर डाला। उसने बहुतसा नजराना देना करके अपनी बेटीका डोला सुलतान दानियालके वास्ते भेजा। खानखानाने बुरहानपुर जाकर यह बधाई शाहजादेको दी तो वह मुहर्रम सन् १०१३ में (२) नासिक और दौलताबादके रास्तेसे अहमद नगरको गया। यह प्रदेश राजूके अधिकारमें था इसलिये उससे कहलाया कि वह भी अम्बरकी तरह अधीन होकर सेवामें आवे और अपनी भूमिका पट्टा करा ले। परन्तु राजूने इस बातपर विश्वास न किया तब शाहजादेने क्रुद्ध होकर उसको दण्ड देना चाहा। राजू भी

१। संवत् १६५८-५९

२। जेठ सुदी ३ संवत् १६६१ से असाढ़ सुदी २ संवत् १६६१ तक

८००० सवारों सहित लड़नेको आया। परन्तु सम्मुख नहीं होता था और इधर उधर रहकर लूट मार करता था। शाहजादेने जालनापुरमें आदमी भेजकर खानखानाको बुलाया। ये शीघ्र ही ५।६ हजार सवार लेकर गये। राजू इनके पहुंचते ही शाहजादेका पोछा छोड़कर दूर चला गया। तब शाहजादा और खानखाना अहमद नगर जाकर डोलेको पट्टनमें आये। वहांसे शाहजादा तो विवाह करके बुरहानपुरको लौट गया और ये जालनापुरमें चले आये।

फिर मुरतिजा निजामशाहने अम्बरकी कठोरतासे व्याकुल होकर राजूको बुलाया। वह परेंडेमें जाकर उससे मिला और अम्बरने उससे कई लड़ाइयोंमें पराजित होकर खानखानासे सहायता मांगी। इन्होंने बीयरके हाकिम मिरजा हुसेन बेगको २।३ हजार सवारों सहित भेजा। अम्बरने इस सेनाके बलसे राजूको हरा कर दौलताबादको तरफ भगा दिया।

फिर खानखाना तो जालनापुरसे बुरहानपुरमें चले गये जहां शाहजादे दानियालके मरजानेसे उनको रहना पड़ा और अम्बरने दौलताबादपर चढ़ाई की। राजूने कायरतासे खानखानाकी शरण ली। ये बुरहानपुरसे दौलताबादको आये और ६ महीनेतक दोनोंके बीचमें पड़े रहे जिससे दोनोंमेंसे किसीको भी अपने विपक्षीसे लड़नेका साहस न हुआ। निदान अम्बर खानखानाको राजूके पक्षमें देखकर उनके कहनेसे राजूके साथ सन्धि करके परेंडेको चला गया; तब यह भी जालनापुरमें आगये।

जहांगीर बादशाहका समय।

सन् १०१४ में (१) अकबर बादशाहका देहान्त होनेपर शाह-

१। अकबर बादशाहका देहान्त संवत् १६६२ में कातिक सुदी १४ की रातको हुआ था। उस दिन ४ आबान सन ५० और १३ जमादिउस्सानी १०१४ थी। दूसरे दिन दफन किये गये।

आदे सलीम आगरेमें तख्तपर बैठकर जहांगीर बादशाहके नामसे राज्य करने लगे। उन्होंने भी खानखानाको उसी अधिकार पर रहने दिया। परन्तु मुकर्रबखांको भेजकर शाहजादे दानियालके बेटोंको उनके पाससे मंगवा लिया।

खानखाना दरबारमें।

अकबर बादशाहके मरनेसे दक्षिणमें शत्रुओंका जोर बढ़ गया था जिससे खानखाना २।३ वर्षतक जहांगीर बादशाहके पास न आसके। सन १०१७में (संवत १६६५में) कुछ अवकाश मिला तो आगरे पहुंचकर रबीउस्सानी महीनेकी २४ तारीखको (१)बादशाहके चरणोंमें उपस्थित हुए। बादशाहने जैसा कुछ उनका आदर सत्कार किया वह बादशाहने ही अपने हाथसे तुजुक जहांगीरमें इस भांति लिखा है:—

एक पहर दिन चढ़ा था कि खानखाना जो मेरी अतालकीके महत् अधिकारसे सम्मानित है, बुरहानपुरसे आकर सेवामें उपस्थित हुआ। उसको इतने आनन्द और उत्कंठाका आवेश हो रहा था कि वह नहीं जानता था कि पांवसे आया है या सिरसे। उसने बड़ी व्याकुलतासे अपनेको मेरे पांवोंमें डाल दिया और मैंने भी कृपालुता और दयालुतासे उसको उठाकर छातीसे लगाया और उसका मूंह चूमा। उसने दो हार मोतियोंके कई हीरे और कई माणिक भेंट किये जिनका मोल ३ लाख रुपये हुआ। उनके सिवाय बहुतसी चीजें और सौगातें भेंट कीं।

जहांगीर बादशाह ८ जमादिउस्सानी गुरुवारको अपना राज सिंहासनपर बैठना लिखते हैं। सो मालूम नहीं यह क्या बात है। तारीखके साथ दिन भी लिखा है जिससे भूल हो जानेका भ्रम नहीं हो सकता। उस तारीखको गुरवार ही था बापके मरनेके पीछे बेटा तख्तपर बैठता है; ये ६ दिन पहिले ही कैसे बैठ गये होंगे यह विचारनेकी बात है।

१। भादों बदी १२ संवत १६६५।

जमादि उस्सानी महीनेकी २१ तारीखको (१) खानखानाने निज मुल्कमुल्कको बादशाहीका शेष भाग विजय करदेनेकी प्रतिज्ञा की और यह बात लिख दी कि जो दो वर्षमें यह कार्य्य न कर दूं तो अपराधी होऊं। परन्तु जो सेना उस प्रान्तमें नियत है उससे अधिक १२००० सवार और १० लाख रुपये और मुझको मिल जावें।

बादशाहने मन्त्रियोंको आज्ञा की कि शीघ्र ही सब सामग्री संग्रह करके खानखानाको दे दो।

रज्जबके (२) महीनेमें बादशाहने समन्द घोड़ा जो ईरानके शाहका भेजा हुआ था और तबेले भरमें श्रेष्ठ था, खानखानाको दिया। बादशाह लिखते हैं कि खानखाना इतना प्रसन्न हुआ कि जिसका कुछ वर्णन नहीं हो सकता। सच तो यह है कि ऐसा बड़ा और अच्छा घोड़ा अभीतक हिन्दुस्तानमें नहीं आया था और फतूह नाम एक हाथी भी जो लड़नेमें अद्वितीय था बीस और हाथियों सहित दिया।

खानखानाकी विदा दक्षिणको।

खानखाना तारीख १४ शाबान (३) रविवारको बादशाहसे विदा हुए। बादशाहने जड़ाऊ तलवार, पेटी और शिरोपाव खासा हाथी समेत प्रदान किया।

शाहजादे परवेजकी चढ़ाई।

दक्षिणमें जब ये समाचार पहुंचे कि खानखानाने अहमदनगरके शेष भागको जीत देनेकी प्रतिज्ञा बादशाहसे की है तो अम्बर और राजू भी सन्धि तोड़ बैठे और उन्होंने बीजापुर और गोलकुंडेके बादशाहोंको भी अपनी सहायता पर सज्जित कर लिया। इतनेमें

१। आसोज बदी ८ संवत १६६५।

२। यह रज्जबका महीना आसोज सुदी २ को लगा था।

३। मगसर बदी २ संवत १६६५।

खानखाना बुरहानपुरमें पहुंचे और उन्होंने दक्षिणका वह रंग देखा तो नीति निपुणता से बात ठंडी डाल दी और उन लोगोंको अपनी ओरसे अशान्त न किया। इधर बादशाहसे झूठे न पड़नेको अर्जियोंमें ऐसी बातें जतायी कि बादशाहने किसी एक शाहजादेके भेजनेकी आवश्यकता देख कर सुलतान परवेजको तैयार किया। ५ लाख रुपये उसको और बीस लाख उसके साथके लश्करको भजानेके लिये दिये। १ जमादिउस्सानी (१) सन् १०१८ को अमीरुल्उमरा और जगन्नाथके बेटे करमचन्दको, और ८ रज्जबको(२) राय जयसिंहको नौकरी शाहजादेके साथ बोली गयी १४ रज्जबको (३) मङ्गलके दिन शाहजादा बिदा हुआ। उसको और उसके साथी अमीरोंको भारी भारी शिरोपाव हाथी घोड़े और जड़ाऊ हथियार दिये गये और १००० अहदी भी साथ गये परन्तु इन बातोंके करनेसे पहले बादशाहने मुल्ला हयातीको खानखानाके पास भेज कर बहुत सी बातें कृपा अनुग्रहकी कहलायीं। २ रमजानको (४) बादशाहने फिर बड़ा एक कटक जिसमें १८३ मनसबदार और १४६ अहदी थे शाहजादेके पास भेजा।

मुल्ला हयाती खानखानासे मिल कर १ जीकादको (५) अजमेरमें बादशाहके पास आया। १ लाख और २ मोती खानखानाकी भेट लाया। जो २०००० रुपयोंके आंके गये।

खानजहां लोदी दक्खनकी मुहिम पर।

शाहजादेका और इन फौजोंका आना सुनकर दक्खनी लड़नेका उद्योग करने लगे। अभी शाहजादा पहुंचा भी नहीं था कि

१। भादों सुदी २ सं० १६६६।

२। आसोजसुदी ६।

३। आसोज सुदी १५ मंगलवार।

४। मगसर सुदी ४ संवत १६६६।

५। माह सुदी ३ संवत १६६६।

खानखानाने दक्खनियोंकी यह दशा देख कर बादशाहको विनयपत्र लिखा कि सब दक्षिणी एकत्र होकर उपद्रव किया चाहते हैं। बादशाहने परवेज और उसके साथकी सेनाके भेजने पर भी यह जान कर कि वहां अभी और सहायताकी आवश्यकता है स्वयं जानेका विचार किया। अमीरुलउमरा आसिफखांने भी लिखा कि श्रीमानोंका पधारना उचित है और बीजापुरसे अर्जी पहुंची कि कोई सभासद यहां आ जावे तो मैं अपने अभिप्रायको उसके द्वारा अर्ज कराऊं। इस पर बादशाहने सभासदोंसे कहा कि इस विषयमें जो जिसके जी जीमें आवे सो कहे। खानजहां लोदीने प्रार्थना की कि जब इतने बड़े बड़े अमीर जा चुके हैं तो फिर हजरतके पधारनेकी जरूरत नहीं; यदि आज्ञा हो तो मैं भी शाहजादेकी सेवामें जाऊं और लड़ाईको समाप्त करूं। इस बातकी सराहना और लोगोंने भी की। तब बादशाहने १७ जीकाद को (१) उसे भी बहुमूल्य वस्त्र जड़ाऊ हथियार हाथी और घोड़ा देकर दक्षिणको विदा किया और फिदाईखांको आदिलखांके पास भेजनेके लिये साथ दिया।

राजा बरसिंहदेव, विक्रमाजीत, और शुजाअतखां वगैरह भी ४।५ हजार सवारों सहित खानजहांकी सहायतामें नियुक्त हुए परवेजके वास्ते खासा घोड़ा और खानखानाके लिये सिरो पाव भेजा गया।

बादशाही लश्करकी फूट और हार।

जब सब लश्कर, सरदार और शाहजादे दक्षिणमें एकत्र हुए तो फिर वही ईर्षा और खेंचा तान होने लगी, जो शाहजादे मुरादके समयमें थी और जब शाहजादे परवेजने बालाघाट पर चढ़ाई की तो सरदारोंकी फूटसे यहां तक काम बिगड़ा कि शत्रुओंने बल पाकर रसद रोक दी। हाथी बहुतसे घोड़े ऊंट

और दूसरे उपयोगी पशु मर गये। निदान दीनता दिखाकर शत्रुओंसे मिलाप करना पड़ा तब कहीं पीछे आनेको रास्ता मिला और उधर अहमदनगरका किला कब्जेसे निकल गया।

खानखाना पर दोष लगाना।

अब सब सरदारोंने मिलकर बादशाहको अर्जी लिखी कि ये सारे काम खानखानाकी ईर्षा और बेवफ्दोवस्तोसे बिगड़े हैं। परन्तु बादशाहको विश्वास न आया। तब खानजहां लोदीने (१) जिसका बादशाहको बड़ा भरोसा था, लिखा कि वास्तवमें यह सारी बुराई और बदनामी खानखानाकी कुटिलत से हुई है। अब यातो इस सूबेमें उसीको स्थिर रहने देना चाहिये या उसे दरबारमें बुलाकर यह कार्य्य मुझे मिल जाना चाहिये और ३०००० सवारोंकी सहायता भी मिलनी चाहिये। मैं २ वर्षमें बीजापुर तक सारे दक्षिण देश पर बादशाही राज्यकी जड़ जमा दूंगा और जो इस अवधिमें यह काम मुझसे पूरा न हो सका तो मैं मुंह नहीं दिखाऊंगा।

खानखानाका दरबारमें आना और खानजहांका स्थानापन्न होना।

इस पर बादशाहने महाबतखांको वहांके सही समाचार भुगताने और खानखानाको दरबारमें लानेके लिये भेजा। वह जब

१। खानजहां लोदी दौलतखांका बेटा था, बापके मरे पीछे जहांगीर बादशाहका नौकर हो गया था, उसका नाम पीरखां था। बादशाहने सलाबतखां रखा और खानजहांकी पदवी दी। वह बादशाहके बहुत मुंह लग गया था। बादशाह उसको बेटोंके बराबर समझते थे। उसने बादशाहके पीछे बालाघाटकामुल्क अहमदनगर वालोंको दे दिया जहांका वह उस समय सूबेदार था। फिर शाहजहांसे बागी हो कर दक्षिणको भागा और लड़ाईमें मारा गया।

बुरहान पुरमें पहुंचा तो ये उसके साथ हो लिये। जब पावरा कुछ दूर रह गया तो वह इनको छोड़कर बादशाहके पास पहले गया। पीछेसे ये भी १२ आबान (१) सन ५ को पहुंचे। बादशाहका मन इनसे खिंच गया था। इसलिये उन्होंने वैसी कृपा और अनुग्रह नहीं दिखाया जैसी पहले दिखाते थे या अपने पिताको करते देखते थे। बल्कि यह कहा कि तुमतो सब बातोंका जिम्मा लेकर गये थे। फिर वक्तके ऊपर दाने चारे नाज और दूसरी जरूरी चीजोंका बन्दोबस्त न हुआ।

खानजहांने खानापब होकर मिरजा एरचको शाहजादेसे कहकर दरबारमें भेज दिया। दाराबखां पहिले ही बापके साथ चला आया था।

लोगोंने बादशाहको खानखानाकी ओरसे बहकाया तो बहुत था परन्तु बादशाह उनसे उतने नहीं बिगड़े थे जितनी कि उन महापुरुषोंको आशा थी। और बादशाहने भी यही लिखा है कि "जब सरदारोंसे और खानखानासे नहीं बनी तो मैंने उसका वहां रहना उचित न समझ कर खानजहांको तो सेनापति कर दिया और उसको दरबारमें बुला लिया। अभी तो यही कारण अकृपाका है; आगे जैसा प्रकट होगा उसके अनुसार कृपा अकृपा होगी।

बादशाहकी कृपा खानखानाके बेटों पर।

अब जो इसके आगे तुजुक जहांगीरीमें देखते हैं तो बादशाहका अनुग्रह ही इनके और इनके बेटोंके विषयमें पाया जाता है; जैसे दाराबखांको अबतक मनसब नहीं मिला था और इस लिये न उसको तनखाह थी और न जागीर। बादशाहने खानखानाके आनेसे २।३ दिन पीछे ही उसको हजारी जात और ५०० सवारोंके मनसबसे सम्मानित करके गाजीपुरका जिला उसको

(१) मगसर बदी ३ संवत् १६६७

जागीरमें दिया। और जब खर्च आया तो पहिले ८ फरवरदीन (१) सन् ६ को जड़ाऊ कमरपेटी दी और कई दिन पीछे शाहनवाजखांकी पदवी प्रदान की।

खानखानाकी जागीर कन्नौज और कालपीमें।

उन्हीं दिनोंमें काबुलसे अहदाद पठानके उपद्रव करने और वहांके सूबेदार खानदौरांसे प्रबन्ध न हो सकनेके समाचार आये तो बादशाहने खानखानाको जो बिना काम बैठे थे वहां भेजनेका बिचार किया। इतनेमें पञ्जाबका सूबेदार कुलीचखां आ गया जो पहिले बुलाया गया था। उसने खानखानाको भेजे जानेसे अप्रसन्न होकर बादशाहसे उस कामके कर देनेकी प्रतिज्ञा की। इसलिये बादशाहने उसे ६ हजारी मनसब देकर काबुलमें भेजा और पञ्जाबकी सूबेदारी पर मुर्तिजाखांको नियत किया और इनकी जागीरकी तनखाह आगरेके सूबेमें सरकार कन्नौज और कालपी पर इस अभिप्रायसे लगा दी कि उन प्रान्तोंके दुष्टोंको दण्ड देकर नष्ट करें।

चलते समय तीनों बेटे खासे खिलअत और हाथी घोड़े पाकर बिदा हुए। ४ बहमन (२) सन ६ को बादशाहने अपने बांधनेकी तलवार जिसका नाम शाब बच्चा था, शाहनवाजको दी।

दक्षिणमें फिर एक और हार।

खानखानाको बुलानेके पीछे बादशाहने इनके साले खान आजमको बहुत सा कटक देकर भेजा था और सैयद अबदुल्लाहखांका भी जिसे फीरोज जङ्गकी (रणजीत की) पदवी मिली थी गुजरातकी तरफसे नासिक होकर जानेका हुक्म लिखा था परन्तु न कुछ खानजहांसे बना न खान आजमसे और फीरोज जङ्ग तो लड़ाई हार कर ही गुजरातमें भाग आया।

१। बैसाख बदी १ सं० १६६८।

२। माघ बदी ६ संवत् १६६८।

बात यह ठहरी थी कि इधरसे यह जावे और उधर बराड़से राजा मानसिंह, खानजहां, और अमीरुल उमरा, आदि रवाने हों और दोनों कटक एक दूसरेके कूच मुकामकी खबर रखकर एक ही दिन शत्रुके ऊपर पहुंचें और उसको एक साथ दोनों ओरसे घेरकर जेर करें; परन्तु अबदुल्लहखांने जिसके साथ १०००० सजे हुए सवार थे घमण्ड और अकेले फतह करनेकी धुनसे जल्दी करके धावा कर दिया। राजा रामदास कछवाहेने बहुत कहा कि धीरजसे कूच करना चाहिये; पर उसने नहीं माना।

अंबरने जब यह सुना तो बहुतसे सरदार और बरगी भेज दिये जिन्होंने रात दिन लड़कर अबदुल्लाहखांको भगा दिया। अली मरदानखां बहादुरको पकड़ लिया। बगलानेतक पीछा किया। यह सुनकर बराड़का लशकर भी रास्तेसे ही बुरहानपुरमें परवेजके पास लौट आया।

खानखाना फिर दक्षिणसे।

बादशाह अपनी तुजुकमें (प्रबन्धकी पुस्तकमें) लिखते हैं कि जब ये समाचार आगरेमें मुझको पहुंचे तो मैंने अपने मनमें बहुत क्रोध किया और चाहा कि आप जाकर इन साहिबोंके मारे हुए नौकरोंकी जड़ उखाड़ डालूं। परन्तु अमीर और शुभचिन्तक लोग इस बातपर बिलकुल राजी न हुए और ख्वाजा अबुल हसनने अर्ज की कि उधरके कामोंको जैसा कि खानखानाने समझा है दूसरे किसीने नहीं समझा। उसीको भेजना चाहिये जो इस बिगड़ी हुई बाजीको सुधारे और समय देखकर (अभी तो) कोई सन्धि करले। फिर ठीक उपाय कर लिया जावे। दूसरे हितैषी भी इस बातमें सहमत हुए। सबकी सलाह यही ठहरी कि खानखानाको भेजना चाहिये और ख्वाजा अबुल हसन भी साथ जावे। इस ठहराव पर दीवानोंने (१) खानखाना और उसके साथियोंकी तय्यारी

१। कर्मचारियोंने।

करदी और वे सन ७ के उर्दी बहिश्त महीनेकी १७ वीं तारीखको (१) इतवारके दिन विदा हुए।

इस अवसरपर बादशाहने खानखानाका मनसब ६ हजारी शाहनवाज खांका ३ हजारी दाराबखांका ३ हजारी कुछ और बढ़ाकर कर दिया और उनके छोटे बेटे रहमान दादको भी मनसबसे विमुख नहीं रखा। इसके सिवाय खानखानाको भारी सिर पांव, जड़ाऊ तलवार, खासा हाथी और इराकी घोड़ा दिया। उनके बेटों और साथियोंको भी खिलअत और घोड़े बख्शे।

खानखानाने बुरहानपुर पहुंचकर फरेन्टूखां बरलास, राय मनोहर और राजा बरसिंहदेव, बुन्देलेकी पदवृद्धिकी प्रार्थना की। बादशाहने स्वीकार करके तीनोंके मनसब बढ़ाकर इस भांति कर दिये।

१। फरेन्टूखां बरलास—ढाई हजारी जात—१५०० सवार।

२। रायमनोहर—एक हजारी जात—८०० सवार।

३। राजा बरसिंहदेव—चार हजारी जात—२२०० सवार।

दखनियोंसे सन्धि।

खानखानाने दखनियोंसे फिर वही युक्ति सन्धिकी बरती और बीजापुरके बादशाह आदिलखांको भी इस बातपर राजी किया कि जो दक्षिणकी लड़ाईमें उसको शामिल किया जावे तो ऐसा प्रबन्ध करे कि जो परगने बादशाही अधिकारसे निकल गये हैं वे फिर कबजेमें आजावें।

इन बातोंको बादशाहसे अर्ज करनेके लिये खानखानाने शाहनवाजखांको भेजा। उसने ६ बहमन (२) सन् ७ को दरबारमें आकर १०० मोहरें और एक हजार रुपये नजर किये। बादशाहने सन्धि स्वीकार करके खान आजमको मालवेमें आने और वहांसे

१। बैसाख सुदी ६ संवत १६६४।

२। माह सुदी ४ संवत १६६८

मेवाड़पर जानेका हुक्म लिखा और शाहनवाज खांको अपने पास रख लिया। ६ महीने पीछे खानखानाके बुलानेसे ४ अमरदाद (१) सन् ८ को घोड़ा और सिरोपाव देकर विदा किया। खानखानाने अंबरसे सन्धि करके बराड़ और खानदेशका प्रबन्ध बहुत कुछ सुधार लिया और बादशाहका अजमेरमें आना सुनकर बहुत सी भेट भेजी जो १८ तीर (२) सन् १०को बादशाहकी सेवामें पहुंची। बादशाहने उसका यों वर्णन लिखा है।

१ माणिक—३

२ मोती—१०३

३ याकूत—१००

४ जड़ाऊ फरसे २

५ मोतियों और याकूतोंकी जड़ी हुई किलङ्गी १

६ झरझरी जड़ाऊ १

७ तलवार जड़ाऊ २

८ तरकश मखमलकी १

९ भुजबन्ध जड़ाऊ १

१० हीरेकी अंगूठी १

इन सबका मोल १ लाख रुपये हुआ।

११ दक्षिण और कर्णाटकके कपड़े सादे और सुनहरी तारोंके

१२ हाथी १५

१३ घोड़ा जिसकी गुद्दीके बाल धरती तक लटकते थे १

इसके साथ शाह नवाजखांकी भी भेट थी जिसमें ५ हाथी और ३०० कपड़े नाना प्रकारके थे।

खानजहां लौटी फिर दक्षिणमें।

खानजहां लौटेने जो प्रतिज्ञा की थी वह पार न पड़ी थी

१। सावन सुदी १० संवत १६७०

२। असाढ़ सुदी १५ संवत् १६७२

और उलटी हानि ही हानि हुई थी जिससे वह बादशाहको मुंह नहीं दिखा सकता था। परन्तु बादशाहको उससे बहुत प्रेम था। इसलिये बड़े स्नेहसे उसको बुलाया। वह बुरहानपुरसे चलकर ८ अमरदाद (१) भौमवार सन १० को अजमेर पहुंचकर सेवामें उपस्थित हुआ। बादशाहने अच्छा मुहूर्त्त निकलवाकर फिर उसे ८ महर (२) सन् १० को दक्षिण भेजा और एक बड़ी और चञ्चल चतुरङ्गिणी सेना जिसमें ३३० मनसबदार ३000 अहदी ७00 तुर्क सवार और ३00 पठान दिलोजाक (३) थे उसके साथ दी। ३० लाख रुपये खर्चके वास्ते दिये और कई अमीरोंके मनसब भी उसके कहनेसे ज्यादा किये। जोधपुरके राजा सूरजसिंहको भी ३00 सवार मनसबपर बढ़ाकर दक्षिणको विदा किया और जो अमीर दक्षिणमें थे उनके वास्ते भी सिरोपाव राजा सारङ्गदेवके हाथ भेजे और दाराबखांके वास्ते १ जड़ाऊ तलवार भेजी।

दक्षिणमें फिर अशान्ति और युद्ध।

खानजहांके जानेसे फिर दखनियोंमें कोलाहल मचा। अब खानखाना बुरहानपुरमें रहते थे और शाहनवाजखांको बालापुरकी छावनीमें रखा था। अहमदनगरके सरदार आदमखां, याकूतखां, जादूराय और बापू काटिया वगैरह शाहनवाजखांके पास आये, उसने सबको हाथी, घोड़े, खिलअत और रुपये देकर बादशाही चाकरीमें रख लिया और उनको साथ लेकर, बालापुरसे अम्बरके ऊपर उधरसे दखनियोंकी फौज आयी, तो उससे लड़ाई की। वह भागकर अम्बरके पास गयी। अम्बर अपनी, आदिलखांकी और कुतुबशाहकी बहुतसी सेना एकत्र करके लड़-

---

१। सावन सुदी ६ संवत १६७२

२। आसोज सुदी १० सं० १६७२।

३। पठानोंकी एक जाति।

नेको आया। २५ बहमन (१) रविवारको तीसरे पहरके समय दोनों सेनाकी मुठभेड़ हुई। दाराबखां जो अगली फौजमें था, राजा बरसिंह देव, रामचन्द्र और अलीखां आदि सरदारों सहित तलवार खेंचकर दखनियोंकी हिरावल फौज पर दौड़ा और उसको तितर बितर करके सीधा बीचकी सेना पर गया। वहां ऐसी लड़ाई हुई कि देखने वालोंकी आंखें पथरा गयीं। २ घड़ी तलवार चली। लोथोंसे खेत पट गया। अम्बर भागा। दो तीन कोस तक उसका पीछा हुआ। परन्तु रात हो जानेसे वह बचकर निकल गया। उसका तमाम तोपखाना, ३०० ऊंट, खानोंसे भरे हुए जङ्गी हाथी, अरबी घोड़े और बहुतसे हथियार लूटमें आये और कुछ सरदार भी पकड़े गये। फिर शाहनवाजखां आगे बढ़कर "कारकी"में गया जहां अम्बरकी छावनी थी मगर वहां किसीको नहीं पाया। क्योंकि वहां वाले पहिले ही निकल गये थे। इसलिये उनके मकानोंको गिराकर रोहन खण्डके घाटेसे उतर आया।

बादशाहको जब इस फतहकी बधाई पहुंची तो उन्होंने प्रसन्न होकर सब सरदारोंके मनसब बढ़ाये—

परवेजकी बदली और खुर्रम दक्षिणमें।

दक्षिणकी फौजोंका प्रबन्ध जैसा कि बादशाह चाहते थे सुलतान परवेजसे नहीं हुआ था। इसलिये बादशाहने उसको दरबारमें आनेका हुक्म लिखा।

वह २० तीर (२) सन् ११ को बुरहानसे रवाने हुआ। २८ को (३) यह खबर बादशाहको बिहारीदास वाकिआनवीसकी अर्जीसे मालूम हुई।

१। फागुन बदी १२ रविवार संवत् १६७२।

२। सावन बदी १३ संवत् १६७३

३। यह मामूली चाल डाककी थी कि ८ दिनमें बुरहानपुरसे अजमेरको कागज पहुंचते थे। बुरहानपुर अजमेरसे २५० कोस है।

मेवाड़ फतह होजानेसे बादशाहको अजमेरमें कोई काम नहीं रहा था और दक्षिण फतह करनेकी उनको बहुत आकांक्षा थी। इसलिये १८ शव्वाल (१) सन् १०२को (रविवार ८ आबानको) उन्होंने सुलतान खुर्रमका पेशखीमा अजमेरसे दक्षिणको चलाया और २० आबान (२) शुक्रवारको सुलतान खुर्रमको शाहकी पदवी देकर बड़े ठाठसे बिदा किया। और दूसरे दिन २१ आबान (३) १ जीकाद शनिवारको आप भी ४ घोड़ेके फरङ्गी रथ अर्थात् बग्गीमें बैठकर मालवेको गये। २३ असफन्दारको (४) सोमवारके दिन मांडूके (५) किलेमें पहुंचे। इसी दिन सुलतान शाह खुर्रमने भी बुरहानपुरमें प्रवेश किया। अफजलखां और रायरायां तो बीजापुरमें गये थे। आदिलखां ७ कोस अगवानी आकर इनके पाससे बादशाहके फरमानको ले गया और इन लोगोंका सत्कार करके कहा कि अम्बरने जो बादशाही इलाके ले लिये हैं वे उनसे छुड़ा दूंगा और उसी दिन अम्बरके पास अपने दूत भेजकर यही सन्देसा उसका भी कहलाया।

अंबरने इधर तो शाह खुर्रमके पहुंचनेसे और उधर आदिलखांको कहलानेसे डरकर अहमद नगर और दूसरे किलोंकी कुंजियां जो उसने ले ली थी शाहजादेके पास नजराने समेत भज दीं। आदिलखां और कुतुबुल्मुल्कने भी अधीनता अङ्गीकार करके विनय पत्र भेजे। शाहजादेने बादशाहको लिखकर आदिलखांको फरजन्द (बेटे)का खिताब दिलाया। खानखानाको खानदेश और बुरहानपुरकी सूबेदारीपर स्थिर रखा। जो नये इलाके

१। कातिक बदी ६ रवि सं० १६७३।

२। कातिक सुदी २ सं० १६७३।

३। कातिक सुदी ३ सं० १६७३।

४। फागुन सुदी ७ सं० १६७३।

५। अजमेरसे मांडू १५९ कोस है।

फतह हुए थे उनके शासनपर शाह नवाजखांको १२०० सवारोंसे भेजा। अनह जगह अपने योग्य पुरुषोंको नियत करके सारा प्रबन्ध ठीक कर दिया। साथमें जो लश्कर था उसमेंसे ३०००० सवार और ७००० प्यादे बरकन्दाज तो वहां छोड़े और बाकी जो २५०००
सवार और २०० तोपची थे, उनको साथ लेकर बुरहानपुरसे कूच किया। सो २० महर(१) सन्१२ गुरुवारको मांडूमें बादशाहके पास पहुंचा। अहमद नगरके अमीरों, बीजापुरके वकीलों, बगलानेके राजा और दाराबखांको भी साथ लाया।

खुर्रम दरबारमें।

बादशाहने खुश होकर मोती जवाहर खुर्रमपर निछावर किये और शाहजहांका खिताब ३० हजारी मनसब और दरबारमें कुरसीपर बैठनेका मान दिया और जो सरदार उनके साथ गये थे और दक्षिणसे आये थे उन सबका सत्कार भी हाथी घोड़े गहने और सिरोपाव देकर किया।

ऊदाराम दखनी।

दक्षिणी सरदारोंमें ऊदाराम ब्राह्मण भी था जो पहिले अंबरका साथ छोड़कर शाह नवाजखांके पास चला आया था और फिर अंबरके धोखेमें पड़कर उसके पास लौट गया था। परन्तु अंबरने फौज भेजकर उनको नष्ट करना चाहा जिससे वह लड़कर बादशाही सीमामें आगया और शाहजहांसे मिलकर उनके साथ बादशाहकी सेवामें आया। बादशाहने उनको तीन हजारी जात और १५०० सवारका मनसब देकर नौकर रख लिया।

बादशाह गुजरातमें।

फिर बादशाह मालवेसे गुजरातको गये और वहांसे मालवे होकर आगरेको लौटे।

१। आसोज सुदी १३ संवत १६७४

हीरेकी खान।

खानदेशमें पनजू नामक एक जमींदार था; उसके पास गोंड-वानेमें एक हीरेकी खान थी। खानखानाने उसका हाल सुनकर अपने बेटे अमरल्लाहको कुछ फौजके साथ भेजा। पनजूने अपनेमें लड़नेकी सामर्थ्य न देखकर वह खान सौंप दी और उसपर बादशाही दारोगा बैठ गया। यह खबर १० अमरदाद (१) सन् १३ को गुजरातमें बादशाहके पास पहुंची।

आदिलखांका महत्व।

५ महर गुरुवार (२) सन् १३ को बादशाहने शाहजहांकी प्रार्थना पर मुहम्मदाबादसे (गुजरात) अपना चित्र १ लाल और एक खासा हाथी इब्राहीम आदिल खांको भेजकर लिखा कि निजामुलमुल्क और कुतुबुलमुल्कके राज्यका जितना जीत लेगा वह उसके इनाममें गिना जावेगा और शाहनवाज खांको हुक्म भेजा कि जब आदिलखां चाहे एक सजी हुई सेना उसकी सहायताको भेज दो।

पहिले निजामुलमुल्क दक्षिणके अधिराजोंमें बड़ा गिना जाता था। अब बादशाहने आदिलखांको तमाम दक्षिणका अग्रगण्य बना दिया।

दाराबखां दरबारमें।

दाराबखां गुजरातमें बादशाहके साथ था। इब्राहीमखांको बादशाहने दक्षिणके सूबेका बख्शी नियत करके भेजा था। खानखानाने उसके कामोंसे प्रसन्न होकर उसकी सिफारिश लिखी तो बादशाहने २१ महर (३) रविवारको उसे हजारीजात और २०० सवारोंका मनसब प्रदान किया।

१। सावन सुदी ११ संवत् १६७५।

२। आसोज सुदी ८ संवत् १६७५।

३। कातिक बदी ११ सं० १६७५।

२३ आबान (१) गुरुवारको बादशाहने गांव मदनपुरके डेरोंमें दाराबखांको नादरीका खिलअत दिया। नादरी बिना बांहोंकी कमरी होती थी जो जामेके ऊपर पहनी जाती थी; परन्तु हर कोई बिना दिये बादशाहके नहीं पहन सकता था।

खानखाना दरबारमें।

(२) २१ शहरेवर सन १३ गुरुवार २२ रमजान सन् १०२७ को बादशाह गुजरातसे (जहां मालवे होते हुए गये थे) आगरेको मालवेके रास्तेसे ही लौटे। राजपन्थ खानदेश और बुरहानपुरकी सीममें होकर निकलता था। इसलिये खानखानाने बादशाहकी सेवामें उपस्थित होनेकी आज्ञा मांगी बादशाहने हुक्म भेजा कि जो सर्व प्रकारसे सुबीता हो तो अकेला आकर जल्दीसे लौट जाना।

ये इस आज्ञाके पाते ही (३) १८ आजर सोमवारको छड़ी सवारीसे घाटीचांदामें बादशाहके पास पहुंचे। १००० मोहरें और १००० रुपये नजर किये। बादशाहने भी वैसी ही मेहरबानी की जैसी कि किया करते थे। २१ आजरको (४) खासा घोड़ा जिसका नाम सुमेरु था दिया और २७ को (६) खासा पोस्तीन (५) जो पहने हुए थे और सात घोड़े अपनी सवारीके प्रदान किये।

२ दे (७) रविवारको बादशाह रणथंभोर पहुंच कर तीन दिन वहां रहे; परन्तु खानखानाको भेट करनेका अवसर नहीं मिला

१। मगसर बदी १३।

२। आसोज बदी १३ संवत १६७५।

३। पौष बदी ८।

४। पौष बदी १२।

५। पौष सुदी २।

६। चमड़ेका कोट रूएंदार।

७। पौष सुदी ६।

जिससे उन्होंने ६ देको (१) रणथंभोरसे आगे पड़ाव पर अपनी बहुमूल्य भेट बादशाहकी सेवामें उपस्थित की जिसमेंसे बादशाहने डेढ़ लाख रुपयेके रत्न, जड़ाऊ गहने, कपड़े और हाथी पसन्द करके रख लिये। शेष पदार्थ फेर दिये।

७ हजारी मनसब और दरबारसे विदा।

८ दे रविवारको (२) बादशाहने खानखानाको ७ हजारी जात ७000 सवारका मनसब और खासा खिलअत खासा हाथी, जड़ाऊ तलवार और कमर पट्टा देके और दोनों सूबों अर्थात् खानदेश तथा दक्षिणकी सूबेदारीपर स्थिर रखकर विदा किया और फरमाया कि हमने सुना है कि शाहनवाज खां शराब बहुत ज्यादा पीने लगा है। यदि यह बात सही हो तो उसको हर तरहसे रोको, जो न माने तो हमको स्पष्ट लिखो, हम अपने पास बुलाकर उसका इलाज करेंगे। ऐसा न हो कि वह इस युवावस्थामें अपनेको नष्ट कर देवे।

शाहनवाज खांकी मृत्यु।

खानखाना जब बुरहानपुरमें पहुंचे तो उन्होंने शाहनवाज खांको अति रुग्न (३) और निर्बल पाया। उसकी दवा दारू भी बहुत की। परन्तु रोगकी शान्ति न हुई और वह ३३ वर्षकी अल्पायुमें अपने बूढ़े बापको बिलखता छोड़कर इस असार संसारसे चल बसा।

उसके मरनेसे खानखानाको तो जो दुख हुआ सो हुआ; परन्तु बादशाहको भी बहुत उदासी हुई। वे खुद ५ (४) उर्दी बहिश्त गुरुवार सन् १४के वृत्तान्तमें लिखते हैं "इस अशुभ

१। पौष सुदि १० बु०।

२। पोष सुदी १४ सं० १६७५।

३। बीमार।

४। वैसाख सुदी १२ संवत् १६७६।

समाचारके सुननेसे मैंने बहुत अफसोस किया। सच यह है कि खूब खानाजाद था। (१) चाहिये तो था कि इस राज्यमें अच्छी अच्छी चाकरियां देता और बड़ी बड़ी कीर्त्तियां छोड़कर मरता। यद्यपि सबको इसी रास्तेपर चलना है और मौतसे कोई नहीं बच सकता है मगर इस तरहसे उठ जाना बुरा लगता है। उमेद है कि उसके गुनाह बख्शे जावें। राजा सारंगदेवको जो पास रहनेवाले सेवकों और मिजाज जाननेवाले चाक-रोंमेंसे है मैंने अपने उस अतालीकके पास भेजकर बहुत सी मेहरबानियों और बख्शिशोंसे उसको सहानुभूति की और शाहनवाजखांका जो ५ हजारी मनसब था वह उसके भाइयों और बेटोंके मनसबों पर बढ़ा दिया। उसके छोटे भाई दाराबखांका मनसब असल और इजाफेसे पांच हजारी जात और ५००० सवारका करके खिलअतको घोड़ा और जड़ाऊ तलवार बख्शी और उसको बापके पास भेज दिया" सो वह शाह नवाजखांकी जगह सूबे बराड़ और अहमद नगरका सरदार बना। उसका भाई रह-मान दाद २ हजारी जात और ७00 सवारके मनसबसे सन्मानित हुआ। शाहनवाजखांके बेटे मनुचहरको २ हजारी जात हजार सवारका और दूसरे बेटे तुगरलको हजारी जात और ५०० सवा-रका मनसब मिला।

बादशाह काश्मीरमें।

बादशाहने मालवेसे आगरे पहुंचकर १ शहरेवर सन १४ को (२) बारानी अर्थात् बरसाती खिलअत खानखाना और दूसरे अमीरोंके वास्ते जो दक्षिणमें नियत थे भेजे।

१। चरजाम गुलाम बादशाह अपने नौकरोंको खानाजाद कहते थे। उसी प्रथासे दरबार जोधपुरके सरदार और मुतसद्दी अबतक भी अर्जीमें अपनेको खानजाद लिखते हैं।

२। द्वितीय सावन सुदी १४ सं० १६७६।

२४ महर गुरुवार सन् १४को(१) बादशाहने दशहरेका उत्सव करके सांझ समय काश्मीरको कूच किया।

८ आबान (२) शुक्रवारको मथुरासे ६ लाख रुपये आसेरगढ़की सामग्रीके लिये खानखानाके पास भेजे।

दक्षिणमें उपद्रव।

अंबरने बादशाहका काश्मीर जाना सुन कर अहमदनगर पर चढ़ाई की। खानखानाने बादशाहको जो अरजी लिखी वह २५ फरवरदीन (३) सन् १५ के लगभग पहुंची जिसकी बाबतमें वे इस भांति तुजुक जहांगीरीमें लिखते हैं;—

"इन दिनोंमें सिपहसालार खानखाना और दूसरे शुभचिन्तकोंके प्रार्थनापत्रोंसे प्रकट हुआ कि अंबरने अपने स्वभावकी दुष्टतासे फिर उपद्रव करनेको पांव बढ़ाया है। उसने बादशाही सवारीके अति दूर होनेसे अवसर पाकर वे सब वचन तोड़ दिये जो अमीरोंसे किये थे और बादशाही राज्यमें हस्तक्षेप किया है सो जलदी अपने कियेका दण्ड पावेगा। सिपहसालारने खजाना मंगाया था। सो हुक्म दिया गया कि राजधानी आगरेके कर्मचारी २० लाख रुपये सिपहसालारके पास भेज देवें।"

"फिर खबर पहुंची कि अमीर अपने अपने स्थानोंको छोड़ कर दाराबखांके पास चले आये हैं और बरगी लोग (४) लशकरके

१। आसोज सुदी ८ सं० १६७६। बादशाही पञ्चाङ्गमें दसहरा इसी दिन था। चण्डू पञ्चाङ्गमें दूसरे दिन लिखा है। यदि इस पञ्चाङ्गमें आसोज सुदी ७ दो न होती तो १० गुरुवारको ही होती। बादशाही पञ्चाङ्गमें ७ एक ही है।

२। कातिक बदी १० संवत१६७६।

३। चैत सुदी ११ सं० १६७७।

४। पिंडारे लुटेरे।

आसपास सजे हुए फिरते हैं। खंजरखां अहमदनगरमें घिर गया है। दो तीन बार बादशाही बन्दों ने शत्रुओंसे युद्ध किया। हर बार वे हार कर भागे; आखिरको दाराबखां अच्छे सवारोंको लेकर उनकी छावनी पर गया। बड़ी लड़ाई हुई। शत्रु हार कर जङ्गलमें भाग गये। उनकी छावनी लुट गयी। बादशाही सेना कुशलपूर्वक अपने डेरोंमें आयी; परन्तु नाज चारा बहुत महंगा हो गया था; इस लिये सरदार सलाह करके रहनगढ़के घाटेसे उतर आये। शत्रु ढिठाई करके वहां भी दिखाई दिये। राजा बरसिंहदेवने आगे बढ़ कर बहुतोंको मारा और मनशूर हबशीको जीता पकड़ा। उसको हाथीके पावोंमें डालना चाहा; परन्तु वह उस पर राजी न हुआ तो राजाने उसका मस्तक छेदन करा दिया।"

यह लड़ाई कई महीनों तक होती रही। एक लड़ाईमें खानखानाके छोटे बेटे रहमानदादकी जान गयी जो अपने भाई दाराबखांके पास बालापुरमें था।

रहमानदादकी मृत्यु।

बादशाह लिखते हैं कि इन दिनोंमें शुक्रवारको (१) खान-खानाके बेटे रहमानदादके विषयमें यह खबर पहुंची कि वह बालापुरमें मौतसे मर गया। कुछ दिनोंसे तप हो गयी थी जिसकी निर्बलताके दिनोंमें एक दिन दखनी व्यूह रचकर आते हैं। उसका बड़ा भाई दाराबखां लड़नेको सवार होता है। जब यह खबर रहमानददाको लगती है तो वह अति पौरुष और पराक्रमसे उसी

१। मेहर महीनेकी १३वीं चन्द्रवार और १६वीं गुरुवारके बीचमें शुक्रवारको रहमानदादकी खबर आना तुजुक जहांगीरीमें लिखा है; परन्तु शुक्रवार १३ पहले १० को था या १६ के पीछे १७ के बीचमें तो नहीं था।

कमज़ोरी और थकावटमें सवार होकर भाईके पास पहुंचता है और जब कि शत्रुको हराकर लौटता है तो शरीरको कुछ रक्षा नहीं करता। उसी क्षण वायुका कोप हो जाता है नसें खिचने लग जाती हैं। जीभबन्द हो जाती है। दो तीन दिन इसी दशामें रह कर प्राण छोड़ देना पड़ता है। जवान खूब लायक था। तलवार मारने और काम करनेमें बहुत साहसी था। तमाम जगह उसका यही मनोरथ रहता था कि अपनी तलवारका चमत्कार दिखावे; आग सूखे और गीलेको बराबर जलाती है। जब कि मुझे ही बहुत कष्ट हुआ है तो उसके बूढ़े बापके दिल पर तो क्या गुजरा होगा। अभी शाह नवाजखांका जखम ही नहीं भरा था, कि यह दूसरा घाव लगा। आशा हैं कि परमेश्वर उसको शांति और सन्तोष देवे।" (१)

दखनियोंकी चढ़ाई।

खानखाना इन दुःखोंके मारे गनीमका पूरा पूरा बन्दोबस्त न कर सके जो अब हर तरफसे गांवोंको लूटता, खेतोंको जलाता चला आता था। शाहजहांसे जो इकरार हुए थे वे सब तोड़ डाले गये थे; बादशाहने कशमीरमें यह समाचार सुनकर फिर शाहजहांके भेजनेका विचार किया था। परन्तु वह उस समय कोट कांगड़ेकी फतहके उद्यममें लगा हुआ था। उसके बड़े बड़े सरदार वहां गये हुए थे जिससे उसके दक्षिण जानेमें विलम्ब हुआ। दखनियोंने शिथिलतासे और भी बल पाकर ६०००० सवार भेजे, बहुत सा विभाग बादशाही राज्यका दबा लिया, हरेक स्थानसे थाने उठा दिये और महकरमें बादशाही लशकरको आ घेरा। वहां तीन महीने तक लड़ाई होती रही। ३ युद्ध बड़े

---

(१) भूतकालको वर्तमान काल करके लिखनेकी प्रथा अकबर नामे और तुजुक जहांगीरीमें बहुधा देखी जाती है। यह उसीका यथावत उलथा है।

हुए जिनमें बादशाही बन्दे जीते तो सही परन्तु रसदके रास्ते न खोल सके जो बर्गियों अर्थात् दक्खिणके लुटेरोंने बन्द कर रखे थे। जब नाज नहीं मिलने लगा तो बालाघाटसे उतर कर बालापुरमें आ गये जैसा कि पहले लिख गया है। दुश्मन भी साथ साथ ही पीछा करते आये और बालापुरके आस पास भी लूट मार करने लगे। बादशाही बन्दोंमेंसे ६।७ हजार चुने सवार उनकी छावनीपर गये। वे ६०००० थे तो भी एक बड़ी लड़ाई लड़कर और उनके डेरे लूट कर लौटे। परन्तु वे फिर इकट्ठे होकर लड़ते हुए लशकर तक आये। दोनों तरफसे १००० मनुष्य खेत रहे।

इस तरह ४ महीने तक बालापुरमें रहे। जब नाज और चारेकी तंगी बहुत ही हुई और लोग भाग भागकर शत्रुओंके पास जाने लगे तो वहां ठहरना भला न देखकर बुरहानपुरमें आ गये। वे भी पीछे लगे चले आये। ६ महीने तक बुरहानपुरको घेरे रहे। बराड़ और खानदेशकी अनेक बस्तियोंको दबा बैठे। खानखाना उनके हटानेका बहुत उद्यम करते थे। परन्तु सिपाही भूखोंके मारे अधमरे हो रहे थे, घोड़े थक रहे थे; बादशाहकी ओरसे मदद नहीं पहुंचती थी, इस कारणसे लाचार थे। कुछ बन नहीं पड़ता था। बादशाहको लगातार अर्जियां भेजते थे। अन्तमें यहांतक लिख चुके थे कि मेरे ऊपर घोर कष्ट आ पड़ा है और मैंने जौहर करके मर जानेकी ठान ली है।

शाहजहां फिर दक्षिणमें।

२७ महर सोमवार (१) सन् १५ को बादशाह काश्मीरसे लौटे। सोमवार ८ आजर (२) ५ मुहरम सन् १०३० को लाहौर पहुंचे।

१। कातिक बदी ८ सं० १६७७।

२। मगसर सुदी ६ सं० १६७७।

इसी दिन कांगड़ेके फतह होनेकी खबर आयी जो १ मोहर्रमको शाहजहांके मन्त्री सुन्दर ब्राह्मणके (१) परिश्रमसे २ वर्षमें हाथ आया था। बादशाहने इस बधाईसे प्रसन्न होकर ४ दे भृगुवारको (२) शाहजहांको एक भारी शिरोपा और हाथी घोड़े देकर दक्षिणकी ओर विदा किया और चलते समय फरमाया कि बाबा जैसे तुम्हारे दादाने धावा करके खान आजमको गुजरातियोंके घेरेसे छुड़ाया था, वैसे ही तुम भी जाकर खानखानाको दखनियोंसे बचाओ और दक्षिण जीतनेके पीछे २ करोड़ दामका मुल्क अपनी जागीरमें ले लेना। ६५० मनसबदार १००० अहदी १००० बर्कन्दाज रूमी १००० पैदल तोपची १ बड़ा तोपखाना १ करोड़ रुपयेका खजाना और बहुतसे हाथी साथ किये। यह लशकर उन ३०००० सवारोंके सिवाय था जो पहिलेसे खानखानाको दिये हुए थे। परन्तु इससे पहिले कोकाखांको खानखानाके पास भेजकर बहुतसे सन्देशे और कृपायुक्त बचन कहला दिये थे।

फिर बादशाह भी पंजाबसे पयान करके १४ असफंदार (३) सन १५ को आगरेमें आगये।

१। सुन्दर शाहजहांका प्रतिष्ठित पारिषद था। बादशाहने उसकी कार्य्यकुशलतासे प्रसन्न होकर पहिले तो रायरायांकी पदवी प्रदान की थी और अब कांगड़ा विजय करनेसे विक्रमजीतकी उपाधि दी। अजीब बात है कि कांगड़ाको अकबरके समयमें तो राजा बीरबलसे बड़ा धक्का लगा था जिसका वर्णन हम उसके चरित्रमें छाप चुके हैं और अब इन दूसरे ब्राह्मण देवतासे उसका सर्वथा नाश हुआ।

२। पोष सुदी २ सं० १६७७।

३। फागण सुदी १२।

दखनियोंकी पराजय।

जब शाहजहां उज्जैनमें पहुंचा तो माण्डूके किलेसे कर्मचारियोंकी अर्जी आयी कि दखनी नर्मदासे उतर आये हैं और उन्होंने कई गांव यहांके लूट लिये हैं। शाहजादेने ख्वाजा अबुलहसनको ५००० सवारोंसे सहित भेजा। उसने उन लोगोंको नर्मदासे उतरते हुए जा दबाया और लड़कर बुरहानपुरको तरफ भगा दिया। फिर शाहजहां भी बुरहानपुर पहुंचा। दखनी अभी तक शहरको घेरे हुए थे और बादशाही बन्दे जो २ वर्षसे उनके साथ लड़ते लड़ते थक गये थे शहरके अन्दर बड़े सङ्कटमें थे। शाहजादेने ९ दिनमें उनको ३० लाख रुपये और बहुतसे जिरहबख्तर देकर शहरसे बाहर निकाला और लड़कर दखनियोंको भगा दिया। खिड़की तक फौज उनके पीछे गयी जहांसे अम्बर और निजामुल्मुल्क एक दिन पहिले निकलकर दौलताबादको चले गये थे।

अम्बरका फिर सन्धि करना।

बादशाही बन्दोंने खिड़की शहरको जो २० वर्षमें बसा था ऐसा उजाड़ा कि फिर २० वर्षमें भी न बसे। वहांसे फौजका कूच अहमदनगरको दखिनियोंका घेरा उठानेके वास्ते हुआ। पट्टनतक पहुंचे थे कि अम्बरने दूत भेजकर फिर दीनता दिखायी और कहलाया कि जितना हुक्म होगा उतना ही नजराना और जुरमाना भेज दूंगा। इसके साथ ही यह भी खबर पहुंची कि दखनी अहमदनगरसे भी उठ गये हैं। तब कुछ फौज खंजरखांकी सहायताके लिये खर्च सहित भेजकर अमीर लोग बुरहानपुरमें चले आये और अम्बरसे यह बात ठहरी कि जो मुल्क बादशाही अधिकारमें पहिलेसे था उसके सिवाय १४ कोसतक और धरती उन परगनों को छोड़दे जो बादशाही राज्यसे मिले हुए हैं और ५० लाख रुपये नजराने और जुरमानेके दे।

शाहजादेने यह सब हाल बादशाहसे अर्ज करनेके लिये अफ-

जसखांको भेजा। वह ४ खुरदाद (१) सन् १६ को बादशाहके पास पहुंचा। बादशाहने खुश होकर उसके हाथ लालकी जड़ी हुई कलङ्गी जो शाह ईराननें भेजी थी, शाहजहांके वास्ते भेजी और अहमदनगरके हाकिम खंजरखांका मनसब ४ हजारी कर दिया।

बादशाह काश्मीरमें।

१२ आबान (२) सोमबार सन् १६ को बादशाहने आगरेसे काश्मीरको हवा खानेको पयान किया। क्योंकि कई वर्षों से आगरेकी गरमी उनसे सही नहीं जाती थी।

खानखानाकी मारक दशा।

खानखानाको सुख सम्पत्ति भोगते हुए बहुत वर्ष हो गये थे अब दुःखकी भी बारी आयी। पहिले तो उनके जवान बेटे मरे फिर दखनियोंने आकर बुरहानपुर घेरा जिसके मारे उन्होंने जोहर करके मरनेकी ठानी और निःसन्देह उस बीर पुरुषके लिये कि जिसने मैदानकी लड़ाइयोंमें बड़ी बड़ी दल बादल सेनाओंको विजय किया हो, इस तरह बेबस होकर शत्रुओंसे घिर जाना मरनेसे क्या कम था? निदान शाहजहांके पहुंचनेपर उस सङ्कटसे तो छुटकारा मिला परन्तु दुःखने पीछा न छोड़ा वल्कि वह अब शाहजहांके दुर्भाग्यसे मिलकर और भी भयङ्कर हो गया।

बाप बेटों अर्थात् बादशाह और शाहजहांका बिगाड़।

शाहजहां दखनियोंके दारुण घेरेको बुरहानपुरसे उठाकर अपने पौरुषपर फूला न समाता था कि देवने उसको शत्रुओंके विरुद्ध दरबारमें और ही अद्भुत गुल खिलाया जिससे उसको

१। जेठ सुदी ५-६ संवत् १६७८

२। मगसर बदी ७ संवत् १६७८ परन्तु इसदिन सोमबार नहीं था शनिवार था।

सौतेली मां नूरजहां बेगम जो अबतक उसके काम सुधारती रही थी उसका पक्ष छोड़कर प्रतिकूल हो गयी।

नूरजहां बेगमका कुछ हाल।

जहांगीर बादशाहको नूरजहांसे बहुत प्रेम था। यह मिरजा गयास ईरानीकी बेटी थी और शेर अफगनखां ईरानीको व्याही थी। मिरजा गयास अकबर बादशाहके समयसे कारखानोंका दीवान था और शेर अफगनखां कई वर्ष तो खानखानाकी सेवामें रहा था फिर जहांगीर बादशाहका नौकर हुआ। बादशाहने उसको वर्द्दवानमें जागीर दी थी। फिर उसके अनाचारके समाचार सुनकर अपने कोका (धा भाई) कुतुबुद्दीनखांका जो बङ्गाल और उड़ीसेका सूबेदार था लिखा कि शेर अफगनको दरगाहमें भेज दो और जो न आवे तो सजा दो। कोकाने बर्द्दवान जाकर शेरअफगनको पकड़ना चाहा तो उसने कोकाको मारडाला और आप भी मारा गया। नूरजहां बेगम पकड़ी आयी तो बादशाहने अपनी सौतेली मां रुकैया सुलतान बेगमको बख्श दी। वह बहुत दिनोंतक उनके पास रही। फिर बादशाहके चित्त चढ़ी तो थोड़े दिनोंमें सब बेगमोंसे बढ़ गयी। अपने बापको मुख्य मन्त्री बनाया; भाईको आसिफखांकी पदवी दिलाकर सब अमीरोंसे बढ़ाया। बादशाही सारा काम आप करने लगी। बादशाहका नाम मात्र रह गया। वे कहा भी करते थे कि मैंने तो राज्य नूरजहांको दे डाला है। अब मुझे १ सेर शराब और आधासेर कबबके सिवाय और कुछ नहीं चाहिये।

बादशाहके ५ बेटे खुसरो, परवेज खुर्रम, जहांदार, और शहरयार थे। खुसरो राजा मानसिंहका भानजा और खान आजम मिरजा कोकाका जमाई था। इस प्रसंगमें वे दोनों सरदार अकबर बादशाहके पीछे उसीको तख्तपर बैठानेके विचारमें थे परन्तु उनकी यह कामना पूरी न हुई और जहांगीर ही पिताकी जगह बैठे तो भी खुसरो अपनेको बादशाहीके योग्य समझकर

पंजाबको भागा था और पकड़ा जाकर अन्तमें खुर्रमको सौंपा गया था सो उसीकी कैदमें मर गया।

परवेज बादशाहका प्यारा बेटा था। परन्तु नूरजहांने उसको नहीं बढ़ने दिया और खुर्रमको बढ़ाया क्योंकि उसके भाई आसिफखांकी बेटी ताजबीबी खुर्रमको व्याही थी और इस सम्बन्धसे नूरजहां खुर्रमके पक्षमें हो गयी थी। परन्तु अब जो अपने पेटकी (१) बेटीका विवाह शहरयारसे करना चाहा तो शहजहांका बल घटाने लगी कि जिससे शहरयारको बापके पीछे बादशाह बननेका अवसर मिले। बादशाह उसके कहनेमें थे जो वह कहती वही करते थे।

शहरयार सब भाइयोंमें छोटा था तोभी बादशाहने नूरजहांके कहनेसे २७ रबीउल आखिर (२) सोमवार सन् १०३० को ८ हजारी जात और ४ हजारका मनसब देकर फौजो अफसर बनाया और ४ उर्दी बहिश्त (३) सन् १६ को नूरजहांकी बेटीसे उसका विवाह कर दिया।

इतनेहीमें ईरानके शाह अब्बास सफवीके कन्धारपर आनेके समाचार लगे। बादशाह उस समय कांगड़ा होकर काश्मीरको हवा खानेको जा रहे थे और कुछ स्वास्थ्य भी उनका बिगड़ा हुआ था इसलिये जैनुल आबदीन बख्शीको शाहजहांके लानेके लिये भेजकर काश्मीरको चल दिये।

जैनुल आबदीन जब शाहजहांके पास पहुंचा तो वह खानखानाको साथ लेकर रवाना हो गया। जब मांडोमें आया तो सुना कि उसकी जो अच्छी अच्छी जागीरें दिल्ली आगरे और पंजाबके सूबोंमें थीं। वे सब शहरयारको दे दी गयी हैं। सब

१। यह लड़की नूरजहांके भूतपूर्व पति शेर अफगनसे थी।

२। चैत बदी १४ संवत् १६७७

३। बैसाख सुदी ४ संवत् १६७८।

तो वह वहीं ठहर गया और बरसातके पीछे हाजिर होनेकी अर्जी लिखकर बखशीको बिदा किया। जो (१) २ तीर सन् १७ को काश्मीरमें बादशाहके पास पहुंचा। बादशाहने शाहजहांसे बुरा मानकर उसके साथके राजाओं और अमीरोंको तो दरबारमें चले आनेका हुक्म भेजा और शाहजहांको लिखा कि अब यहां न आवे। उधर ही गुजरात मालवे दक्खन और खानदेशके सूबोंमें जो उसको इनायत किये जाते हैं। जहां चाहे वहां रहे और इधरकी जागीरोंके बदले जागीरें भी अपनी उधर हीके किसी सूबेमें ले ले।

इस झमेलेमें कन्धारको फौज न जा सकी और शाह अब्बासने आकर उसको घर लिया। बादशाहने यह खबर सुनकर २२ अमरदाद सन् १७ को काश्मीरसे लाहोरकी तरफ कूच किया। रास्ते में १ शहरेवरको (२) शहरयारने कन्धार जानेकी प्रार्थना की। बादशाहने स्वीकार करके १२ हजारीजात और ८००० सवारका मनसब उसको दिया और कन्धारके वास्ते जो लशकर तय्यार हो रहा था उसका अफसर भी उसीको नियत किया। परन्तु यह अभी कन्धारको बिदा भी न होने पाया था कि शाह ईरानने कन्धार ले लिया और क्षमा मांगनेके लिये दूत और पत्र भेजा। बादशाह भी उत्तरमें उलहनेका पत्र भेजकर लाहोरमें आ गये और आसिफ खांको आगरेमें भेजा कि वहां जितना कुछ खजाना मोहरों और रुपयोंका अकबर बादशाहके राज्य शासनसे अबतक संग्रह हुआ है उस सबको लाहोरमें ले आवे और परवेजके वकीलको हुक्म दिया कि जल्दीसे जाकर परवेजको विहारकी सेना सहित यहां लावे।

१। द्वितीय असाढ़ बदी २ संवत् १६७९।

२। सावन सुदी १० सं० १६७९।

३। भादों बदी ४ सं० १६७९।

शाहजहांका बापके मुकाबले पर आना और खानखानाका शाह-
जहांके साथ रहना।

शाहजहां जिसे बेदौलतकी पदवी मिली थी, ये बातें सुनकर माडूंसे फतहपुरमें आया और उसके मन्त्री सुन्दर ब्राह्मणने जिसको विक्रमाजीतकी उपाधि उपलब्ध हुई थी, आगरेमें जाकर कई अमीरोंके घर लूटे। बादशाहने यह समाचार सुनते ही १७ बहमनको (१) लाहोरसे आगरेकी ओर प्रस्थान किया और यमुनाके किनारेका रास्ता लिया; शाहजहां मथुरामें आगया था। यहांसे वह भी यमुनाके किनारे किनारे चला। खानखाना दाराबखां और कई अमीर जो गुजरात और दक्षिणके सूबेमें नियत थे उसके साथ थे; परन्तु खानखानाका सम्बन्ध शाहजहांसे सबके अपेक्षा अधिक था। प्रथम तो दक्षिण और बराड़के सूबे जिनके वे शासक थे शाहजहांका मिल चुके थे, दूसरे शाहजहांसे उनको आंते भी फंसी हुई थीं क्योंकि उनकी पोती जो शाहनवाजखांकी बेटी थी उसको व्याही हुई थी।

बादशाहका खानखानाको नमकहराम लिखना।

बादशाहने इस समय खानखानाको नमकहराम लिखा है और उसका वर्णन इन अक्षरोंमें किया है।

"जब कि खानखाना जैसा अमीर जो अतालीकीके ऊंचे पदको पहुंचा हुआ था, ७० वर्षकी अवस्थामें अपना मुंह नमकहरामीसे काला कर ले तो दूसरोंसे क्या गिला है। मानो शरीर ही नमकहरामीसे बना था। उसके बापने भी अन्तिम अवस्थामें मेरे बापसे ऐसा ही बरताव किया था। सो यह भी उस उमरमें बापका अनुगामी होकर हमेशाके लिये कलङ्की हुआ। भेड़ियेका बच्चा आदमियोंमें बड़ा होकर भी अन्तको भेड़िया ही होता है।"

१। माह सुदी ७ सं० १६७८।

नूरजहांका बाप बेटोंमें सन्धि न होने देना और सुन्दर ब्राह्मणका लड़ाईमें काम आना।

शाहजहांने कई बार विनय पत्र और दूत पिताके पास भेजे और क्षमा मांगी परन्तु नूरजहांने बादशाहको उसकी ओरसे ऐसा कठोर कर दिया था कि वे किसी तौर पर भी उसकी अर्जियों पर गौर नहीं करते थे। बल्कि उसके वकीलोंको कैद कर देते थे शाहजहांको दण्ड देनेका पक्का बिचार कर लिया था परन्तु शाहजहां और खानखाना बादशाहके सामने होनेका साहस न करके दिल्लीके पाससे बायें हाथको मुड़ गये सुन्दर ब्राह्मण, दाराबखां और राजा भीमको लड़नेके लिये छोड़ गये। ८ फरवरदीन (१) बुधवार सन् १८ को बादशाहने २५००० हजार सवार आसिफखांको अफसरीमें भेजे। बलोचपुरमें लड़ाई हुई, सुन्दर गोलीसे मारा गया, बाकी लोग भागकर शाहजहांके पास गये और वह मांडूको लौटा।

बादशाह भी उसके पीछे चले। १ उर्दी बहिश्त (२) सन १८ को फतहपुर पहुंचे। १० को (३) परवेज भी हिण्डोनमें उनसे आ मिला। २५ को (४) बादशाहने उसे ४०००० सवारों सहित महाबतखांकी अतालीकीमें शाहजहांके ऊपर भेजा।

बादशाह अजमेरमें, परवेज मालवेमें और शाहजहां दक्षिणमें।

खुरदाद (५) शनिवार सन १९ ता० १९ रज्जब सन १०३२ को बादशाह अजमेरमें पहुंचे। मनूचकर जो शाहनवाजखांका बेटा और खानखानाका पोता था शाहजहांका साथ छोड़कर परवेजके

१। चैत बदी १४ सं० १६७९।

२। बैसाख बदी ७ सं० १६८०।

३। बैसाख सुदी १ सं० १६६०।

४। जेठ बदी ? सं० १६८०।

५। जेठ सुदी १ सं० १६८० को शनि नहीं मङ्गल था और रज्जबकी १९ नहीं ३० थी।

पास आ गया। खानखाना भी इसी जोड़ तोड़में थे कि परवेज चांदाके घाटेसे उतर कर मालवेमें पहुंचा। शाहजहां २०००० सवारों और ३०० जङ्गी हाथियों सहित लड़नेको आया। खानखानाको भी साथ आना पड़ा; परन्तु ये और शाहजहां रणांगनसे एक कोस पीछे रहे। दाराबखां और राजा भीमको आगे भेजा। महावतखांने इधरके बहुतसे अफसरों और अमीरोंको मिला लिया था। इसलिये सामना होते ही वे लोग बादशाही लश्करमें जा मिले। शाहजहांने यह खबर पाकर बाकी आदमियोंको बुला लिया और रातों रात खानाखाना सहित नर्मदाके पार उतर गया।

खानाखानाकी महावतखांसे सटपट।

नर्मदा पार खानखानाका एक कासिद जो महावतखांके नामका पत्र लिये जाता था शाहजहांकी पकड़में आगया। उस पत्रके सिरे पर यह लिखा था कि जो १०० आदमी नजरोंमें मेरी देख भाल नहीं रखते होते तो बेचैनीसे कभीको उड़कर वहां पहुंच जाता।"

खानखाना शाहजहांकी कैदमें।

शाहजहांने खानखानाको बेटों समेत बुलाकर वह पत्र दिखाया। इन्होंने बहाने तो बहुत किये; परन्तु कोई ठीक न था। इसलिये शाहजहांने उनको दाराबखां आदिके सहित अपने डेरेके पास कैद कर दिया। बादशाह इस विषयमें यह फबता हुआ "चुटकला" लिखते हैं कि "उसने जो १०० आदमियोंकी नजरोंमें रहनेका पहलेसे अपशकुन लिखा था वह उसके आगे आया।"

सन्धिका सन्देसा और खानखानाका कैदसे छुटकारा।

शाहजहांकी मनशा पहिले तो खानखाना और उनके बेटोंको आसेरके किलेमें कैद रखनेकी थी; परन्तु फिर अपने साथ बुरहानपुरको ले गया। अब नर्मदा नदी बीचमें थी और उसके दोनों किनारों पर दोनों ओरके लश्कर जमे हुए थे। अबदुल्लाखां फीरोज जङ्गने जिसे अब "खानतुल्ला"की उपाधि मिली थी और

जो शाहजहांसे जा मिला था राव रतन हाड़ाके द्वारा सुलह करना चाहा; परन्तु महावत खांने कहा कि जब तक खानखाना न आवे सन्धि स्वीकार नहीं है। इसपर शाहजहांने खानखानाको कैदसे छोड़कर उनसे बहुत शिष्टाचार किया और कुरानकी कसम लेकर वचन पक्का करनेके लिये उनको अन्तःपुरमें ले गया तथा अपनी बेगमों और बेटियोंके सामने कहा कि अब वक्त बहुत नाजुक आगया है। मैं अपनेको तुम्हारे हवाले करता हूं। मेरी इज्जत और आबरू तुम्हारे हाथमें है। ऐसा करो कि जिससे बात अधिक न बिगड़े और फिर भटकना न पड़े।

खानखाना सन्धि कराने जाते हैं और परवेजसे मिल जाते हैं।

खानखाना शाहजहांको धीरज देकर सन्धि करनेके वास्ते चले। बात यह ठहरी थी कि इधरसे खानखाना और उधरसे महावतखां नदीके दोनों कराड़ोंपर बैठकर सुलहकी तजवीज ठहरावें। अभी यह कार्य्य आरम्भ भी न हुआ था कि बादशाही लश्कर शाहजहांकी फौजको गाफिल देखकर नदीसे उतरने लगा जिससे शाहजहांकी फौज गड़बड़ाकर भाग निकली और खानखाना समयके पलट जानेसे अजीब झञ्झटमें पड़ गये कि न तो ठहरनेको जगह थी और न जानेको रास्ता। निदान सब वचन कचन तोड़कर महावतखांकी मारफत शाहजादे परवेजसे जा मिले। उस समय उनके गुलाम फहीमने उनसे बहुत कहा कि मुझे महावतखांकी तरह देखते हुए यहां दगा मालूम होता है। कहीं कुछ अपमान न हो जावे। इससे तो उत्तम यह है कि हथियार पकड़कर बादशाहके हुजूरमें चले चलें। परन्तु खानखानाने नहीं माना।

शाहजहां बापका राज्य छोड़ जाता है।

खानखानाके दगा देनेसे शाहजहांके दिलको बड़ा धक्का लगा और वह बादशाही राज्य छोड़कर कुतुबुल्मुल्कको सीमामें चला गया जो गोलकुण्डेका स्वतन्त्र बादशाह था।

खानखानाको राजा भीमका धिक्कार।

खानखानाने राजा भीम सीसोदियाको (१) जो शाहजहांका मित्र मन्त्री और हितैषी था लिखा कि जो शाहजादे मेरे लड़कोंको छोड़ देवें तो मैं बादशाही लशकरको किसी न किसी बहानेसे लौटा दूं। नहीं तो बहुत मुशकिल पड़ेगी। राजाने जवाब दिया कि अभी तो ५।६ हजार जान झोकनेवाले और सिर देने हारे शाहजादेकी अरदलोंमें हाजिर हैं। जब तू पास पहुंचेगा तो मैं तेरे बेटेको मारकर खबर लूंगा।

बादशाह काश्मीरमें।

सुलतान परवेज ४० कोसतक शाहजहांके पीछे जाकर १ आबानको (२) बुरहानपुरमें लौट आया और बादशाह भी निश्चिन्त होकर आजर १ सफर (३) सन १०३३ को अजमेरसे काश्मीरको चल दिये।

शाहजहांका बङ्गालपर चढ़ाई।

आदिलखांने तो शाहजहांको कुछ सहानुभूति नहीं की। परन्तु कुतुबुल्मुल्कने अपनी अमलदारोंमेंसे उड़ीसेको तरफ उसको मार्ग दे दिया जिधरसे वह बङ्गालमें जा पहुंचा। बादशाहने सुलतान परवेज और महावतखांको लौट आनेका हुक्म लिखा और आमेरसे उड़ीसेतक अपने भरोसेके सरदारोंको जाबतेके लिये भेज दिया।

परवेजका बुरहानपुरसे कूच।

परवेजने ६ खुरदाद (४) सन १८ को बुरहानपुरसे कूच

१। भीम सीसोदिया राना अमरसिंहका बेटा और करनसिंहका भाई। था शाहजहांने उसको महाराजकी पदवी दी थी।

२। कातिक सुदी १ सं० १६८०

३। मंगसर सुदी २।३ सं० १६८०

४। चैत सुदी ६ सं० १६८१

किया और दक्षिणकी रक्षाके लिये जो थाने बैठाये उनमेंसे खान-पुरके थानेपर मनूचहरको रखा।

शाहजहांका बङ्गाल जीतकर दाराबखांको देना।

शाहजहांने बङ्गालके सूबेदार इब्राहीमको मारकर बङ्गाल जीत लिया। ४० लाख रुपये इब्राहीमके खजानेके लूटमें आये थे। वे अपने साथियोंको बांट दिये। उनमेंसे १ लाख रुपया दाराबखांको दिया और उसको कारागारसे निकालकर कुरानकी शपथ ली और बङ्गालकी हुकूमत देकर उसकी स्त्रीको १ लड़की और शाहनवाजखांके एक लड़के सहित अपने पास रख लिया।

शाहजहांका बिहार जीतकर इलाहाबादपर चढ़ना।

फिर शाहजहांने बिहार जीतनेको प्रयाण किया और राजा भीमको पहिलेसे भेज दिया—बिहार परवेजकी जागीरमें था। उसके कर्म्मचारियोंसे कुछ प्रबन्ध न होसका। भीमने जाते ही पटनेमें प्रवेश किया। पीछेसे शाहजहां भी पहुंचा। वहां उसके पास बहुतसा कटक जुड़ गया। राजा भीम और अबदुल्लाहखां इलाहाबादपर आये।

परवेजका खानखानाको कैद करना और फहीमका स्वामि प्रेमधर्म्म साधनमें माराजाना।

परवेज, रावरतन हाड़ाको बुरहानपुर सौंपकर बिहारको गया। उस समय उसने खानखानाको इस हेतुसे कि उनका बेटा दाराबखां शाहजहांके पास था नजर कैद कर लिया। उनका डेरा शाहजादेके डेरेके पास लगाया जाता था और बड़े बड़े आदमी उनकी चौकीका पहरा देते थे। जाना बेगमके सिवाय जो उनकी विधवा बेटी थी किसीको उनके पास नहीं छोड़ा था। फिर उनका धन माल भी कुरक करना और उनके गुलाम फहीमको पकड़ना चाहा। वह बड़ा बीर और स्वामि प्रेधर्मी था। अपने स्वामीके हितार्थ शाहजादेके और महावतखांके मनुष्योंसे लड़ा और जब वह मारा गया तो शत्रुओंका हाथ खानखानाके डेरेपर पड़ा।

यह फहीम एक राजपूतका लड़का था। इसीके बाबत अब तक यह कहावत चली आती है कि "कमावे खानखाना उड़ावे मियां फहीम।"

परवेज और शाहजहांका युद्ध, भीमका माराजाना और शाहजहांका भागना।

अबदुल्लाहखां अभी इलाहाबादको घेरे हुए था कि परवेज और महाबतखां आ पहुंचे। तब वह वहांसे उठकर जौनपुरमें शाहजहांके पास चला गया। शाहजहां बेगमों और बच्चोंको रोहतास गढ़में छोड़कर बनारस पर आया जहां परवेज भी पहुंच गया था। उसके साथ ४०००० सवार थे और शाहजहांके पास ७००० ही; तो भी राजा भीम सीसोदियाने मैदानकी लड़ाई लड़नेकी उत्तेजना दी। अबदुल्लाहखां इसमें सहमत नहीं था। परन्तु शाह-जहांने राजाकी राय मानी और कुछ पीछे हटके मैदानमें ही व्यूह रचकर लड़नेकी ठानी। उधरसे परवेज आया। भाई भाई तोनस नदी पर लड़े। राठोड़ सीसोदियोंसे भिड़े। खूब तलवार चली। लुहकी नदी बही। भीम एक भीषण युद्ध करके वीर शय्यापर पोढ़ा (१) शाहजहांकी हार हुई। वह चार कूचमें रोह तास आया और वहांसे पटनेको चला गया।

महाबतखांका खानखाना होना।

बादशाहने इस विजयसे सन्तुष्ट होकर ७ हजारी ७००० सवा-रका मनसब तुमन तोग और खानखानाका खिताब महाबतखांके वास्ते भेजा और उसका पद खानखानाके बराबर कर दिया।

दक्षिणमें अम्बरका फिर जोर पकड़ना।

उधर दक्षिणमें अम्बरने बीजापुरके बादशाहपर चढ़ाई करके उसका मुल्क लूटा और बादशाही फौज जो उसकी सहायताको

१। जोधपुरके इतिहासमें लिखा है कि भीम सीसोदिया महा-राज गजसिंहके हाथसे मारा गया था।

बुरहानपुरसे गयी थी उसको भी हराकर मनूचहर, लशकरखां और अकीदतखांको पकड़ लिया। फिर अहमद नगरको आ घेरा और याकूत हबशीको बुरहानपुरपर भेजा।

दाराबखांका शाहजहांके पास न जाना और शाहजहांका उसके बेटेको मरवा डालना।

शाहजहांने रोहतासमे दक्षिण जाते हुए दाराबखांको बङ्गालकी गढ़ीमें बुलाया। परन्तु वह जमीन्दारोंके बलवेका बहाना करके नहीं गया। तब शाहजहां उनके जवान बेटेको जो ओलमें था अबदुल्लाह खांके हवाले करके जिस मार्गसे आया था, उसी मार्गसे दक्षिणको चला गया। अबदुल्लाह खांने दाराब खांके बेटेको मार डाला। परवेजने बङ्गाल महावत खांको जागीरमें देकर पीछेको कूच किया और बंगालके जमीन्दारोंने दाराब खांको परवेजके पास भेजा। वह आकर महावत खांसे मिला।

बादशाह लाहोरमें और दाराब खांका बध।

बादशाह १५शहरेवारीको (१) काश्मीरसे कूच करके लाहोरमें आये और दाराब खांके समाचार सुनकर महावत खांको लिखा कि इस कुपात्रको जीते रखनेमें क्या लाभ है, शीघ्र इसका सिर हमारे पास भेज दो। महावत खांने ऐसा ही किया।

कहते हैं कि बादशाहके पास भेजनेसे पहिले महावत खांने दाराब खांका मस्तक एक थालमें ढककर तरबूजके नामसे खानखानाके पास भेजा। खानखानाने देखकर कहा, हां तरबूज शहीदी (२) है।

खानखानाका दरबारमें बुलाया जाना।

फिर बादशाहसे "अरबदस्तगैब"को शाहजादे परवेजके पास

---

(१) आसोज सुदी ४ सं० १६८१।

(२) शहीदीका अर्थ मारा हुआ—और शहीदी एक प्रकारका तरबूज भी होता है। यहां शहीदीके दो अर्थ हैं।

भेजकर खानखानाको भी बुलाया। इससे खानखानाकी पदवी छिन गयी थी। तो भी महाबत खांने इनको बड़ी इज्जतसे भेजा और विदा होते समय शिष्टाचार करके अपनी समझमें सफाई कर ली।

शाहजहांका अम्बरसे मिलकर बुरहानपुरपर आना।

शाहजहांके दक्षिणमें पहुंचनेपर अम्बरचंपू भी उससे मिल गया और उसने याकूत खां हबशीके १००० फौजसे उसकी सहायतामें बुरहानपुरके ऊपर भेजा। जब वह मलकापुरमें पहुंचा और राव रतन हाड़ाने बुरहानपुरसे निकलकर उसपर जाना चाहा तो बादशाहने यह खबर सुन उसको लिखा कि जबतक दूसरी फौज न पहुंचे, ऐसा साहस न करे और मुखलिस खांको परवेजके पास भेजकर दक्षिण जानेकी ताकीद की।

बादशाहका काश्मीर जाना और शाहजहांका अहमद-नगरको छोड़ना।

बादशाह अशफन्दार (१) सन १८ में लाहोरसे फिर काश्मीर चले गये। शाहजहांने याकूत हबशीसे मिलकर बुरहानपुरको घेरा और ३ बार धावा करके बहुत जोर दिया। परन्तु राव रतन हाड़ाने हर बार उसको और दखनियोंको हरा हराकर किलेके पाससे हटा दिया। इतनेमें परवेज और महाबत खांके नर्मदा तक आ पहुंचनेकी खबर उड़ी तो शाहजहां और दक्षिणी बुरहानपुरका घेरा छोड़कर बालाघाटको चले गये।

बुरहानपुरमें रावरतन हाडाका जमा रहना और दुश्मनोंको भगाकर ५ हजारी होना।

बादशाह १८ उर्दी बहिश्त (२) सन् २०को काश्मीर पहुंचे।

१। यह असफन्दारका महीना फागुन सुदी ११ संवत् १६८१ को लगा था।

२। वैसाख सुदी १ संवत् १६८१।

दक्षिणके बख्शी असद खांने रपोट भेजी कि शाहजहां देवल गांवमें हैं और याकूत हबशी अम्बरको फौजसे बुरहानपुरको घेरे हुए हैं। राव रतन हाड़ा किलेमें जमा हुआ है। बाहर जाकर भी लड़ता है। फिर खबर आयी कि अम्बरकी फौज उठ गयी है। बादशाहने प्रसन्न होकर ५ हजारी ५,००० सवारका मनसब और रायराजका खिताब (१) जो दक्षिणमें बहुत बड़ा समझा जाता है राव रतनको दिया। इससे पहिले सर बुलन्द रायका खिताब भी उसे मिल चुका था।

शाहजहांका बापसे अपराध क्षमा करा लेना।

शाहजहां अब बुरहानपुरका घेरा छोड़कर दक्षिणको जाता था तो मार्गमें बहुत बीमार हो गया जिससे उसने पछताकर बादशाहको अरजी अपराध क्षमा करनेको भेजी। बादशाहने अपने हाथसे उत्तर लिखा कि जो अपने बेटे दाराशिकोह और औरङ्गजेबको सेवामें भेजे तथा रोहतास और आसेरके किले छोड़ दे तो उसके अपराध क्षमा किये जावेंगे और बालाघाटका देश भी दिया जावेगा।

शाहजहांने इस हुक्मको सिरपर चढ़ाकर दोनों बेटोंको भी १० लाख रुपयेके नजराने सहित भेजा और रोहतास तथा आसेरके किलेदारोंको भी दोनों किले बादशाही आदमियोंको सौंप देनेका हुक्म लिख दिया।

खानखाना दरबारमें और उनके अपराधोंकी माफी।

खानखाना बादशाहके हजूरमें पहुंचे तो मारे लज्जाके बहुत देरतक उन्होंने अपना माथा धरती परसे नहीं उठाया। बादशाहने उनका दिल ठिकाने लानेके लिये कहा कि अबतक जो कुछ हुआ दैव संयोगसे हुआ; न कुछ हमारे अखतियारकी बात थी न तुम्हारे

१। पाठान्तर राव राजा। बूंदीके रईस उस दिनसे राव राजा कहलाते हैं।

अखतियारकी। तुम इसका जियादा सोच सन्ताप न करो और बख्शियोंको हुक्म दिया कि इनको उचित जगहपर लेजाकर खड़ा करो।

मह्वावतखांको दरबारमें बुलाना और उसका परभार बङ्गाल जाना।

अब शाहजहांकी ओरसे शान्ति हुई तो नूरजहांने शाहजादे परवेजको निर्बल करनेके लिये मह्वावतखांको उसके पाससे अलग करना आवश्यक समझकर बादशाहसे यह हुक्म लिखाया कि मह्वावतखां तो बङ्गालको चला जावे और खानजहां लोदी गुजरातसे दक्षिण जाकर शाहिजादेकी अतालीकी करे। परन्तु जब परवेज और महावतखांने अङ्गीकार नहीं किया तो बेगमने मह्वावतखांको अकेला दरबारमें बुलाया। तब मह्वावतखां यहां तो नहीं आया पर बंगालको चला गया।

खानखानाका फिर खानखाना होना।

१९ मोहर्रम (१) सन् १०३५ को बादशाह काश्मीरसे लौटे। २० को लाहोर पहुंचे। खानखानाको १ लाख रुपये इनायत करके २३ असफन्दार (२) सन २० को काबुलकी ओर रवाने हुए। उस समय उन्होंने खानखानाको न पसिरे खानखानाकी पदवी और खिलअत देकर कन्नौजकी हुकूमतपर भेजा। इस जगहपर "मआसिरुल उमरा"के कर्त्ताने लिखा है कि अब उस दुनियादार बूढ़े बेग्रमने अपनी अंगूठीमें इस भावका यह शेर (दोहा) खुदाया था,

"जहांगीरकी महरबानीने खुदाकी मददसे
मुझको जिन्दगी और खानखानी दुबारे दी है।"

मह्वावतखां पर कोप।

मह्वावतखांने अपनी बेटीका व्याह एक आदमीसे किया था। बादशाहने उसको बुलाया और यह कहकर कि क्यों तूने ऐसे बड़े

१। कातिक बदी ७ संवत् १६८२

२। फागुन सुदी १५ द्वितीय संवत् १६८२

सरदारकी बेटी बिना हुक्मके लेली अपने रूबरू पिटवाया और कैद कर दिया।

महाबतखांका दरबारमें आना और बादशाहको अपने काबूमें कर लेना।

महावतखां इन बातोंसे नूरजहां बेगम और उसके भाई आसिफखांको जो तमाम काम बादशाहीका करता था अपने बिगाड़नेके विचारमें देखकर ४।५ हजार जङ्गी राजपूतोंके साथ पंजाबमें बादशाहके पास आया सो उससे हिसाब समझने वगैरहमें और क्रूरताको गयो। तब तो उसने एक दिन आसिफखांको गफलतसे बादशाहको थोड़ेसे आदमियोंके साथ भटनदीके उस तरफ देखकर जा घेरा और हाथीपर सवार कराकर अपने डेरेपर ले गया। परन्तु इतनी भूल रह गयी कि नूरजहां बेगमको साथ न लेता गया जिससे उसको यह औसान मिल गया कि नदीसे उतरकर लश्करमें चली गयी और दूसरे दिन ८ फरवरदीन शनिवार (१) सन् २१ ता० २८ जमादिउल्सानी सं० १०३५ को अपने भाई आसिफखां वगैरह अमीरोंके साथ लड़नेके वास्ते आयी। परन्तु महावतखांके राजपूतोंसे हारकर बड़ी मुश्किलसे नदीमें गोते खाती हुई पीछे गई और आसिफखां अटकके क़िलेमें जाकर पकड़ा गया।

महावतखांका खानखानाको कन्नौजके रास्तेसे लौटाकर लाहोरमें बुलाना।

महावतखां बादशाहको उसी हालतमें काबुल ले गया और दिल्लीके हाकिमको लिखकर खानखानाको कन्नौजके रास्तेसे लौटाया और लाहोरमें बुलाया। इसी तरह आगरेके हाकिमको लिखा कि दाराशिकोह और औरंगजेबको नजर बन्द करके लावे।

शाहजहांका अजमेरमें आकर सिन्धको जाना।

शाहजहां यह खबर सुनकर (२) २२ रमजानको नासिकसे

१। चैत सुदी १ संवत् १६८३

२। आषाढ़ बदी ९ सवत् १६८३

चलकर अजमेर पहुंचा। १००० सवार साथ थे। परन्तु महाराज भीमके बेटे किशन सिंहके अकस्मात् मर जानेसे ५०० सवार जो उसके पास थे बिखर गये। इस विघ्नसे वह महावतखांके ऊपर जानेमें कुछ लाभ न देखकर जोधपुर और जैसलमेरके रास्तेसे ठट्ठेको चल गया।

महावतखांकी स्थिति और उसका चला जाना।

काबुलमें महावतखांके हजार डेढ़ हजार राजपूत बादशाही अहदियोंसे लड़कर मारे गये और बादशाही आदमी दिन दिन बढ़ने लगे। बादशाहने (१) १ शहरेवर सन् २१ को काबुलसे कूच किया। रास्तेमें एक दिन महावतखांसे कहलाया कि कल नूरजहां बेगमके सिपाहियोंकी हाजरी होगी। तुम तड़के सलाम करनेको मत आना, कहीं कुछ बोलचाल होकर झगड़ा न हो जावे। महावतखां उस दिन दरबारमें नहीं आया। बस इस एक दिनकी गैरहाजिरीमें बादशाह उसके काबूसे निकल गये और उससे कहला दिया कि अब आगे आगे चला करो। उसका आगे चलना था कि बादशाह उसके पीछे ऐसे बेगसे चलने लगे कि संभलनेका अवकाश नहीं मिला। हतोत्साह होकर वह घबरा गया। तब बादशाहने हुक्म भेजा कि आसफखांको कैदसे छोड़कर शाहजहांके पीछे जावे जो ठट्ठेको गया है। महावतखां हुक्म न माननेमें अपना विनाश देखकर भटनदीके तटसे जहां उसने पिछले साल बादशाहको घेरा था ठट्ठेको चल दिया।

बादशाहका लाहोर पहुंचकर खानखानाको महावतखां पर भेजना।

बादशाहने (२) ७ आबानको लाहोरमें पहुंच कर आसिफखांको मुख्य मन्त्री बनाया और यह सुनकर कि महावतखां ठट्ठेका रस्ता छोड़कर हिन्दुस्तानको गया है कुछ फौज उसके

१। भादों सुदी ३ संवत १६८३

२। कातिक सुदी १० संवत् १६८३

पीछे भेजी और और खानखानाको जो पहिलेसे लाहोरमें पहुंच गये थे ७ हजारीजात ७००० सवार दो अस्पेसह अस्पेका मनसब, खिलअत, तलवार, घोड़ा जड़ाऊ जीनका और खासा हाथी देकर महावतखांके पीछे भेजा और अजमेरका सूबा उनको जागीरमें लिख दिया। इसी तरह नूरजहांने भी हाथी घोड़े ऊंट और १२ लाख रुपये उनको अपनी सरकारसे दिये। खानखाना आप महावतखांसे जले भुने थे। उनकी पोती दाराबखांकी बेटी जो "आसिफखांके बेटे आयस्ताखांको व्याही थी कहा करती थी कि मैं जब महावतखांको देखूंगी बन्दूकसे मार दूंगी" क्योंकि उसके बाप और भाईको महावतखांने मारा था। इन्हीं कारणोंसे खानखाना बड़े क्रोधसे महावतखांसे बैर लेनेको बादशाहसे विदा हुए।

खानखानाकी मृत्यु।

अब इस तरह खानखानाके दिन फिरे तो और भी कई घटनाएं ऐसी हुईं कि जिनसे उनको लाभ पहुंचे। अम्बर दक्षिणमें मर गया था और दक्षिनियोंने लड़ना छोड़ दिया था। (१) ७ सफर सन् १०३६को परवेजको भी मृत्यु हो गयी थी। शाहजहां जो ईरान जानेके विचारसे सिन्धको गया था परवेजका मरना सुनकर काठियावाड़ और और गुजरातके रास्तेसे दक्षिणको लौट आया था। यह तो सब कुछ हुआ; परन्तु इनकी आयुषने साथ नहीं दिया। बीमार तो लाहोर होमें हो गये थे। दिल्ली पहुंचे तो इतने अशक्त हो गये कि लाचार वहीं ठहरना पड़ा और यह ठहरना मौतका बहाना था। कई दिन पीछे सन् १०३६के बिचले महीनोंमें शान्त हो गये और अपनी बीबीके मकबरेमें जो उन्हींका बनाया हुआ था दफन हुए। उस समय उनकी आयु ७२ वर्षकी थी।

१। कातिक सुदी ८ संवत् १६८३ शुक्र

तारीक सन् हिजरीके पिछले महीने अमादि उलसानी या रजब मानि जा सकते हैं। इस लिखेसे खानखानाका देहान्त फागुन संवत् १६८३ या चैत संवत् १६८४में हुआ होगा। अफसोस है कि तुजुक जहांगीरीमें खान खानाके मरनेकी मिती नहीं लिखी है। पिछली वर्षोंमें जहांगीर बादशाहने रोग ग्रस्त और दुखी हो जानेसे स्वयं लिखना छोड़ दिया था। कुछ वर्षों तक तो मोतमिदखां लिखा करता था। उसका लेख ठीक है; परन्तु मोहम्मद हादीने जो ३ वर्षका हाल लिखा है वह बहुत ही थोड़ा है। और दिन मिती भी विशेष करके नहीं हैं। इस कोता कलमीसे खानखाना जैसे नामी अमीरकी मृत्यु तिथि अन्धेर खातेमें मारी गयी; मोतमिदखांने भी अपने ग्रन्थ इकबाल नामे जहांगीरीमें नहीं लिखी है।

खानखानाके ६।७ महीने पीछे ही बादशाह भी मर गये और राज्यकी रचना कुछ और की और हो गयी। इस वास्ते थोड़ासा वर्णन उसका भी किये देते हैं।

खानखानाके पीछेका कुछ हाल।

महाबतखां बादशाही फौजसे पीछा छूटता न देखकर राज पीपले और बगमानेके रास्तेसे जुनेरमें शाहजहांके पास चला गया। बादशाह (१) २१बहमन सन २१को काश्मीर गये; क्योंकि गरमियोंमें उनको हिन्दुस्तानकी हवा हानि करती थी। परन्तु इस बेर वहां भी चैन नहीं मिला, बीमारी बढ़ गयी, भूख जाती रही, पीछे राजोरमें (२) २८ सफर सन १०३७ रविवार १५ आबान सन् २२ को शान्त हो गये। शहरयार तो पहिले ही अपनी बीमारीका इलाज करानेको लाहोर चला गया था और खुसरोके बेटे दावरबख्शको जो उसके पास कैद था इरादतखांके पास रखा गया था। आसिफखांने उसीको बादशाह

१। फागण बदी ८ सं० १६८३

२। कातिक बदी ३० सं० १६८४

बनाकर कूच किया। नूरजहांने उसको बहुत बुलाया; पर बहनके पास जाकर फटका भी नहीं, दुःख पूछना तो दूर रहा। तब वह भी बादशाहकी लोथको लेकर उसके पीछे हो ली। दूसरे दिन बम्भरमें पहुंच कर बादशाहको कफन पहिनाया और लाहोरको भेजकर बागमें (१) दफन कराया।

आसिफखांने बनारसी नामक एक हिन्दूको डाक चौकीमें शाहजहांके पास भेजा और उसके बेटोंको भी नूरजहांके पाससे ले लिया तथा नजरबन्द करके उसके पास लोगोंका आना जाना बन्द कर दिया; क्योंकि वह अपने जमाई शहरयारको बादशाह बनानेके उपायमें थी और आसिफखां अपने जमाई शाहजहांको बादशाह बनाया चाहता था। उधर शाहरियार लाहोरमें बादशाह बन हो बैठा था। जब आसिफखां दावरबख्शको लेकर लाहोर आया तो शहरयार लड़नेको निकला; परन्तु हारा, पकड़ा गया और कैद हुआ।

उधर शाहजहां बनारसीके पहुंचते ही (२) २३ रबीउल अव्वाल गुरुवार सन् १०३७को जुनेरसे रवाने हुआ और इधर आसफखांने (३) २२ जमादिउल् अव्वल रविवार सन् १०३७को लाहोरमें उसके नामकी आन दुहाई फेर कर दावरबख्शको उसके भाई गुरशास्प और दानियालके बेटों बायसनकर, तहमुर्स और होशङ्ग सहित मार डाला। शाहजहां आगरे पहुंच कर (४) ८ जमादि उस्सानी सोमवारको तख्त पर बैठा। महावतखां खानखाना हुआ और आसिफखां वकील—उस्सल्तनत

१। यह स्थान अब शाहदरेके नामसे प्रसिद्ध है लाहोरसे ५ मील है।

२। मगसर बदी १० सं० १६८४

३। माह बदी १० सं० १६८४

४। माह सुदी १० सं० १६८४

बना। नूरजहां १ कोनेमें बैठा दी गयी। सब उपद्रव शान्त हो गया। भाई भतीजेमेंसे दावेदार कोई नहीं (१) रहा।

खानखानाकी सन्तान विशेष तो शाहजहांके झगड़ोंमें खप गयी और जो रही थी वह ऐसी नहीं थी कि जिससे शाहजहां और उसके अमीरोंके चित्तमें कुछ शङ्का या चिन्ता उत्पन्न हो।

दूसरा खण्ड।

—*०*—

समालोचना और ग्रन्थकारोंके मत।

यह अच्छा बुरा जीवन चरित्र खानखानाका हमने उस समयकी तवारीखोंसे लिखा है। इससे ज्ञात होगा कि आदमीको अपनी जिन्दगीमें जो क्षण भङ्गुर कहलाती है क्या क्या ऊंच नीच बर्ताव इस असार संसारके बरतने पड़ते हैं और कालकी विचित्र गति उसके चित्तको कैसा कैसा चल विचल कर देती है। देखो एक समय तो खानखानाकी कैसी हवा बंध गयी थी कि हर तरफसे भलाई ही भलाई उनके पल्ले पड़ती थी और एक समय ऐसा आया कि उनकी बनी बनायी बात भी बिगड़ गयी। राज दरबारके उलट फेर भी बड़े ही बेढब होते हैं जो बड़े बड़े धीर धुरन्धर पुरुषोंको भी डिगमगाकर कभी कुछ और कभी कुछ कर देते हैं और उनके प्रपञ्चोंमें पड़कर मनुष्योंको

१। इस विषयमें एक मारवाड़ी कविने कहा है;—

दोहा।

असब सगाई नां मिनें, नां सबसां में सोर।
खुरम पठारे मारियां, कै का काके बीर ॥१॥

संभलना बहुत कठिन हो जाता है। खानखानाकी जहांगीर और शाहजहांके आपसके बिगाड़में फंस जानेसे जान मालकी हानि, लौकिकमें अपकीर्ति और दोनों ओरकी बेऐतबारीके सिवाय और कुछ प्राप्ति न हुई; पत भी खोई और पतयारा भी गया जिससे उनकी अन्तिम अवस्था बहुत बुरी तरहसे बीती। एक फारसी कविने कहा है कि "जगतरूपी बागके रङ्ग और रूपकी स्थिरता नहीं है; क्योंकि दाखोंके हरे भरे होनेका परिणाम काला मुंह हो जाना है।"

अब हम कुछ इतिहास वेत्ताओंके मत और लेख जो खानखानाके विषयमें हैं लिखते हैं—

तुज़ुक जहांगीरीमें (१) लिखा है कि खानखाना दरबारके बड़े अमीरोंमेंसे था अकबर बादशाहके राज्यमें बड़े बड़े काम किये जिनमें ये तीन तो बहुत ही बड़े थे।

१। गुजरातकी फतह और मुजफ्फरका भगाना जिससे गया हुआ देश गुजरातका फिर हाथ आया।

२। सुहैलकी लड़ाई जिसमें ७०००० जङ्गी सवारों और मद मत्त हाथियोंको २०००० सवारोंसे मारा।

३। सिन्ध और ठट्टेकी फतह।

ऐसी ही एक फतह उसके बेटे शाहनवाजखांने भी जहांगीर बादशाहके समयमें अम्बर चम्पूके ऊपर पायी थी।

खानखाना विद्या और योग्यतामें अपने समयका पक्का था।

---

(१) यह जहांगीर बादशाहकी दिनचर्याका ग्रन्थ है। १६॥ वर्ष तक तो बादशाहने इसे लिखा है; फिर १९ वें वर्षके प्रारम्भ तक मोतमदखांने मसोदे बनाकर बादशाहसे सही करायी हैं; शेष ३ वर्षोंका वृत्तान्त मिरजा मोहम्मद हादीने पूरा किया है और भूमिका भी लिखकर लगायी है जिसमें जहांगीरके युवराज रहते समयका वृत्तान्त है।

अरबी तुरकी फारसी और हिन्दी भाषाओंको खूब जानता था। नकली और असली इल्म (आगम, निगम और षट दर्शनमें) उसकी पूरी गति थी। यहां तक कि हिन्दी भाषाओंमें भी पूरा अभ्यास था। बहादुरी और सरदारीमें तो अद्वितीय ही था। हिन्दी और फारसीमें कविता अच्छी बनाता था। उसने "वाकेआतबाबरी"का उल्था अकबर बादशाहके हुकमसे फारसीमें कराया गया।

मआसिरुल्उमरामें (१) लिखा है कि "खानखाना विद्याकी निपुणतामें एक ही था। अरबी, फारसी, तुरकी और हिन्दीमें धारा प्रवाह जैसा था, कविता खूब समझता था और आप भी कविता करता था। उसमें रहीमकी छाप धरता था। कहते हैं कि जो भाषाएं पृथ्वी प्रचलित हैं उनमेंसे बहुतेरी भाषाओंमें बात चीत कर लेता था। हिम्मत और सखावत (उदारता) तो उसकी हिन्दुस्थानमें प्रसिद्ध है ही, बल्कि बाजी बातोंको लोग मुशकिलसे मानते हैं; कहते हैं कि एक दिन बरातों (चिट्ठी) पर दस्तखत करता था; एक प्यादेकी बरात पर १००) टकेकी जगह १०००) रुपये लिख दिये और वही रहने दिये। कवियोंको उसने बहुधा अशर्फियां उनके बराबर तोल दी हैं। एक दिन मुल्ला नजीरीने कहा कि १ लाख रुपयेका कितना ढेर होता है, मैंने नहीं देखा है। खानखानाने हुक्म दिया कि खजानेसे लावें। जब लाये तो मुल्लाने कहा "खुदाका शुक्र है कि मैंने नवाबकी बदौलत इतना रुपया देखा।" खानखानाने फरमाया "सब मुल्लाको देदो कि फिर खुदाका शुक्र करे।"

१। यह अति ही उत्तम ग्रन्थ फारसी भाषाका ३ बड़े बड़े खण्डोंमें है। इसमें उन बड़े बड़े राजाओं और मुसलमान अमीरोंके जीवन चरित्र लिखे हैं जो बाबर बादशाहके समयसे लेकर मोहम्मद शाहके राज्य तक हिन्दुस्थानमें हुए हैं।

खानखाना हमेशा बहुतसे रुपये फकीरोंको और मोल-वियोंको चोड़े और छुपे देता था और दूर रहने वालोंको (१) वरसोदें भेजा करता था। हरेक विद्याके विद्वानोंका समूह उसके समयमें सुलतान हुसेन (२) मिरजा और अमीर (३) अलीशेरके समयके समान था।

बुद्धि, बहादुरी और राज क्रियामें भी खानखाना बहुत बढ़ा चढ़ा था परन्तु बैर भाव तथा कपट देख कर और समय समझ कर अपनेको वैसा ही बना लेता था। यह उसमें जियादा था वह कहा करता था कि शत्रुसे मित्रताकी लपेटमें शत्रुता करनी चाहिये। यह शेर उसके वास्ते कह गया है।

बेंतभर शरीर और १०० गांठें घटमें
मुट्ठीभर हड्डियां और १०० बल।"

३० वर्षके लगभग कई कई बेर वह दक्षिणमें रहा। उस समय शाहजादों और अमीरोंमेंसे जो कोई उसकी मददको गया उसीने उसकी मिलावट और लाग लपेट वहांके बादशाहोंसे देख-कर उसको कपटी और अन्तर द्रोही बताया और शेख अबुल-फजल तो उसे बागी ही कह चुका था। जहांगीरके राज्यमें अम्बर-चम्पूकी मित्रतासे कलङ्कित हुआ। उसके विश्वासी मन्त्री मह-म्मद मासूमने नमकहरामी करके बादशाहसे अरज करायी थी

१। वर्ष भरका नियत किया हुआ रुपया।

२। यह हिरातका बादशाह अकबरसे कुछ पहिले था और बड़ा गुणज्ञ था। इसके दरबारमें जितने विद्वान एकत्र थे तवारीख वाले उतनेका किसी बादशाहके दरबारमें रहना नहीं बताते है। तवारीख रोज़ तुलसफामें उसकी सभाके सब विद्वानोंके हुलास्त लिखे हैं।

३। अमीर अली शेर उस बादशाहका वजीर था और वह भी वैसाही विद्वान और पालक था।

कि अकबरकी चिट्ठियां खानखानाके नौकर ग्रेख "अबदुल सलाम लखनवीके पास हैं।" बादशाहने महाबत खांको उसको तलाश लेने और कष्ट देनेका हुक्म दिया। उस बिचारेने जान खो दी, परन्तु भेद न खोला।

खानखानाका नाम जगतमें चिरायु हो गया है। अकबरके राज्यमें तो उससे बड़े बड़े काम हुए; पर जहांगीरके राज्यमें कुछ न हुआ। बल्कि पूरी बुद्धि और अच्छी समझ होनेपर भी बहुतसे अपमान सहे। परन्तु राजतृष्णा नहीं छोड़ी।

"कहते है कि दरबारकी खबरोंका उसको बड़ा चसका पड़ा हुआ था। दो तीन आदमी नित्यप्रति डाक चौकीमें रोजनामचा भेजा करते थे। तो भी उसके दूत अदालतों, कचहरियों, चबूतरों, गली कूंचों और बाजारोंमें लगे रहते थे और जो कुछ झूठे सच्चे समाचार सुनते थे, लिख देते थे। खानखाना सन्ध्या होते ही उन सबको पढ़कर आगमें जला देता था।"

"कहते हैं, कि बहुधा चीजें उस समय उसके घरानेमें ही थी; जैसा हुमा पक्षीका पर जिसको शाहजादोंके सिवाय और कोई मस्तक पर नहीं लगा सकता था।"

२ तजकरीहुसेनीमें (१) लिखा है कि किसी मनुष्यने एक पुरुषको व्याकुल सा फिरता देखकर कारण पूछा तो उसने कहा कि मैं एक स्त्री पर मोहित हूं; परन्तु वह तो १ लाख रुपये लिये बिना बात ही नहीं करती इसका कोई उपाय जानते हो तो बताओ। उसने कहा कि इसका उपाय तो बहुत सुगम है; जो तू काव्य रचना जानता हो तो अपना वृत्तान्त कहकर खानखानाके पास ले जा। वह तुरन्त एक छन्द बनाकर ले गया जिसका यह आशय था;

१। यह ग्रन्थ फारसी कवियोंके जीवन चरित्रका है जिसको मीरहुसेन दोस्त सभलीने सन् ११६१ हिजरी संवत् १८०७ में बनाया था।

हे उदार खानखाना!
एक चन्द्रमुखी मेरी प्यारी है।
जब जान मांगे तो कुछ सोच नहीं है
रुपया मांगती है यही मुशकिल है।

"खानखानाने मुसकुरा कर पूछा कि कितना रुपया मांगती है उसने अरज की कि १ लाख। खानखानाने १०६०००) रुपये उसको दिलाकर फरमाया कि १ लाख रुपये तो उसकी मांगनेके हैं और ६०००) रुपये तेरे भोग विलासके वास्ते हैं।"

कहते हैं कि खानखाना वर्षा काल लगते ही अपने सिपाहियोंको ४ महीनेका वेतन देकर घर जानेकी आज्ञा दे दिया करते थे कि बरसात भर आराममें अपने जोरू बच्चोंमें रहें और जाड़ेके लगते ही नौकरी पर आ जावें। एक साल कोई लड़ाई होने वाली थी। इस कारण घर जानेकी आज्ञा तो न दे सके; पर प्रति मनुष्य एक एक मोहर देकर कहा कि लौंडियां मोल लेकर यहीं उनके साथ मौज उड़ावें। उस समय एक सिपाहीने कहा कि मैं दो मोहरें लूंगा आपने उसको बुलाकर पूछा कि सबको एक एक मोहर मिली है; तू २ क्यों मांगता है? उसने कहा कि १ से तो यहां मैं लौंडी खरीद कर मौज करूंगा और दूसरी घर भेज दूंगा जिससे एक गुलाम मोल लेकर वहां भी गुल छर्रे उड़ावें। इस पर आप बहुत हंसे और सब सिपाहियोंको घर जानेकी छुट्टी दे दी।

४। तारीख जगतमें (१) लिखा है कि एक दिन एक कङ्गाल ब्राह्मणने खानखानाकी ड्यौढ़ी पर जाकर कहा कि नवाबसे कहो तुम्हारा साढ़ू आया है। नवाबने उसको बुलाकर बड़े मान

१। यह ग्रन्थ खड़ी भाषामें जयपुरके महाराजा सवाई माधोसिंहजीकी आज्ञासे बनाया गया है। इसमें कई प्रकारके विषय हैं। कुछ अंश इतिहासका भी है।

सम्मानसे पास बैठाया। किसीने पूछा कि यह मेमता कहांसे आपका साढ़ू हो गया? नवाबने कहा कि सम्पत्ति और विपत्ति दो बहनें हैं। एक हमारे घरमें है और दूसरी इसके घरमें। इस सम्बन्धसे यह हमारा साढ़ू है।

किसीने खानखानाकी पालकीमें लोहेकी पनसेरी फेंकी। खानखानाने उसे ५ सेर सोना दिला दिया। किसीने कहा कि इसने तो मर्दन मारनेका काम किया था और आपने ५ सेर सोना दिया यह भी खूब हुआ। खानखानाने कहा कि इसने हमको पारस समझ कर ऐसा किया था।

५। बूंदी राज्यके इतिहास वंश भास्करमें (१) लिखा है कि जब बूंदीके महाराव राजा भोज अकबर बादशाहके दरबारमें रहतेथे तब बादशाहका वजीर नवाब खानखाना था। वह बड़ा गुणवान था। संस्कृत आदि भाषाओंको जानता था। बड़ा पण्डित और पण्डितोंका कदरदान था। अवगुण किसीके नहीं देखता था; सबके दुःखोंमें पड़ जाता था। एक दिन एक दुर्बल ब्राह्मण भूखा प्यासा पड़ा हुआ मुसलमानोंको कोस रहा था। खानखानाने उसकी हीन दशा पर तरस खाकर कहा कि तुमको खाना पीना बहुत मिल जावेगा तुम हम लोगोंपर दया रखो। ब्राह्मणने प्रसन्न होकर अपनी पागड़ी नवाबके पास फेंक दी और कहा कि मैं तुम्हारी बातोंसे सन्तुष्ट हुआ हूं; परन्तु इस पगड़ीसे अधिक देनेको मेरे पास कुछ नहीं है; क्योंकि हमारे शास्त्रका हुक्म है कि आदमी जिसकी बातोंसे प्रसन्न होवे उसको कुछ देवे।

१। यह षट भाषाका महत् काव्य बूंदीके महाराव राजा श्रीरामसिंहजीकी आज्ञासे उनके आश्रित मिश्रण गोतके चारण कवि सूर्यमलका बनाया हुआ है जो बारहट किशनसिंहजीकी टीका सहित छप चुका है।

वह पगड़ी सारी छेद छेद हो रही थी और रंगकी बदली उसके ऊपर मैल ही मैल चढ़ा हुआ था। तो भी नवाबने अपने सिरसे बांध ली और उसको बहुत सा रुपया आपने भी दिया और अपने अमीरोंसे भी दिलाया।

जैसा अच्छा बादशाह अकबर था वैसा ही अच्छा उसका यह वजीर भी था। इसके बराबर धर्म्मात्मा हिन्दू मुसलमानोंमें कोई न था। बहुत ही सुशील और लज्जावान था। एक साहूकारकी स्त्री इसको देखकर मोहित हो गयी थी। एक दिन उसने बुलाया तो यह गया और पूछा कि क्यों नेकबख्त! मुझे क्यों याद किया। स्त्रीने शरमाकर कहा कि मैं तुमसे तुम्हारे जैसा बेटा मांगती हूं। नवाबने कहा कि नेकबख्त सुन! बेटा देना मेरे अखतियारमें नहीं है और जो ऐसा हो भी तो क्या मालूम कि वह मुझसा हो या न हो और तेरी टहल करे या न करे और तुझको मुझ जैसा बेटा चाहिये सो मैंही तेरा बेटा होता हूं। आजसे तू मेरी मा और मैं तेरा बेटा हूं। जो तू कहेगी सो ही करूंगा। यह कहकर उसकी गोदमें सिर रख दिया जिससे उसको भी लज्जा आगयी और वह अपने खोटे मन्तव्यसे बहुत पछतायी।

ऐसी बात न किसी योगीसे हो सकती है न यतिसे जो नवाब खानखानाने उस स्त्रीसे की थी;—

इस नवाबने कवि गंगके कवित्तोंसे प्रसन्न होकर ३०००००) तीस लाख रुपये (१) उसको दिये थे।

६। मआसिर उलउमरामें जो यह बात लिखी है कि खानखाना हरेक भाषामें भाषण कर सकते थे इसका कुछ पता मेवाड़ और मारवाड़में भी मिलता है। वहां मरू भाषाका

१। खूब चन्द कविने खानखानाका गंगको एक छप्पयके ऊपर ३७ लाख देना इस कवित्तमें कहा है।

मान दसलाख दयी दोहा हरनाथके पें।
लाख हरनाथ दे करह कवि पैऐ की।

चारण आढ़ा नामक हुआ। उसने एक बेर ये ४ चार दोहे खान-खानाकी प्रशंसाके बनाकर सुनाये थे ;—

१। खानखाना नवाब री। मोहि अचम्भो एह ॥
माया किम गिरि मेरु मन। साढ तिहत्थी देह ॥१॥
२। खानखाना नवाब रे। खांड़े आग खिवन्त ॥
जल वाला नर प्रजले। तृण वाला जीवन्त ॥२॥
३। खानखाना नवाब री। अदमगीरी धन्न ॥
मह ठकुराई मेर गिर। मनी न राई मन्न ॥३॥
४। खानखाना नवाबरा। अड़िया भुज ब्रह्मण्ड ॥
पूठे तो है चण्डिपुर। धार तले नव खण्ड ॥४॥ †

बीरबल दे छ और केशवके कवित पर।
सिवा हाथी बावन दे भूषन बिन लेहैं को ॥
छप्पै पै सताई लाख गंग खानखानो दिये।
यातें धन दान दूनूई डरमें चैहै को ॥
श्री गम्भीर सिंह छन्द खूब चन्दके ये रीझि।
बहामें दगा दई दई न फेर देहै को ॥१॥

† इन चार दोहोंका अर्थ यह है।

१। मुझे यही अचम्भा है कि खानखानाका मेरु पर्वत जैसे मन ३॥ हाथकी देहिमें कैसे समा गया है ॥ १ ॥

२। खानखाना नवाबकी तलवारसे आग झड़ती है। परन्तु उसमें जलवाले नर अर्थात् पराक्रमवाले तो जल मरते हैं और जो तिनके मुहमें ले लेते हैं वे जी जाते हैं ॥ २ ॥

३। खानखाना नवाबकी भलमनसी धन्य है कि मेरु गिरि जैसी बड़ी ठकुराईके बराबर भी उन्होंने अपने मनमें नहीं मानी ॥ ३ ॥

४। खानखाना नवाबके भुज ब्रह्माण्डमें अड़े हुए है। चण्डीपुर अर्थात् दिल्ली तो उसकी पीठपर है और ९ खण्ड तलवारकी धारके नीचे हैं ॥ ४ ॥

इस कविका नाम तो रामदास था; परन्तु मोटा बहुत था। इस लिये लोग जाड़ा जाड़ा कहते थे। सो खानखानाने भी उसको देखकर यह दोहा कहा:—

धर जड्डी अम्बर जड़ा। जड्डा महडू जोय॥
जड्डा नाम अलाहदा। और न जड्डा कोय॥ १॥

और प्रति दोहा १ लाख रुपया देना चाहा। परन्तु जाड़ा महडूने रुपये तो नहीं लिये। महाराणा उदयसिंह जीके कुंवर और महाराणा प्रताप सिंहके भाई सीसोदिया जगमालजीको बादशाहसे जागीर दिलानेके लिये कहा जो अपने भाईसे रूठकर चले आये थे और जाड़ा जिनका वकील बनकर खानखानासे मिला था।

खानखानाने बादशाहसे अर्ज करके जगमालजीको जहाजपुरका परगना दिला दिया जो मेवाड़का ही था; परन्तु बादशाहने ले लिया था।

"मआसिर रहीमी।"

सुना है कि खानखानाके चरित्रोंका एक ग्रन्थ फारसीमें बना हुआ है जिसका नाम मआसिर रहीमी है। परन्तु वह अबतक हमारे देखनेमें नहीं आया है। यह जो जीवनचरित्र उनका हमने लिखा है वह उन पुस्तकोंसे लिखा है जो हमारे पुस्तकालयमें हैं।

खानखानाकी संस्कृत कविता

हम ऊपर यह लिख आये हैं कि खानखाना हिन्दी और संस्कृत भाषामें भी काव्य रचना करते थे सो इस बातको दोनों भाषाओंके पण्डित लोग भी स्वीकार करते हैं और उनके बनाये हुए बहुतसे श्लोक और कवित्त हिन्दुओंमें प्रसिद्ध हैं मुसलमानोंसे ज्यादा हिन्दुओंकी सुसभ्य सभाओंमें उनका नाम लिया जाता है। रहीम काव्य नामक एक संस्कृत ग्रन्थ भी उनका बनाया हुआ सुना गया है।

हम यहां पहिले उनकी कुछ संस्कृत कविता लिखते हैं फिर भाषाकी लिखेंगे।

श्लोक।

आनीता नटवन्मया तव पुरः श्रीकृष्णया भूमिका।
व्योमाकाश खखां बराब्धि वसुवसत्वत्प्रीतये द्यावधि॥
प्रीतसत्वं यदिचेन्निरीच्य भगवत् स्व प्रार्थितं देहिमे।
नोचेद्ब्रूहि कदापि मानय पुनस्त्वेता दृशीं भूमिकां॥

॥ अर्थ—कबित छप्पय॥

रिझवन हित श्रीकृष्ण, स्वांग मैं बहुबिधि लायौ॥
पुर तुम्हार है अवन अवनि, अहंबहु रूप कहायौ॥
गगन खेत खख व्योम, बेद बसु स्वांग दिखाये।
अन्त रूप यह मनुष, रीझके हेत बनाये॥
जो रीझे तो दीजिये, ललित रीझ जो चाय।
नाराज भये तो हुकम करु, रे स्वांग फेर मति लाय॥१॥

श्लोक।

रत्ना करोस्ति सदनं गृहिणीच पद्मा।
किं देय मस्ति भवते जगदीश्वराय॥
राधा गृहीत मनसे ऽमनसे चतुभ्यं।
दत्तं मया निज मनस्तदिदं गृहाण॥२॥

अर्थ।

रत्नाकर समुद्र तो आपका घर ही है और जो लक्ष्मी हैं वह आपकी पत्नी हैं। फिर हे जगदीश्वर! मैं क्या आपको दूं। हां आप अमन है आपका मन राधाने ले लिया है। इसलिये मैं अपना मन आपको देता हूं उसे ग्रहण कीजिये—

श्लोक।

अहल्या पाषाणः प्रकृति पशुरासीत्कपि चमू।
गुहो भूच्चांडाल स्त्रितय मपि नीतं निज पदम्॥

अहं चित्तेनाश्मः पशुरपि तवार्चादि करणे।
क्रियाभिश्चाण्डालो रघुवर! नमामुद्धरसि किं॥३॥

इसका अर्थ यथा सवैया।

गौतम नारि पाषाण रही, पशु जाति रह्यो कपि पुंज विचारो॥
पापी बड़ोहि निषाद हुतो, परतंप प्रभो तिन इनको तारो॥
मैं हूं सबै विधि चित्तमें पत्थर, पूजनमें पशु कर्म्म हत्यारो॥
होय निकामनके सुख धाम हो, रामजी! काहेन मोहि उद्धारो॥१

श्लोक।

यद्या त्वया व्यापकता हृताते।
भिदैकता वाक्परता च स्तुत्या॥
ध्यानेन बुद्धेः परता परेश।
जात्या जताच न्तु मिहार्हसित्वं॥४॥

अर्थ।

मैंने जाचासे तेरी व्यापकता मिटायी है। भेद करनेसे तेरी एकता और अस्तुति करनेसे तेरी बाक्परता हरी है ध्यान करनेसे तेरी बुद्धिके परे होना मिटाया है। तो भी मैंने तेरी जाति ठहराकर अजाति पना दूर किया है सो तूं मेरे इन अपराधोंको चमाकर॥ ४॥ पण्डित जगन्नाथ त्रिशूलोने एक दिन यह श्लोक खानखानाको सुनाया।

श्लोक।

प्राप्यचला नधिकारान् शत्रुषु मित्रेषु बन्धुवर्गेषु।
नापकृतं नोपकृतं न सत्कृतं किं कृतं तेन॥५॥

जिसने राजाका अधिकार पाकर शत्रुओंका अपकार मित्रों और बन्धुओंका उपकार नहीं किया तो उसने क्या किया।

खानखानाने हंसकर इसके उत्तरमें यह श्लोक कहा।

श्लोक।

प्राप्यचला नधिकारान्।
शत्रुषु मित्रेषु बन्धुवर्गेषु॥

नोपकृतं नोपकृतं ।

नोपकृतं किं कृतं तेन ॥

जिसने राज्यका अधिकार पाकर शत्रुओं मित्रों और बंधुओंका उपकार नहीं किया तो उसने क्या किया।

श्लोक।

दृष्टात्तत्र विचित्रतां तरुलतां, मैं था गया बागमें।
काचित्तत्र कुरङ्ग शाव नयना, गुल् तोड़ती थी खड़ी ॥
उन्मद्भ्रू धनुषा कटाक्ष विशिखै:, घायल किया था मुझे।
तत्सीदामि सदैवमोह जलधौ, हेदिल गुजारो शुकर ॥६॥

अर्थ।

विचित्र तरु लता देखनेको बागमें मैं गया। कोई वहां बाल कुरङ्ग जैसी आंखोंवाली खड़ी गुल तोड़ती थी—

उसने भंवोंकी कमान उठाकर कटाक्षके बानोंसे मुझे घायल किया—

तबसे मैं मोहके समुद्रमें सदाके लिये डूब गया। हे दिल! गुजारो शुकर ॥७॥

पुनः श्लोक।

एकस्मिन्दिवसे वसान समये, मैं था गया बागमें।
काचित्तत्र कुरङ्गबाल नयना, गुल् तोड़ती थी खड़ी ॥
तांदृष्ट्वा नवयौवनां शशि मुखी, मैं मोहमें जा पड़ा।
नो जीवामि त्वया बिना शृणुसखे, तू यार कैसे मिले ॥८॥

अर्थ।

एक दिन सन्ध्या कालमें, मैं बागमें गया था वहां कोई हरनके बच्चे कीसी नेत्रोंवाली खड़ी गुल तोड़ती थी—

उस नवयौवनवती चन्द्रमुखीको देखकर मैं मोहमें जापड़ा मैं तेरे बिना नहीं जियूंगा हे? सखी तूं यार कैसे मिले ॥८॥

श्लोक गङ्गाजीसे प्रार्थना ।

अच्युत चरण तरङ्गिणी ! शशिशेखर मौलिमालती माले ?
ममतनु वितरण समये हरता देया न मेहरिता ॥८॥

भावार्थ ।

विष्णु बनाओगी तो मुझे कृतघ्नताका दोष होगा। क्योंकि तुम उनके चरणसे निकली हो अतएव शिव बनाना जिसमें तुम्हें सिरपर धारण करूं ॥८॥

खानखानाकी भाषा कविता ।

खानखानाकी भाषा कविता कि जिसमें भी रहीमकी छाप है बहुत रसीली और चटकीली है। हमको अपने पुस्तकालयमें इनके २७ दोहे नाना साहिब हकीम शङ्करलालजीके लिखे मिले सो यहां लिखे जाते हैं।

दोहा ।

तैं रहीम मन आपनों कीनों चन्द चकोर ।
निसवासुर लागो रहै कृष्ण चन्द्रकी ओर ॥१॥
मुकता करत कपूर कर चातकतृष हर होय ।
ये तो बड़ो रहीम जल (१) कुथल परे विष होय ॥२॥
सर सूखे पंछी उड़े जिन सर जल अधिकाय ।
मीन दीन बिन पङ्कके कहु रहीम कित जाय ॥३॥
बड़े पेटके भरन कूं कह रहीम दुख बाढ़ ।
तातै हाथी हहरकै रह्यो दांत दोय काढ़ ॥४॥
थोरे करे बड़ेनकूं बड़े बड़ाई होय ।
त्यों रहीम हनवन्त सों गिरधर कहै न कोय ॥५॥
ससिके सुख दजु चांदनो सुन्दर सभी सुहात ।
लगै चोर चित चौगुनो कसत रहीमन धात ॥६॥

---

(१) पाठान्तर व्याल बदन बिष होय ।

ज्यों रहीम सुख होत है बढ़े आपने गोत।
त्यों बिडरी अंखियां लखैं आंखनको सुख होत ॥७॥
बड़न जो कोऊ घट कहै तिन रहीम घट जान।
गिरधर मुरलीधर कहत मन दुख कछू न मान ॥८॥

इसी भावका यह दोहा सूरदासजीका भी है।

सपि गयो मुक्ता भयो कदली भयो कपूर।
अहि फण गयो तो बिष भयो सङ्गतको फल सूर ॥१॥
ससि सुकेस साहस सलिल मान सनेह रहीम।
बढ़े बढ़े बढ़ जात हैं घटे घटे निहसीम ॥९॥
यह रहीम सत सङ्गतें जगमत नाहीं कोय।
बैर प्रीत अभ्यास जस होत होत ही होय ॥१०॥
भज कर क्रिया रहीम सुख सिद्धि भावके हाथ।
पासे अपने हाथ हैं दाव न अपने हाथ ॥११॥
जे रहीम बढ़ बढ़ गये घटको डारत काढ।
चन्द दूबरो कूबरो लऊ नखत तैं बाढ ॥१२॥
दीनन पै जे हित करें धन रहीम ते लोग।
कहां सुदामा बापरो कृष्ण मिलता जोग ॥१३॥
प्रीतम छबि नैनन बसी पर छबि दृग न समाय।
भरी सराय रहीम लखि ज्यों पंथी फिर जाय ॥१४॥
नेह लगाय रहीम प्रभु कर देखो जो कोय।
नरको बस करबो कहा नारायन बस होय ॥१५॥
दुर दिन परे रहीम प्रभु सभी लिये पहचान।
सोच नहीं धन हान को होत बड़न हित हान ॥१६॥
यह न रहीम सराहिये देन लेनको प्रीत।
प्रानन पाछे राखिये हार होयके जीत ॥१७॥
रहिमन कहत जो पेट सों क्यों न भयो तू पीठ।
भूखे मान घटाय दे भरे दिखावे दीठ ॥१८॥
मनसे नहीं रहीम प्रभु दिलसे नाहि दिवान।

देख दृगन जो आदरे मन तिह हाथ बिकान ॥१९॥
जिन रहीम तन मन लियो कियो हिये बिच भौन ।
तासों दुख सुखकी कथा रही कहनकी कौन ॥२०॥
धूरसु डारत सीस पर कह रहीम किह काज ।
जिन रज रिष पतनी तरी सो ढूंढ़त गजराज ॥२१॥
जो रहीम भावी कहूं होती अपने हाथ ।
राम न जाते हिरन संग सीता रावण साथ ॥२२॥
सम्पत सम्पतवान कू सब कोई सब देय ।
दीनबन्धु बिन दीनको को रहीम सुध लेय ॥२३॥
हित अनहित सब कोउ लहै कै सलाम कै राम ।
हित रहीम तब जानिये जादिन आवे काम ॥२४॥
कह रहीम या जगत तें प्रीत गयी दे टेर ।
कहूं रहीम नर नीचमें स्वारथ स्वारथ हेर ॥२५॥
ज्यों रहीम लघु दीप तें प्रकट सबै निध होय ।
मन सनेह कैसे दुरे दृग दीपक जहां दोय ॥२६॥
रहमन अंसुवा बाहुरे बिथा जनावत येह ।
जाको घरते काढ़िये क्यों न भेद कह देह ॥२७॥

कवित्त ।

सुनिये विटप प्रभु दुमप हैं तिहारे हम । राखिहौ हमेंतो सोभा रावरी बड़ाये हैं, त्याग हो हमें तो यामें हखंना विषाद कछु । जहां जहां जायें तहां दूनो छवि छाय हैं ; सुरन चढ़ेंगे नरनाथ न चढ़ेंगे सीस । सुकवि रहीम हाथ हाथ न बिकाय हैं देसमें रहेंगे परदेशमें रहेंगे काहु भेसमें रहेंगे तऊ रावरे कहाय हैं ।१।

रहीम सतक ।

खानखानाके भाषा ग्रन्थोंमेंसे अभीतक यही रहीमशतक प्रसिद्ध हुआ है। इसकी २ प्रतियां हमारे देखनेमें आई हैं।पहला एक तो हमारे मित्र पण्डित सूर्य्यनारायण शर्माने जो नागरी साहित्य

प्रचारणी सभा (सदरबाजार) जबलपुरके मन्त्री हैं। बम्बईके सुविख्यात प्रेस श्रीवेङ्कटेश्वरमें छपाई है इसमें १२५ दोहे हैं।

दूसरी प्रति जोधपुरमें रामस्नेही साधु भारत रामजीके पास है इसमें १०५ ही दोहे हैं।

खानखानाका उत्तर राना अमरसिंहको।

खानखाना जैसे पण्डितोंके श्लोकोंका उत्तर श्लोकोंमें देते थे वैसाही नियम उनका भाषा कवितामें भी था। उदयपुरके महाराणा अमरसिंहजी जब जहांगीर बादशाहकी फौजके दबावसे जङ्गलोंमें फिरते फिरते थक गये थे। तब उन्होंने यह दो दोहे कहकर खानाखानाको भेजे थे:—

हाड़ा कूरम राव बड़ गोखां जोख करन्त।
कहियो खानाखानने बनचर हुआ फिरन्त ॥१॥

तुवरांसूं दिल्ली गई राठोड़ां कनवज्ज।
राण (१) पयंपे खानने वह दिन दीसे अज्ज ॥२॥

खानखानाने इसके उत्तरमें यह सन्तोषदायक दोहा रानाजीको लिखा था।

(२) धर रहसी रहसी धरम खपजासी खुरसांण।
अमर विश्वम्भर ऊपरें राखो नहचो राण ॥१॥

१। पयंपे—कहे—

२। इस दोहेकी भविष्यवाणी पर उस दिन तो शायद किसीको ही विश्वास हुआ हो तो हुआ हो। परन्तु उसका फल आज तो प्रत्यक्ष ही देखनेमें आता है। क्योंकि उदयपुरके रानाओंका देश और धर्म जो उस समय था। आज भी बना हुआ है और खुरसाण अर्थात् मुगल जो उनको दुख देते थे कभीके खप गये हैं। हिन्दी और विशेष करके राजपूतानेकी भाषा कवितामें खुरसाण शब्द मुसलमानोंके वास्ते आता है। जैसे संस्कृतमें

रहीमके कुछ और दोहे (१) भडौआ संग्रहके चौथे खण्डसे उद्धृत—

जो रहीम छोटे बढ़ैं बढ़त करत उतपात।
प्यादेसों फरजी भयो तिरछो तिरछो जात।१।

धनदारा अरु सुतनमें रहत लगाये चित्त।
क्यों रहीम खोजत नहीं गाढे दिनको मित्त।२।

गहि सरनागत रामको भवसागरको नाव।
रहि मन जगत उधारको औरन कछु उपाव।३।

छमा बड़नको उचित है छोटनको उतपात।
कह रहीम प्रभुका घट्यो जो भृगुमारी लात।४।

कहि रहीम नहिं लेत है रह्यो विषय लपटाय।
घास चरै पसु आपतें गुरलों लाये खाय।५।

गति रहीम बड़ नरन की ज्यों तुरङ्ग व्यवहार।
दाग दिखावत आपने सही होत असवार।६।

अब रहीम चुप ह्वै रहो समझि दिननको फेर।
जब दिन नीके आय हैं बनतन लागि देर।७।

यों रहीम तन हाटमें मनुआं गयो बिकाय।
ज्यों जलमें छाया परे काया भीतर नाय।८।

यवन, सबसे पहले यूनानी भारतमें आये थे तो यहां उनको यमन कहते थे फिर अरब लोग भी उधरसे ही अर्थात् पश्चिम समुद्रके तटसे आये तो वे भी यमन ही समझे गये। फिर तुर्क महमूद गजनवी वगैरा खुरासानकी तर्फसे आये तो उस समय मुसलमानोंका नाम खुरसाण और खुरसाणी हो गया। तुर्क और मुगल शब्द पीछे चला है परन्तु कविलोग तीनों शब्दोंमें जो कवितामें आजावे वही ले आते हैं।

१। यह ग्रन्थ हमारे मित्र डुमरांव निवासी नकछेदी तिवारी जीका बनाया हुआ है।

उगत जाही किरण सों अथवत ताही कांति।
त्यों रहीम दुख सुख सबै बढ़त एकही भांति ॥९॥
छोटे काम बड़े करैं तौ न बड़ाई होय।
ज्यों रहीम हनुमन्तको गिरधर कहैं न कोय॥१०॥
अनुचित उचित रहीम लघु करहिं बड़नके जोर।
ज्यों ससिके संजोग तैं पचवत आगि चकोर॥११॥
मांगे घटत रहीम पद कितौ करो बढ़ि काम।
तीन पैर बसुधा करी तऊ बावनै नाम॥१२॥
रहिमन अब वे बिरछ कहं जिनकी छांह गम्भीर।
बागन बिच बिच देखियत सेंहुड़ कुढज करीर॥१३॥
होय न जाकी छांह ढिग फल रहीम अति दूर।
बाढ्यो सो बिन काज हीं जैसे तार खजूर॥१४॥
नाद रीझ तन देत मृग नर धन हेत समेत।
ते रहीम पसुतें अधिक रीझे कछू न देत॥१५॥
जाल परे जल जात बहि तज मीननको मोह।
रहिमन मछरी नीरको तऊ न छांड़ति छोह॥१६॥
रहिमन पानी राखिये बिन पानी सब सून।
पानी गये न ऊबरे मोती मानुष चून॥१७॥
बड़े बड़ाई ना तजैं लघु रहीम इत राइ।
राइ करौंदा होत हैं कटहर होत न राइ॥१७॥
करत निपुनई गुन बिना रहिमन निपुन हजूर।
मानों टेरत बिटप चढ़ि इहि प्रकार हम क्रूर॥१८॥

खानखानाकी इमारतें।

मारवाड़ी कहावत है कि "गीतड़ां नाम कैं भींतड़ां नाम" अर्थात् मनुष्यका नाम यातो गीतों (कविताओं)में रहता है या भीतों (इमारतों)में रहता है सो खानखानाका नाम दोनोंमें ही रहा है। खानखानाकी बनाई कविता तो हम कुछ लिख ही चुके हैं और कुछ दूसरे कवियोंकी आगे लिखेंगे जिससे खान-

खानाका नाम अमर हो गया है यहां तो उनकी बनाई हुई इमारतोंका हाल लिखते हैं।

खानखाना जहां २ रहे वहां उन्होंने बड़ी २ हवेलियां बनायी थीं, बाग लगाये थे, महल भुकाये थे, परन्तु बहुत वर्ष व्यतीत हो जानेसे अब उन सबका पूरा २ पता नहीं लगता।

हमने इस विषयकी भी बहुत खोजना की है और जो थोड़ा सा हाल सुना है या तवारीखकी पुस्तकोंमें लिखा मिला है वह यहां लिखे देते हैं।

खानखानाकी हवेली।

खानखानाने अपने रहनेके वास्ते १ बड़ी हवेली आगरेमें बनायी थी। जिसमें एक सुन्दर और सुडौल सिंहासन भी निर्माण कराया था उस पर चांदी और सोनेकी चोबों पर जरीका सामियाना खिंचा रहता था जिसमें मोतियोंकी झालरें झिल-मिलाया करती थीं। उसके नीचे बढ़िया गलीचे और कालीन बिछे रहते थे। किसीने चुगली खायी कि खानखाना तो बाद-शाहोंकी भांति तख़त पर बैठता हैं और चंवर कराता है; बादशाहने पूछा कि यह सच है? उसने अर्ज की कि उसकी हवेलीमें तखत चंवर और छत्र मौजूद ही हैं इसके सिवाय और क्या प्रत्यक्ष प्रमाण होगा।

एक दिन बादशाह खानखानाकी हवेली पधारे देखते २ वहां भी पहुंचे कि जहां यह राज्य चिह्न धरे थे। बादशाहने चुगलखोरका यह कहना सच मान कर पूछा कि मिरजा ये चीजें यहां क्यों हैं? उन्होंने अर्ज की कि जहांपनाहके लिये हैं विराजिये जो यह न होतीं तो आज मुझे लज्जित होना पड़ता।

बादशाह प्रसन्न होगये और खानखानाकी बुद्धिकी बहुत प्रशंसा की। चुगलखोर अपना सा मुंह लेकर रह गया।

फतह बाग।

अहमदाबादसे ३ कोस सरखेच गांवकी सीमामें साबरमतीके तटपर जहां खानखानाने सुलतान मुजफ्फर गुजरातीको जीता था वहां एक सुरम्य बाग लगाया जो गुजरातमें उस समयके सब बागोंसे अच्छा था। और पीछे भी बहुत वर्षों तक उसको शोभा वैसी ही बनी रही थी २५ वर्ष पश्चात् सन् १६१७ में जहांगीर बादशाहने इस बागको देखा था। और जो हाल उसका अपनी तुजुकमें लिखा वह हमल यहां उद्धृत करते हैं।

गुरुवार ६ बहमनको मैं फतह बाग देखने गया जो एक सुन्दर स्थानमें लगा है १५०००) रुपये रस्तेमें लुटाये।

यह बाग जिस जगह है वहां सिपहसालार खानखाना अत्तालीकने मुजफ्फरको लड़ाईमें हराकर फतह पायी थी। इस लिये इसका नाम फतह बाग रक्खा। गुजरातके लोग इसे फतह बाड़ी कहते हैं।

मेरे बापने इस फतहके पारितोषिकमें पांच हजारी मनसब खानखानाका खिताब और गुजरातका सूबा मिरजाखांको (१) दिया था।

खानखानाने जो बाग लड़ाईकी जगह बनाया वह साबरमतीके किनारे पर है और उसके योग्य एक विशाल भवन भी चबूतरे सहित जो नदीके ऊपर है निर्माण किया है। बागका कोट चूने और पत्थरोंका बहुत मजबूत बना है। यह बाग १२० जरीबमें अच्छी सुहावनी जगह पर है। २ लाख रुपये इसमें लगे होंगे मेरा तो बहुत दिल लगा। यह कह सकते हैं कि सारी गुजरातमें इस जैसा दूसरा बाग न होगा। मैंने गुरुवारका उत्सव वहीं करके निज सेवकोंको प्याले दिये और रात वहां रह

१। मिरजाखां भी खानखानाका नाम था—

कर शुक्रवारको पिछले दिनसे शहरमें आया १०००) रुपये रस्ते में निछावर किये।

इस समय बागवानने पुकार की कि चम्पाके कई वृक्ष जो चबूतरे पर थे मुकर्रबखांके नौकरने काट लिये हैं यह सुनकर मेरा चित्त उदास हो गया और खुद निर्णय किया। जब निश्चय हो गया कि यह कुकर्म उसने किया है तो हुक्म दिया कि उसके दोनों अंगूठे काट डालेजावें। जिससे दूसरों को भय हो जावे (१) मुकर्रबखांको इस बातकी खबर न हुई नहीं तो वह तुरन्त डन्ड दे देता।

दूसरे गुरवारको बादशाह फिर इस बागमें आये जिसका हाल यों लिखते हैं कि गुरवार २२ को फतह बागमें जाकर गुलाब वाड़ी देखी गयी। एक क्यारी तो बहुत ही खूब खिली हुई थी। इस देशमें गुलाब बहुत कम होता है। एक जगह इतना होना गनीम तथा गुल लाला भी बुरा न था। अंजीर पके हुए भी थे कई अंजीर मैंने अपने हाथसे तोड़े जो सबसे बड़े थे उनमेंसे एकको तोला तो ७॥ तोलेका हुआ। ४ दिन भोग विलासमें व्यतीत करके सोमवार २३ वीं को रातको इस बागसे शहरमें आया।

तीसरे गुरुवार २४ वीं अमरदादको फिर बादशाह फतहबागमें गये २ दिन तक वहां मौज उड़ाते रहे शनिवारको पिछले दिनसे दौलतखानेमें पधारे।

उस समयसे १५० वर्ष पीछे गुजरातकी तवारीख (२) मिरआत अहमदी बनी है उसमें फतहबागका यह हाल लिखा है। कि अब कुछ मकान और कोट तो बना हुआ है खेती होती है बागपना जाता रहा। इति।

१। मुकर्रबखां उस समय गुजरातका सूबेदार था—

२। यह गुजरातकी बहुत अच्छी तवारीख सन् ११७० में बनी है।

अब फतेबाड़ीका यह हाल है कि सानन्द नाम एक छोटेसे रजवाड़ेकी सीमामें आयी हुई है। सानन्द अहमदाबादसे ७।८ कोस है फतहबाड़ी अहमदाबादसे ४ कोस और सरखेजसे ३ कोस दक्खन पच्छमके कोनेमें है। बाग और बगीचेका तो कुछ पता नहीं है कोट कुछ बाकी रह गया है जो आदमीके बराबर ऊंचा है। इसमें कोलीभील और रैवारियोंके घर हैं। और वही लोग यहां रहते हैं। नदीके ऊपर जो महल थे वे भी गिरा दिये गये हैं क्योंकि कोलीभील और रैवारी चोरी धाड़ा करके उन महलोंमें छिप जाते थे और चोरी धाड़ेका माल हम्मामोंमें छिपा देते थे। हम्माम सात थे उनके भीतर भी महल और मकान बने हुए थे जिनमें अब चमचेड़ें बहुत भरी रहती हैं।

कोलीभील और रैवारी जो फतहबाड़ीमें रहते हैं किसीको अन्दर नहीं आने देते हैं; क्योंकि उनको यह भय बना रहता है कि कोई उनके चोरी धाड़ेका भेद लगानेको न आया हो।

फतहबाड़ीमें अब कोई चीज देखनेके लायक नहीं है। नाम मात्र रह गयी है। कहते हैं कि फतहबाड़ीके हम्मामोंसे अहमदाबादके किले तक जिसको भद्र कहते हैं जमीनके अन्दर हो अन्दर रस्ता था पर अब उसका भी कुछ पता नहीं है।

शाहबाड़ी।

फतहबाड़ीसे १ कोस शाहबाड़ी थी वहां भी अच्छे २ महल बने थे जिनका अब कुछ निशान रह गया है। शाहबाड़ी अहमदाबादकी अंग्रेजी अमलदारीमें अहमदाबादसे ३ कोस पर है उसमें अबरेवोन्यू कमिश्नर रहता (१) है।

अलवरमें तिरपोलीया।

खानखानाने कुछ इमारतें अलवरमें भी बनाई थीं जहां

१। फतहबाड़ीकी वर्तमान दशाका हाल जो ऊपर आया है अहमदाबादसे पुरोहित पूनमचन्दजीने कृपा करके इस पुस्तकके वास्ते लिख भेजा था।

उनका नाना जमालखां मेवाती रहता था; अब उन इमारतोंमेंसे तिरपोलिया बहुत मशहूर है यह एक आलीशान मकबरा (कब्रस्थान) था। इसके ३ तरफ ३ बड़ी बड़ी खुली हुई पोलें थीं। चौथी तरफकी पोल बन्द थी इसीसे तिरपोलिया कहलाता है। ऊपर बदावका बड़ा गुम्बद है। कहते हैं कि इतना बड़ा गुम्बद बदावका कहीं देखनेमें नहीं आता। शायद यह खानखानाकी माकी कबर पर बनाया गया हो। अब तो इसमें कोई कबर नहीं है। चारो दरवाजे खुले हुए हैं और चारों तरफ चोपड़का बाजार बना हुआ है। जिसमें रात दिन सेकड़ों हाथी घोड़े बग्घी रथ तिरपोलियेमें होकर आते जाते (१) हैं।

यह तिरपोलीया अब भी खानखानाका कहलाता है। इसके बाबत एक राजीनामेका फोटू तीवारी नकछेदीजीने मेरे पास भेजा है। उससे मालूम होता है कि २०० वर्ष पहिले औरङ्गजेब बादशाहके राजमें यह तिरपोलीया खानखानाकी जायदादकी मालकनी नजीबुलनिसा बेगमके कबजेमें था और उसकी एक पोल और पोलके आगेकी जमीन यारमोहम्मद नामके एक सय्यदने दबा ली थी। उसीके बाबत यह राजीनामा हुआ था। हम इस राजीनामेका कुछ सारांश यहां इस अभिप्रायसे लिखते हैं कि जिजसेपाठकोंको उस समयकी अदालती काररवाईका हाल भी मालूम हो जावे।

राजीनामेका सारांश।

हम रफीक और आलम जो खानखानाका (२) मरहूमके विरसेकी (३) मालकिनी नबीबुल निसा बेगमकी सरकारके वकील हैं। इस बातका सही इकरार करते हैं कि खानखानाका मरहूमका तिरपोलीया जो कसबेअलवरके बाजारमें चोरस्ते पर बना है उसका

१। यह वृत्तान्त अलवर निवासी मित्रवर मु० रघुबरदयालजी इनसपेक्टरके पत्रसे लिया गया है जो उन्होंने मेरे पूछने पर कृपा करके लिखा था। २। मरे हुए। ३। सम्पत्ति।

एक बन्द दरवाजा सैय्यद कमाल मोहम्मदके पोते सैयद मुजफ्फरके बेटे सैयद यार मोहम्मद (१) मिलकीकी हवेलीके पास था। उस दरवाजे और उसके आगेकी जमीन पर सैयद यार मोहम्मदने कबजा कर लिया था। हमने इस प्रसङ्गसे कि तिरपोलीया खानखाना मरहूमकी इमारतोंमेंसे है। खानखानाकी (२) वारिसानी नजीबुल-निसा बेगमकी तरफसे (३) वकालतन दरवाजे और आगेकी जमीनकी बाबत खानवाला शान सैयद वजीउद्दीनखां फोजदार चकले मेवातके नायब सैयद शाह मोहम्मदके हजूरमें दावा किया तो सैयद यार मोहम्मदने वह दरवाजा और ३६ गज जमीन जो दरवाजेके पास थी अपने कबजेसे निकाल कर छोड़ दी। अब फिर हमको सैयदयार मोहम्मदकी हवेलीमें कुछ दावा नहीं रहा है। हम उससे राजी हैं। इस वास्ते यह राजीनामा लिख दिया है सो काम पड़ने पर सनद होवे। १० शवाल सन् (४) ४७ जलूस मेमन तमानूस मुताबिक सन् १११४ हिजरी नीचे ऊपर और हाशिये पर मोहरें और दसखत गवाहोंके हैं। (५) दसखत हिन्दीमें भी हैं। मगर हिन्दी हर्फ ऐसे अशुद्ध बिना लगमातके लिखे हैं कि कुछ समझनेमें नहीं आता है कि इनका क्या मतलब है।

रफीक और आलमखांके हाथकी कटारी बनी हुई है। इससे मालूम होता है कि वे लिखे पढ़े नहीं थे।

खानखानाका भी मकबरा अलवरमें है। मगर अधूरा कबर अन्दर मौजूद हैं उनकी मांके बनाये हुए तालाब और मकबरे भी वहां हैं।

खानखानाका मकबरा दिल्लीमें।

खानखानाका मकबरा (समाधि स्थान) कि जहां उनको

१। जागीरदार। २। मालिकनी। ३। वकीलकी तौर पर।
४। यह वर्ष औरङ्गजेब बादशाहके जलूसके हैं।
५। मुबारकीसे मिला हुआ।

गाड़ा था पुरानी दिल्लीमें खण्डहर पड़ा है। जिसके देखनेसे बहुत अफसोस होता है कि जो मनुष्य उम्रभर लोगोंसे भलाई करता रहा था। लोग उसकी कबरके पत्थर तक खोदले गये किसीने सच कहा है कि "सब दातारके होलागू होते हैं"।

किताब (१) आसार उलसन दीदमें जो सन् १८६३ संवत् १९०३ में बनी है। इस मकबरेका यह हाल लिखा है।

यह मकबरा शाह जहानाबादसे ४ मील निजामुद्दीन औलियाकी दरगाह और बारेपुलेके पास है। इसको खानखानाने अपनी बीबीके वास्ते बनाया था पर उसको तो यहां दफन होना नसीब न हुआ आप दफन हुए।

यह मकबरा भी किसी जमानेमें बहुत तोफा बना हुआ था इसके बुर्ज तमाम सङ्गमरमरके थे जगह जगह लाल पत्थरसे सफेद पत्थरकी धारियां लगी हुई थीं और बेलबूटे बने थे। पर अफसोस है कि यह बिल कुल उजड़ गया है। इसका तमाम सङ्गमरमर उखाड़कर बेच डाला और ऐसे उमदा मकबरेको ढहा डाला। कहते हैं कि आसिफुद्दोलाके वक्तमें इसका तमाम पत्थर उखाड़कर लखनऊमें गया है। यह मकबरा बिल कुल लुच्छा रह गया है इस मकबरेका (२) तावीज भी उखाड़कर ले गये हैं। अब इसमें गाय भैंसें बन्धती हैं और गोबरकी बदबूसे अन्दर जाना मुशकिल होता है।

देखो क्या (३) अजमत औरशान (४) थी खानखानाकी, और अब क्या हाल है। खानखानाके नाम निशानके लिये यह मकबरा

१। सर सैयद अहमदखांने इसमें दिल्लीकी इमारतोंका हाल लिखा है।

२। कबरका चिह्न

३। महत्व

४। आतङ्क

था। सो यह भी न रहा—जिसके दिवानखानेमें सेकड़ों मन गुलाब छिड़का जाता था अब उनके मकबरेमें हजारों जानवरोंका मूत्र पड़ा है।"

जोनपुरका पुल।

जोनपुरके प्रसिद्ध पुलको भी बहुत लोग इन्हींका बनाया समझते हैं। परन्तु इनका बनाया नहीं है। खानखाना मुनअमखांका बनाया है जो इनके बापके पीछे खानखाना हुआ था।

उस पुलके लेखमें मुनअमखांका नाम खुदा है तो भी जोनपुरके (१) भूगोलमें भूलसे यादम्तकथा सुनकर इनके गुलाम फहीमको मुनअमखांका गुलाम और उस पुलका बनानेवाला लिख दिया है सो गलत है। वह पुल तो मुनअमखां खानखानाने ही बनाया है जो सन् ९७२ से ९७५ तक बनकर तैयार हुआ था।

फिर जोनपुर हमारे खानखानाकी जागीरमें भी सन् ९९८ से लेकर कई वर्ष पीछे तक रहा था। उस समय फहीम भी वहां रहा होगा जिससे वहांके साधारण लोगोंको उसका नाम याद रह गया।

खानखांनाकी जन्मपत्री।

जन्म पत्री भी इतिहासमें कामकी चीज होती है कि उससे यथार्थ समय विदित होजाता है। मुसलमानोंमें हिन्दुओंके समान तो जन्म पत्रीकी प्रथा नहीं है तो भी कोई कोई बड़े आदमी जन्म पत्री बनवाते हैं। इसी विचारसे हमने खानखानाकी जन्मपत्रीकी भी खोजनाकी तो एक कुण्डली बीकानेरकी ख्यातमें मिली। दूसरी एक ज्योतिषीकी पोथीमें पायी और तीसरी एक मित्रके पुस्तकालयसे आयी। परन्तु पहिली पिछली दोनोंसे नहीं मिलती इसमें ४ पहरका अन्तर रहता है।

१। इस भूगोलको जिले जौनपुरकी पाठशालाओंके डिपटी इन्सपेक्टर मोलवी जुलफिकार अलीने सन् १८७४ संवत् १९३१ में बनाया था।

नं १

संवत् १६१३ मगसर सुदी १४ खानखानाका जन्म:
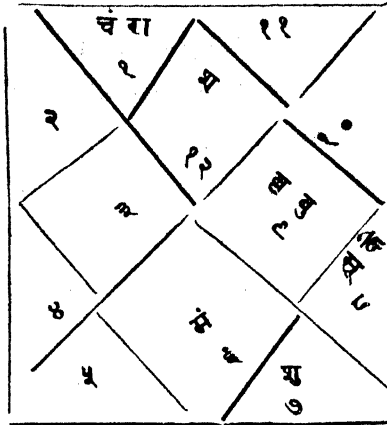
नं २

संवत् १६१३ मगसर सुदी १४ सोम उ० घटी ३७।१७

खानखानाका जन्म:
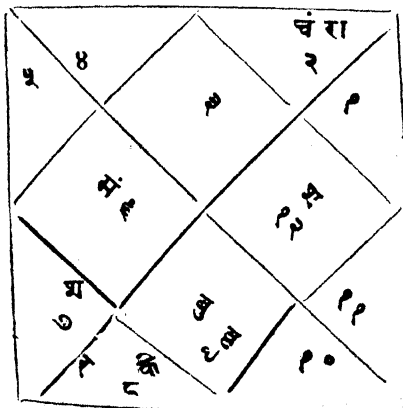
नम्बर ३

संवत १६१३ मंगसर सुदी १४ सोमे उ० घ० ३ खानखानाका जन्म।

अस्त विम्बा ८ पथ प्रहा।
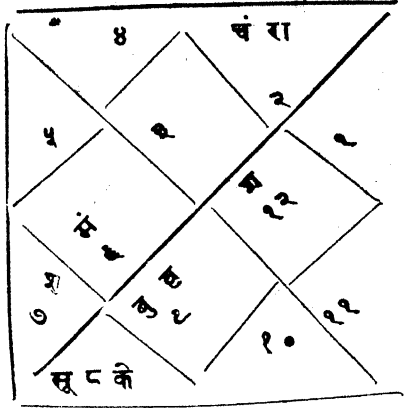
शङ्का समाधानके लिये संवत १६१३ का (१) चण्डूपञ्चांग देखा गया तो मंगसर सुदी १४ का यह विवरण निकला।

मार्ग सितात् संवत १६१३ शाके १४७८ तिथि १४ चन्द्र ४।३४ क्र २५।१५ थि २२।५६ हस्ते मं १३।४७ म० ४।३४ उ० चन्द्रस्य ग्रहण अस्तो

१। चण्डू पञ्चाङ्ग मारवाड़ और गुजरातादि देशोंमें प्रचलित है। इसको चण्डूजी ज्योतिषीने चलाया था जो संवत् १५५० में जन्मे थे और संवत् १६२२ में काल प्राप्त हुए। पहिला पञ्चाङ्ग कब चला था उसका पता तो हमको नहीं मिला परन्तु १६०५ से अब तकके पञ्चाङ्ग हमने संग्रह कर लिये हैं। जिनसे जन्म पत्रियों और इतिहासोंके वर्ष तिथि वारके शुद्ध करनेमें बहुत सहायता मिलती है।

सू चं मं बु बृ शु श रा। के इसके अनुसार कुण्डली मिथुन
८ २ ६ ८ ८ ७ १ २ ८

लग्नकी यह होती है।
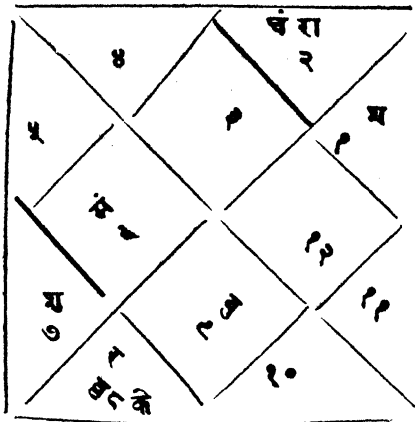
इस कुण्डलीसे ऊपरकी दोनों मिथुनलग्नकी कुण्डलियोंके शनि और गुरु नहीं मिलते। शनि उनमें तो मीनका है। और पञ्चांगमें मेषका और उन दिनोंमें शनि वक्री भी नहीं था जो मीन पर आया समझा जावे इसलिये उन दोनों कुण्डलियोंमें मीनका शनी क्यों लिखा है इसका कुछ कारण सिवाय इसके कि भूलसे ऐसा हो गया होगा और कुछ समझमें नहीं आया। और गुरु उस दिन तो वृषकका ही था। फिर पोष बदी १२ को धनका आया। उस पंञ्चागमें कि जिससे वह जन्मपत्री बनी है मंगसर सुदी १४ से पहिले धनका आ गया हो तो कुछ आश्चर्य्य नहीं है क्योंकि इतना अन्तर तो मारवाड़ और दिल्लीके पंचांगमें उदयास्तके विपर्य्यतसे रहा ही करता है तो भी इस अन्तरका पता लगानेके लिये पुनः खोजनाकी गयी तो (१) श्रीपतिकी टीकामें फिर एक जन्मपत्री खानखानाकी मिली जिसको श्रीपतिके टीकाकार श्रीवत्सलदेव।तम श (२) लक्ष्मण दैवज्ञने जो खानखानाका आश्रित मालूम होता है शुद्ध और स्पष्ट करके उदाहरणमें लिखी है नकल उसका यह है।

१। ग्रन्थ श्रीपति शाके ८६१ में बना था। चन्द्रागनन्दोनशको इति वचनात्। २। एक लक्ष्मणपण्डितका नाम आईन अकबरीमें भी लिखा है जो बादशाही पण्डितोंमें नौकर था।

संवत् १६१३ शा० १४७८ मार्गशीर्ष शुक्ल १४ चन्द्र घ० १५ पल १७ परतो पूर्णिमा कृतिका नक्षत्रे घ० २६।४६ शिव योगे घ० २४।२० इष्ट दिवसे सूर्योदयात् गत घटी २८।१६ रात्रि गत घ० २।५५ मिथुन लग्ने लाभ पुरे श्रीमत् खानखाना महाशया नामज निरभूत् (१)

अथ लग्न कुण्डली।
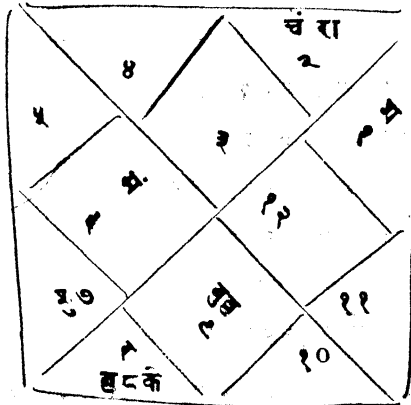
अथ भावकुण्डली।
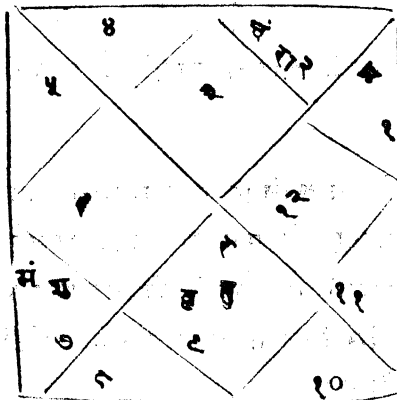
१। खानखानाके जन्मकाल तक जो वर्ष और दिन व्यतीत हो चुके थे उनकी संख्या भी ज्योतिषीने जन्म पत्रिकामें धरदी है। जिसको उपयोगी समझकर हम भी यहां लिख देते हैं।

इसमें सब ग्रह चण्डू पञ्चांगसे मिल जाते हैं बृहस्पतिका भी अन्तर नहीं रहता। सो इसका यह कारण है कि इन दोनोंकी गणितका आधार एकही करण ग्रन्थ अर्थात् ब्रह्म तुलाके ऊपर था।

१ श्रीश्वेत वाराह कल्प प्रवृते यातावद वृन्द १९७२९४८६५७
२ सृष्टि तो गताब्दगण··················१९५५८८४६५७
३ गत कलि···························४६५७
४ विक्रमस्य राज्याद्गताब्दगण···················१६११
५ शालि वाहन शकाब्दा १४७८
६ ब्रह्म तुला गताब्दा ३७३
७ कल्पाऽहर्गण ७२०६३६१४३९५६
८ सृष्टेरहर्गण ७१४४०३९२७८६९
९ कलेरहर्गण १७०१२४२
१० ब्रह्मतुलाऽहर्गण १३५६०४

अब यहां यह शङ्का होती है कि घड़ी पल क्यों नहीं मिलते सो इसका यह उत्तर है कि चण्डूपञ्चांगमें ब्रह्म तुलासे अधिक चण्डूजो ज्योतिषीकी गणितके बीज भी मिलाये जाते हैं। जिससे ब्रह्मतुलाकी गणितमें और चण्डूपञ्चांगकी गणितमें घड़ी पलका अन्तर रह जाता है।

यों इतना परिश्रम करनेपर खानखानाकी शुद्ध जन्म पत्रीका पता मिला है। परन्तु जो एक महीनेका अन्तर खानखानाकी जन्म तिथिमें फारसी तवारीखके हिसाब और इस जन्मपत्रीके लेखसे आता है और जिसका व्योरा ४२ वीं पृष्ठके नीचे दिया गया है अभी बाकी है।

इस जन्मपत्रीकी शोधमें जो सफलता हुई तो उससे और जन्म पत्रियोंके ढूंढनेका भी साहस हुआ। और थोड़ेही दिनोंमें कई सो जन्मपत्रियां उन राजाओं बादशाहों और अमीरोंकी हस्तगत हो गयीं कि जिनके नाम इतिहासमें देखे जाते हैं।

खानखानाके बेटोंकी जन्मपत्रियां।

१ मिरजा एरचकी जन्मपत्री

संवत १६४३ ज्येष्ठ सुदी १ सामे उदयाद्ध तघटी ३१।

मिरजाएरच जन्म
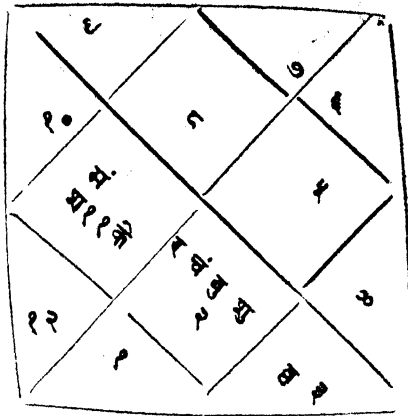
२ मिरजा दाराबकी जन्मपत्री

संवत १६४४ असाढ़ बदी ४ बुधे उदयाद्ध तघटी २।२५।

मिरजा दाराब.जन्म:
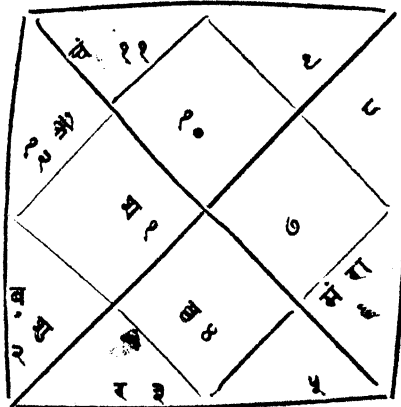
३ मिरजा रहमानदादकी जन्म पत्री

संवत १६५७ श्रावण सुदी ७ बुधे उदया तघटी ३१।०।।

मिरजारहमानदाद जन्म।
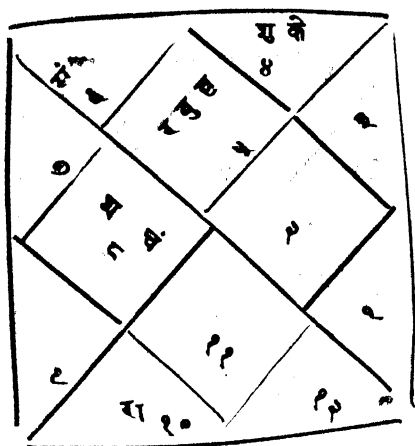
४मनुचहरकी जन्मपत्री

संवत १६५८ कातिक वदी १२ शनी रात्रौ गत घटी २६।०

२६।१ एतत्र सुत मनुचहर जन्म: पलभा ४३।३०
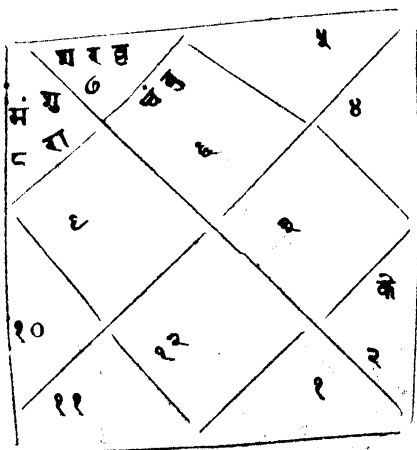
खानखानाकी सन्तान।

एकमिरजा एरच संवत १६४३ में जन्मा था। यह भी बड़ा वीर पुरुष था। जहांगीर बादशाहने इसको शाहनवाज खांकी पदवी दी थी। वह संवत १६७५ में जियादा शराब पीनेसे बीमार पड़कर मर गया। उसके दो बेटे मनूचहर और तुगरल थे।

दूसरा दाराबखां संवत १६४४ में पैदा हुआ। यह बापके साथ दक्षिणमें रहा करता था। संवत १६८२ में जहांगीर बादशाहके हुक्मसे महावतखांने इसको मारा। इसकी बेटीसे सन् १०२६ में (१) शाहजहांका व्याह हुआ था।

तीसरा कारन मंगसर सुदी ८ संवत १६४७ को जन्मा था। इन तीनों लड़कोंके जन्मलेनेका भविष्य कथन पहिलेसे बादशाहने कर दिया था और तीनोंके नाम भी रख दिये थे। इनके पीछे दो लड़के और हुए जिनके नाम खानखानाने रहमानदाद और अमरुल्लाह रखे। पहिले नामका अर्थ ईश्वरका दिया हुआ और दूसरेका ईश्वरका हुक्म है। ऐसे नाम रखनेसे खानखानाकी विद्वत्ता और वाक्य चातुरी पायी जाती है और यह ध्वनि निकलती है कि बादशाहने तो तीन ही पुत्र होनेको कहा था। ईश्वरने दो और भी दिये। रहमानदाद संवत १६५७ में पैदा हुआ और संवत १६७६ में मरा।

चौथा अमरुल्लाह था। इसकी जन्म तिथि नहीं मिली। इसने बुरहानपुरसे गोंडवानेमें जाकर हीरोंकी खान फतहकी थी। जहांगीर बादशाहने इस हालको इस तरह लिखा है:—

गुरुवार १० वीं (अमरदाद सन् १२)को राव भाराने (कच्छके स्वामी) हाथी हथनी, जड़ाऊ तलवार, लाल याकूत, पीले याकूत, नीलम और पन्नेकी ४ अंगूठियोंकी बख्शिश मिलनेसे मान पाया। इससे पहिले खानखानाने (मेरे) हुक्मसे एक फौज अपने बेटे अमरुल्लाहके साथ गोंडवानेकी तरफ हीरोंकी खान लेनेके वास्ते भेजी

१। १०२६ पौष सुदी २ संवत १०७३ को लगा था।

थी जो खानदेशके जमींदार पंजूके पास थी। इस दिन उसको अर्जी पहुंची कि पंजूने बादशाही लश्करसे लड़नेको अपनेमें सामर्थ्य न देखकर थान देदी और बादशाही दारोगा उस पर बैठ गया। वहांका हीरा सब प्रकारके हीरोंसे सुथरा और स्वच्छ होता है।

खानखानाकी बेटियां।

१ जानांबेगम जो शाहजादे दानियालको व्याही थी। उससे एक लड़का हुआ था परन्तु जिया नहीं।

२ खैरुन्निसा बेगम बड़ी चतुर थी। जब जहांगीर बादशाह गुजरातको गये थे तो यह भी साथ थी और यही बादशाहको फतह बागमें ले गयी थी। "तवारीख मिरआत अहमदी"में लिखा है कि खानखानाकी बेटी खैरुन्निसा बेगमने बादशाहसे प्रार्थना की कि गांव फतहपुरमें खानखानाका बाग है, मैं चाहती हूं कि उस बागमें हजरतकी जियाफत करके प्रतिष्ठा प्राप्त करूं। बादशाहने स्वीकार किया परन्तु वह समय पतझड़का था वृक्ष ठुंठ हो गये थे, बागकी शोभा जाती रही थी; तो भी उस सुघड़ बेगमने जैसे फल फूल और पत्ते जिस वृक्षके थे वैसे ही रंगीन कागज और मोमके कारीगरोंसे बनवाकर उन वृक्षोंमें ऐसी युक्तिसे लगवा दिये कि जब बादशाह आये तो बागकी छटाको देखते ही मोहित होकर उन कृत्रिम पुष्पों और फलोंके तोड़नेको झुके। उस समय उस अद्भुत कारीगरीकी कलाको जानकर अति प्रसन्न हुवे। बेगमकी बुद्धिकी बहुत तारीफ करके प्रतिष्ठा और जीविका बढ़ाई।

मिरजाखां मनूचहर।

खानखानाके पीछे उनके घरानेमें मनूचहर ही ऐसा हुआ कि जिसने बाप दादेके नामको फिरसे चमकाया। वंशप्रभावके अनुसार इसमें भी पौरुष पराक्रम और दूसरे सद्गुण थे।

लड़ाइयोंमें घायल होनेसे मादक पदार्थोंका सेवन यह भी करता था; परन्तु विशेष करके नहीं। इसकी नौकरी दादाके समयसे दक्षिणमें बाली हुई थी। जब जहांगीरके १८ वें वर्षमें

(१)अब्बरने अहमदनगरके पास युद्ध करके सगरखांको बहुतसे बादशाही अमीरोंके साथ पकड़ लिया था तो यह उस लड़ाईमें खूब लड़ा। जखमोंमें चूर होकर दुश्मनोंके हाथ पड़ा और बहुत दिनोंतक दौलताबादमें कैद रहा। जब छूटकर आया तो जहांगीर बादशाहने उस बहादुरीके बदलेमें इसको मिरजाखांका खिताब ३ हजारी ३० हजार सवारका मनसब और नक्कारा निशान दिया।

शाहजहांकी इसपर कृपादृष्टि रही। उनके ८ वें वर्ष में निजाबतखांकी जगह जो श्रीनगरपर चढ़ाई करके लड़ाईमें हार गया था इसको कांगड़के पहाड़की फौजदारी और जागीर मिली।

८ वें (२) सालके अन्तमें वह बावला होकर कुछ समय तक संज्ञाहीन रहा; किन्तु अच्छा होनेपर अवधकी सूबेदारी पर भेजा गया। फिर उसे मांडूकी फौजदारी और जागीर मिली।

२५ वें वर्ष में एलिचपुरका हाकिम हुआ।

२८ वें वर्ष में शाहजादे औरङ्गजेबने बापके हुक्मसे इसको देवगढ़के जमींदार कीरतसिंहके ऊपर भेजा जिसने कई वर्ष से कर नहीं भेजा था।

जब यह वहां पहुंचा तो कीरतसिंह इससे मिला और पिछला रुपया देना अंगीकार कर लिया। तब उसको ३० हथियों सहित कि (इतनेही उसके पास थे) शाहजादेकी सेवामें औरंगाबाद लेगया।

३० वें वर्ष गोलकुण्डेकी चढ़ाईमें शाहजादे औरंगजेबके साथ गया और उत्तरके मोरचेपर नियत होकर शत्रुओंको हराता रहा। जब अब्दुल्लाह कुतुबशाहने सन्धिकर ली और शाहजादा औरंगाबादको लौटा तो यह उससे विदा होकर एलिचपुरमें आगया।

फिर जो लड़ाइयां औरंगजेबने राज्य प्राप्तिके लिये अपने भाइयोंसे कीं उनमें यह उसके साथ नहीं रहा। इसलिये या किसी

१। संवत् १६८१

२। संवत् १६९३—९४

और कारणसे इसका काम और मनसब उतर गया। जिससे यह बहुत वर्षों तक घर बैठा रहा। निदान औरंगजेबके १० वें वर्षमें (१) शेख अबुललतीफ बुरहानपुरीकी भक्तिसे जिसका भाव बादशाहको भी था, ३ हजारी ३ हजार सवारके मनसब पर फिर नियुक्त हुआ और ऐरचकी फौजदारीपर (२) भेजा गया।

१६ वें वर्ष सन् १०८३ में (३) कालबश हुआ। इसने एक बहुत अच्छा बाग बुरहानपुरमें लगाया था।

मुहम्मद मुनअम।

मनूचहरका बेटा मुहम्मद मुनअम भी सुयोग्य पुरुष था। और वह औरङ्गजेबके साथ दक्षिणसे हिन्दुस्थानमें आया। डेढ़ हजारी मनसब और खानका खिताब पाकर बादशाहकी बन्दगीमें रहा।

दूसरे सालमें दाराबकी जगह अहमदनगरका किलेदार हुआ।

यहां तक हाल इन दोनों बाप बेटोंका मआसिरुल उमरामें लिखा था सो इस ग्रन्थमें दिया गया। नजीबुन्निसा बेगम शायद इसीकी बेटी हो।

खानखानाकी प्रशंसाके कवित्त।

खानखानाकी प्रशंसामें जैसे फारसी भाषाके अनेक कवियोंने कविता की है वैसे ही हिन्दी भाषाके कवियोंने भी की थी। हमने उसकी भी खोज लगायी तो १४ कवित्त मिले जिनमें ३ कवि गङ्गके हैं १ मक्खनका है, १ अली कुलीका, १ हरनाथका, और १ तारा कविका। बाकी कवित्तोंमें कवियोंके नाम नहीं हैं हम उनको यहां क्रमसे लिखते हैं।

१। सन् १०७७

२। बुन्देलखण्डमें

३। संवत् १७२९।३०

कवि गङ्गके कवित्त।

छहरे छबीली छुनि सटक समर कन्दो,
धीर न धरत धुन सुनत निसाना की।
मकमको ठाट ठव्यो प्रलेसो पकव्यो गङ्ग,
खुरासान अस्पहान लगत एक थाना को।
बीवन उबीठे बीठे मीठे मीठे महबूब,
छिये भर न हेरियत ऊबट बदाना को।
तोसे खाने फीलखाने खजाने हुरमखाने।
खाने खाने खबर नवाब खानखाना को॥१॥
नवल नवाब खानखाना जू तिहारे डर,
परी है खलक खैल भैल जहं तहं जू।
राजनकी रजधानी डोलो फिरे बन बन,
नेठनकी दैठें बैठें भरैं बेटी बहू जू।
चहूं गिरि राहैं परी समुद्र अथाहै पब।
कहै कवि गङ्ग चक्र चलो धीर चहूं जू॥
भूमि चली सेस घर सेस चल्यो कच्छ घर।
कच्छ चल्यो कोल घर कोल चल्यो कहूं जू॥२॥
बेरमको खानखाना बिरच्यो बिराने देस,
दच्छिण फौजे मारी खग्ग मुख जो परी॥
माते माते हाथिनके हलका हलाय डारे,
मानो महा मारुत झकोर डारी झोंपरी॥
बोहूके पले लें गङ्ग गिरजा गले लै देत,
चोंथ चोंथ खात गीध चर्ब मुख चोपरी॥
तियन समेत प्रेत हांके देत बीर खेत,
खखल खखल हंसे खलनकी खोपरी॥३॥

छप्पय

चकित भंवर रह गयो गवन नहिं करत कमल तन।
अहि फनि मनि नहीं लेत तेज नहीं बहत पवन घन॥

हंस मानसर तज्यो चक्क चक्की न मिले पति।
बहु सुन्दरि पदमनि पुरुष न चहै न करै रति॥
खल भलित सेस कवि गङ्ग भनि अमित तेज रवि रथ खस्यो।
खानाखान बैरम सुवन जिहिन क्रोध कर तङ्ग कस्यो॥४

दोहा

गंग गौंछ मौंछे जमुन, अधरन सरसुती राग।
प्रकट खानखाना भयो, कामद बदन प्रयाग॥१॥

मण्डनका कवित्त।

तेरे गुन खानखाना परे ते दुनीके काम,
एह तेरे काम गुन आपनो धरत है।
तूं तो खग्ग खोल खोल खलन पे कर लेत,
एह ता सो कर लेत नेक न डरत है।
मण्डन सुकवि तू चढ़त नवखण्ड पर,
यह तेरे भुज दण्ड चढ़ो न परत है।
आइटी अटल खान साहसी तुरकमान,
तेरो एक मान तोसों तोष सो करत है॥५॥

अलाकुलीका कवित्त।

लङ्का लायो लूट किधों सिंहलको कूट कूट।
हाथो घोड़े ऊंट एते पाए ते खजीने हैं।
अला कुली कविको कुबेर ते मिताई कीनी,
अनतुले धन मापे नग जो नगीने हैं।
पाई है तें खान लच्छ भई पहचान भूल,
रह्यो है जहां नयै समान कहांकीने हैं॥
पारसतें पायो किधों पारातें कमायो किधों।
समुद्रहुते लायो किधों खानखाना दीने हैं॥६॥

तारा कविका कवित्त।

जोर बर अब जोर रविरथ कैसे जोर बने,
बने जोर देखे दीठ जोर रहियतु है।

हैन कोवि वैया ऐसो है नको दिवैया ऐसो,
दान खानखानाको सहे तें कहितु है।
तन मन डारे बाजी हेतन सम्हारे जात,
और अधिकाई कहो कासो कहियतु है।
पौनकी बड़ाई बरनत सब तारा कवि,
पूरो न परत याते पौन कहिय तु है॥ ७॥

प्रसिद्ध कविका कवित्त।

सात दीप सात सिन्धु थरक थरक करे,
जाके डर तूटत अखूट गढ़ राना के।
कंपत कुबेर बेर मेर मरजाद छोड़,
एक एक रोम भार पड़े हनुमानाके।
धरनि धसक धस भुसक धसक गई,
भनत प्रसिद्ध खम्भ डोले खुरसानाके।
सेस फन फूट टूट चूर चकचूर भये,
चले पेसखानांजू नबाव खानखानाके॥ ८॥

हरनाथ कविका कवित्त।

बैरमके तने खानखाना जके अनुदिन,
दोउ प्रभु सहज सुभाये ध्यान ध्याये हैं।
कहै हरनाथ सातों दीपको दीपत करि,
मोहु खण्ड करवाल ताकसे बजाये हैं॥
ये तनो भगति दिल्लीपतिको अधिक देखो,
पूजत भयेको भाये ताते भेद पाये हैं।
अरि सिर साजे जहांगीरके पगन तर,
टूटे फूटे फाटे सिव सीस पै चढ़ाये हैं॥ ९॥

विना कवि-नामके कवित्त।

काहूरे करमदार भमरत बार बार,
नेक दिल धीरधर आन इतबारीसे।
देहु दर हास मास लिखले सवाई साल,

देखना विहाल मत जानना भिखारीसे ॥
सेवा खानखानाकी उमेदवारी दानकीतें।
महर महानकी सुं होत धनधारीसे ॥
अब अरबन मांझ पहर है पहर मांझ।
आज काल के हैंरे हजारी हं से ॥ १० ॥

छप्पय।

मदनरूप तनत बल, बीरबाहन गज गज्जह।
बहु सनाह पाखरी, द्वार दुन्दुभी बहु बज्जह ॥
बहु साहस उत्थपन, फेर थप्पन समर्थवर।
सहनसाह सिर छत्र, ताह रक्खन समर्थनर ॥
खानान खान बेरम सुतन चित्त ःसहरस रत्तयो।
धनमद जोबन राज मद एकहि मदन मत्तयो ॥

कवित्त।

नवल नवाब खानखाना जू तिहारे डर,
बैरी बिडराने धुनि सुनिकै निसानकी।
तिहूनकी रानी फिरैं थकी बिलखानी सब,
छूटी रजधानी सुध खानकी न पानकी।
कहूं मिली हाथिन हिरन बानरन,
तिनहीं तें रच्छा भई उनहींके प्रानकी।
सची जानी गजन भवानी जानी केहरन,
मृगन मयंक रानी जानी कपि जानकी ॥१२॥
दच्छनको जुजझ (१) खानखाना जू तिहारो सुनि,
होत है अचभी राजा राना उमरायकें।
एक दिन एक रात औ द्यौस अथियें उगी,
आये जे मुकाम न ले गये निरवायकैं।
वारसके समर समीरहू के परेतेवे,

१। युद्ध।

भिदे रविमंडलको मारे जेसरायकें।
रजनीके जूझे सूर सूरजको पैडो चाहै,
रात राहगीर दरवाजे ज्यों सरायकें ॥१३॥

नगर ठठाको रजधानी धुरधानी कीनी
धरक्यो कंधारी खानखानी गा हलकमें।
छांड़े है तुखार घो बुखार न उघार भरे,
उजवक उजरके गयो है पलकमें।
पौर पौर परे रौर ठौर ठौर पौर दई,
खानखाना ध्याये तैं अवाज है खलकमें।
पिय भाजे तिय छांडि तिया करे पीव पीव,
बाबो बाबो बिललात बालक बलकमें ॥१४॥

दियेके हुकम आगे दीये रहै जाममीके,
देहके कहेते राख्यो देहको चहत है।
बखतके नाम नाम राखत जिहान माहि,
धनके मवद धन धन्जे कहत हैं।
खानखानाजूको अब ऐसो बखसीस भई,
वा ी बखसीस और बखसीस चहत है।
हाथिनके नाम हाथी रहत तबेलनमें,
घोरा दिये घोरा मतरजमें रहत हैं ॥१५॥

काहूको सिकार स्याल लोमनको खेल होत,
काहूको सिकार मृगमार सुखमानो है।
काहूको सिकार साथ सिकरा मिचान बाज,
काहूको सिकार देखो बारण बखानो है।
खानखानाको सिकार सिधु पैके वारपार
छन्द बन्द फन्द खट बरनको ठानो है।
अबही सुनोगे मास दोय तीन चार मांझ
चौनहु दिसाको पतसाह बांध आनो है ॥१६॥

दोहा। (मारवाड़ी भाषामें)

खानखान न जाचियो, जहां दालद्र न जाय।
कूप नीर पद्रे बिना, नीलो धरा न पाय ॥१॥
खानाखान न बावतें, वाही खग उन्नाल।
मुदफर पड़े न जठियो, जैसे आंबा डाल ॥२॥
खानाखान नवाबतें, हन अगायी येम।
मुदफर पड़े न जठियो, गुये ओवसो छेम ॥३॥
खानाखान नवाब हो, तुम धुर खेंचन हार।
सिरां सेती नहिं खिंचे, इस दग्गहका भार ॥४॥

अकबरके फरमान खानखानाके नाम।

अकबर और खानखानामें जो सम्बन्ध सेवक और स्वामि हत्ति-का था उसका पता जहांतक इतिहासोंसे लगा, वह तो पहिले लिखा जा चुका है। अब यहां उन स्वामी और सेवकके उस सप्रेम वार्तालापका भी कुछ नमूना दिखाया जाता है जो पत्र व्यवहारके द्वारा होता था।

अकबरकी ओरसे जो नामे और फरमान अर्थात् पत्र और पर-वाने समकालीन बादशाहों तथा हिन्दुस्थानी अमीरोंको लिखे जाते थे उनको विशेष करके शेख अबुलफजल लिखा करता था जो बड़ा जबरदस्त मुंशी था और जिसकी लेखन शक्तिकी प्रशंसामें इतना कहना ही बहुत होगा कि ईरान नरेश शाह अब्बास कहा करता था कि जितना मुझको अबुलफजलकी "कलम"का लगता है उतना अकबरकी तलवारका नहीं लगता।

अबुलफजल एक गरीब शेख नागोरका रहनेवाला था। परन्तु भाग्यबलसे पहिले सन ९८२में (१) अकबरका मीर मुंशी हुआ। फिर अपनी योग्यता और बादशाहकी गुणग्राहकतासे बढ़ते बढ़ते मुख्य मन्त्रीके महत् पदको पहुंच गया था। अकबर

१। संवत् १६३१।

नामा जो एक विशाल और गम्भीर इतिहास उस सुसम्राटका है। इसी अबुलफजलका बनाया हुआ है और आईन अकबरीका भी यही कर्त्ता है जिसमें उस नीतिवान और विचारशील राजराजेश्वरके सुप्रबन्धका वर्णन भारतवर्षका भूगोल और शास्त्रोंका सारांश है।

अबुलफजल खरा आदमी था। शाहजादोंकी भी खुशामद नहीं करता था। इसलिये शाहजादे सुलतान सलीमने सन् १०११ में (१) उसको मरवा डाला और सन् १०१५में (२) उसके भानजे अबदुल समदने उसके लेखोंको बड़े परिश्रमसे इस्तगत करके एक पुस्तकमें एकत्र किया जिसका नाम "मुनशियात अबुल-फजल" है। इसके ३ खण्ड हैं।

पहिले खण्डमें बादशाहकी ओरसे लिखे हुए पत्र और फरमान हैं।

दूसरे खण्डमें वे पत्र हैं जो स्वयं अबुलफ्जलने अपनी ओ-रसे लिखे थे।

तीसरे खण्डमें फुटकर लेख और अरबी फारसी ग्रन्थोंकी समालोचना है।

खानखानाके नामके केवल २ फरमान प्रथम खण्डमें हैं। पहिला दूसरेसे कुछ बड़ा है और दोनोंका पूरा अक्षरार्थ न तो हिन्दी लेखमें समा सकता है और न इस पुस्तकके वास्ते कुछ उपयोगी है। इसलिये आवश्यक भावार्थ लिखना ही उचित समझा।

पहिला फरमान।

पहिला फरमान हस्तलिखित प्रतिके पूरे ८ प्रष्टोंमें है। बादशाहने बहुत लम्बी चौड़ी उपमामें खानखानाका नाम लिखकर वसी ही लम्बी चौड़ी उपमा राजा बीरबरके वास्ते भी दी है और पठानोंकी लड़ाईमें उनके काम आजानेका हार्दिक शोक मर्म भेदी

१। संवत् १६६०। २। सं १६६४।

शब्दोंमें प्रकाश करके लिखा है कि ईश्वर इच्छा विलक्षण है हमने भी उसका कुछ उपाय न देखकर सन्तोष किया और तुम भी अब सन्ताप न करो। उस मरनेवालेको जीवनावस्थामें भी तुम हमारे परम मित्र और गुप्त भावोंके ज्ञाता थे और तुमको हम ईश्वरके दिये हुवे अलभ्य पदार्थों मेंसे जानते थे। अब तो तुम आप जान सकते हो कि तुम्हारा गनीमत होना कितने अंशोंमें बढ़ गया है। परमेश्वर तुमको हमारी छत्रछायामें बना रखे। हमने राजा तोडरमलको पठानोंके ऊपर भेजा था। उसने वीरता और बुद्धिमानीसे उनको दण्ड देकर स्वात और बाजोड़का देश जीत लिया। परमेश्वरका धन्यवाद है कि अब इधरके कामोंसे मन वांछित सफलता प्राप्त करके हम आगरेको पधारते हैं।

तुम्हारी अर्जी पहुंची। उससे तुम्हारी स्वामिभक्ति विदित होकर प्रसन्नता प्राप्त हुई। दक्षिण विजय करनेके विषयमें जो तुमने अपने विचार लिखे थे उससे हम भी सहमत हैं। तुम्हारी बुद्धि और वीरताका हमको ऐसा ही भरोसा है कि तुम शीघ्रही गुजरात मण्डलके प्रबन्धसे खचित होकर दक्षिणको जीतो और वहांके समग्र हाथी और पदार्थ हमारे भेट करो।

खङ्गारके अपराध क्षमा करने, जगन्नाथ और शाहमखानादिके मन्सब कृपाकर भेजनेकी जो तुमने प्रार्थनाकी थी सो स्वीकृत होकर कृपापत्र भेजे जाते हैं। खङ्गारको जो धरती दो वह सेवा और समयके अनुसार होनी चाहिये।

अमीनखांके बेटोंके वास्ते जाम बेग और खङ्गारके लिये जो तुम उचित समझो सो करो।

भरोंसेके महावतोंको भेजनेकी जो अर्जीकी थी सो मन्जूर हुई और शेख इब्राहीमको बुलाया सो जब हम आगरेको आते हैं और अब इधरकी जमींदारीके काम उसको सौंपे हुए हैं तो उसके भेजनेमें इतना लाभ नहीं जान पड़ता है कि जिसके वास्ते इन कामोंको योंही छोड़ दिया जावे।

और जो तुमने अपने बेटोंको बाबत लिखा कि जब दक्षिणको जाऊं तो उन्हें कहां छोड़ जाऊं या हजूरमें भेज दूं, सो तुम्हारा और तुम्हारी सन्तानका सम्बन्ध इस घरमें ऐसा नहीं है कि जब किसी कामपर न होवें तो क्षणभर भी आंखोंसे दूर रहें। तुम हमारे पधारनेके समाचारोंपर कान लगाये रहो। यदि हमारा आना आगरेमें जल्दी हो जावे तब तो उत्तम बात यही है कि लड़कोंको हजूरमें भेज दो और जो यह निश्चय हो जावे कि हम अभी पंजाबमें ही विहार करेंगे जो गुजरातसे बहुत दूर है तो तुम वहीं किसी भरोसेकी जगहमें उनको रखकर दक्षिणको चले जाना।

दूसरा फरमान।

दूसरा फरमान ७ पृष्ठोंमें है। इसके प्रारम्भमें बहुत दूरतक तो वसन्तऋतुकी शोभाका वर्णन है। फिर लड़ाइयोंमें विजय प्राप्त होनेकी प्रसन्नता और तूरानके बादशाह अबदुल्लाखां उजबकके भेजे हुए कबूतरोंके रङ्ग रूप और उड़ानकी प्रशंसा है। हबीब कबूतर बाज जो कबूतरोंके साथ आया था, उसकी तुलना बादशाहने अपने अद्वितीय इतिहासवेत्ता नकीबखांसे करके लिखा है कि जैसे नकीबखां मनुष्योंके वंश जानता है वैसे ही हबीब कबूतरोंकी कुली पहचानता है। उनके शरीरकी दशा जाननेमें जालीनूस हकीमके समान है तो उनके गुणोंके पहचाननेमें अफलातून हकीमके सदृश है।

इसके आगे कबूतरोंके उड़नेकी विचित्रताका बखान करके लिखा है कि हम सदा ही और विशेष करके हर्ष और आनन्दके समयमें तुमको अधिक याद किया करते हैं। इसलिये जिस दिन ये कबूतर हमारे दृष्टिसे निकलते थे और हम इनको देख देखकर प्रसन्न होते थे उस समय हमको तुम्हारी इस काम सम्बन्धी बातोंकी बहुत याद आती थी जिससे इन "परीजादों"के मनमें एक भ्रम उपजा और इन्होंने अपनी बोलीमें अपना मनोरथ

काहा जिसका सारांश यह है कि परमेश्वरने हमारा मनशा पूर्ण करके हमको इस दरबारमें पहुंचाया है, तो यहांके सब सेवकोंसे और विशेष करके खानखानासे जो बादशाहका निज शिष्य है यह चाहते हैं कि हममेंसे किसीको भी बादशाहसे मांगकर हमारा कुटुम्ब भङ्ग न करें क्योंकि हम सब बादशाहकी छत्र छायामें ही रहनेकी आशा करते हैं सो जब इनकी यह इच्छा है तो हम भी अपने हितैषियोंसे और विशेषकरके तुमसे क्योंकि तुम सबसे अधिकतर मांगने व ले भी,यही चाहते हैं कि इनके मांगनेका आग्रह न करोगे जिससे हमारे आनन्द और उछाहमें विघ्न न पड़े और इनके वियोगको सहन करके इन्हें एक दूसरेसे बिछड़नेका दुःख न दोगे। इनके बच्चे भी तुम्हारी न्यायशीलतासे यही आशा करते हैं कि जब तक हम बड़े होकर बादशाहको अपने उड़नेका कौतुक न दिखा लेवें तब तक हमको हमारे मा बापसे अलग न करें।

और तुम्हारा एक नया पाहुना (१) भी रास्ता चल रहा है उसके पहुंचने तक ठहरो। हम तुमको अच्छे अच्छे कबूतर प्रदान करेंगे और उस मिहमानको भी इनके बच्चोंमेंसे भाग मिलेगा। कदाचित् विलम्ब हुआ तो जो कुछ तुमने अपने वास्ते सोचा होगा उससे कम मिलेगा।

शेख अबुलफजलके पत्र खानखानाको।

मुनशियात अबुलफजलके दूसरे खण्डमें भी कई पत्र अबुल-

१। यह एक संकेत इस बातका है कि उस समय खानखानानाकी बेगमके गर्भ था। इसलिये बादशाह लिखते हैं कि नये महमानके आने पर अर्थात् बालक जन्मनेपर हम तुमको कबूतर देंगे और तुम्हारे लड़केको भी कबूतरोंके बच्चे इनायत करेंगे और जो बालकके होनेमें देर हुई तो तुमने अपने वास्ते जितने कबूतर मिलनेकी आशा की होगी उससे कम मिलेंगे। यह एक दिल्लगी बादशाहकी खानखानासे थी।

फजलकी तरफसे खानखानाके नाम लिखे मिलते हैं। उनमेंका भी वह अंश जो इतिहास और राजनीतिसे सम्बन्ध रखता है यहां लिखा जाता है।

पहिला पत्र।

पहिला पत्र जो २० पृष्ठोंमें है अरबीके एक पदसे प्रारम्भ होता है। अबुलफजल खानखानाको लिखता है कि तुम्हारे मिलनेकी लालसा उतनी ही अधिक है जितनी कि तुम्हारी जय प्राप्तिकी प्रसन्नता है। मैं क्या कहूं कि इन दिनोंमें चित्तकी कैसी कुछ चिन्ता रही। इधर तो वियोगका दुःख उधर गुजरातसे बुरे समाचारोंके पहुंचनेका उद्वेग और इनसे कष्टकी यह बात कि बहुत दिनोंसे तुम्हारा न कोई दूत आता था और न पत्र पहुंचा था। इन सबसे बढ़कर शत्रुओंकी दुष्टता थी जो निन्दा करके मित्रोंका दुख बढ़ाते थे जिन्होंने ऐसा अवस्थामें जीनेसे मरना उत्तम समझ रखा था। परन्तु बादशाहके तेज प्रतापसे अब वह दुर्दशा व्यतीत हो गयी और शीघ्रही अच्छे दिन आगये।

इनसाफकी बात यह है कि तुमने बड़ी ही वीरताकी। यह काम तुमसे ही बन आया और पुरुषसिंह ऐसा ही किया करते हैं। तलवारों और कमानोंको यदि बोलनेकी शक्ति हो तो वे तुम्हारे भुजबलका हजार वार बखान करें।

शत्रु और मित्र मन्त्रियोंकी बहुतसी सलाह और खेंचतान होनेके पश्चात्, जिसका कुछ वृत्तान्त आपको अपने वकीलोंकी लिखा पढ़ीसे विदित हुआ होगा, १६ बहमन माहजलाली तदनुसार १७ मुहर्रमको बादशाहने इलहाबाससे फतहपुरकी ओर पयान किया। विचार यह था कि शीघ्रतासे राजधानीमें पहुंचकर विशेष कटक तो वहीं छोड़ देवें और कड़ी सवारीसे अहमदाबादके ऊपर धावा करें जिससे सेवकोंकी पुष्टि हो जावे और रिपु दल दब जावे।

इतनी बहुत गड़बड़से बादशाहके शांत चित्तमें कुछ भी घबरा-

छूट नहीं हुई और ऐसी बड़ी दूरकी लम्बी यात्राको पुष्प वाटिका समझकर मन्द मन्द गतिसे अति प्रसन्नमन और प्रफुल्लित चित्त हो पधारते थे। परम स्वामिभक्त अनुचरोंके साथमें मैं भी था।

बहमन महीनेकी अन्तिम मितिको जोकि प्रथम तिथि (१) सफरकी थी बादशाही कटक कोड़ा घाटमपुरमें उतरा ही था कि किसना चौधरीके कासिद (धावक) बधाई लेकर पहुंचे। श्रीमानोंने ईश्वरको प्रणाम करके दुन्दभी बजानेकी आज्ञा की। इतना आनन्द और उछाह हुआ कि जिसकी यथार्थ अवस्था वर्णन करनेको मैं समर्थ नहीं हूं। तुम इसीसे अनुमान करलेना कि इस प्रसन्नताने समभावसे शत्रुओं और मित्रोंमें एकता कर दी थी।

इसके पीछे कल्याणराय, एतमादखां, निजामुद्दीन अहमद और शहाबुद्दीन अहमदखांकी अर्जियां क्रमसे पहुंचीं जिनसे तुम्हारी पूरी बहादुरी बादशाहको विदित हुई। श्रीमानोंने प्रसन्न होकर परम कृपासे बहुत शाबाशी और खानखानाकी बपौती पदवी तुमको दी।

ईश्वरको धन्यवाद है कि उसने अपनी दयालुतासे तुमको वह पदवी दिलायी जो पञ्चहजारी मनसबवालोंकी मन वांछित कामनाओंकी अन्तिम सीमा होती है।

तुम्हारे पञ्चहजारी होनेको बहुत लोग असम्भव समझते थे और प्रत्यक्षमें कुछ उसका उद्योग भी नहीं था। हकीम अबुलफतह या कुछ दूसरे सन्मित्रोंने कदाचित कुछ श्रम किया होगा। वास्तवमें ईश्वरने तुम्हारा वह प्रभाव प्रगट किया है कि जो

१। फतह १३ मुहर्रम सन् ९९२ को हुई थी और बधाई १८ दिनमें बादशाहके पास एक सफरको पहुंची। इधर बादशाह भी १४ दिनमें ४० तथा ५० कोस ही चले थे। उस समय डाक और सवारी इतनी धीमी चलती थी। अहमदाबादसे आगरा २५६ कोस था और आगरेसे घाटमपुर ५० या ६० कोस होगा।

बड़े बड़े विचक्षण पुरुषोंको तीक्ष्ण दृष्टिसे छिपा हुआ था।

समय अवकाश देनेमें बहुत कंजूस है इसलिये इस विषयमें विशेष नहीं लिख सकता इतनेके वास्ते ही बड़ी भीख मांगनेसे अवसर मिला है।

निदान अति प्रतीक्षा करनेके पीछे ता० २५ सफर सन् ९८२को फौलाद दीवानेका भला आदमी पहुंचा और तुम्हारा छपापत्र लाया जिसके पढ़नेसे असीम प्रसन्नता हुई और आश्चर्य भी बहुत हुआ। ऐसी बड़ी विजय प्राप्त करके वहां स्थिर हुए बिना इधर आनेका विचार करते हो और जिसकी प्रार्थना करनेके वास्ते मुझको शपथ भी लिखी थी। अन्तमें वह बात सन्मित्रोंके मन्त्रसे बादशाहके कानोंतक पहुंचायी गयी तो श्रीमान्‌को भी बड़ा अचम्भा हुआ। हकीम अबलफतहने वाक्य पटुतासे वह प्रार्थना स्वीकार भी करा ली। परन्तु मुझे जो आश्चर्य्य था वह अभी दूर न हुआ था कि दो तीन दिन पीछे फौलाद दीवानने तुम्हारी अर्जी श्रीमानोंके चरण कमलोंमें अर्पित की जिसमें श्रीमानोंके गुजरातमें पधारने और राजा टोडरमलके भेजनेकी प्रार्थना लिखी थी। इससे और भी मेरा चित्त विक्षिप्त हुआ। पुराने समयके कर्म्मचारियोंकी सलाहसे तुमने ऐसा किया है। जब कि इस बृहत राज्यको परमेश्वरने अपने संरक्षणमें रख छोड़ा है तो इसके शुभचिन्तक भी सर्व प्रकारके सांसारिक शोकसन्तापसे बचे रहेंगे। इसपर भी ज्ञानका अनुभव न होने और मायामें लिप्त रहनेसे चिन्तातुर होना पड़ता है।

मैंने जो कुछ ईश्वर सम्बन्धी ज्ञान प्राप्त किया था, अफसोस है कि उसको तुम्हारे प्रेममें आसक्त होकर कुछ दिनोंके लिये खो बैठा, नहीं तो मैं कहां और तुम जैसोंकी प्रीति कहां और ये उद्वेग कहां? निदान तुम्हारे आग्रहपूर्व्वक लिखनेसे मैंने अपनी समझको अलग रखकर सुहृद स्नेहियोंकी सम्मतिसे बहुतसी कहा सुनी करके, जिसका वृत्तान्त आपको अपने मित्रोंसे विदित

हुआ होगा श्रीमानोंसे मेष संक्रान्तिके उत्सवके पीछे मालवे जाना, खजाना भेजना और उन सब कार्य्योंका सम्पादन करना स्वीकार कराया है जिनका ब्योरा उस फरमानमें लिखा गया है जो अबूतालिब और फौलाद दीवानेके हाथ जा चुका है; आशा है कि सब अच्छा होगा।

क्या करूं यह मेरा स्वभाव है कि जो उत्तम विचार मनमें उत्पन्न होते हैं उनको लिखे बिना चित्तको शान्ति नहीं होती और इसी हेतु इतना बहुत लिखकर तुम्हें कष्ट दिया है। आशा है कि मन और शरीरके विचारों और कामोंकी भीड़ तुमको इसके पढ़नेसे न रोकेगी।

मैं इस पत्रको तुम्हारी तन्दुरुस्तीकी "दुआपर" समाप्त करना ही चाहता था कि चौधरी किशना, शहाबुद्दीन अहमदखां और नवाब कोकाकी अर्जियां जो ता० ५ रबीउलअव्वलको लाहौरमें लिखी गयी थीं; रेवारियोंके हाथ पहुंचीं उनसे शुभ समाचार नयी फतहके मिले। यद्यपि इसके पहिले मुजफ्फरके खम्भातसे भागने और उसके पीछे फौजके जानेकी खबर कई मनुष्योंकी लिखावटसे जानी गयी थी परन्तु सविस्तर अब मालूम होकर चिन्ता और व्याकुलता प्रसन्नतासे बदल गयी।

परमेश्वर नित्य ही तुम्हारी ऐसी जय किया करे। श्रीमानोंको जो प्रसन्नता तुम्हारी इस लगातार जयसे हुई है उसका कुछ वर्णन नहीं हो सकता। क्या दरबारमें और क्या एकान्तमें तुम्हारी प्रशंसा किया करते हैं जिससे शत्रु दुःखी और मित्र सब सुखी हैं।

श्रीमान कई बार कह चुके हैं कि जो चाकर गुजरातमें भेजे गये हैं उनके मनसब अर्ज करो तो बढ़ाये जावें और उनको कृपापत्र भी भेजें। परन्तु श्रीमान न्याय और राजनीतिकी परिपाटीसे सब काम आप देखकर करते हैं। तुम्हारी खानखानीका फरमान, खासा खिलअत पेटी तलवार और घोड़ेके छांटनेमें दिन लगजानेसे इतनी देरमें लिखा गया था तो दूसरा फरमान किस तरह लिख

जा सकता था जब कि नये दिनोंके आजानेसे उसका उत्सव राज रीतिसे किया जाता है और मेष संक्रान्तिके दिन तो सब छोट बड़ोंको यथोचित न्याय पूर्वक मान और सम्मान दिया जाता है और अबके तो हरेकको उसकी आशासे अधिक देना है। मेष संक्रान्ति दूर नहीं है ईश्वरने चाहा तो इन सब कामोंसे फुरसत हो जाने पर दूसरा फरमान तुम्हारे पास पहुंचेगा।

आपसे यह बात छिपी न होगी कि सच्चे सखा वेही हैं जो दिलसे यह चाहते हों कि मित्रोंके छोटे और बड़े अवगुण जताकर उनसे त्याग करावें न कि खुशामदियोंकी भांति अवगुणोंको ही गुण बताकर अपनेको हितैषी बतावें जैसाकि संसारमें हो रहा है और उनका यह कपट थोड़े ही दिनोंमें प्रकट होकर लोक और परलोक बिगाड़ देता है। सो बुद्धिमान लोग जानते ही हैं। जब आप यहीं थे तो मिलनेके समय इन बातोंकी कहा सुनी हो जाती थी। परन्तु अब आप दूर हैं इसलिये चाहता हूं कि चिट्ठियोंमें ऐसी मनोहूलियां लिखी जाया करें। आशा है कि आपकी भी ऐसी ही इच्छा होगी।

मैं चाहता था कि इसी पत्रमें पहिले तो कुछ प्रकाश गूढ़ रहस्यका लिखूं जो सारांश सब मतमतान्तरों और शाखाओंका है।

दूसरे यह प्रार्थना करूं कि आप न्यायदृष्टिसे खूब देखभाल कर निरूपण कर लेवें कि ये बातें निरन्तर सब विद्वानोंकी मानी हुई हैं तो भी आपके विशाल चित्तमें कैसी जचती हैं और जब कि यह निश्चय हो जावे कि अति उत्तम हैं तो जो इसके विपरीत हैं वे सर्वथा वृथा हैं।

तीसरे यह चाहता हूं कि नित्य और जो नित्य न बने तो सप्ताहमें और जो सप्ताहमें न हो सके तो एक महीनेमें और जो महीनेमें भी बन न पड़े तो एक वर्षमें अपनी आयुभरका दफतर स्मृति जबसे सम्हाली हो देख लिया करें और बिना किसीकी सम्मतिके अपने हृदयमें बिचार करके देखें कि पिछले वर्षोंमें क्या

अच्छा किया है और क्या बुरा किया है। यद्यपि भूतकालको असावधानियोंका अब कुछ उपाय नहीं हो सकता है तो भी इतना हो सकता है कि गफलतकी नींदसे जागकर आगेको दुष्कर्मोंमें समय व्यतीत न करें और इस शेषावस्थाको इन्द्रियोंके विषयोंमें न खोवें। परन्तु मुझमें न तो इतनी योग्यता है कि इन गूढ़ बातोंको लिखूं और न इतना समय है कि जैसे तैसे लिखकर भी अपनेको दुष्टोंका निशाना बनाऊं और तुमको कष्ट दूं। परन्तु हार्दिक प्रेरणासे जो कुछ आवश्यक और उचित जचता है लिखता हूं।

परमेश्वरने अपनी क्रिया कुशलतासे जैसे समग्र शरीरका प्रबन्ध एक जीवके अधीन किया है वैसे ही पृथिवीका प्रबन्ध भी नीति विशारद नरेशोंके अधिकारमें दिया है। जीवात्मा यदि शरीर और मनकी शक्तियोंका शासन, जो उसके कर्मचारी हैं न्याय और नीति पूर्वक करता है तो स्वास्थ्य बना रहता है नहीं तो उसमें विघ्न पड़कर नाशकी प्राप्ति होती। ऐसे ही जो किसी देश या राज्यका स्वामी सावधानी और बुद्धिमानीसे कामोंको सम्हालता रहे तो सब प्रजाको वशमें कर ले और किसी प्रकारकी हानि न पड़ने दे; नहीं तो राज शीघ्र ही भ्रष्ट हो जावे जिसकी स्थिति इन ५ बातोंके ऊपर निर्भर है—

१। सावधानी, यानी सब लोगोंका हाल भरोसेके मनुष्यों तथा कई ऐसे आदमियोंके द्वारा जानते रहना, जो एक दूसरेको न जानते हों; राज्य, नगर और घरसे सावधान रहना; सच्ची झूठी खबरोंको बुद्धिमें तौलकर जान लेना।

२। प्रजागणके अपराध क्षमा करना और उन अपराधोंको उनकी अज्ञानतासे जानकर क्रूर न होना।

३। जिनपर अन्याय हुआ हो उनका न्याय करना और दुष्टोंका (जो अपने सम्बन्धी हों तो भी) पक्ष न करना।

४। संसार असार है, ऐसा सबको निश्चय कराना और बिना

कहे जो दीन दुःखी लोगोंके मनोरथ समझकर सिद्ध कर देना ; प्रजाके धन हरनेकी आकांक्षा न करना ; ऐश्वर्य्यको अपने पुरुषार्थसे न समझना ।

५। न्याय पथका अवलम्बन करना, द्वेषका त्याग करना जो लोग अपने मतके न हों उनसे वैरभाव न रखना हां जो समझ सकें तो अपना मत नम्रता पूर्व्वक उनको समझावे। केवल मत विरोधसे उनपर अन्याय न करे और उनके धन धान्य धरा और धामका पूरा पूरा संरक्षण करता रहे।

प्रियवर! ये वाक्य प्राचीन बुद्धिमानोंके हैं जो उन्होंने कृपा करके लोक हितार्थ कहे हैं।

बुद्धिमानोंके उपदेश तो सर्वथा श्रेयस्कर ही होते हैं। परन्तु अहोभाग्य उनका है कि जो सुनते हैं और उनका साधन करते हैं। और निःसन्देह ऐसी बातोंका प्रतिपादन करना पुरुष सिंहोंका ही काम है जो इनके द्वारा कांटोंको फूल बनाकर मित्रों और शत्रुओंमें समभावसे रहते हैं, और हकीम अनवरीके इस वाक्यको, कि जो शत्रुओंमें निर्वाह कर सके और जो मित्रोंमें रह सके वही पुरुष सिंह है, परलोकका साधन बना कर सन्तुष्ट होते हैं।

मैं अब ऐसे प्रकरणोंके कहनेसे कि जिनसे अपनेको तो सुधारा ही नहीं है चुप रहता हूं और इससे अधिक अपनेको और दूसरे लोगोंको कष्ट न दूंगा। क्योंकि ईश्वरका ऐसा नियम है कि सदुपदेश जब तक किसी सत्पुरुषने न दिया जावे कुछ फल नहीं देता है। परमात्मा हमको और तुमको सन्मार्गपर लगाकर परम पदको पहुंचावे।

दूसरा पत्र।

यह ८ पृष्ठोंमें है। आदि अन्तमें तो वेदांत, राजनीति, धर्म्मनीति और प्रेम प्रीतिके रहस्यका विषय है। बीचमें जो समाचार लिखे हैं उनका यह सारांश है कि शहबाजखांने घोड़ाघाटसे (१) समुद्र

१। बङ्गालेका एक नगर है।

तक सब देश और टापू जीत लिये। शत्रु नष्ट हो गये ईसाखां नावमें बैठकर भागा सो पानीमें डूब गया।

वज़ीरखां और सादिक़खांने टांडे और वर्दवानसे उड़ीसेतक दिग्विजय करके उन देशोंपर अधिकार कर लिया; दुष्टोंको हटाकर सब जगह अमन चैनकर दिया। "क़तलु लोहानी"ने जो पठानोंके उपद्रवका अधिष्ठाता था सेवा स्वीकार करके अपने पोतेको मदोन्मत्त हाथियों और बढ़िया पदार्थों सहित बादशाहके चरणोंमें भेजा।

उधर मुहम्मद हकीम (४) मिरजाकी मृत्यु हो गयी जो बड़े बड़े बलवाइयोंके साहसका हेतु था।

निजामुद्दीन कुलीचखांने जो अर्जी तुम्हारी दूसरी फ़तहके सविस्तर वृत्तान्तोंकी दरबारमें भेजी थी उसमें उसने अपना बहुत कुछ प्रेम तुम्हारे प्रति प्रकट किया है।

उर्दीबहिश्त महीनेकी तीसरी और रबीउस्सानीकी ११ वीं तारीखको जो उत्सवका दिन था और श्रीमान् बहुत प्रसन्न थे, तुम्हारी दूसरी अर्जी भी पहुंची जिसमें दूसरी फतहके समाचार थे उनको सुनकर श्रीमानोंने बहुत प्रशंसा की। तुम्हारे और तुम्हारे साथके लोगोंके मनसब पद) बढ़ानेकी फिर आज्ञा दी। विलम्ब हो जानेसे कर्मचारी धमकाये गये। अब शीघ्रही सब कामोंके पूर्ण हो जानेकी आशा है।

चौथी उर्दीबहिश्तको रातको तुम्हारा पत्र हकीम अबुलफतहके नाम पहुंचा। ऐसा पाया जाता है कि दूसरी फतह होनेके पहिले लिखा गया होगा। क्योंकि कई बातें उसमें चिन्ता और व्याकुलताकी लिखी हुई थीं जिनसे चित्त बहुत विक्षिप्त हुआ। तुम बुद्धिमान हो सब कामोंका पूर्वापर देखना चाहिये। यह जगत ईश्वरका बनाया बाग है कांटोंपर दृष्टि देनेसे पहिले इसके फलोंको देखना चाहिये और प्रसन्न होना चाहिये। आयु जो

४। यह अकबर बादशाहका भाई था।

अप्रतासे बीती चली जाती है और जिसका कोई बदला नहीं मिल सकता है उसको हंसी खुशीमें पूरी करनी चाहिये। साधारण मनुष्योंकी भांति हर्ष और शोक करना तुम्हारा काम नहीं है।

यद्यपि मैं जानता हूं कि ऐसी बातें व्याकुलताकी दशामें किसीको नहीं सुहातीं, वर्त्तमान कालके लोगोंको तो बहुत ही कड़वी लगती हैं, परन्तु तुम विद्वान हो और सच्चे वचनोंसे सन्तुष्ट होते हो इसलिये मैंने ऐसा लिखा है।

तीसरा पत्र।

इस पत्रका यह आशय है कि खानखानाने अबुलफज़लसे ब्रह्म विद्याके विषयमें पूछा और उसने उत्तरमें अपना सिद्धान्त लिखा है।

चौथ पत्र।

इस पत्रका सारांश यह है कि मैं वह नहीं हूं कि जबानीसे कहूं वह दिलमें न हो। तुम जानते होगे कि मैं ठेठसे विरक्त मन था और गृहस्थीमें आया जब भी वही हाल था। लोग मुझसे मित्रता किया चाहते थे, मैं दूर भागता था। निदान हकीम अबुलफतहने, जो मर चुका है, और तुमने मुझको अपनी दोस्तीके जालमें फांसा। मैं कुछ समय तक तुमको उपदेश करता रहा तुम मानते रहे जो कभी कोई सच्ची बात कड़वी भी लगी तो तुम अपने मनको वशमें रखकर सदुपदेशको चाहना करते रहे। परन्तु अब थोड़े दिनोंसे वह इच्छा नहीं पायी जाती और मैंने भी लिखना छोड़ दिया तो भी यथाशक्ति दिलसे तुम्हारे सुधारनेके उद्योगमें बद्धकटि हूं। पर हां इस कामका उस्ताद नहीं हूं जिससे इसके कई साधन छूट भी जाते हैं। एक विशेष कारण यह भी था कि इन दिनो मेरे भाई शेख अबुलफैज फैजीका देहान्त हो गया और इस दुःखसे मुझको अवकाश नहीं मिला।

तीन महीने पीछे महमूदखां पहुंचा उसने बने बनाये सुगम कामको बहुत कठिन बताया। मैंने जैसा कि मेरा कर्त्तव्य प्रीति और हितकी परिपाटीसे था बहुत परिश्रम किया परन्तु वहांका

यथार्थ वृत्तान्त श्रीमानोंको निश्चय हो चुका था ; इसलिये बहुत कुछ मैंने तुम्हारी ओरसे कहा और तुम्हारी सराहना भी बहुत की पर लज्जित हो होना पड़ा और क्यों नहीं लज्जित होता, जब कि तुमको अपना परम मित्र बतलाया था। निदान यहां तक नौबत पहुंची कि मुझपर भी कोप हुआ जिसको मैंने सह लिया क्योंकि मैं ही उसका कारण हुआ था।

मैं जानता हूं कि साथियोंने तुमसे दगा की। यदि शाहजादा जवानी और बड़ाईके उन्मादमें नम्रताके रास्ते पर न चला था तो हे विलक्षण विद्वान्! तेरी विलक्षण बुद्धिको क्या हुआ था? तू क्यों डर गया और मांगे हुए बड़प्पनके बोझमें दबकर घमण्ड कर बैठा? कितनासा काम था जो तेरे करनेसे नहीं होता? तूने अपने स्वामीको प्रसन्नताके लिये शाहजादेका मन क्यों नहीं मनाया? इन ३ वर्षोंमें उन्मत्ततासे तूने बात भी न सुनी, सीधा रास्ता छोड़ दिया और अब तक भी सचाईके मार्गको ग्रहण नहीं करता है। मैं चाहता हूं कि कोप करूं और १००० गालियां दूं परन्तु जीभ एक पुनीत अङ्ग है, उसको गालियोंसे बिगाड़ना बड़ा अनर्थ करना है।

मैंने माना कि तू मूर्ख था पर बुद्धि नहीं थी तो भाग्य कहां चली गयी थी? वह स्वामिधर्म्मपनकी बातें क्या हुईं? क्यों काममें बेपरवाई की जिससे ऐसा हुआ? यदि सौगन्द खाना मेरी समझमें पाप न होता तो मैं १००० सौगन्द खाता जो इस बड़े कामका सोग था। दुश्मनोंके इस मनवाञ्छित काम करनेपर भी मुझे विश्वास था कि तू बावला और मदोन्मत्त हो गया होगा। तो भी मुझे देखकर सचेत हो जावेगा और मेरा कहना काम कर जावेगा। इसलिये मैंने अनेकबार बादशाहसे प्रार्थना की कि मनुष्य प्रकृतिके स्वभावसे जो भूल हुई सो हुई मैं जाकर शीघ्र ही अपनी मित्रताका ऐसा दबाव डालूं कि खानखाना शाहजादेके कहनेमें रहे और उनकी सेवा सच्चे मनसे करे। परन्तु कुछ लाभ न हुआ

और इस प्रार्थनासे मुझपर भी खफा हुए। परन्तु मेरे मनमें उसका कुछ विचार न हुआ और मैं उसी तरह दृढ़ सङ्कल्प हूं।

खैर जो हुआ सो हुआ, मुझ सच्चे हितैषीकी सलाह यही है कि अपने वचनोंका पालन करके श्रीमानोंके चित्तको शान्त करो श्रीमान तो तुमसे वह आशा रखते हैं जो अपने किसी पुत्रसे भी न रखते हों। अब आप बुलानेकी तो प्रार्थना न करें और बड़प्पने (अर्थात् मूर्खता)से अलग होकर उसी सेवामें दिल लगावें। श्रीमान् बुलावें भी तो यही उचित है कि इसी सेवाकी प्रार्थना करें क्योंकि श्रीमानोंका चित्त यही चाहता है कि यह काम तुम्हींसे हो और जो वास्तवमें मेरे आनेको उचित समझे तो अर्जी भेजें सो फिर मेरे उद्योग करनेका आधार हो। मैं कहां और यह काम कहां? परन्तु यह लालसा है कि श्रीमानोंके कोमल हृदय पर जो भार है उसको दूर करें। ईश्वरको सहस्रों धन्यवाद हैं कि बराड़ रह गयी। इसको मैं तुम्हारे परिश्रमका फल जानता हूं। इससे वह भार कुछ हलका हुआ। आशा है कि बिलकुल जाता रहे। जो दुष्ट जन खुशी मना रहे थे वे अब शोकमें बैठे हैं। यदि मूलमन्त्र (१) जाननेमें एक दो बार मुझसे भूल हो जाती तो मुझे अपनी समझका विश्वास नहीं रहता। मैं जानता हूं कि ये बातें साधारण हैं। सच तो यह है कि श्रीमानोंके परम पवित्र हृदयमें कभी मलीनता आती ही नहीं। (२)

प्रेमी वह नहीं है कि जो संयोगकी वांछासे अपना मन अर्पण करे। प्रेमी वही है कि जो निष्काम होकर सर्वस्व योंही दे दे दोनों लोकोंकी फूलोंकी २ डालियां जाने, उनकी छड़ी बनावे और शत्रुओंको बख्श दे।

१। यथार्थ अभिप्राय।

२। यह अन्तमें शेखने खानखानाको तसल्ली की है कि बादशाह वास्तवमें तुमसे अप्रसन्न नहीं हैं।

बात बहुत है अवसर थोड़ा। समय बाधक और मन विरक्त; इसी पर समाप्त करता हूं।

तेरी आंखें खुली हैं और मन चैतन्य है तू सबसे अधिक अपनी लज्जा रख †

पांचवें पत्रका सारांश

परमेश्वर तुम्हारी मनकामना सफल करे। आज दैवयोगसे कि जितका कारण पूत्यक्षमें सच्चे हितैषियोंकी सम्मतिका विरोध था अल्प बुद्धि सहचरोंका दुर्मंत्र हो सकता है तुमने कन्धार जानेका विचार छोड़ दिया और ठट्टा फतह करनेका इरादा किया था किसी दूसरे तात्पर्यसे विशेष परिश्रम करने और बहुत समय तक कष्ट उठानेकी इच्छा हुई (क्योंकि कन्धार लेना सुगम था और ठट्टा कठिन) और फिर मुझसे पिछले पत्रोंमें गिला लिखनेकी टीका पूछते हो। सो मैंने जो कुछ लिखा वह प्रीति रीतिकी अधिकतासे लिखा था। वह गिला ऐसा न था जो हमारे तुम्हारे स्नेह या सज्जन पुरुषोंके प्रेमके विरुद्ध हो। तुम्हारी बेपरवाई देखते हुए तो मैंने कुछ भी गिला नहीं किया है और न परेखा। जब कि मेरी प्रीति तुम्हारे प्रति सिद्ध हो चुकी है फिर गिलेकी जगह कहां रही? तुम जितने सज्जनतामें बढ़ते जाते हो उतना ही मैं मूर्ख बनता और तुम्हारी मित्रतामें वृद्धि करता जाता हूं। तुम्हारे पास तो इस समय आत्मश्लाघी लोग भरे हुए हैं जो मुझे अपनेको उनमें गिनानेकी लज्जा न आती होती तो मैं भी अपने दिल जलाने, तुम्हारे काम निकालनेमें बादशाहसे झगड़ने, और अपनी हानिका सोच न करनेकी थोड़ी सी कथा लिखता।

† यह पत्र उस समय लिखा गया था जब कि शाहजादे मुराद और खानखानाकी अनबनसे दक्षिणका देश फतह नहीं हुआ था वरन दक्षिणियोंने कुछ अंश बादशाही राज्यका ले लिया था और बादशाह शाहजादेके लिखनेसे खानखाना पर कोपायमान हुए थे।

मैं तो ठठसे विरक्त मन था, मुझे प्रारब्धने पकड़ा और अमात्य पदमें जोत दिया। तो अब इसका धर्म्म भी निबाहना पड़ा। इसीलिये कुछ इस सम्बन्धके विषयकी भी कहता हूं कि बादशाह तुमसे इतने प्रसन्न हैं कि जिसका वर्णन इन पत्रोंमें नहीं समा सकता है। तुम्हारी सब सेवाएं मोअत हो गयी हैं। सारे अमीरों और मनसबदारोंने तुम्हारे कामोंके बखान बहुत अच्छी तरहसे लिखे हैं जो अपने स्थान (१) पर स्थिर हो गये हैं और शीघ्र ही उनका फल तुमको मिलनेवाला है।

जङ्गी नावोंके वास्ते हुक्म हो गया है; तोपें और उनकी सामग्री पीछेसे पहुंचेगी।

दौलतखांके वास्ते पूरी सिफारश कर दी गयी है; वह अपनी मुरादको पहुंच जावेगा।

अमीर लोग राज्यके अनेक प्रान्तोंसे विजयके पत्र भेज रहे हैं आशा है। कि तुम भी शीघ्र ही इस बड़े कामको सम्पादन करके बादशाहकी प्रसन्नता प्राप्त करोगे। मुझे इतनी भी फुरसत नहीं है कि परमेश्वरसे अपनी कुछ कहूं विषयवासनाने घेर रखा है। सत्सङ्ग कम होता है। भाई हकीम हमामसे तो मिलता रहता हूं वह भी कामोंमें डूबा हुआ है। कभी आलमनामा चङ्गेजनामा और शाहनामा (२) पढ़ा करो। बात चीत उनके

चर्चाका समय नहीं मिलता कि जिससे मनका विकार कुछ सुधारा जावे। हाथी घोड़े धन मालका मुझे कुछ मोद नहीं है। भाई हकीम अबुल फतहको खोही चुका हूं, तुमसे जुदा हूं; फिर मेरे दिल पर क्या बीत रही है सो जान लेना चाहिये। मैं तुमको खैरख्वाहीसे अनेक बार लिख चुका हूं कि जफर

१। बादशाहके मनमें

२। जफरनामेमें अमीर तैमूरका, चङ्गेजनामेमें चङ्गेजखांका और शाहनामेमें ईरानके पुराने बादशाहोंका इतिहास है।

अनुसार किया करो। अकेलेमें सदा अपने कर्मोंको गिनते रहो नीतिकी पुस्तकोंमेंसे अहयाके (१) उत्तर भागको पढ़ा करो। निष्कपट और निर्लोभी मनुष्योंकी खोज रखो; जो सच्चे शब्द कहें। झूठे खुशामदियोंसे बचे रहो।

छठे पत्रका सारांश।

कृपापत्र पहुंचा। सज्जनता पायी गयी। मुझसे उपदेश चाहा मैं आप ही शिक्षाहीन हूं फिर क्या शिक्षा करूं? परन्तु भाग्य अच्छे थे जिसने बादशाहकी सेवामें लाडाला जिनके दर्शनोंसे ज्ञान चक्षु खुले। आशा है कि शिक्षा देनेके योग्य हो जाऊं। अब जो कुछ मैंने समझा है तुमको भी लिखता हूं।

इसके आगे नीति, न्याय और ज्ञान मार्गकी बातें लिखी हैं।

समुच्चय।

ऐसेही और भी कई पत्र हैं जिनमें खानखानाकी कन्धार, सिंध और दक्षिण सम्बन्धी भूल चूकको अबुलफजलने पकड़ा है और खानखानाने जो उसके उत्तर दिये हैं वे भी काटे हैं। बादशाहकी नाराजी जताकर भी यही लिखा है कि बादशाह दिलसे तुम पर अप्रसन्न नहीं हैं।

एक पत्रमें खानखानाने बादशाहकी नाराजीके विषयमें लिखा तो यह उत्तर दिया कि यहां तो कुछ भी नहीं है। सदा तुम्हारे भाव और भक्तिकी चर्चा दरबारमें और एकान्तमें होती रहती है। कभी हुक्म न हुआ कि कोई फरमान चाहे वह खफगीक ही हो, बगैर यार वफ़ादारकी उपाधिके न लिखा जावे और आजमखांको तो तुम्हारी सहायताके वास्ते भेजा था इससे तुमको इतना भड़कना नहीं चाहिये था।

फिर एक और पत्रमें जो ता० २ रमजान (२) सन् ९९२ को

१। अहयाउलउलूम मुसलमानोंकी धर्मनीतिका ग्रन्थ है।

२। भादों सुदी ३ संवत् १६४१

लाहोरसे लिखकर भेजा था, यह शिक्षा लिखी है कि बादशाहके फरमानके जवाबमें। जो खफगीका है अपराध स्वीकार करके अपनी हानिका सुधार करो। तुम्हारी अर्जीका पढ़नेसे बादशाहकी नाराजी १००० अंशोंमें १ अंश पर आ रही है परन्तु तुम एक को ही १००० जानकर उसके दूर करनेका प्रयत्न करो।

इसके आगे पत्रमें लिखा है कि ता० ६ जमादिउलअव्वलको तुम्हारा खत मिरजा अली बहादुर ले या। पढ़कर शोक हुआ। आनेका इरादा न फरमानके अनुसार है और न तुम्हारी समझके योग्य। जब कि तुमको उसी कामके करनेकी प्रेरणा की गयी थी तो उससे अपने बुलानेका तात्पर्य्य समझ लेनेको क्या कहा जावे ?। अब इधर आनेकी इच्छा न करो। आगरेमें १ वर्ष तक ठहरनेकी मरजी बादशाहकी न थी। तुम श्रीमानोंके मनको बहुत करके दक्षिणकी फतहमें लगा हुआ जानकर आनेकी बात छोड़ दो और उस देशके जीतनेमें जिसका उत्तम अवसर यही है विलम्ब मत करो जैसा कि पहले कई बार कर चुके हो।

सिंध और दक्षिण फतह करनेका धन्यवाद भी कई पत्रोंमें है। कंधार खुरासान और ईरानकी तरफ बढ़नेकी भी उत्तेजना है

इन सब पत्रोंमें सरकारी कामोंसे निज व्यवहारकी बातें अधिक हैं और उनमें विशेषतर अक्ल आत्म शिक्षाका है। अबुलफजल एक प्रकारका वेदान्ती था। उसने आत्मशिक्षा और वैराग्यकी बातें जैसी खानखानाको लिखी थीं वैसी ही उस समयके दूसरे बड़े बड़े अमीर मिरजा, आजम, जेनखां कोका और राजा मानसिंहको भी लिखी हैं। वह बादशाहका वजीर, मुंशी और मुसाहिब था इस वास्ते सब लोग उससे पत्र व्यवहार रखते थे। और वह सबको यथार्थ बातें उनके हितकी, जिनसे इस लोक परलोकका कल्याण हो लिखा करता था परन्तु उसके लेख बहुत क्लिष्ट हैं और आशय भी गूढ़, जिससे उसका अभिप्राय समझनेमें बहुत मुशकिल पड़ती है। जो फारसी भाषाका पूरा व्याकरणी, वेदान्ती, नीतिज्ञ

इतिहास वेत्ता और कवि हो वही उसके लेखोंका यथार्थ सारगर्भित आशय समझकर आनन्द प्राप्त कर सकता है।

खानखाना और शेखकी भेंट

मआसिरुल उमरामें लिखा है कि जिस समय शेख अबुलफजल प्रधान मन्त्रीके पूर्ण अधिकार में था एक दिन खानखाना और मिरजा जानी उससे मिलने गये थे। शेख पलंग पर लेटा हुआ अकबरनामेके पत्र देख रहा था, इनका कुछ स्वागत नहीं किया। केवल इतना ही कहा कि आओ मिरजा बैठो।

मिरजा जानी बेगको सिन्धकी बादशाहीका घमण्ड था इस लिये वह उठ गया।

दूसरी बार फिर खानखाना मिरजाको मनाकर शेखके स्थान पर ले गये तो शेख पोल तक लेनेको आया। बहुत आदर सत्कार किया और कहा कि हम लोग तो आपके सेवक और प्रजा हैं।

मिरजाको बड़ा अचम्भा हुआ कि या तो वह घमण्ड था या यह विनय।

खानखानाने कहा कि उस दिन तो मुख्य मन्त्रीपना इसकी दृष्टिमें था और आज भाई चारेका बर्ताव है।

———o———

परिशिष्ट।

मआसिर रहीमी।

यह खानखानाके जीवनचरित्रका ग्रन्थ है जो उनके जीते जी ही ईरानके एक विद्वान अब्दुल बाकीने बनाया था। यह मेरे देखनेमें तो नहीं आया परन्तु मौलाना शबलीने बङ्गाल एशियाटिक सोसाइटीके पुस्तकालयमें इसकी एक पुरानी प्रति देख कर उस परसे कुछ आशय उर्दूके पत्र "नुदवामें" छपवाया था उसीका सारांश यहां लिखा जाता है।

यह ग्रन्थ २००० पृष्ठोंमें पूर्ण हुआ है। अर्धांशमें तो खानखानाके पूर्वजोंका वृत्तांत है और शेषमें खानखानाका चरित्र है जिसमें मुख्य बातें इतनी हैं—

१ जन्म और शिक्षा।

२ बादशाही दरबारकी सेवा बन्धन और दिग्विजय।

३ खानखानाकी अरबी, फारसी, और तुरकी भाषाओंमें निपुणता और प्रत्येकमें गद्य पद्य लेख और काव्य रचना।

४ शील स्वभाव।

५ शस्त्र विद्याके चमत्कार।

६ लोकहित और सुखके काम।

७ कृषिकार्य्यमें उन्नति।

८ खानखानाके दरबारी शिल्पकारोंकी नयी नयी कारीगरियोंके आविष्कार।

९ खानखानाका पुस्तकालय।

१० खानखानाके दरबारके कवि।

१ आलिम (विद्वान) हकीम और सुलेखक।

नं० १ और २ का छोड़कर (जिनका बहुत सा विषय हमारे इस ग्रन्थमें आ चुका है) मौलाना शिबलीने अपना लेख नं०३ अर्थात् खानखानाकी विद्वत्तासे आरम्भ किया है। वे लिखते हैं कि खानखाना कई भाषाओंको जानते थे, उनकी अरबी, फारसी, और तुरकी कविताका नमूना मूल ग्रन्थमें दिया है तुरकी और फारसी तो उनकी मातृभाषा थी लेकिन अरबी भाषाकी कविता भी कुछ कम नहीं है। शोक और महाशोक है कि ग्रन्थकर्त्ताने जो ईरानी था, खानखानाकी हिन्दी भाषाकी कविताका एक भी नमूना नहीं दिया है, नहीं तो इस बातका पता लगता कि उर्दूका हिन्दी भाषा पर क्या प्रभाव पड़ने लगा था।

खानखानाको अरबी भाषामें यह अभ्यास था कि जो कहींसे कोई लिखावट आती थी तो मूल भाषाको पढ़े बिना ही उसका उल्था इस प्रकारसे करते चले जाते थे कि मानो वह उल्था ही लिखा हुआ उनके हाथमें है।

एक बार मक्केके शरीफने (महंतने) अकबरको पत्र भेजा था जिसमें अरबीके कठिन कठिन शब्द भर दिये थे। अकबरने अबुलफजल, फतहउल्ला शीराजी और खानखानाको हुक्म दिया कि फारसीमें अनुवाद करके लायें। अबुलफजल और फतहउल्ला तो कोषोंकी सहायता लेनेके लिये उस चिट्ठीको साथ ले जाने लगे; परन्तु खानखाना वहीं दीपकके पास आकर पढ़ने लगे और साथ साथ तरजुमा भी करते गये।

फारसी भाषामें आज भी इनकी बनायी हुई एक पुस्तक मौजूद है अर्थात बाबर बादशाहने जो अपने वृत्तान्त तुरकी भाषामें लिखे थे उनका तरजुमा अकबरके कहनेसे खानखानाने फारसीमें किया है जो बहुत सरल और सरस है।

खानखानाका फारसी दीवान अर्थात फारसी भाषाकी कविताका संग्रह तयार करना मूल ग्रन्थमें तो लिखा है परन्तु वह कहीं

देखा नहीं गया। खानखानाके ग्रेर जगह जगह बहुत पाये जाते हैं। बहुधा ऐसा होता था कि खानखाना कोई समस्या देते थे और सब दरबार उसकी पूर्ति करता था जिसमें नजीरी, उरफी और अनेवी जैसे कवियोंके सामने सफलता होना कठिन काम था तो भी हम देखते हैं कि ऐसे दंगलमें खेत खानखाना हीके हाथ रहता था।

मूलग्रन्थमें तुरकी कविता भी लिखी है परन्तु हम उसको नहीं समझ सकते।

ग्रन्थकर्त्ताने यह भी लिखा है कि खानखानाने जितनी कविता फारसी भाषामें की थी उससे कई गुनी अधिक हिन्दीमें की है। परन्तु उसकी खोज कौन लगावे ? और एक अचम्भे की बात यह भी है कि, खानखानाने युरोपकी बोलियां भी सीख ली थीं और इनकी आवश्यकता यों हुई थीं कि अकबरका युरोपियन बादशाहसे पत्र व्यवहार रहा करता था इसीलिये उसने खानखानाको युरोपीय भाषा सीखनेकी आज्ञा दी थी। ग्रन्थकर्ता लिखता है कि बहुतेरे टापू ईसाइयोंके अधिकारमें है और अफरंजाके (फ्रांसके) बादशाहोंका और हिन्दुस्थानके बादशाहोंमें पत्रव्यवहार बहुत होता है इसलिये अकबर बादशाहने अपने इस सेनापतिको (खानखानाको) ईसाइयोंकी बोली सीखने और उनके अक्षर पढ़नेका हुक्म दिया। इन्होंने इस जातिके मुख्य मुख्य व्यक्तियोंसे जो बादशाही दरबारमें थे और व्यापारियों तथा मुसाफिरोंके थोड़ासा मेल जोल करके उनके अक्षरों और भाषाओंमें ऐसा अभ्यास कर लिया कि अब उनसे बढ़कर जानने लगे हैं।

खानखानाका सबभाषा जानना इतिहास वेत्ताओंने भी स्वीकार किया है। मआसिरुलउमरामें लिखा है कि वह पृथ्वीकी बहुतेरी प्रचलित भाषाओंमें बात चीत कर सकते थे।

पुस्तकालय।

खानखानाकी विद्या सम्बन्धी उदारताओंका प्रमाण स्वरूप

उनका पुस्तकालय था जिसमें विद्याके इतने बहुत भंडार रक्खे गये थे कि वह स्वयं एकाडिमी या विश्वविद्यालयका काम देता था। इसमें बड़े बड़े विद्वान बड़े बड़े सुलेखक और बड़े बड़े चित्रकार काम करते थे और खानखानाकी उदारतासे उदर पूर्ण करते थे।

मौलवियोंमें बहराइचका रहनेवाला शेख अब्दुस्सलाम भी था जिसका बाप भाषाका प्रसिद्ध कवि था और कवितामें अपना नाम ब्रम्ही धरता था। चित्रकारोंमें माधव नाम एक हिन्दू बड़ा बड़े ही अद्भुत चित्र बनाता और चित्राम करता था। पुस्तकालयमें बहुधा पुस्तकें उसीके हाथकी बनाई हुई और संवारी हुई थीं।

कवि।

अबुलफजलने जो बादशाही दरबारके कवि लिखे हैं उनमें बहुधा खानखानाके पाले हुए थे। अबुलफजलसे बढ़ कर उस समयके फारसी कवियोंके वृत्तान्त खानखानाकी जीवनीके ग्रन्थमें मिलते हैं उरफी नजीरी और शकबी वगैरा। कवियोंने अकबर जहांगीर और शाहजादे मुरादकी प्रशंसामें भी कविता की है। परन्तु उससे बढ़ी चढ़ी कविता खानखानाकी प्रशंसाकी इन्हीं कवियोंकी बनाई हुई देखी जाती है। जिसका कारण खानखानाकी उच्च उदारता और काव्य रहस्यकी समझना था। शेखफैजी बादशाहका सभासद और कृपा पात्र होनेसे खानखानाके बराबर था और इसी कारण उसने उरफी वगैर: शाइरोंकी भांति किसी बादशाही अमीरकी प्रशंसा नहीं कही है तो भी उसे कहना पड़ा कि खानखानाकी उदारताने चित्तको प्रफुल्लित कर दिया क्योंकि उसको शाइरों पर भरोसा था इसलिये वह प्रशंसा करनेसे पहिले ही इनाम दे देता था।

खानखानाकी उदारताके चरचे अरब और ईरान तक फैल गये थे शकेबी अस्फहानी, जब हज करनेको मक्के जाता हुआ अदनमें पहुंचा तो उसने बच्चोंको गीत गाते हुए सुना कि

खानखाना आया जिसके प्रतापसे क्वांरी कन्याओंने पति पाये व्यापारियोंने माल बेचे बादल बरसे जल थल भर गये।

खरबूजा।

ग्रन्थ कर्त्ताने लिखा है कि पहिले खरबूजा नहीं होता था। सबसे पहिले खानखानाने ईरान और खुरासानसे बीज मंगवाकर गुजरातके गांव बलकवाड़में बुवाये २।३ वर्षमें ही ऐसे अच्छे खरबूजे निपजने लगे जो वलायतकी बराबरी करते थे।

हम्माम।

हम्माम भी सबसे पहिले गुजरातमें खानखानाने मुहम्मद अली बिलावटसे बनवाया और सब लोगोंके नहानेके लिये दे दिया उस समयसे हम्माम सब जगह बनने लगे हैं।

जहाज।

खानखानाने ३ जहाज इस अभिप्रायसे बनाये थे कि हजके दिनोंमें गरीब हाजी उनमें बैठकर सेंतमेंत हज कर सकें।

अबरी और अक्सका कागज।

जिल्द बंधीके कामोंके लिये अबरीका कागज खानखानाके कारीगरोंने नया निकाला था अक्सका कागज तो पहिलेसे था परन्तु ७ रङ्गोंके अक्स लेनेका कागज इन्होंके समयमें निकला था।

बाणविद्या।

बाणविद्यामें खानखाना इतने दक्ष थे कि जब गुजरातके बादशाह मुजफ्फर पर जय प्राप्त की थी तो एक दिन चौगानमें गेंद खेल रहे थे उस समय एक कव्वा उड़ा जाता था खानखानाने लगातार १२ तीर मारकर उसके आस पास तीरोंका चक्कर बांध दिया और १३वें तीरमें उसको मार गिराया।

एक बेर एक सिंहके ललाटमें ऐसा तीर मारा जो इधरसे उधर तक निकल गया।

व्यायाम ।

व्यायाममें भी खानखाना विचित्र करतब करना जानते थे । वह एक कपड़ा ४ आदमियोंको पकड़ा देते थे जो चारों कोनोंको तानकर खिंच खड़े रहते थे और आप दूरसे दौड़ते दौड़ते उस रुमाल पर पांव रखते हुए इस सफाईसे निकल जाते कि कपड़ेको जरा झाल नहीं आती ।

सज्जनता

खानखाना इतना ऐश्वर्य्यता पाकर भी बहुत नम्र स्वभावके सज्जन थे । जब उनको खानखानाकी पदवी मिली थी तो कई उपदेश एक पत्रपर लिखकर नौकरोंको दे दिये थे वे जब उनको किसी बात वा किसी मनुष्य पर क्रोध करते देखते तो पत्र आगे कर देते जिसके देखते ही खानखाना ठण्ढे हो जाते थे ।

एक बार पांवमें घाव पड़ जानेसे बहुत दिनों तक कचहरी नहीं कर सके थे एक दिन किसी कामके लिये बाहर निकले तो भीड़ हो जानेसे एक नौकरका पांव उनके पांव पर पड़ गया जिससे घाव फट गया दरबारी लोग नौकरको ताड़ना करने लगे खानखानाने यह कहकर उनको रोक दिया कि इसका क्या अपराध है ? होनेवाली बात थी ।

सम्पूर्ण ।